मोहन ग्रन्थमाला—दूसरा पुष्प

प्रेम पुजारी

राजा महेन्द्रप्रताप सिंह

लेखक—

नन्दकुमारदेव शर्मा
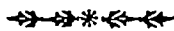
हिन्दी-साहित्य कार्यालय

२२, मछुआ बाजार स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रथमबार २०००] मार्ग शीर्ष १९८० [मूल्य १)

प्रकाशक—

बजरंगलाल लोहिया

२२, मछुआ बाजार स्ट्रीट,

कलकत्ता

राम कुमार भुवालका द्वारा हनुमान प्रेस, नं ३, माधव सेठ लेन, कलकत्ता में मुद्रित।

समर्पण

श्रीमान् राजा महेन्द्रप्रतापजी

महामहिमान्वितेषु

प्रिय राजासाहब !

सात, आठ वर्षसे आपके दर्शन नहीं हुए और कौन जाने आपके शब्दोंमें "इस चोलेमें मिलना हो या न हो।" अतएव यह सोचकर आपके गुणरूपी पुष्पोंकी यह माला पिरोयी है और आपहीको इतनी दूरसे माला पहनाता हूं, कृपया इसे धारण कीजिये, स्वीकार कीजिये।

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये।"

आपका प्रेमी—
नन्द०

विषय-सूची
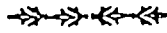
क्षमा प्रार्थना

इधर कई महीनेके बाद आज इस पुस्तकको लेकर प्रेमी पाठकोंके समक्ष उपस्थित होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जो वचन देकर मैंने कार्यारम्भ किया था उसे पूरा न कर सकनेका मुझे हृदयसे खेद है। पर इतनी देरके बाद भी जो सौम्य फल मैंने पाठकोंके सामने उपस्थित किया है वह इतना अधिक मीठा है कि पाठक मेरे पुराने अपराध भूल जायँगे। यह पुस्तक इतनी बड़ी हो गई कि मालामें इसे स्थान न दिया जा सका। इससे पाठक यह न समझ लें कि 'आठ आना पुस्तक माला' का अन्त करके मैंने यह नया आडम्बर खड़ा किया है। आठ आना पुस्तक माला अपना काम ज्योंका त्यों करती रहेगी। साथ ही इस नये वृक्षका फल भी पाठकोंको समय समयपर चखाया जायगा। यह माला नयी नहीं है। इसका पहला फल 'प्रोत्साहन' पाठक चख चुके हैं। जिस प्रेमी मित्रने इस मालाका आरम्भ किया था उनकी कृपासे यह भी अब अपनी हो गई है।

प्रस्तुत पुस्तकके विषयमें मै अपनी ओरसे कुछ नहीं लिखना चाहता। लेखक भी आपके पुराने परिचित हैं और पुस्तकके नायकके बारेमें तो कुछ कहना ही नहीं है। आज वे भारतके उद्धारका सन्देश लेकर देश विदेशों घूम रहे हैं और ससारको भारतकी अवस्थाका ज्ञान दिला रहे हैं। ऐसे नरपुङ्गवकी जीवनी निकालते हुए मुझे पूरी आशा है कि प्रेमी पाठक इसे हृदयसे अपनावेंगे। यदि पाठकोंने इस मालाके पुष्पोंका समुचित आदर किया तो शीघ्र ही उनकी सेवामें इस मालाका तीसरा, अति उत्तम और समयोपयोगी बहुत सुन्दर सचित्र और स्त्रियोंके पढ़ने योग्य पुष्प—"स्त्री कर्त्तव्य शिक्षा", उनकी सेवामें उपस्थित किया जायगा।

विनीत—

बजरंगलाल लोहिया

निवेदन

राजा महेन्द्रप्रतापका भारतवासियोंको ही नहीं अन्य देश-वासियोंको भी परिचय देना, सूर्यको चिराग दिखानेके समान है। राजासाहबका विश्वप्रेम, स्वदेशानुराग और शिक्षण-कार्य किसीसे अविदित नहीं है। इस छोटीसी पोथीमें उनके चरित्र सम्बन्धी कुछ घटनाओंके उल्लेख करनेकी चेष्टा की गयी है। देखा चाहिये इसमें कहांतक सफलता हुई है। राजा साहबका यह आलोचनात्मक चरित्र नहीं है, अभी आलोचनात्मक दृष्टिसे चरित्र लिखनेका समय भी नहीं आया है। यह सोचकर इसकी चेष्टा नहीं की गयी है।

जिन मित्रोंने इस कार्य्यमें मुझे सहायता दी है, वे सब ही धन्यवादके पात्र हैं, यदि उनकी कृपा न होती तो मुझे सन्देह है कि यह पोथी इतनी जल्दी प्रकाशित न हुई होती।

इन पंक्तियोंको समाप्त करते हुए इतना कहना है कि कहीं कहीं असावधानीसे प्रूफमें साधारण भूलें रह गई हैं, उनको पाठक क्षमा करें। पृष्ठ ६६ के फुट नोटमें "जब कभी आप वृन्दावन जाते" के स्थानमें "जब कभी लेखक वृन्दावन जाता" पढ़ना चाहिये।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे ग्राऊस साहबकी Mathura Memoirs (मथुरा मेमायर्स) मथुरा गज़टियर "प्रेम", "वर्त्तमान" "अभ्युदय" आदि पत्रोंसे विशेष सहायता मिली है। इन पुस्तकोंके रचयिता और सम्पादकोंका भी मैं कृतज्ञ हूं।

कलकत्ता
मार्गशीर्ष कृ० १४ सं० १९८०

निवेदक—
नन्दकुमार देव शर्म्मा।

भारतीय क्रान्तिकारी दलके प्रसिद्ध श्री रासबिहारी बोस और श्रीमान तोयामा जापानके प्रसिद्ध "रोनिन" के साथ राजा महेन्द्रप्रताप। राजा साहब बीचमें बैठे हैं।

(यह चित्र जापानसे स्वयं राजा साहबने १९२३ में भेजा है)

प्रेम-पुजारी

(१)

दुखिया माताके अनमोल लाल

अरी माता! तू पराधीन है। पराधीनतारूपी जंजीरसे तेरे हाथ पैर कसे न होते तो तेरी ऐसी दुर्गति क्यों होती, कि तेरी विभूति इधर उधर बिखरी पड़ी रहे। कोई बात भी न पूछे। तेरे अनमोल लाल विदेशोंमें मारे मारे फिरें। उनका कहीं ठौर ठिकाना न हो, वे अपनी दुखिया भारतमाताकी गोदीमें बैठने न पावें। आज तेरे वे लाल, जिनके होनेसे स्वाधीनताके समयमें तू बड़भागी समझी जाती, दूसरोंके घर घर और दर दर भटकते फिरते हैं। तेरे प्रेमके मतवाले लाल तेरी गोदमें बैठनेके लिये तरस रहे हैं और रोके जाते हैं। आज तेरे अनमोल लाल, लाला हरदयालु, एन० मुकर्जी, बरकतुल्ला, सरदार अजीतसिंह, श्रीरास-विहारी बोस, राजा महेन्द्रप्रताप प्रभृति तेरी गोदसे बिछुड़े हुए हैं। तेरे प्यारे और अनुपम रत्न, पुण्यश्लोक लोकमान्य तिलक-को चोर, डाकुओंकी तरह जेलमें बन्द रहना पड़ा, आज भी तेरे दूसरे सपूत, तैंतीस करोड़ भारतवासियोंके हृदय-सम्राट् प्यारे मोहनकी मुरलीकी सुरीली तान, यरवदा जेलके भीतर बज रही

हैं। और भी न मालूम तेरे कितने ही अनमोल लाल जेलोंमें सड़ रहे हैं अथवा विदेशोंमें भटक रहे हैं। इसको तेरा दुर्भाग्य और कालकी कुटिल गतिके अतिरिक्त और क्या कहा जाय कि तेरे अनमोल रत्नोंकी यह दशा हो। इन अनमोल रत्नोंमेंसे, राजा महेन्द्र प्रताप भी एक हैं, जिनके कुछ गुणोंकी आज चर्चा की जाती है।

(२)

वंश-परिचय

राजा महेन्द्र प्रताप उस इतिहास-प्रसिद्ध जाट जातिके हैं, जिसने अनेक अवसरोंपर अपने भुज बलका परिचय देकर ख्याति प्राप्त की है, जिसने मुलतानके निकट महम्मद ग़ज़नीपर आक्रमण किया था, जिस जाट जातिने भरतपुर-नरेश राजा रणजीतसिंहकी अध्यक्षतामें संवत् १८६० वि० में लार्ड लेकके छक्के छुड़ा दिये थे, जिस जाट जातिमें सिक्ख-साम्राज्यके संस्थापक, पञ्जाब-केसरी महाराज रणजीतसिंह हुए थे, जिस जाट जातिके विषयमें अब भी यह कहावत प्रचलित है :—

"आठ फिरङ्गी, नौ गौरा
लड़े जाटका दो छोरा"

उसी जाट-जातिको राजा महेन्द्रप्रतापको उत्पन्न करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। संवत् १६५७ वि० के लगभग राजा साहबके एक पूर्वज श्रीमाखनसिंह राजपूतानेसे मुरसानके निकट

आये और वहीं बसे। मुरसान आजकल बम्बई बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया रेलवेका हाथरस और मथुराके बीचमें छोटासा स्टेशन है। मुरसान छोटीसी बस्ती है। मुरसान छोटीसी बस्ती होनेपर भी, मुगल-साम्राज्यके पतनकालमें विशेष प्रसिद्ध रहा है। सिक्खों-के इतिहास-लेखक कनिङ्हम साहबने अपनी पुस्तककी एक पाद-टिप्पणीमें लिखा है कि धौलपुर* भरतपुर, मुरसान, हाथरस आदिके जाटोंके इतिहासकी अत्यन्त आवश्यकता है। अस्तु, जो कुछ हो भारतका वह बड़ा ही सुन्दर सुहावना समय था। प्रत्येक मनुष्य अपने बाहुबलका भरोसा रखता था। आजकलकी भांति नाम-मात्रके ब्राह्मण, क्षत्रिय नहीं थे। यद्यपि उस समय भारतवर्ष अपने उच्च आदर्शोंसे बहुत कुछ गिर चुका था तथापि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अपने कर्त्तव्य-कर्मसे नितान्त विमुख नहीं हुए थे। थोड़ा बहुत अपना कर्त्तव्य-कर्म सभी पालन करते थे। हमारे चरित्रनायक, राजा साहबके पूर्वज ठाकुर माखन-सिंहने भी अपने भुज-बलसे मुरसान तथा उसके आसपासके स्थानोंको अपने अधीन कर लिया था।

ठाकुर माखनसिंहका परपोता ठाकुर नन्दराम बडा प्रतापी हुआ। उसने अपने पिताके वैभवको खूब बढ़ाया। उसने फौज-दारकी उपाधि ग्रहण की। उसका देहान्त सवत् १७५३ वि० में

* भरतपुरका एक वृहत् इतिहास इन पंक्तियोंके लेखकने लिखा था पर भरतपुरके अधिकारी जगन्नाथदासने लेखकसे हस्तलिखित प्रति पढ़नेके बहाने ले ली और आज तक लौटाई नहीं।

हुआ। उसके चौदह लड़के थे, जिनमेंसे जलकरनसिंह और जयसिंह बहुत नामी हुए। क्रम विकास अर्थात् शनैः शनैः उन्नत होना सृष्टिका स्वाभाविक नियम है। अतएव हमारे चरित्र-नायकके पूर्वजोने भी शनैः शनैः अपनी उन्नति और वृद्धि की। ठाकुर जलकरनसिंहके प्रपौत्र, मुरसानके राजा भगवन्तसिंह हुए और ठाकुर जयसिंहके प्रपौत्र, ठाकुर दयारामने हाथरसको अपनी राजधानी बनाई। भगवन्तसिंह और दयारामने अपने राज्यका विशेष विस्तार किया।

जिस समय भगवन्तसिंह और दयारामका प्रताप बालसूर्य-की भांति बढ़ रहा था, उस समय अङ्गरेज भी अपने राज्य-विस्तारकी चेष्टा कर रहे थे। वे भारतका भाग्यविधाता बननेका प्राणपणसे प्रयत्न कर रहे थे। मराठोंमे उस समय पारस्परिक विद्वेषाग्नि प्रज्वलित हो चुकी थी। हिन्दू-मुसलमान आपसमें ही कट मर रहे थे। एक भाई, अपने दूसरे भाईका गला काटनेके लिये अपना सर्वस्व स्वाहा करनेको तैयार हो जाता था, जिसके कारण दूरदर्शी विदेशी लोगोंको यहांके निवासियोंकी फूटसे लाभ उठानेका अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। दिल्लीकी बादशाही खाक़शाही हो चुकी थी। जिन प्रबल प्रतापी मुग़ल बादशाहोंके दरबारमें पहुचनेके लिये अङ्गरेज लोग नाक रगड़ते थे उन्हीं परमप्रतापी मुग़ल बादशाहोंके वंशधर अङ्गरेजोंके हाथकी कठपुतली बन चुके थे और अङ्गरेजोंकी दी हुई रोटियोंपर गुज़र करते थे। लासवारीके युद्धमे संवत् १८६० विकमीमें

आपसकी अन-बनके कारण, मराठोंका अङ्गरेजोंके मुकाबिलेमें भाग्य पलट गया था। फिर ऐसे समयमें राजा भगवन्तसिंह और ठाकुर दयारामका वैभव कितने दिनतक स्थिर रह सकता था—इसके विषयमें विवेकी पाठक स्वयं सोच लें। यहां विशेष रूपसे इस विषयमें लिखनेकी आवश्यकता नहीं है।

इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है कि राजा भगवन्तसिंह और ठाकुर दयारामकी बढ़ती हुई शक्ति देखकर अङ्गरेज लोग कुछ सहम जरूर गये थे, क्योंकि हम देखते हैं कि सवत् १८७५ विक्रमीमें अलीगढ़के तत्कालीन स्थानापन्न कलक्टरने अपनी रिपोर्टमें लिखा है कि मुरसानके राजाका आधिपत्य, समस्त सादाबाद और सौंकके ऊपर है और महावन, माठ, सनोई, राया, हसनगढ़, साहपू, और खांडोलीपर उसके बन्धु हाथरसके ठाकुरका अधिकार है। इसके आगे रिपोर्टमें जो कुछ कहा गया है, उससे विलायती कुटिल नीतिका अच्छा पता लगता है। रिपोर्टके लेखकके कथनका सारांश यह है कि इन समृद्धशाली परगनोंको लार्ड लेकने हाथरसके ठाकुर और मुरसानके राजाको इन प्रान्तोंके विजय प्राप्त करनेके अवसरपर दिया था, जो अवतक इनके कब्जेमें चले आते हैं। उस समय इन परगनोंके देनेमें तात्कालिक नीति (Temporary Policy) यही थी कि किसी प्रकारका असन्तोष उत्पन्न न हो और मुरसान और हाथरसके ठाकुर लोगोंको किसी प्रकारसे प्रसन्न कर लिया जाय।

ऊपरके उद्धृत अवतरणको पढ़कर पाठकोंने अवश्य

निकाल लिया होगा कि जिस समय लार्ड लेकने मथुरा, आगरा अलीगढ़ आदि स्थानोंमें अपनी विजयका डङ्का बजाया था, उस समय मुरसान और हाथरसके ठाकुरोंका कितना प्रभाव था। वीरताका दम भरनेवाले लार्ड लेक भी मुरसान और हाथरसके ठाकुरोंके प्रभावसे इतने चौकन्ने हुए कि उन्हें मुरसान और हाथरसके ठाकुरोंको प्रसन्न करनेके लिये कुछ परगने देकर तात्कालिक नीतिका अवलम्बन करना पड़ा। ग्राऊस साहबकी मथुरा मेमायर (Mathura Memoir) नामक पुस्तकसे ज्ञात होता है कि मुरसानके राजा और हाथरसके ठाकुर साहब अपनेको पूर्ण स्वाधीन होनेका दावा करते थे। इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि इन लोगोंको इनके गढ़से निकाल दिया जाय। लड़नेके लिये कुछ न कुछ बहाना मिल ही जाता है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके राज्यके चार आदमियोंपर हत्याका अभियोग था। वे चारों आदमी, ठाकुर दयारामके राज्यमें थे, शरणागत-वत्सल ठाकुर दयारामने अपने आश्रित मनुष्योंको अङ्गरेज सरकारको देना उचित नहीं समझा। बस फिर क्या था, अङ्गरेजोंकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। जनरल मार्शलके अधीन एक बड़ी सेना, मुरसान और हाथरसपर चढ़ाई करनेके लिये भेजी गयी। मुरसानका तो बिना किसी कठिनाईके पतन हुआ, मुरसानमें अङ्गरेजी सेनाकी विजय हुई पर हाथरसमें रण-चण्डीका विकट ताण्डव हुआ। हाथरसका दुर्ग अलीगढ़, मथुराकी ओर बड़ा दृढ़ दुर्ग था। अंगरेजी सेनाको हाथरसके दुर्गपर विजय प्राप्त

करनेमें बड़ी कठिनाई प्राप्त हुई। संवत् १८७४ विक्रमीमें अंगरेजी सेनाने हाथरसपर धावा किया। कई दिनतक हाथरसके जाटोंके वीरता प्रकट करनेपर भी विजय लक्ष्मी ठाकुर दयाराम-से प्रसन्न न हुई। उसने अंगरेजोंको वरमाल पहना दी। कहा जाता है कि ठाकुर दयाराम अंगरेजोंसे सन्धि करनेको तैयार थे पर उनकी एक रखैल अहीर जातिकी स्त्री थी। उसके पुत्र, नेक-रामसिंहने उनको सन्धि करनेसे रोक दिया। यह भी कहा जाता है कि नेकरामसिंह अपने पिता ठाकुर दयारामका वध तक करने-को तैयार हो गया था। उसने ठाकुर दयारामकी हत्याकी उस समय चेष्टा की थी जिस समय ठाकुर दयाराम अंगरेजी छावनीसे पालकीमें लौट रहे थे। अपने बेटे नेकरामसिंहकी सामरिक रुचि देखकर, ठाकुर दयारामने भी अंगरेजोंसे युद्ध ठान दिया।

सच बात तो यह है कि इस युद्धमें ठाकुर दयारामका पतन, परमात्माको भी स्वीकार था। अंगरेजोंने बड़े जोर शोरसे हाथ-रसके दुर्गपर आक्रमण किया था। जिस समय ठाकुर दयाराम अंगरेजोंके मुकाबिलेमें अपने दुर्गकी रक्षामें व्यस्त थे, उस समय बारूदकी एक मेगज़ीन फट गई, जिससे ठाकुर दयारामकी सेना-की बहुत हानि हुई। वे रातके समय एक शिकारी टट्टू पर सवार होकर अपने किलेमेंसे भाग गये। उसी टट्टू पर हाथरससे भरतपुर पहुचे। बारह वर्ष पहले भरतपुरके राजा रणजीतसिंह-का अंगरेजोंसे जो युद्ध हुआ था उसका कारण यह था कि राजा

रणजीतसिंहने उनके शत्रु जसवन्तराय होल्करको अपने यहां शरण दी थी। उस समय चार, पांच वार लार्ड लेकको भरतपुरके दुर्गपर चढ़ाई करनेपर भी सफलता प्राप्त नही हुई थी। पर अब बारह वर्ष पहलेका भरतपुर नहीं रहा था। आश्रय चाहनेवाले ठाकुर दयारामको भरतपुरवालोंने आश्रय नही दिया। वहांसे वे जयपुरकी ओर भागे पर वहां भी उन्हें आश्रय नहीं मिला। आगे आगे दयाराम और पीछे पीछे अंगरेजी सेना घूमती रही। अंगरेजी सेनाने ठाकुर दयारामके किलेको तहस-नहस कर दिया। अंगरेजोंने उनकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली। अन्तमें अंगरेजी सरकार और ठाकुर दयाराममें समझौता हो गया। सरकारने केवल उनके जीवन-निर्वाहके लिये एक हजार रुपया मासिक पेंशन देना स्वीकार किया। , किसी किसी इतिहास-लेखकने दो हजार रुपया मासिक वृत्ति लिखी है।

स्वतन्त्रता पहरण होजानेपर ठाकुर दयाराम अङ्गरेजी सरकारसे मासिक वृत्ति पाते रहे और अलीगढ़में अपने नामसे छावनी डाल कर जीवनके शेष दिवस पूरे किये। ठाकुर दयाराम उदार हृदय भी थे। आज भी हाथरसके लोग ठाकुर दयारामका नाम बड़े प्रेम और चावसे लेते हैं। अभी तक ठाकुर दयारामकी दी हुई जमीन कितने ही मनुष्य वशपरम्परागतसे भोग रहे हैं। ठाकुर दयारामका देहान्त, संवत् १८९८ विक्रमीमें हुआ।

संवत् १८९८ विक्रमीमें ठाकुर दयारामकी मृत्युके पीछे उनके बेटे ठाकुर गोबिन्दसिंह गद्दीपर बैठे। थोड़े दिनों

पीछे संवत् १९१४ विक्रमीमें कुछ लोगोंने स्वाधीनता प्राप्त करने-के लिये अन्तिम उद्योग किया। जिसको कुछ लोग राज्यक्रान्ति, सिपाही-विद्रोह, गदर आदिके नामसे पुकारते हैं। पर सच पूछिये तो यह भारतका अन्तिम दीपनिर्वाण था। भारतके दीपनिर्वाणके समय ठाकुर गोविन्दसिंहके पास केवल एक गांव शाहगढ़ था। ग्राऊस साहबका कहना है कि वह गांव भी उस समय गिरवी रखा हुआ था। भारतके उस अन्तिम दीपनि-र्वाणके समय बहुतसे भारतवासियोंने अपने देशवासि-योंका साथ न देकर अच्छे अङ्गरेजोंका अच्छा साथ दिया था। स्वाधीनताके इस अन्तिम उद्योगमें ठाकुर गोविन्दसिंहने भी अपने हिन्दुस्तानी भाइयोंका साथ न देकर अङ्गरेजोंका साथ दिया था। अलीगढ़के तत्कालीन मजिस्ट्रेट मिस्टर ब्रामलेने स्पेशल कमिश्नरको संवत् १९१५ वि० (१४ वीं मई सन् १८५८ ई०) के पत्रमें गोविन्दसिंहकी सहायताके विषयमें इस प्रकार लिखा था:—"××× इन (ठाकुर गोविन्दसिंह) की राजभक्तिके कारण, इनकी बहुत भारी आर्थिक हानि हुई है। २५ वीं सितम्बरको इनकी तीस हजार रुपयेसे ऊपर हानि हुई है। दिल्लीसे लौटे हुए बागियोंने इनका वृन्दावनवाला मकान लूट लिया है। जिस से इनकी पैत्रिक सम्पत्तिकी इतनी हानि हुई है जो पूरी नहीं की जा सकती है। इस क्षतिको पूरा करनेके लिये अङ्गरेज सर-कारने ठाकुर गोविन्द सिंहको पचास हजार रुपये नकद दिये। मथुरा और बुलन्दशहरके जिलोंमें कुछ गांव दिये और राजाकी

रणजीतसिंहने उनके शत्रु जसवन्तराय होल्करको अपने यहां शरण दी थी। उस समय चार, पांच बार लार्ड लेकको भरतपुरके दुर्गपर चढ़ाई करनेपर भी सफलता प्राप्त नहीं हुई थी। पर अब बारह वर्ष पहलेका भरतपुर नहीं रहा था। आश्रय चाहनेवाले ठाकुर दयारामको भरतपुरवालोंने आश्रय नहीं दिया। वहांसे वे जयपुरकी ओर भागे पर वहां भी उन्हें आश्रय नहीं मिला। आगे आगे दयाराम और पीछे पीछे अंगरेजी सेना घूमती रही। अंगरेजी सेनाने ठाकुर दयारामके किलेको तहस-नहस कर दिया। अंगरेजोंने उनकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली। अन्तमें अंगरेजी सरकार और ठाकुर दयाराममें समझौता हो गया। सरकारने केवल उनके जीवन-निर्वाहके लिये एक हजार रुपया मासिक पेंशन देना स्वीकार किया। किसी किसी इतिहास लेखकने दो हजार रुपया मासिक वृत्ति लिखी है।

स्वतन्त्रता पहरण होजानेपर ठाकुर दयाराम अङ्गरेजी सरकारसे मासिक वृत्ति पाते रहे और अलीगढ़में अपने नामसे छावनी डाल कर जीवनके शेष दिवस पूरे किये। ठाकुर दयाराम उदार हृदय भी थे। आज भी हाथरसके लोग ठाकुर दयारामका नाम बड़े प्रेम और चावसे लेते हैं। अभी तक ठाकुर दयारामकी दी हुई जमीन कितने ही मनुष्य वंशपरम्परागतसे भोग रहे हैं। ठाकुर दयारामका देहान्त, संवत् १८९८ विक्रमीमें हुआ।

संवत् १८९८ विक्रमीमें ठाकुर दयारामकी मृत्युके पीछे उनके बेटे ठाकुर गोविन्दसिंह गद्दीपर बैठे। थोड़े दिनों

पीछे संवत् १९१४ विक्रमीमें कुछ लोगोंने स्वाधीनता प्राप्त करने-के लिये अन्तिम उद्योग किया। जिसको कुछ लोग राज्यक्रान्ति, सिपाही-विद्रोह, गदर आदिके नामसे पुकारते हैं। पर सच पूछिये तो यह भारतका अन्तिम दीपनिर्वाण था। भारतके दीपनिर्वाणके समय ठाकुर गोविन्दसिंहके पास केवल एक गांव शाहगढ़ था। ग्राऊस साहबका कहना है कि वह गांव भी उस समय गिरवी रखा हुआ था। भारतके उस अन्तिम दीपनि-र्वाणके समय बहुतसे भारतवासियोंने अपने देशवासि-योंका साथ न देकर अच्छे अङ्गरेजोंका अच्छा साथ दिया था। स्वाधीनताके इस अन्तिम उद्योगमें ठाकुर गोविन्दसिंहने भी अपने हिन्दुस्तानी भाइयोंका साथ न देकर अङ्गरेजोंका साथ दिया था। अलीगढ़के तत्कालीन मजिस्ट्रेट मिस्टर ब्रामलेने स्पेशल कमिश्नरको संवत् १९१५ वि० (१४ वीं मई सन् १८५८ई०) के पत्रमें गोविन्दसिंहकी सहायताके विषयमें इस प्रकार लिखा था —"××× इन (ठाकुर गोविन्दसिंह) की राजभक्तिके कारण, इनकी बहुत भारी आर्थिक हानि हुई है। २५ वीं सितम्बरको इनकी तीस हजार रुपयेसे ऊपर हानि हुई है। दिल्लीसे लौटे हुए बागियोंने इनका वृन्दावनवाला मकान लूट लिया है। जिस-से इनकी पैत्रिक सम्पत्तिकी इतनी हानि हुई है जो पूरी नहीं की जा सकती है। इस क्षतिको पूरा करनेके लिये अङ्गरेज सर-कारने ठाकुर गोविन्द सिंहको पचास हजार रुपये नकद दिये। मथुरा और बुलन्दशहरके जिलोंमें कुछ गांव दिये और राजाकी

उपाधि दी। संवत् १९१५ विक्रमी—२५वीं जून सन् १८५८ ई०-को लार्ड कैनिंगने राजा गोबिन्दसिंहको राजभक्तिकी एक सनद भी दी थी।

भरतपुर-नरेश स्वर्गीय महाराज जसवन्तसिंहके मामा रतन-सिंहकी बहिन और चौधरी चरणसिंहकी लडकीसे राजा गोबिन्द-सिंहका विवाह हुआ था। राजा गोबिन्दसिंहका देहान्त संवत् १९१८ विक्रमीमें हुआ। उनके एक बच्चा था, वह भी थोडे दिनों पीछे मर गया। अतएव जतौईके ठाकुर रूपसिंहके पुत्र हरिनारायणको राजा गोबिन्दसिंहकी स्त्रीने गोद लिया। जतौई, मुरसान और हाथरस तीनों स्थानोंके ठाकुरोंके वंशका एक ही स्थानसे उद्गम है। इस कारण राजा हरिनारायणसिंह-का दत्तकरूपसे ग्रहण किया जाना अनुचित नहीं हुआ। किन्तु ठाकुर दयारामका रखेली अहिरिन स्त्रीके पुत्र नेकरामसिंहके लड़के केसरीसिंहने हरिनारायणसिंहके दत्तक लिये जानेका विरोध किया। बहुत दिनतक दोनों ओरसे इस विषयमें मुकदमे-बाजी होती रही। अन्तमें दीवानी अदालत और हाईकोर्टसे राजा हरिनारायणसिंहकी जीत हुई। उनका दत्तक होना बहाल रहा।

राजा हरिनारायणसिंहका जन्म संवत् १९२० विक्रमीमें हुआ था। संवत् १९३३ विक्रमीमें दिल्ली दरबारके अवसरपर हरिनारायणसिंहको राजाकी उपाधि मिली। सम्वत् १९५२ वि० में राजा हरिनारायणसिंहका देहान्त हुआ। इन्हीं राजा

हरिनारायणसिंहके दत्तक पुत्र राजा महेन्द्रप्रताप हैं, जिनकी जीवनी हम यहा दे रहे हैं।

(३)

जन्म, शिक्षा और विवाह

राजा महेन्द्रप्रतापका वश-वृक्ष अन्यत्र प्रकाशित है, जिससे पाठकोंको ज्ञात होगा कि मुरसान और हाथरस दोनों राजवंशोंका उद्गम एक ही स्थानसे है। राजा महेन्द्रप्रतापका जन्म सम्वत् १९४३ विक्रमी—अगहन सुदी पञ्चमीको मुरसानमें हुआ। आपके जन्मदाता पूज्य पिताका नाम राजा घनश्यामसिंह था। राजा घनश्यामसिंह, सुप्रसिद्ध राजा टीकमसिंह सी० एस० आईके पौत्र थे। राजा घनश्यामसिंहके पिता कुँवर किशनसिंहका अपने पिता राजा टीकमसिंहके सामने ही देहान्त हो गया था। राजा घनश्यामसिंह भी सार्वजनिक कामोंमें योग देते थे। सम्वत् १९५६ विक्रमीमें जब काशीनागरीप्रचारिणी सभा और स्वनामधन्य पण्डित मदन मोहन मालवीयके उद्योगसे, सयुक्त प्रदेशके तत्कालीन छोटे लाट सर एन्टोनी मेकडानल्डकी सेवामें इस प्रान्तके कुछ नामी रईसोंका एक डेप्यूटेशन, अदालतोंमें नागरी-प्रचारकी प्रार्थना करनेके लिये गया था, उसमें हमारे चरित्रनायकके जन्मदाता, पिता राजा घनश्यामसिंह भी थे। राजा घनश्यामसिंह प्राय. मथुरामें रहा करते थे। उनके तीन पुत्र हुए—कुँवरदत्तप्रसादसिंह, कुँवर बलदेवसिंह और

कुँवर महेन्द्रप्रतापसिंह। ढाई वर्षकी अवस्थामें ही कुँवर महेन्द्र प्रतापको हाथरसके राजा हरिनारायणसिंहने दत्तक पुत्र स्वरूप ग्रहण किया। अतएव ये मुरसानसे वृन्दावन चले आये जहां राजा हरिनारायणसिंह रहते थे।

राजा महेन्द्रप्रतापको अपने प्रतिपालक पिता राजा हरिनारायणसिंहके लाडचावका बहुत दिन तक सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, क्योंकि जब आप आठ नौ वर्षके थे, तभी आपके पूज्य पिता राजा हरिनारायणसिंहका देहान्त हो गया।

राजा हरिनारायणसिंहकी मृत्युके पीछे रियासतका प्रबन्ध कोर्ट आव वार्ड्सके अधीन हुआ। कोर्ट आव वार्ड्सकी ओरसे मिस्टर हर्बर्ट जान स्मिथ नामक एक अङ्गरेज प्रबन्धकर्ता नियुक्त हुए।

राजा महेन्द्रप्रतापकी बाल्यावस्थाकी बातें विशेषरूपसे ज्ञात नहीं हुई हैं। प्रारम्भिक शिक्षा इनको घरपर ही दी गई। किन्तु पीछे आप अलीगढ़ हाई स्कूलमें भेज दिये गये। अलीगढ़ हाई स्कूलसे एन्ट्रेंस पास करनेके पीछे आप अलीगढ़ मुहम्मडन कालेजमें भेजे गये। वहींपर आपने अङ्गरेजीकी उच्च शिक्षा प्राप्त की। अलीगढ़ कालेजमें पढ़ते समय प्रायः आप छुट्टी

बिताया करते थे।

जब आप अलीगढ़ मुहम्मदन कालेजमें शिक्षा प्राप्त कर रहे एक ऐसी अघटनीय घटना हुई, जिससे आपके जीवनका बदल गया। सम्वत् १९६३ विक्रमीके फाल्गुन मासकी

बात है। अलीगढ़में प्रतिवर्ष प्रदर्शिनी हुआ करती थी, उस वर्ष भी प्रदर्शिनी थी। फाल्गुन कृष्ण ३० सम्वत् १९६३ विक्रमीको अलीगढ़की प्रदर्शिनीमें अलीगढ़ कालेजके कुछ विद्यार्थी गये थे। वहाँ एक विद्यार्थीकी पुलिसके एक कान्सटेबिलसे कहा सुनी और लडाई हो गई। भारतवर्षके अशिक्षित पुलिस कान्सटेबिल अपनेको बहुत कुछ समझते हैं, वे समझते हैं कि हम ही भारतके कर्ता धर्ता और विधाता हैं। बड़े बड़े शिष्ट और भद्र पुरुषके प्रति सभ्यतासे गिरा हुआ व्यवहार कर देना, उनके बांये हाथका खेल होता है। उनकी जबानमें लगाम नहीं होती है। आज कलकी तो बात ही दूसरी है, जमाना पलट गया है, गांधीयुग है पर पहले भी भारतवर्षके विद्यार्थी पुलिस कान्सटेबिलोंके असभ्यता पूर्ण व्यवहारको सहन करनेको बहुत कम तैयार होते थे। जिन दिनोंकी हम घटना लिख रहे हैं; उन दिनों वङ्गविच्छेदके कारण भारतवर्षमें नवीन ज्योतिकी स्फूर्त्ति हो चुकी थी। अलीगढ़ कालेजके विद्यार्थियोंमें भी आत्मसम्मानका भाव पैदा हो चुका था। अलीगढ़ कालेजका एक विद्यार्थी पुलिसके एक कान्सटेबिलका असभ्यता पूर्ण व्यवहार सहन नही कर सका। बस इसीपर लड़ाई हो गई। पुलिसके विधाता सुपरिण्टेण्डेण्ट को यह बात बुरी लगी कि एक विद्यार्थी पुलिस कान्सटेबिलके हुक्मकी उदूली करे और उसका सामना करे। उस समय अलीगढ़का प्रिन्सिपल एक अङ्गरेज था। पुलिस-विधाता सुपरिण्टेण्डेण्टने प्रिन्सिपलसे विद्यार्थियोंको "अपने तौर" (अर्थात्

कालेजसे) दण्ड देनेके लिये लिखा। अलीगढ़ कालेजके तत्कालीन प्रिन्सिपलने उक्त विद्यार्थीको कालेजसे तीन महीनेके लिये निकाल दिया और उससे कहा कि 'पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टसे मुआफी मांगो वर्ना सदैवके लिये पढ़ना बन्द किया जायगा।" विद्यार्थी गरम प्रिन्सिपलके इस प्रकारके बर्त्तावको बरदाश्त नहीं कर सके। उन्होंने कालेजके आनरेरी काम, खेल कूद सब बन्द कर दिये। इसको देखकर प्रिन्सिपलका गरम मिज़ाज़ कुछ ठण्ढा हुआ। उस विद्यार्थीको तीन दिनके भीतर निकल जानेकी आज्ञा दी। विद्यार्थियोंने सभा करके यह प्रस्ताव निश्चित किया कि न तो हम उस विद्यार्थीको कालेजसे निकलने देंगे और न हमलोग दूसरे रोजसे कालेज ही जायंगे। जिस समय यह सभा हो रही थी तो कालेजके एक प्रोफेसर ब्राउन साहबने सभा तोड़नी चाही और विद्यार्थियोंसे कुछ कड़ी बातें भी कहीं। इसपर दोनों ओरसे कहा सुनी हुई। उस समय प्रिन्सिपल महोदय भी आ गये। उन्होंने कुछ कड़ी बातें कहीं। इसपर विद्यार्थियोंने हडताल कर दी। यह बड़ी ज़बरदस्त हड़ताल हुई। प्रिन्सिपलने लड़कोंके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था। उन्होंने लड़कोंको राजनीतिक व्याख्यानोंमें जाने तकसे रोका था और लड़कोंसे कहा था कि तुम्हारे लीडर तो गोखले हैं। इस हड़ताल सम्बन्धी बहुतसी बातें हैं, जिनको यहां लिखना विषयान्तर है। जिनको इस हड़तालका विशेष हाल जानना हो वह उस समयके अखबार पढ़ें। विशेषतः मुरा-

दावादका पुराना उर्दू पत्र 'नयरे आजम" कलकत्ताका "भारत मित्र" और लाहोरका* "स्वदेशबन्धु"। यहा इतना ही कहना है कि हमारे चरित्र-नायक राजा साहबने भी इस हड़तालमे पढ़ना छोड दिया। उन दिनों वे बी० ए० में थे। इसके बाद वे अलीगढ़-मुहम्मदन कालेजमें फिर कभी नहीं गये और कुछ दिन आगरेमें पढ़े। बिना डिग्री हासिल किये ही उन्होंने कालेज परित्याग कर दिया।

सम्वत् १९५९ विक्रमीमें १६ वर्षकी अवस्थामें राजा महेन्द्र-प्रतापका झींदके राजाकी लड़कीसे विवाह हुआ।

(४)

पहली यूरोप-यात्रा

कालेज छोडनेके पीछे, राजा महेन्द्रप्रतापने पहली यूरोप-यात्रा की। साथमें वे अपनी रानीको भी ले गये थे। इस यात्रामें राजा साहबने बड़ा अनुभव प्राप्त किया। विलायती रीति-रिवाज, समाजिक रहन-सहन आदि कई बातें तो उन्होंने देखी ही थीं, पर वहां उन्होंने कितनी ही शिक्षण संस्थाओंका भी निरीक्षण किया जिससे उन्हें शिक्षा सम्बन्धी कितनी ही बातोंका अनुभव हुआ। विलायतमें रहते समय ही उन्हें भारतमें शिल्प वैज्ञानिक और औद्योगिक शिक्षाके प्रचारकी आवश्यकता प्रतीत

*—बहुत दिन हुए यह अखबार बन्द होगया, उन दिनों इन पंक्तियोंका लेखक, उसका सम्पादक था।

हुई थी। विलायतमें रहते समय उनके चित्तपर यह बात भली भांति बैठ गई कि बिना शिल्प और औद्योगिक शिक्षाके भारतकी दरिद्रता दूर नहीं हो सकती है। भारतकी आर्थिक दासताको दूर करनेके लिये शिल्प और व्यापारिक शिक्षाकी अत्यन्त आवश्यकता है। इस विचारको धारण करके राजा महेन्द्रप्रताप विलायतसे हिन्दुस्तान लौटे।

लौटते समय रास्तेमे आपकी सहधर्मिणी बहुत बीमार हुईं। इससे आप बडे सङ्कटमें फंस गये। आपने ईश्वरसे अपनी स्त्रीकी आरोग्यताके निमित्त प्रार्थना की और भगवानके दरबारमें आपकी यह प्रार्थना मंजूर हुई। आपकी रानी साहिबाका स्वास्थ्य सुधर गया और सकुशल वृन्दावन लौट आये।

जब आप वृन्दावन पहुंचे तब एक पंडाने आपसे पूछा कि राजा साहब! आप विलायतसे क्या लाये हैं? आपने हसकर पंडाको उत्तर दिया कि विलायतसे मैं बहुत अच्छी चीज लाया हूं, किन्तु मैं तुमको उसे दे नही सकता। फिर आपने उसे एक दुशाला देकर कहा कि तुम भीख मांगना छोड़ दो।

यूरोप-यात्रासे लौटनेके पीछे आपने नैनीतालमें एक कोठी खरीदी।

(५)
नैनीतालका स्वप्न

नैनीतालके दृश्यसे आपके हृदयपर कितना प्रभाव हुआ, सो नीचे प्रकाशित नैनीतालका स्वप्न शीर्षक लेखसे प्रगट होता है।

नैनीताल एक साधारण पहाड़ी स्थान है या देवलोकका कोना ? यही प्रश्न मेरे जीमें बार बार उठता है। लोग तो कहते हैं कि नहीं, नैनीताल वही जगह है जहां ग्रीष्मऋतुमें युक्तप्रान्तके लाट महोदय निवास करते हैं। वह वही स्थान है जिसकी सैकड़ों अंग्रेज व हिन्दुस्तानी गरमीके मारे शरण लेते हैं। परन्तु न मालूम क्यों मुझे न तो यह महाशयगण ही दिखाई पड़ते हैं न लाट साहबके ही दर्शन होते हैं। मुझे तो केवल यहांकी रानी नैनादेवीही इधर उधर घूमती नजर पड़ती हैं। इनकी सखियां वृक्षरूप हर तरह खड़ी दिखाई देती हैं। या मैं उन पहाड़ियोंको देखता हूं जो जमीनसे इनके दर्शनको निकली थीं और झांकी पा अमर हो गई हैं। इनका रंगरूप देख चकित हो खड़ीकी खड़ी रह गई हैं। अब देवीजी नैनीतालके सिंहासनपर विराजमान हो, सखियोंका दरबार करती हैं। पवन पंखा करता है तो सखियां चवँर हिलाती हैं। इनके सामने तालकी रंगभूमिमें आ सूर्य्य-चन्द्रमा और तारे बारी बारी नृत्य करते हैं। दिन रात भी इनके ही दर्शनको आते जाते हैं। वृक्ष बाजे बजाते हैं और पक्षी गाना गाते हैं। फिर बादलकी छवि देखकर इन पर मोती बरसाते हैं। देवता इस समय नगाड़े बजाने लग जाते हैं। हैं! यह क्या हुआ!! बादल गर्जा!! लो कमबख्त बारिश भी होने लगी। क्या आफत है जैसे तैसे जरा मौसम अच्छा होता है कि जब बारिश होने लग जाती है, ठंढ बढ़ जाती है और इस समय यह दुष्ट बादल कहांसे आ गया। मेरी नींद उड़ाई। बचारे

स्वप्नका भी मजा मुझसे लूट लिया। मुझे देव लोकसे खींच इस मनुष्य लोकमें ही छोड़ दिया। अरे मैं तो उसी नैनीताल पहाड़ी ग्राममें हूं, जहां सैकड़ों जगह विचारे पहाड़के बदनको काट २ कोठी व मकानोंकी फंसरें घुसाई गई हैं, उसी जगह हूं जहां पहाड़ियोंको चीर फाड़ रास्तोंकी पट्टी बांधी गई हैं। यह तो वही नैनीताल है जहां नैना देवीको तो एक कोठरीमें पोलो मैदानके नीचेकी तरफ बन्द किया गया। इस जगह तो पेड़ चारों तरफ हवाके मारे रो रहे हैं। यहां तो बादल कोपसे पानीकी बौछाड मार रहे हैं। मैं कहां था और कहां आ गया, देवताओंका सङ्ग छूटा मनुष्योंमें आ गया और मनुष्य भी कैसे रुपयेके नशेमें चूर, बल पाकर अन्धे और मतवाले! यहां तो कल फिर अपने गरीब भाइयोंको अमीरोंकी सड़कसे हटाये जाते देखूंगा। पुलिस-वालेको रास्तेसे हट हट कहते पाऊंगा। ओ अमीर भाई। क्या जमीन तेरे दादाकी मौरूसी है जो तू गरीब भाईको रास्तेसे हटाता है। अपने लिये एक और गरीबके लिये दूसरा मार्ग बताता है। याद रहे तू और गरीब इस जहानमें एक ही मार्गसे निकले हैं, मर कर एक ही मार्ग पर तुम सब जाओगे। कालसे तू यह न कह सकेगा कि गरीबको लेजा या मुझे छोड़ जा। उस दिन तुम सबको एक ही सड़कपर चलना होगा। गरीब भाईके साथ कांधे मिला रास्ता तै करना होगा। अन्धेर! अन्धेर! यह बात कबतक चलेगी। गरीबके लिये एक सड़क और अमीरके लिये दूसरी, यह बात मुझे आखिर हटानी

पड़ेगी। आ—हा—हा—नींद आती है . खऊ . खऊ . खऊ क्या नैनीतालके स्वप्नमें :राजा साहेबकी सहृदयताका पता नहीं लगता है।

(६)

प्रेम महाविद्यालयकी स्थापना

संवत् १९६६ का ज्येष्ठ मास व्रजमण्डलके लिये, नहीं नहीं, समस्त भारतवर्षके लिये शुभदायक था। जिस हिन्दुस्तानमें एक समय विद्या-दान, सब दानोंमें श्रेष्ठ समझा जाता था, समयके हेरफेरके कारण आज उस हिन्दुस्तानमें विद्याका भी क्रय विक्रय होने लग गया है। सरकारी पाठशालाओंमें फीस इतनी बढ़ गई है कि साधारण गृहस्थको अपने लड़कोंको उच्च शिक्षा देना बड़ा कठिन सौदा है। जैसे तैसे इस कठिन सौदेमें हाथ भी डाला जाय तो परिणाम क्या होता है? वही ढाकके तीन पात'—उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर अनेक नवयुवकोंकी "धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका" दशा हो जाती है। इस शिक्षा पद्धतिमें सबसे बढ कर यह दोष है कि चाहे जैसी साहित्यिक योग्यता क्यों न आ जाय, चाहे जैसा उच्च ज्ञान, विज्ञान क्यों न प्राप्त हो जाय पर एक बडी कमी यह रह जाती है कि हम नित्य प्रतिके आवश्यक कर्मोंको पूरा नहीं कर सकते हैं। हाथ पैर होते हुए भी अपनी मामूली जरूरतोंके लिये हम दूसरोंका मुंह ताकते रहते हैं। अब इस देशमें कितनी ही सार्वजनिक संस्थायें इस कमीको पूरी करने लगी हैं। १८ १९ वर्ष

हैं। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंका समुचित सहयोग न होनेकी दशामें देशकी यथेष्ट उन्नति कैसे हो। अन्ततः आपने २४ मई सन् १९०९ ई० को प्रेम महाविद्यालयकी स्थापना करके अपने त्याग और उदारताका एक अद्वितीय और कल्याणकारी परिचय दिया। आपने अपने विशाल राजकीय भवनमें ही इस शिक्षण संस्थाको समर्पित नहीं कर दिया, बल्कि अपने पांच गांव भी (जिनकी आमदनी सब खर्च काटकर लगभग ३३ हजार रूपये प्रति वर्ष होती है) इस सरस्वती मन्दिरकी भेंट कर दी। श्रीराजा साहब प्रेम महाविद्यालयको यह आर्थिक दान देकर ही न रह गये वरन आपने अवैतनिक सेक्रेटरी तथा गवर्नर रह कर तन मनसे भी इसकी भरसक सेवा की और कुछ समय तक विद्यार्थियोंको विज्ञान आदि विषय पढ़ाकर भी अपने शिक्षा प्रेमका अच्छा परिचय दिया। वास्तवमें राजा साहबने शिक्षा विषयक अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। प्रेम-महाविद्यालय स्वतन्त्र शिक्षण संस्था है। उसका किसी सरकारी अथवा गैर-सरकारी विश्वविद्यालय-से सम्बन्ध नहीं है। बल्कि यह एक नितान्त स्वतन्त्र राष्ट्रीय महाविद्यालय है जो जाति, सम्प्रदाय, रङ्ग और मतमतान्तरके भेद भावको छोड़कर सब प्रान्तोंके भारतीय नवयुवकोंको स्वस्थ, स्वतन्त्र और देश प्रेमी नागरिक बननेकी शिक्षा देता है। उस समय आपने प्रेम महाविद्यालयके मन्तव्य और उद्देश्य इस प्रकारसे रखे थे:—(१) एकता, (२) समता (३) भ्रातृ भाव (४) देश-प्रेम (५) स्वाधीनता।

(१) मनुष्य जातिमें प्रारम्भिक शिक्षाका प्रचार हो।

(२) उच्च श्रेणीकी शिल्पकला तथा व्यापारिक शिक्षा दी जाय।

(३) मनुष्योंको स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान कराया जाय।

(४) जातीय बुराइयोंको दूर कर सबमें प्रेमका संचार हो।

(५) प्राचीन समयकी गिरी हुई शिल्पकलाका पुनः उत्थान कर वर्तमान ढङ्गपर उसकी उन्नति की जाय।

(६) पश्चिमी सभ्यताको पूर्वी सभ्यतासे मिला कर भारतवर्षमें एक जातीयताका सङ्गठन करना।

(७) इसके अतिरिक्त विश्वकर्मा, वाणिज्य, कृषि तथा शिल्प कलाकी शिक्षा देनेवाला एक महाविद्यालय उचित स्थानपर स्थापित किया जाय। इस उद्देश्यकी पूर्त्तिके लिये प्रेम-महाविद्यालयकी स्थापना हुई, जो अब तक चल रहा है।

स्थित है। विद्यालयके साथ एक छात्रावास (बोर्डिंग हाउस) भी है। पहले छात्रावास केलाकुञ्ज तथा आवागढ़की कुञ्जमें था। अब विद्यालयके पास ही राजा साहबके राजभवनमें है।

विद्यालयमें कारपेन्ट्री (बढ़ईका काम) ड्राइङ्ग (चित्रकारी) कामर्स, पोटरी (चीनीके वर्तन वगैरह बनाना) तथा अन्य औद्योगिक विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। हिन्दी अंग्रेजीकी भी शिक्षा दी जाती है पर हिन्दीको विशेष महत्व दिया गया है। पहले सर्वे (Survey) एञ्जिन ड्राइविंग और स्पेशल ड्राइंगकी क्लासें भी थीं पर छात्रोंके अभावसे तोड दी गईं। मानों यहां उलटी बात हुई कि पढ़ानेवाले मिलते हैं पर पढ़नेवाले नहीं मिलते। कपड़ा बुननेका काम भी सम्वत् १९७७ विक्रमीसे सिखलाया जाता है। सम्वत् १९७६ वि० से महिला वस्त्रकला कक्षा भी खोल दी गई है। विद्यालयके साथ एक वर्कशाप भी है जो पहले केलाकुञ्जमें था, अब विद्यालयके पास ही केशी-घाटपर है। सम्वत् १९७३ वि० में इस विद्यालयके अन्तर्गत खेती आदि करनेवाली जातियोंके नवयुवकोंको शिक्षा देनेके लिये मथुरा जिलेके जटवारी, मभोई, उभियानी और हुसैनी स्थानोंमें चार प्रेमप्रताप पाठशालायें तथा बुलन्दशहरके जिले बराला और धमेड़ामें दो प्रेम पाठशालायें खोली गईं। प्रेम महाविद्यालयके साथ एक प्रेस (छापाखाना) भी है जिसका नाम—"विद्यालय" है। यह प्रेस सम्वत् १९६८ वि०में खोला गया। पहले विद्यार्थियों-का प्रेसका काम भी सिखलाया जाता था और जिल्दसाजी भी

सिखाई जाती थी। पर सम्वत् १९७१ वि० से यह काम बन्द हो गया है। अब कुछ विद्यार्थी इस विषयको एपरेंटिस (Apprentice) की भांति सीख सकते हैं। विद्यालयसे "प्रेम" नामक हिन्दी भाषाका एक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है। सम्वत् १९६९ वि० में इस "प्रेम" पत्रका जन्म हुआ। पहले यह पत्र दसवें दिन निकलता था, उन दिनों स्वयम् राजा साहब इसका सम्पादन करते थे। उन दिनों यह पत्र उनका निजी था। कुछ दिनों पीछे उन्होंने यह पत्र प्रेम महाविद्यालयको दे दिया। पत्र साप्ताहिक होगया। हिन्दीके सुप्रसिद्ध लेखक, स्वर्गीय पण्डित रुद्रदत्तजी शर्माने दो तीन वर्ष तक प्रेमका सम्पादन किया।

राजा साहब बड़े मिलनसार हैं। वे एकान्त सेवी नहीं हैं। वे "क्लब लाईफ" अर्थात एक स्थान पर दस, बीस आदमियोंका आपसमें विचार परिवर्तन करना बहुत पसन्द करते हैं। सम्वत् १९७० वि० की बात है। श्रावणका महीना था। दिल्लीसे उन दिनों बन्धुवर श्रीइन्द्रजी विद्यावाचस्पति "सद्धर्म प्रचारक" निकालते थे। इस निबन्धका लेखक भी उनके साथ काम करता था। श्रीहरिश्चन्द्रजी विद्यालंकार भी आये हुए थे। हम तीनों आदमी आपसमें बैठे हुए बाते कर रहे थे कि यकायक राजा साहब आगये और इस निबन्धके लेखकको अपने साथ भ्रमण करनेके लिये लेगये और "क्लब लाईफ" के विषयमें बहुत देर तक बाते करते रहे और उस बातचीतका यह परिणाम हुआ कि

उन्होंने उसी वर्ष अपने प्रेम महाविद्यालयमें "प्रेम क्लब" स्थापित किया, जो अभीतक मौजूद है। पहले इस क्लबमें सब अध्यापकों का भाग लेना अनिवार्य्य था और विद्यालयके अतिरिक्त, बाहरके सज्जन भी इसमें सम्मिलित हो सकते थे, अब अध्यापकोंकी इच्छापर निर्भर है चाहे शामिल हों या न हों।

प्रेम क्लबके निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

(१) सभासदोंके मनोविलास और स्वास्थ्य वृद्धिके निमित्त समाचारपत्र और पुस्तक-संग्रह कर पुस्तकालय तथा वाचनालय एवम् भीतरी और बाहरी खेलोंका प्रबन्ध रखना।

(२) प्रेम महाविद्यालयके दीन और निर्धन विद्यार्थियोंको सहायता करना।

(३) सर्वसाधारणकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नतिके निमित्त नाटक-मण्डली द्वारा नाटक खेलना।

(४) परस्पर प्रेम और भ्रातृभावका प्रचार करना।

(५) प्रेम महाविद्यालयकी सहायता और शिक्षा-प्रणालीके सुधारके लिये प्रयत्न करना।

(६) ग्रामकी उन्नतिके लिये प्रत्येक उपायको उपयोगमें लाना।

राजा साहब प्रेम-महाविद्यालयको एक आदर्श और उच्च विद्यालय बनाना चाहते थे। प्रारम्भमें विद्यालयके साथ, एक औषधालय (Dispensary) भी खोला गया था। विद्यार्थी और अध्यापकोंके अतिरिक्त सर्वसाधारणको भी इस औषधालय-

सिखाई जाती थी। पर सम्वत् १९७३ वि० से यह काम बन्द हो गया है। अब कुछ विद्यार्थी इस विषय को एपरेंटिस (Apprentice) की भांति सीख सकते हैं। विद्यालयसे "प्रेम" नामक हिन्दी भाषाका एक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है। सम्वत् १९६९ वि० में इस "प्रेम" पत्रका जन्म हुआ। पहले यह पत्र दसवें दिन निकलता था, उन दिनों स्वयम् राजा साहब इसका सम्पादन करते थे। उन दिनों यह पत्र उनका निजी था। कुछ दिनों पीछे उन्होंने यह पत्र प्रेम महाविद्यालयको दे दिया। पत्र साप्ताहिक होगया। हिन्दीके सुप्रसिद्ध लेखक, स्वर्गीय पण्डित रुद्रदत्तजी शर्माने दो तीन वर्ष तक प्रेमका सम्पादन किया।

राजा साहब बड़े मिलनसार हैं। वे एकान्त सेवी नहीं हैं। वे "क्लब लाईफ" अर्थात एक स्थान पर दस, बीस आदमियोंका आपसमें विचार परिवर्तन करना बहुत पसन्द करते हैं। सम्वत् १९७० वि० की बात है। श्रावणका महीना था। दिल्लीसे उन दिनों बन्धुवर श्रीइन्द्रजी विद्यावाचस्पति "सद्धर्म प्रचारक" निकालते थे। इस निबन्धका लेखक भी उनके साथ काम करता था। श्रीहरिश्चन्द्रजी विद्यालंकार भी आये हुए थे। हम तीनों आदमी आपसमें बैठे हुए बाते कर रहे थे कि यकायक राजा साहब आगये और इस निबन्धके लेखकको अपने साथ भ्रमण करनेके लिये लेगये और "क्लब लाईफ" के विषयमें बहुत देर तक बातें करते रहे और उस बातचीतका यह-परिणाम हुआ कि

उन्होंने उसी वर्ष अपने प्रेम महाविद्यालयमें "प्रेम क्लब" स्थापित किया, जो अभीतक मौजूद है। पहले इस क्लबमें सब अध्यापकों का भाग लेना अनिवार्य्य था और विद्यालयके अतिरिक्त, बाहरके सज्जन भी इसमें सम्मिलित हो सकते थे, अब अध्यापकोंकी इच्छापर निर्भर है चाहे शामिल हों या न हों।

प्रेम क्लबके निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

(१) सभासदोंके मनोविलास और स्वास्थ्य वृद्धिके निमित्त समाचारपत्र और पुस्तक-संग्रह कर पुस्तकालय तथा वाचनालय एवम् भीतरी और बाहरी खेलोंका प्रबन्ध रखना।

(२) प्रेम महाविद्यालयके दीन और निर्धन विद्यार्थियोंकी सहायता करना।

(३) सर्वसाधारणकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नतिके निमित्त नाटक-मण्डली द्वारा नाटक खेलना।

(४) परस्पर प्रेम और भ्रातृभावका प्रचार करना।

(५) प्रेम महाविद्यालयकी सहायता और शिक्षा-प्रणालीके सुधारके लिये प्रयत्न करना।

(६) क्लबकी उन्नतिके लिये प्रत्येक उपायको उपयोगमें लाना।

राजा साहब प्रेम-महाविद्यालयको एक आदर्श और उच्च विद्यालय बनाना चाहते थे। प्रारम्भमें विद्यालयके साथ, एक औषधालय (Dispensary) भी खोला गया था। विद्यार्थी और अध्यापकोंके अतिरिक्त सर्वसाधारणको भी इस औषधालय-

से लाभ पहुंचता था। पर अन्य आवश्यक कार्य्योंमें धनकी अधिक आवश्यकता होनेके कारण संवत् १९६९ वि० में यह औषधालय बन्द कर दिया गया।

यहां यह लिख देना भी आवश्यक है कि इस विद्यालयमें विद्याका सौदा नहीं किया जाता है, विद्या वेची नहीं जाती है। मुफ्त शिक्षा दी जाती है।

राजा साहब सदैव एकतन्त्र और स्वच्छन्द शासनके विरोधी रहे हैं। उन्होंने विद्यालयको विपुलदान देनेपर भी उसमें मनमानी बातें प्रचलित नहीं कीं। उनका बहुमतमें बड़ा गहरा विश्वास रहा है, उन्होंने विद्यालयके स्थापित होते ही, सर्वसाधारण द्वारा चुने हुए आदमियोंकी एक कमेटीके प्रबन्धमें विद्यालय सौंप दिया। सवत् १९१७ विक्रमी (सन् १८६० ई०) के ऐक्टके अनुसार यह संस्था रजिस्टर्ड है। राजा साहबने आनरेरी सेक्रेटरी और गवर्नर रहकर तनमनसे भी विद्यालयकी अच्छी सेवा की है।

प्रेम क्लबके अतिरिक्त आपने क्लबके सभासदोंके मनोविलास और स्वास्थ्य-वृद्धिके निमित्त समाचारपत्र और पुस्तक संग्रह करके पुस्तकालय और वाचनालय भी खोले। बाहरी और भीतरी खेलोंका प्रबन्ध किया। आप खेलोंमें बड़ा अनुराग रखते हैं। प्रेम महाविद्यालयके दीन और निर्धन विद्यार्थियोंको आप आर्थिक सहायता करते रहे। विद्यार्थियोंको पुस्तकें देनेके अतिरिक्त आप उन्हें नोट् बुकें (स्मरण-वही) भी देते थे, जिसमें वे अपने भले-बुरे

विचार और आचरणोंका उल्लेख करें। प्रेम महाविद्यालयकी उन्नतिके लिये आपने दूसरे साधनोंका भी सहारा लिया था। आपने एक प्रचारक मण्डली बनाई। यह मण्डली व्याख्यानों द्वारा प्रचार करती थी। संवत् १९७० विक्रमीमें कुछ प्रतिष्ठित मनुष्योंका एक डेप्पूटेशन लेकर भी आप कई स्थानोंमें प्रेम महाविद्यालयके लिये चन्दा इकट्ठा करनेके लिये गये थे।

नाटक मण्डली—राजा साहब लोक शिक्षा और लोकमतको जागृत करनेके लिये सब ही साधनोंसे काम लेना चाहते थे। आपने सर्वसाधारणकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नतिके लिये नाटक मण्डली भी स्थापित की थी, जिसके द्वारा नाटक खेले जाते थे। राजा साहबने स्वयं एक नाटककी रचना की थी। नाटक-मण्डलीमें सबसे प्रथम आपहीका बनाया हुआ नाटक खेला गया था। दर्शकोंने इस नाटकको बहुत पसन्द किया। इस नाटकको देखकर अनेक दर्शकोंकी प्राय यह सम्मति हुई कि जैसे बालकोंके लिये किन्दर गार्डनकी शिक्षा उपयोगी होती है, वैसे ही इस नाटकने सर्वसाधारणमें शिक्षा-प्रचारका कार्य्य किया है।

शिक्षा-कान्फरेंस—संवत् १९६७ वि० में इस प्रान्तकी राजधानी, गङ्गा और यमुनाके सङ्गम तीर्थ राजप्रयागमें एक बड़ी भारी प्रदर्शिनी हुई थी। इस प्रदर्शिनीमें दूर-दूरसे अनेक राजा, महाराजाओंसे लेकर, झोपड़ोंके बसनेवाले किसान तक आये थे। प्रदर्शिनीके अतिरिक्त राष्ट्रीय महासभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस) तथा दूसरी सभाओंके भी अधिवेशन हुए थे।

राजा महेन्द्रप्रतापने इस अवसरको भी नहीं छोड़ा। आप अपने खर्चसे प्रेम महाविद्यालयके सब छात्रों अध्यापकों तथा अन्य कर्मचारियोंको प्रयाग ले गये। सब छात्रों तथा कर्मचारियोंकी एकसी ही पोशाक थी। आप स्वयं भी उसी पोशाकमें थे, जिसमें सब लोग थे। प्रयागकी प्रदर्शिनीके समय आपने एक शिक्षा कान्फरेंस भी की थी, 'उसके सभापति झालरापाटनके महाराज भवानीसिंह के० सी० एस० आई० थे। शिक्षा सम्बन्धी कितनी ही जटिल समस्याओंपर विचार किया गया था। इस शिक्षा कान्फ्रेंसमें भारतके कितने ही नामी नेता उपस्थित थे। राजा साहबके शिक्षा-सम्बन्धी कैसे विचार हैं, उसका पता—"स्वास्थ्य रक्षा और शिक्षा"—शीर्षक दो लेखोंसे लगता है। आपके यह दोनों लेख पाठकोंके अवलोकनार्थ नीचे प्रकाशित किये जाते हैं:—

स्वास्थ-रक्षा

प्रिय पाठक ! तुम परमात्माका ध्यान करो अथवा संसारका, तुम आत्म-सम्बन्धी प्रश्नोंपर विचार करो अथवा शरीर सम्बन्धी, भविष्यकी चिन्ता करो अथवा भूतकालकी, सदैव स्मरण रक्खो, कि तुम्हारे सब ख्यालात, चिन्तनकी शक्ति और तुम्हारी बुद्धि भी सब तुम्हारे दिमाग (मस्तिष्क) पर निर्भर है और तुम्हारा दिमाग तुम्हारे स्वास्थ्यके अनुसार काम करता है। अगर तुम तन्दुरुस्त नहीं हो या अगर तन्दुरुस्त होनेकी कोशिश नहीं करते तो तुम अब या भविष्यमें कुछ उपयोगी कार्य्य नहीं कर सकते।

इसलिये अगर तुम स्वयं अपनी उन्नति चाहते हो, या तुम्हें धर्म सेवा करनेका विचार है तो सबसे पहले अपनी तन्दुरुस्ती कायम रखो अथवा अगर तुम पहले ही अपनी सेहत खराब कर चुके हो तो उसे सुधारनेका पुनः प्रयत्न करो।

लेकिन यह नहीं समझा जाना चाहिये कि स्वास्थ्यका यह अभिप्राय है कि तुम अपनी स्त्रीसे (या स्त्री अपने पतिसे) अधिक वार भोग विलास कर सको, न तन्दुरुस्ती उसे ही कह सकते हैं कि तुम्हारा दिल हमेशा बुरे विचारोंमें फंसा रहे। वही आदमी स्वस्थ है जो अपने शरीरको तन्दुरुस्त रखते हुए अपने दिल-दिमाग-पर इतना काबू रख सके कि अपने आपको बुराइयोंसे बचाते हुए सदा नेकीके रास्तेमे बढ़ता चले। अगर तुम तन्दुरुस्त रहना चाहते हो तो मनपर काबू रखना सीखो और स्वास्थ्यके अच्छेसे अच्छे नियमोंके अनुसार कार्य्य करो। अनुचित आत्मवाद, काम, क्रोध, असत्य भावना, असत्य प्रेम, घृणा, द्वेष, धन या पदको तृष्णाकी बीमारियां समझकर उनका इलाज़ करो, अपने बदनको साफ़ करो और उचित समयपर खाओ, पीओ, सोओ और काम करो। अपने मकान, महल्ले या नगरके पास कभी मैला इकट्ठा न होने दो। न तुम्हें कभी ऐसा ही कोई काम करना चाहिये जिससे तुम्हारे पड़ोसीका स्वास्थ्य खराब हो।

लेकिन, बीमार आदमी! तुम्हें निराश नहीं होना चाहिये और न ऐसा समझना चाहिये कि केवल तन्दुरुस्त आदमी ही धर्मात्मा हो सकते हैं। नहीं, धर्म तुम्हारे मनकी हालतको देखता

है। अगर तुम तन्दुरुस्त रहनेकी भरसक कोशिश करते हुए अपनी तरफसे धर्मकी पूरी सेवा करते रहोगे तो उसका बढ़िया पारितोषिक मिलेगा तुम्हें वही पारितोषिक मिलेगा जो कोई तन्दुरुस्त आदमी धर्मकी अच्छी सेवा करके प्राप्त कर सकता है, क्योंकि 'एक आने या एक हजार' रुपयेके दानके पारितोषिकका हिसाव इस रक़मके अनुसार नहीं लगता है बल्कि मनकी हालतके हिसाबसे लगता है। जैसे मनसे कोई काम करता है, वैसे ही मनसे वह इनाम पाता है।

प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

शिक्षा

अपनी तन्दुरुस्ती कायम रखो और अपने आपको शिक्षित करो। पढ़ो, लिखो, दुनियाको देखो और अपने अनुभवसे उसे कुछ बेहतर बनानेकी कोशिश करो। शिक्षाकी अथवा शिक्षा द्वारा धर्म-सेवाकी कोई सीमा नहीं है। जबतक इन्द्रियां काम करती हैं, शिक्षा प्राप्त होती है और धर्मकी सेवा भी की जा सकती है। अगर स्वास्थ्यकी दशामें दिमाग काम करता है तो शिक्षाके अनुसार ही दिमाग सफलता प्राप्त कर सकता है। दिमागके लिये शिक्षा भोजन है, शिक्षा औषधि है, शिक्षा दिमागको बनाती है, बिना शिक्षाके दिमागको खाली ढोल कहा जाता है। धर्म अथवा संसारकी सब उन्नति मनुष्यकी उन्नतिपर निर्भर है और मनुष्यकी उन्नतिका हिसाब शिक्षाके अनुसार लगाया जाता

है, शिक्षा जितनी विस्तृत होगी, उन्नति उतनी अधिक होगी, जिस कदर अज्ञान होगा, उसी कदर अवस्था अवनत होगी। इसलिये बिना द्वेष भावके भिन्न भिन्न सब विज्ञानोंको जाननेके वास्ते तुम्हें मनुष्य-कर्त्तव्यका विचार करना चाहिये। तुम्हें चाहिये कि कभी भी मानवी जनताको पुरानीसे पुरानी या नयीसे नयी शिक्षासे लाभ उठानेसे न रोको। अगर तुम स्वस्थ हो या स्वस्थ होनेका प्रयत्न कर रहे हो और अधिकाधिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हो तो निस्सन्देह तुम मंजिलके पास पहुंच रहे हो। अगर तुम पहिलेसे धार्मिक नहीं हो और तुम धर्मकी सेवा भी नहीं कर रहे हो तो भी तुम्हें विश्वास रखना चाहिये कि ज्योंही शिक्षा काफी हो जायगी तुम ठीक रास्तेपर आ जाओगे और ब्रह्माण्डकी कुछ सच्ची सेवा करनेके योग्य हो जाओगे।

लेकिन ऐ अज्ञानी पुरुष! तुमको भी निराश नहीं होना चाहिये। तुम्हें यह ख्याल नहीं करना चाहिये कि अशिक्षित आदमी ब्रह्माण्डकी कुछ सेवा नहीं कर सकता और पूर्ण उन्नति नहीं कर सकता और इसलिये तुम्हारा जीवन अधम है। यदि तुम एक बारगी ही उस पुरष्कारके अधिकारी न हो सके जो अधिकसे अधिक विद्वान प्राप्त कर सकता है तो भी निराश न हो। अगर तुम ईमानदारीसे भर सक कोशिश कर रहे हो कि तुम स्वस्थ बने रहो या स्वास्थ्य प्राप्त करने और हमेशा कुछ अधिक शिक्षा प्राप्त करनेकी यथाशक्य चेष्टा करो तो निस्सन्देह अपने स्वास्थ्य और शिक्षाके अनुसार तुम भी धर्मकी सेवा करते

हो। तब कोई तुमसे अधिक पुरस्कार कैसे पा सकता है? क्योंकि हम पहिले ही नहीं बता आये हैं कि धार्मिक पुरस्कारका हिसाब मनकी दशाके अनुसार लगाया जाता है।"

अहा! कैसे सुन्दर शब्द हैं! शिक्षाकी कैसी सुन्दर परिभाषा है कि "शिक्षा भोजन है, शिक्षा औषधि है, शिक्षा दिमागको बनाती है। बिना शिक्षाके दिमाग खाली ढोल कहा जाता है। आप कहते हैं:—"बिना द्वेषभावके भिन्न भिन्न सब विज्ञानोंके जाननेके वास्ते, तुम्हें मनुष्य-कर्त्तव्यका विचार करना चाहिये।" कैसा सुन्दर उपदेश है! जो लोग केवल किसी पक्षपातके रङ्गमें रङ्गे हुए हैं, उन्हें राजा साहबके ऊपरके शब्दोंसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। आगे आप कैसा सुन्दर उपदेश दे रहे हैं जो प्रत्येक मनुष्यको अपने कमरोंमे सुनहले अक्षरोंमें लिखना चाहिये—नहीं नही हम भूलते हैं दरिद्र भारतमे सोना कहां, जो सोनेके अक्षरोंमें यह उपदेश लिखा जाय। यह तो अपने हृदय पटलपर अङ्कित चाहिये। अरे! दुनियासे बेखबर रहनेवाले भारतवासियो! सुनो, राजासाहब क्या कहते हैं—आंख खोलकर पढ़ो, सिर्फ माथेकी आंख खोलनेसेही काम नही चलेगा, अपने हृदयकी आंख भी खोलो। देखो कैसे अमृत वचन हैं:—"*तुम्हें चाहिये कि कभी मानवी जनताको पुरानीसे पुरानी या नईसे नई शिक्षासे लाभ उठानेसे न रोको।** समझे। राजा साहबके कथनका क्या मतलब है? मतलब साफ और सीधा है कि दुनिया भरके ज्ञानका ठेका किसी एक ही

---

* यह अक्षर हमने मोटे कर दिये हैं।—लेखक

मनुष्य और ज़ातिने नहीं ले रखा है। ऐसा मत समझो कि ज्ञानके भण्डारकी कुछ सीमा है। जो अच्छीसे अच्छी बात कहींसे मिले, वहींसे हासिल करो। कूपमण्डूक मत बने रहो। जहाँ ठड़े हो वहीं अड़े मत रहो, आगे डग बढ़ाओ। पीछे मत हटो।

राजासाहबने अपने इस लेखमें अज्ञानी पुरुषोंको भी यही उपदेश दिया है कि निराश मत हो, ईमानदारीसे कोशिश करते रहो। "*धार्मिक पुरस्कारका हिसाब मनकी दशाके अनुसार लगाया जाता है।*"* हाय आज इस दुनियामें कितने मनुष्य हैं—विशेषतया भारतमाताके ऐसे कितने लाल हैं, जिनके इस उच्च विचारके अनुसार आचार भी हों! आज भारतकी, बूढ़े भारतकी सिकुड़े हुए कछुएके समान दशा हो रही है। तभी तो बारबार मनमें यह सवाल उठता है कि आज भारतके ऐसे कितने लाल हैं जो यह समझते हों कि धार्मिक पुरस्कारका हिसाब मनकी दशाके अनुसार हो। फिर प्रतिध्वनि पूछती है कि कितने हैं?

जन्मका रहस्य—प्रतिभाशाली व्यक्तियोंकी प्रतिभाका प्रत्येक कर्ममें विचित्र रहस्य पाया जाता है। उनकी प्रतिभा अपने अनूठेपनकी सब ही जगह छाप लगा देती है। इसमें सन्देह नहीं कि राजा महेन्द्रप्रताप भी अद्भुत प्रतिभाशाली हैं। आपका कितनी ही बातोंका निराला ढङ्ग दिखलाई पड़ता है। हम ऊपर लिखना भूल गये कि आपने जिस समय प्रेम-महाविद्यालय स्थापित किया

* मोटे अक्षर हमने कर दिये हैं—लेखक

था, उस समय आपने प्रेम-महाविद्यालयकी स्थापनाका अपने इष्ट मित्र बन्धुओं तथा शहरके प्रतिष्ठित नागरिकोंको विचित्र निमन्त्रण भेजा। निमन्त्रण-पत्रमें इस आशयके वाक्य थे कि "मेरे पुत्र हुआ है, उसका जन्मोत्सव है। आप पधारिये।" जब नियत समयपर सब लोग आगये तब आपने कहा कि मैं प्रेम-महाविद्यालयकी स्थापना करता हूं। यही मेरा पुत्र है। सचमुच राजा महेन्द्रप्रतापने प्रेम-महाविद्यालयका प्रतिपालन पुत्रसे बढ़कर किया है और अपने इस पुत्रको उन्होंने जनताको सौंप दिया।

गोठ (पिकनिक)—प्रेम-महाविद्यालय और उसके विद्यार्थियोंके प्रति राजा साहबका कैसा व्यवहार रहा है, इस विषयकी एक दो बातें कहकर आगे बढ़ना चाहते हैं। संवत् १९६७–६८ विक्रमीकी बात है कि एक दिन आपने आज्ञा दी कि कल विद्यालयके समस्त छात्र, अध्यापक और कर्मचारी अपने अपने घरोंसे जैसा उचित समझें वैसा खाना बनवाकर लावें। आपके इस हुकमकी फौरन तामील की गई। विद्यालयके समस्त छात्र और कर्मचारी जैसी, जिसकी श्रद्धा, शक्ति और इच्छा थी, अपने साथ खानेकी चीजें लाये। सब लोगोंके आजानेपर, आपने वृन्दावन और मथुराके बीचमें एक स्थानपर चलनेका हुक्म दिया। साथ ही यह भी आज्ञा थी कि अपने अपने खानेकी चीजें अपने अपने साथ ले चलें। बस फिर क्या था! सब लोग अपनी अपनी पोटली बगलमें मारकर नियत स्थानकी ओर चले। मानों किसी लड़ाईपर ये लोग जा रहे थे। बड़ा ही विचित्र दृश्य था, "बगलमें

ठोसा, तो किसका भरोसा"—वाली कहावत प्रत्यक्ष दिखलाई पड रही थी। नियत स्थानपर पहुंच जानेपर आपने आज्ञा दी कि सब लोग अपना अपना सामान एक स्थानपर रख दे। आज्ञाका तुरत पालन किया गया। फिर आपने कहा कि चील-झपटा हो* खानेकी चीजोंके कोई हाथ न लगावे। बस फिर क्या था! आपसमें खूब उधम मचा। कोई किसीकी टोपी उतारता, कोई किसीका साफा झपटनेकी चेष्टा करता, कोई किसीकी पगड़ीपर धूल फेंकता, कोई किसीके हाथमेंसे चीज झपटनेकी कोशिश करता। थोडी देरतक यह उधम मचता रहा, फिर बन्द हुआ। पीछे सब लोगोंने भोजनके आये हुए सामानमेंसे बराबर बराबर बांटकर खाया और अपने अपने घर विदा हुए। क्या ही अच्छी दिल्लगी रही। तारीफकी बात यह है कि इस दिल्लगीमें भी राजा साहबने बडाई, छुटाईका कुछ ख्याल नहीं रखा।

जो लोग गम्भीरता और सभ्यताके अथाह समुद्रमें गहरे गोते खा रहे हैं वे शायद इस पिकनिक (गोठ) की बात पढ़कर नाक भौंह सिकोड़े विना नहीं रहेंगे। वे इस गोठमें शेखचिल्लीपन देखेंगे। उन्हें इस गोठमें बेहूदगीका भूत दिखलाई पड़ेगा। उन्हें इसमें मूर्खता प्रतीत होगी। अजब नहीं कि उन्हें असभ्यता और पागलपनकी बू भी आये विना न रहे। भले ही उन्हें सारी गन्दगीका पनाला इस गोठमें ही दिखलाई पड़े, भले ही उन्हें सारी दुनियांकी मोरीकी कीचका स्वप्न इस गोठमें ही दिखलाई

* मजकी ओर एक दूसरेसे छीना झपटीको चील-झपटा कहते हैं।

पड़े। पर जो लोग इस गोठमें उपस्थित थे, उनसे पूछिये कि उनके हृदयपर इस गोठका कितना प्रभाव हुआ था? गम्भीरता और सभ्यताके समुद्रमेंसे थोडी देरके लिये निकलकर गोठमें उपस्थित सज्जनोंके हृदयसे हृदय मिलाकर भगवानके नामपर सोचिये कि इस गोठका उनके हृदयपर कैसा प्रभाव पड़ा, मनोरञ्जनके साथ ही साथ उन्हें कुछ शिक्षा भी मिली या नहीं। राजा साहब समता (Equality) भ्रातृभाव (Faternity) के बड़े पक्षपाती हैं। राजा साहब "पर उपदेश कुशल वहुतेरे" सिद्धान्तके पक्षपाती नहीं हैं। उनका जीवन कभी ऐसा नहीं रहा कि "खुद फजीहत और दूसरेको नसीहत"। वे "यथा वाणी तथा पाणी" हैं, वे जैसा कहते हैं करके दिखलाते हैं। आचार, विचार और व्यवहार सब उनका एकसा है। उन्होंने इस गोठमें भी व्यवहारिक शिक्षा दी। उसका परिणाम हुआ और अच्छा ही परिणाम हुआ। इस तत्वको न समझनेवाले नाक भौंह सिकोड़ें तो भले ही सिकोड़ा करें, ऐसे लोगोंकी भृकुटी चढ़ानेसे राजा साहबका अथवा संसारका कुछ बनता, बिगड़ता नही है। राजा साहबने अन्य कई व्यवहारिक विषयोंकी इस प्रकारसे ही शिक्षा दी है, जिसके विषयमें यथास्थान आगे लिखा जायगा।

(७)

गुरुकुलको दान और दूसरी यूरोप-यात्रा

संयुक्त-प्रान्तकी आर्य-प्रतिनिधि-सभाने सं० १९६३ विक्रमीमे

फरुखाबादमें गुरुकुल खोला था, जिसका वार्षिकोत्सव संवत् १९६४ विक्रमीमें बड़ी धूमधामसे हुआ था। संयुक्तप्रान्तकी आर्य-प्रतिनिधि-सभाके कुछ सभासद तथा अन्य आर्यसमाजियोंको यह स्थान पसन्द न आया, बहुतसे आर्यसमाजियोंकी इच्छा फरुखाबादसे मथुरामें गुरुकुल हटानेकी थी पर, मथुरा वृन्दावनमें उन्हें उचित स्थान दिखलाई न पड़ता था। संयुक्त-प्रान्तकी आर्य-प्रतिनिधि-सभाके भूतपूर्व सभापति, श्रीकुँवर हुक्मसिंहको वृन्दावनसे एक मीलकी दूरीपर, वृन्दावन स्टेशनसे आधी मीलकी दूरीपर राजा साहबका एक बाग बहुत पसन्द आया, और उन्होंने राजा साहबपर अपना यह विचार प्रगट किया कि यदि आप अपना यह बाग आर्य-प्रतिनिधि-सभाको दान दे दें तो फरुखाबादसे गुरुकुल मथुरा (वृन्दावन) आ जाय। धन-दौलतको लात मारनेवाले राजा महेन्द्रप्रतापको यह कौनसी बड़ी बात थी। आपने फौरन ही बाग देना स्वीकार कर लिया। पर अपनी तीन शर्त्तें पेश कीं कि "गुरुकुलके लड़के श्रीप्रेम महाविद्यालयमें आकर प्रेमभरी शिक्षा पाया करें या हिन्दू लड़के उनके गुरुकुलमें रहा करें, या कोई तीन प्रतिष्ठित हिन्दू श्रीवृन्दावन निवासी उनके प्रबन्धकर्त्ताओंमें हों।" आर्यसमाजियोंने इन शर्त्तोंपर दान लेना स्वीकार नहीं किया, उनके कई प्रतिष्ठित आदमी कई बार राजा साहबके यहां पहुचे और उन्होंने आपसे कहा कि "वह दान ही क्या हुआ—जिसमें शर्त्त हो।" इस प्रकार डेढ़ वर्ष बीत गया पर कुछ निश्चय न हो सका।

राजा साहबको बाग देनेमें कुछ भी आपत्ति न थी। आप ये शर्तें इसलिये लगा रहे थे कि आर्यसमाजी और सनातनधर्मियोंका आपसका विरोध भाव मिटे, एक दूसरेसे कन्धेसे कन्धा मिलाकर काम करना सीखें पर आर्यसमाजियोंको आपकी इन शर्तोंके स्वीकार करनेमें आपत्ति हुई। अतएव उदारहृदय राजा साहबने बिना शर्तके बाग देना स्वीकार कर लिया और लिखा कि "यह ध्यान रहे कि मैं आर्यसमाजी नहीं हूं, मैं हिन्दू हूं। मैं सिर्फ यह सङ्कल्प इसलिये करता हूं कि हमारा आपका विरोध दूर हो और हम आप मिलकर काम करना सीखें।" पीछे आपने बाकायदे बागका वक्फनामा, सयुक्त-प्रान्तकी आर्य-प्रतिनिधि-सभाके नाम कटा दिया और संवत् १९६८ विक्रमीमें दूसरी बार यूरोप चले गये।

प्रेम महाविद्यालयके प्रबन्धका भार पहले ही प्रबन्धकारिणी कमेटीके आधीन था और अब भी है। आपके विलायत जानेके पीछे वृन्दावनके प्रतिष्ठित रईस श्री बाबू नारायणदासजी बी० ए०, आनरेरी सेक्रेटरी हुए और श्री कुंवर हुकमसिंह साहब जनरल मैनेजर। इन दोनो महानुभावोंने प्रेम-महाविद्यालयकी अच्छी सेवा की। कुंवर हुकमसिंहजीका किसी कारणसे प्रेम-महाविद्यालयसे अब सम्बन्ध नही रहा है पर अभी तक बाबू नारायणदासजीका प्रेम महाविद्यालयसे किसी न किसी तरहसे सम्बन्ध चला ही जा रहा है।

राजा साहबने दूसरी बार विलायतमें पहुचकर अनेक

संस्थाओंको देखा। बहुत सी नई बातें सोचीं। उन दिनों आप यूरोपकी चिट्ठी भेजा करते थे जिनमेंसे कुछ पीछे प्रेम-महाविद्यालयके मुखपत्र "प्रेम" में भी प्रकाशित हुई थीं। इन यूरोपकी चिट्ठियोंसे बहुतसी बातें ज्ञात होती हैं।

प्रेम-महाविद्यालयके कर्मचारी, अध्यापक और विद्यार्थियोंके अतिरिक्त सर्वसाधारणकी भी बड़ी इच्छा थी कि इस बार राजा साहबके विलायतसे लौटनेपर उनका खूब धूमधामसे स्वागत किया जाय। आपके अनेक इष्टमित्र स्वागत करनेके लिये बम्बई पहुंचना चाहते थे। प्रेम-महाविद्यालयके विद्यार्थी और कर्मचारी आपके स्वागत करनेके लिये बड़ी धूमधामसे तैयारी कर रहे थे। अनेक विद्यार्थियोंकी इच्छा थी कि आपकी गाड़ी मथुराके रेलवे स्टेशनसे आपके वृन्दावनके निवास स्थानतक बिना घोड़ोंके खींची जाय। मथुरामें आपके स्वागतकी अलग अलग तैयारियां की गई थीं। पर दूरदर्शी राजासाहबने इस स्वागतका मौका ही नहीं दिया। आपने अपने किसी इष्टमित्रको यह सूचना नहीं दी कि किस जहाजसे चलेंगे और कब बम्बई पहुंचेंगे? आप चुपचाप बम्बई पहुचे—आपके बम्बई पहुंचनेकी किसीको खबर नहीं मिली। मथुरा वृन्दावनके निवासी इसी ताकमें थे कि आप कौनसे जहाजसे हिन्दुस्तानको रवाने हुए हैं। सब लोग चिन्तित थे। कोई टामस कुकको तार भेजना था कोई अपने इष्टमित्रको चिट्ठी भेजता था कि राजासाहब विलायतसे कब चलेंगे और कब हिन्दुस्तान पहुचेंगे लिखो। सब ही लोग

यह अटकल लगा रहे थे कि राजा साहब अमुक दिन बम्बईमें पहुंचेंगे और अमुक ट्रेनसे वृन्दावनके लिये रवाना होंगे कि यकायक रातके १२ बजे खबर लगी कि राजासाहब वृन्दावन आ गये हैं और अपने निवासस्थानसे ४०–५० कदमके फासलेपर हैं। सर्दीके दिन थे, रातका समय था, बारह बजे थे, तिसपर भी कुछ लोग आपके स्वागतके लिये पहुंच ही गये। पर स्वागत क्या था,केवल जनताके हृदयका प्रेम-भाव था। स्वागतमें लोग जो बात चाहते थे वह नहीं हुई। सर्वसाधारण लोग राजा साहबके इस प्रकार गुपचुप आनेसे बहुत ही निराश हुए। स्वागतके लिये उनके हृदयमें जो उमङ्ग भरी थी, वह नहीं निकल पाई। उनके मनकी इच्छा मनमें ही रह गई।

दूसरे दिन आपके आगमनका समाचार बिजलीकी भाँति सारे शहरमें फैल गया। मथुरा, वृन्दावनके अनेक सज्जन आपसे मिलनेके लिये पहुंचे। सन्ध्या-समय सर्वसाधारणकी ओरसे श्रीयुक्त श्रीराधाचरणजी गोस्वामीके सभापतित्वमें एक सभा हुई। जिसमें आपको एक अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। अभिनन्दनपत्रमें आपके विद्या-प्रेम और दानका विशेष रूपसे उल्लेख किया गया। आपने भी समुचित शब्दोंमें अभिनन्दनपत्रका उत्तर दिया। इस सभामें श्रीयुक्त श्रीराधाचरण गोस्वामी, कुंवर हुकमसिंह, बाबू अयोध्याप्रसाद फाटकवाला बी० ए० और इस निबन्धके लेखककी वक्तृताएं हुई थीं। इन वक्ताओंने राजासाहबकी देशसेवा और विद्या-प्रेमका विशेष

चर्चा की थी। फिर रातको नाटक क्लबकी ओरसे आपके विलायतसे सकुशल लौटनेके उपलक्षमें एक नाटक खेला गया। बडी भीड़ थी।

(८)

कुछ लोगोंका असन्तोष

संसारमें भले, बुरे सभी प्रकारके मनुष्य हैं। जिस समय राजासाहबके विद्या-प्रेम और दानशीलताकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही थी, उस समय कुछ लोग आपकी निन्दा करनेसे भी बाज नहीं आते थे। राजा साहबको अपनी निन्दा, स्तुतिकी कुछ भी परवा न थी और न अब है। जिन लोगोंका आपसे कुछ देरके लिये भी मिलना हुआ है उन्हें यह अच्छी तरह अनुभव हुआ होगा कि राजासाहब अपने कर्त्तव्यके सामने, निन्दा स्तुतिकी कहांतक चिन्ता करनेवाले हैं। परन्तु व्यक्तिगत निन्दा उतनी ही सहन की जा सकती है जिसके सहनमें सार्वजनिक कार्योंकी हानि न हो। वृन्दावनके रहनेवालोंमें बहुत कम पढ़े लिखे आदमी हैं। वृन्दावन ही क्यों, तीर्थोंके रहनेवाले शिक्षाका महत्व बहुत ही कम पहचानते हैं। इनमें खासकर ब्राह्मण। वृन्दावनके पण्डे भी इस रोगसे मुक्त नहीं हैं। "जय, जमुना मैया"की ध्वनिसे ही उनका बेड़ा पार होता है। फिर भला उन्हें पढ़ने लिखनेकी क्या जरूरत! अतएव उन्हें यह बात बहुत

बुरी लगी कि राजासाहबने गुरुकुलके लिये जमीन दान दे दी है। वे राजासाहबके अत्युच्च उद्देश्यको न समझ सके। समझा कि गुरुकुल वृन्दावन क्या आता है, हमारी रोटियां ही छीनी जाती हैं। बस फिर क्या था, उन्होंने आर्यसमाज और गुरुकुलके विरुद्ध वावैला मचाया। राजा साहबके गुरुकुलको जमीन दान देनेपर बेतरह ऊधम मचाना शुरू किया। प्रेम-महाविद्यालयके सम्बन्धमें भी अनेक गप्पें उड़ानी आरम्भ कर दीं। उस समय राजा साहब ज्यूरिक (स्विटजरलैण्ड) में थे, वहींसे आपने ब्रजवासियोंको एक खुलापत्र भेजा जिसके छपनेमें देरी हो गई थी। जब आप वृन्दावन पहुंच गये तब वह प्रकाशित हुआ। उस पत्रके पढ़नेसे स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजा साहब प्रेमके पुजारी हैं, आपको किसी व्यक्ति अथवा मतसे द्वेषभाव नहीं है। जितने आपको अपने धार्मिक विचार प्यारे हैं उतना ही आप दूसरोंके धार्मिक विचारोंका सम्मान करना जानते हैं। आप धार्मिक सहन-शीलता (toleration) के कट्टर पक्षपाती हैं। आपका सदैव यही विचार रहा है कि जहांसे जो अच्छी बात मिले उसको बिना किसी सङ्कोचके ग्रहण करना चाहिये। सच्चाई और प्रेम ही सब मतोंका सार है। सच्चाईका ठेका, किसी रङ्ग विशेष धर्म और जातिने नहीं ले रखा है। आपका उक्त पत्र नीचे प्रकाशित किया जाता है जिसको पढ़कर पाठकोंको ज्ञात होगा कि आपके कितने उदार विचार हैं।

पत्र यह है :—

व्रजवासियोंके नाम खुला पत्र

ज्यूरिक (स्विटज़रलैण्ड)
यूरोप।
५ नवम्बर, १९११

व्रजवासी भाइयो !

मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई कि आखिर श्रीगुरुकुल वृन्दावन धाममें आता है। मगर यह सुनकर खेद हुआ कि वृन्दावननिवासी इस अवसरपर दुःख मानते हैं। हमारे वृन्दावनी भाइयोंको तो यह बड़ा हर्षका मौका होना चाहिये कि श्रीवृन्दावनमें एक और विद्याके मन्दिरकी स्थापना होती है और अगर भाइयोंको विद्यामें इतनी प्रीति भी न हो, तब भी रञ्जका कोई समय नहीं है। अगर दुश्मन भी हमारे घर आकर मेहमान हो तब भी खुशीसे आदर सम्मान करना चाहिये। और यह तो कोई शत्रु भी नहीं है, बल्कि इनको मित्र कहना चाहिये। हाँ गो हम बहुतसे हिन्दू आर्य्यसमाजको दुश्मन समझते हैं, मगर मेरी समझमें नहीं आता कि आर्यसमाजको दुश्मन क्यों खियाल किया जाय। मैं हिन्दू हूँ, गो मेरी निगाहमें तमाम मजहबोंकी एकसी इज्जत है। ताहम मुझे अपने आपको हिन्दू ही कहनेमें खुशी होती है। मैं आर्यसमाजको हिन्दू मजहबकी एक शाखा समझता हूँ। वह भी तो आखिर वेदका ही सहारा लेते हैं। क्या हम नहीं जानते कि हमारे मजहबमें सैकड़ों ऐसी शाखाएँ हैं और

अगर एक पूर्वको फूटी है तो एक पश्चिमको। खुशीकी बात है कि हमारा हिन्दू मज़हबका वृक्ष ऐसा घमसान लता पत्तावाला है कि जिसकी सायामें हर तबीयतका मनुष्य आरामसे गुजारा कर सकता है। दुनियांमें बिला जरूरत कोई चीज पैदा नहीं होती, इसमे भी परमेश्वरकी मर्जी है कि आर्यसमाज कायम करनेका खियाल किसीके दिमागमें आया। और इसमें भी सदा दयालु भगवान श्रीकृष्णचन्द्रकी इच्छा समझनी चाहिये कि श्री गुरुकुल श्रीवृन्दावन धाममें पधारता है—"होइ है वही जो राम रचि राखा" तिल घटे न तिल बढ़े—उसके हुक्मके बिना पत्ता तक नहीं हिलता। ये, वह, हम, आप तो महज जरिये होते हैं। वह हम आपसे जियादा जानता है। "राम झरोखा बैठके सबका मुजरा लेत" वह हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सबका ही पिता है। हम आपस-में दुःख मान या दुख पहुंचा करके अपने पिताको दुःख देते हैं। मेरी तो सब भाइयोंसे यही प्रार्थना है कि वह अपनेसे बार बार यही पूछे कि मजहब हैं किस लिये—अगर काफी समय उस सवालके विचारपर देंगे तो हरगिज़ कभी किसी मज़हब या उनकी शाखाओंपर शस्त्र न चलावेंगे और अपने ही घरको न ढहावेंगे। मेरे खयालमें तमाम मज़हब एक बड़े मन्दिरके कमरे हैं जो जैसा कमरा पसन्द करें उसमें रहें। हरेकका अपना अपना खियाल होता है, कोई किसीमें आराम समझता है, कोई किसीमें। क्योंकि जैसा हमारा बचपनमें अभ्यास पड जाता है उसीमें हमें आराम मिलता है। एक अङ्गरेजको हिन्दुस्तानी खाना खानेमें पेचिश

हो जाती है। एक हिन्दुस्तानी अङ्गरेजी कपड़े पहनकर कस जाता है। यह सब आदतका खेल है। कपड़े खाना वगैरह जैसे बदनकी तन्दुरुस्तीके लिये हैं, मजहब मनकी तन्दुरुस्तीके लिये है। अगर एक साग भाजीसे तन्दुरुस्ती कायम रख सकता है तो क्या जरूरत है कि अण्डा मछली गोश्त उड़ावे। एक अगर गांवकी चामड़को पूजकर नेक हो सकता है तो उसे क्या जरूरत है कि रोजकी एक आदमीकी खुराकका घी आगमें डाले। मगर यह कुछ कुदरती बात है, मैं नहीं जानता क्यों ऐसा है कि हरेक शख्स अपने तरीकेको दुनियांपर फैलाना चाहता है। शायद इसमें परमात्माकी यही मसलहत होगी कि कोनेमें भी पड़ा अपने मुआफिक खयालको सुन ले। जो भी हो उसकी माया वही जाने। आज हम यह देख रहे हैं कि दुनियांमें नये नये खयाल पैदा होते चले जाते हैं। यह कोई ताज्जुबकी भी बात नहीं है जबकि सायन्स नयी नयी ईजादोंसे हमारी रहन सहनका तरज तबदील कर रही है। इस नयी विद्याने दुनियांकी शक्ल तबदील कर दी है। जो पल्ला भारी था आज हलका होता जाता है और जो तराजूका पल्ला हलका था आज कहीं भारी है। जबकि दुनियामें ऐसी तबदीली हो गई तो यह नामुमकिन था कि उसका असर भारतवर्षपर न पड़े! "जागे सो पावे, सोवे सो खोवे"। मेरे प्यारे भाइयो! आज यह मौका नहीं है कि आपसमें हो खींचा तानी करते रहो। दुनियां देखो। आंख खोलकर वक्तका काम चलेगा। कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है। तुम खुद अपने और अपने बच्चोंके दुश्मन हो,

कलकी फिकर करो, विद्या फैलाओ, न कि विद्याके रथके पहियेमें ईंट लगाओ। इसमें शक नहीं कि विद्या भी अगर बुरे खोलमें मढ कर दी जाती है तो बुरा असर दिखाती है। मगर फिर भी विद्या, विद्या है। अगर जरा भी खोल दूर होनेका मौका मिला तो ज्ञान हो जाता है और फिर सब भेद दूर हो जाते हैं।

प्यारे भाइयो! है तो यह शरमकी बात, मगर कहना पडता है कि हम बहुतसे अपने लाभके लिये, दूसरोंका नुकसान करनेमें नहीं हिचकते और अगर आज इसके लिये मजदूरी मिले तो कल-का खयाल छोड़, आज घरमें कांटे बोते हैं। आज भाई दो पैसे भी मिल भी गये मगर कल कैसे गुजरेगी, जब घरमें रहना भी मुश्किल हो जायगा। यह भी जरा सोचनेकी बात है कि आर्य-समाजी यमके दूत दूसरी दुनियांके पठाये नही आये हैं, यह हमी तुममेंसे तो हैं।

× × × ×

अपने भाइयोंसे सीखनेमें क्या शरमकी बात है। इनके वृन्दावन आनेमें कोई डर नहीं होना चाहिये। मैं खुद हिन्दू हूं और वैष्णव हूं। मुझे कृष्णके वाक्य सुनकर जो खुशी होती है या यमुना नहानेसे जो ठण्डक पड़ती है वह कभी आगमें अपनी रोजी जलानेसे नहीं हो सकती। मेरी तबीयत कीर्त्तन देखकर जो मग्न होती है वह गोरक्षाकी पखावजें सुनकर नहीं हो सकती। मगर प्यारे भाइयो! हमहीमेंसे कितने हैं जो श्रीकृष्णको प्रतिमा अपना पेट भरनेको रख छोड़ते हैं। कितने हैं जो यमुनाके किनारे सिर्फ

दो पैसे लेनेको फिरते हैं? कितने हैं जो झूठ बोल दूसरोंको लूटते हैं। यह हालत बहुत दिन नहीं चल सकती। कलसे श्री-कृष्णचन्द्र महाराजकी आज्ञाका प्रतिपालन करो, अपनेको भूलो, खाओ पियोभी श्रीकृष्णके लिये, हमेशा सोचो कि भाई कोई काम खुदगर्जीसे तो नहीं करते। किसी मजहबका कोई क्यों न हो, मजहबकी छापसे वैकुण्ठ नहीं जा सकता और न मोक्ष ही हो सकती है। कर्म्मोंका फल मिलता है, पूजाका तरीका कोई कैसे ही बतावे मगर झूठ बोलना, दगाबाजी, फरेब, बदचलनी, दूसरेको दुःख पहुंचाना, अदावत रखना, अदावतकी वजहसे काम बिगाड़ना, गाली सुनाना कौन अच्छा बता सकता है? लौट फेरकर सब मजहब यही सिखाते हैं कि नेक बनो और अपने पापोंकी मुआफी माग परमात्माके चरण गहो। अगर हृदय शुद्ध न हुआ तो, न होम करनेसे और न गङ्गा नहानेसे मोक्ष होगी और "मन चङ्गा तो कठौतीमें गङ्गा" बेशक यह आर्यसमाजकी भूल है। वह समझते हैं कि सामाजिक होनेसे ही एक आदमी ठीक रास्ते पर है। हजारों चाहे समाजी हो जावें, चाहें लाखों आर्यसमाजी रजिस्टर्डमें नाम लिखा लें और चाहे वह हमें और हमारे देवताओंको गाली भी सुना लें मगर यह सब बातें उनको मोक्ष नहीं देंगी। मोक्ष परमात्मामें मिलना बताया जाता है। जबतक परमात्माकेसे हम नहीं होंगे, उसमें एक और कैसे लीन हो सकते हैं, लोहा सोनेमें नहीं मिल सकता। लोहा लोहा ही रहेगा, सोना सोना। लोहा पहले कैसे ही सोना हो ले जब सोनेमें एक होनेकी उम्मेद

कर सकता है। एक दूसरेसे लड़के झगड़ा फिसादकर परमात्मा-की फुलवाड़ीको तो हम पहले उजाड़ते हैं फिर परमात्मामें लीन कैसे हो सकते हैं। मजहब हमारी भलाईको हैं न कि हमको दुःख पहुचानेको। भलाईको है तो काहेको झगड़ा फिसाद करते हैं और दुःख पहुंचानेको है तो हे श्रीरामचन्द्र! इन्हें दूर करो। मजहब तो जरूर भलाईको ही है। मगर सच तो यह है कि चन्द शख्स थोड़े दिन बाद हर मजहबमें पैदा हो जाते हैं कि. दङ्गा फिसाद करके अपना नाम पैदा करके दूसरोंको लूटते हैं। अगर हमारे वैष्णव धर्ममें ऐसे लोग हैं तो ऐसे भाई आर्यसमाजियोंमें भी हैं जो खूब हमें गाली सुना, लेकचर बाजीकर चन्द भोले भालेपर अपना सिक्का जमाया करते हैं। ये भोले भाले इनकी बातोंमें आकर हिन्दू मजहबको एक तरफसे बुरा समझ लेते हैं, भूल जाते हैं कि कितने वैष्णव शुद्ध चित्त और साफ मनके हममें मौजूद हैं। वह वृन्दावनमें आवेंगे और हमारे कुछ बंगाली वैष्णव भक्तों-को देखेंगे। और अगर शुद्ध चित्तसे विचार करेंगे तो उनकी समझमें आ जायेगा कि वैष्णव मत कैसे श्रीकृष्णका सच्चा दास बनाता है।* (इन्सान) को नेक करता है और मोक्षका पद देता

*—यह पत्र बहुत कुछ चेष्टा करनेपर मुझे अपने प्रियबन्धु श्री नन्द-किशोरजी भार्गवसे मिला, जिसके लिये उन्हें अनेक हार्दिक धन्यवाद है। कई जगहसे यह पत्र फट गया था। बहुत चेष्टा करनेपर भी कई स्थानोंमें पढ़ा नहीं गया। जहां ऐसे × × × निशान है अथवा * ऐसे चिह्न हैं वहां पाठक समझ ले कि पत्रका कुछ अश छूट गया है अथवा लेखकने राजा

कर सकता है। एक दूसरेसे लड़के झगड़ा फिसादकर परमात्मा-की फुलवाड़ीको तो हम पहले उजाड़ते हैं फिर परमात्मामें लीन कैसे हो सकते हैं। मजहब हमारी भलाईको हैं न कि हमको दुःख पहुंचानेको। भलाईको है तो काहेको झगड़ा फिसाद करते हैं और दुःख पहुंचानेको हैं तो हे श्रीरामचन्द्र! इन्हें दूर करो। मजहब तो जरूर भलाईको ही है। मगर सच तो यह है कि चन्द शख्स थोड़े दिन बाद हर मजहबमें पैदा हो जाते हैं कि. दङ्गा फिसाद करके अपना नाम पैदा करके दूसरोंको लूटते हैं। अगर हमारे वैष्णव धर्ममें ऐसे लोग हैं तो ऐसे भाई आर्यसमाजियोंमें भी हैं जो खूब हमें गाली सुना, लेकचर बाजीकर चन्द भोले भालेपर अपना सिक्का जमाया करते हैं। ये भोले भाले इनकी बातोंमें आकर हिन्दू मजहबको एक तरफसे बुरा समझ लेते हैं, भूल जाते हैं कि कितने वैष्णव शुद्ध चित्त और साफ मनके हममें मौजूद हैं। वह वृन्दावनमें आवेंगे और हमारे कुछ बंगाली वैष्णव भक्तों-को देखेंगे। और अगर शुद्ध चित्तसे विचार करेंगे तो उनकी समझमें आ जायेगा कि वैष्णव मत कैसे श्रीकृष्णका सच्चा दास बनाता है।* (इन्सान) को नेक करता है और मोक्षका पद देता

---

*—यह पत्र बहुत कुछ चेष्टा करनेपर मुझे अपने प्रियबन्धु श्री नन्द-किशोरजी भार्गवसे मिला, जिसके लिये उन्हें अनेक हार्दिक धन्यवाद है। कई जगहसे यह पत्र फट गया था। बहुत चेष्टा करनेपर भी कई स्थानोंमें पढ़ा नहीं गया। जहां ऐसे × × × निशान है अथवा * ऐसे चिह्न हैं वहां पाठक समझ ले कि पत्रका कुछ अंश छूट गया है अथवा लेखकने राजा

स्विटजर्लण्डके दो प्रधान कर्मचारी, बर्लिन स्थित अफगानिस्तानके राजदूत तथा जनरल वली मुहम्मद खां साहब। (यह फोटो बर्न स्विटजर्लण्डमें ली गई थी)
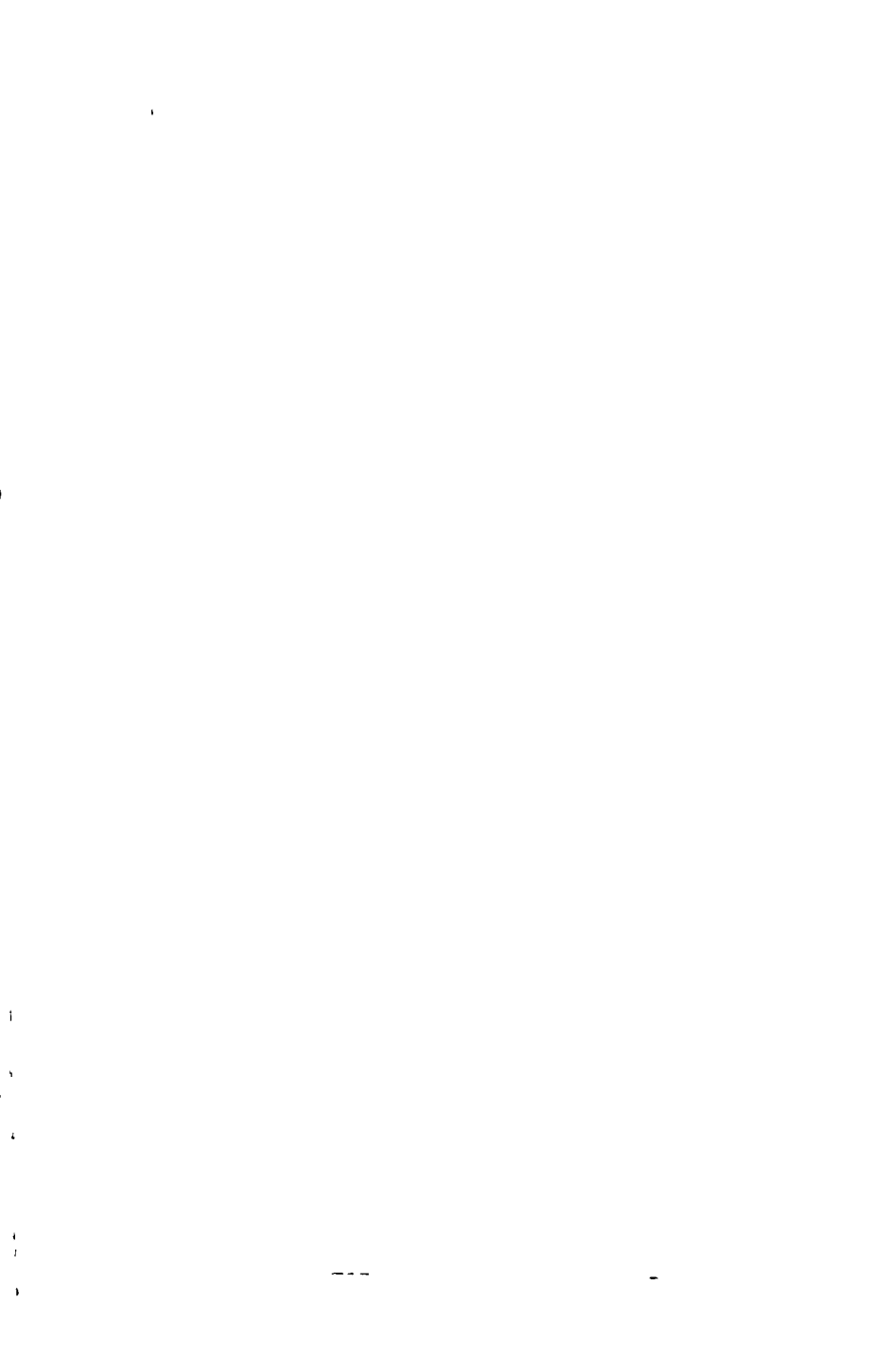
है रंज, डर, भयकी कोई बात नहीं, भाई खुश होकर आपसमें मिलनेसे ख्याल तबदील करनेसे, आपसकी गलत फहमी भी दूर होगी।

आपका प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

देखा, राजा साहबके कैसे सुन्दर विचार हैं। आपको किसी मजहबकी निन्दा सहन नहीं है। आप चाहते हैं कि सब मजहब आपसमें मिलकर रहें। आजकल हम लोग गान्धी-युगमें रह रहे हैं। अब अनेक हिन्दुस्तानी "प्रेम-प्रतिमा" के उपासक बन गये हैं। अब आर्यसमाजी और हिन्दुओंका विरोधभाव बहुत कम हो गया है, न अब आर्यसमाजियोंमें पहलेकीसी धार्मिक उन्मत्तता रही और न सनातनधर्मियोंमें वैसा कट्टरपन रहा है। पर उस समय दुखिया भारतमाताके लाल, धर्मकी आड़में एक दूसरेका गला काटनेमें ही धर्म कर रहे थे, जो अभी एकदम बन्द नहीं हो गया है। आज भी कितने हिन्दू मुसलमान हैं जो आपसमें लड़नेमें, एक दूसरेके गले काटनेमें अपनी बहादुरी समझते हैं, फिर उस समयकी बात ही क्या है। राजा महेन्द्रप्रतापका उक्त पत्र इस विषयपर अच्छा प्रकाश

साहबके मूल लेखमें कुछ अंश अपनी ओरसे जोड़ दिया है। इसका कारण यह है कि राजासाहबका यह पत्र इतनी रद्दी हालतमें मिला कि उसमें बहुत सर खपानेपर भी कुछ वाक्योंका पता नहीं लगा।

डालता है। उक्त पत्रसे पता लगता है कि राजा साहब बहुत दिनोंसे प्रेमकी उपासना करते हैं, आप प्रेम-पुजारी हैं। "गान्धीयुग"से पहले ही आपका विचार भारतवर्षमें प्रेमकी लहर बहा देनेका था। आपने जितने कार्य्य किये हैं इसी उद्देश्यसे किये हैं।

राजा साहबका "व्रजवासियोंको खुला-पत्र" लिखना—"अरण्य-रोदन"के समान नहीं हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि आप इस पत्रके प्रकाशित करनेसे जो बात चाहते थे, वह पूरी नहीं हुई, पर इस पत्रके प्रकाशित होनेसे समझदार लोगोंकी आंखें खुल गईं। चाहे आपके इस पत्रके वाक्य अशिक्षित, असभ्य और अन्ध पक्षपातियोंके बहरे कानोंपर न पड़े हों पर सभ्य, शिक्षित धर्म प्रेमियोंने आपके कथनका सादर सम्मान किया। भावुक वैष्णवगण आपके कथनको पढ़कर प्रेमसे विह्वल हो गये। वे आपके एक एक शब्दपर मुग्ध हो गये, वे राजा साहबके प्रेम-मंत्रके महत्वको पहचान गये। उन्होंने आपके प्रेम-मन्त्रके सामने सिर झुका दिया, उन्होंने प्रेम-मन्त्रको अपने हृदयमें स्थान दिया। कोई यह न समझें कि हमारे इस कथनमें कुछ अत्युक्ति है। नहीं, हमारे कथनका प्रमाण, श्रीभारतधर्म महामण्डलके महामहोपदेशक श्रीमन्माध्वगौड़ेश्वराचार्य श्रीमधुसूदनजी गोस्वामीका वह खुला-पत्र है जो उन्होंने राजा साहबके "व्रजवासियोंको खुलापत्र" पढ़कर भेजा था। नीचे उक्त गोस्वामीजी महाराजका वह पत्र प्रकाशित किया जाता है।

* गोस्वामीजीका पत्र

भ्रातृगण !

श्रीमान् गोस्वामी मधुसूदनलालजी महाराजने मुझे अभी यह खुला पत्र भेजा है, जिसकी हरफ बहरफ नकल नीचे है :—

श्रीश्रीराधारमणो जयति ।

श्रीवृन्दावन शांतिकुटी

२२-१२-११

हाथरस धराधिप श्रीमहेन्द्रप्रतापसिंह

महामहिमान्वितेषु—

प्रिय भूपनन्दन !

श्रीवृन्दावन निवासी सज्जन, आपके किसी कार्यसे असंतुष्ट हैं। श्रीवृन्दावन निवासियोंके सन्तापमें सन्तोष और असन्तोषमें असन्तोष मेरा स्वाभाविक है, तथापि व्रजवासियोंको जो खुला-पत्र आपने लिखा है उसे पढकर मुझे अपार आनन्द हुआ है।

कुलीन ग्रामवासी सत्यराज खानके एक श्रीकृष्ण विजय ग्रन्थमें यह वचन था कि "नन्द-नन्दन कृष्ण मोर प्राणनाथ" इसी-को देखकर श्रीमहाप्रभुजीने कहा था कि "मैं इनके समस्त वंशके हाथ बिक चुका हूं।"

प्रिय कुमारजी ! आपके उस पत्रमें तो ऐसे अनेक वचन हैं जिनसे मुझे आपके हाथ बिक जाना चाहिये।

* यह पत्र राजा साहबका "प्रेम-रत्न" शीर्षक जो दूसरा पत्र प्रकाशित हुआ था, उसकी पीठपर छपा है।

जैसा "और मैं वैष्णव हूं" आहा! आप धन्य हैं! आज आपका कुल पवित्र है, जननी कृतार्थ है। "मैं वैष्णव हूं" ऐसा अभिमान जिसे हो उसके दर्शनसे पापी पुनीत होते हैं। मैं आपके इस पदको पढ़कर फूला अङ्गों नहीं समाता हूं।

"मुझे श्रीकृष्णके वाक्य सुनकर जो खुशी होती है या यमुना स्नान कर जो ठण्डक पड़ती है वह कभी आगमें अपनी रोजी जलानेसे नहीं हो सकती है। मेरी तबियत जो कीर्त्तन देखकर प्रसन्न होती है वह गोरक्षाकी पखावजें सुनकर नहीं हो सकतीं।"

यह आपके वचन सोनेके अक्षरोंमें लिखकर संसारको अपने अपने घरोंमें लटकाने चाहियें।

"वैष्णव मत कैसे श्रीकृष्णका सच्चा दास बनाता है" यह वचन आपका यह सिद्ध करता है कि आप सच्चे साधक वैष्णव हैं अन्यथा यह आनुभाविक विषय कैसे बुद्धिमें आ सकता है?

बस, मैं आज अपने हृदयका भाव प्रकाश करनेमें असमर्थ हूं। जी चाहता है कि आपको अपने क्रोड़में बैठाकर आनन्दके अश्रुओंसे अभिषेक करूं।

मैं अकिंचन वैष्णव हूं, आपके इस वचनका कि "खाओ और पिओ भी श्रीकृष्णके लिये" क्या न्योछावर करूं। हां, आशीर्वाद देता हूं कि "आप चिरञ्जीव हों, श्रीकृष्ण चरणारविन्दमें आपका गाढ़ अनुराग हो और यह दृढ़ विश्वास आपपर अटल रहे।

मैं हूं एक वैष्णव किङ्कर—

"मधुसूदन गोस्वामी"

श्रीगोस्वामीजी महाराजका मैं सच्चे हृदयसे कृतज्ञ हूं। मगर आप जैसे महान् पुरुष मुझे श्रीकृष्णचन्द्रकी आनन्द पूर्वक कथा सुनाया करेंगे तो आशा है कि मैं किसी दिन वैष्णव धर्मका द्विजाती बनूंगा और प्रेमरूपी जनेऊ धारण करूंगा।

आपका प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

मूर्ख मण्डली "ब्रजवासियोंको खुले पत्र" से शान्त नहीं हुई। उसने अपनी वही 'टें टें" जारी रखी। अतएव राजा साहबने दूसरा "प्रेम-पत्र" निकाला जो आगे प्रकाशित किया जाता है।

प्रेम-पत्र

भाइयो!

श्रीकृष्णचन्द्र जाने कहांतक यह ठीक है? मगर मैं कई रोजसे यह खबर पा रहा हूं कि वृन्दावन निवासी सब आर्यसमाजी हो गये। अपने प्रेम-मन्त्रको भूल अभीसे लड़ाई दङ्गा फिसाद करना सीख गये। मैं तो यह ख़याल कर रहा था कि हमारे वैष्णव मतके सूर्यके सामने झगड़ालू समाजियोंकी आंखें बन्द हो जायंगी और जो यह देशमें आपसकी फूट मची है हमारे सूर्यके तेजसे जल जायेगी। मगर अफसोस! मैं उल्टी खबर पा रहा हूं।

नहीं पर नहीं! यह खबर ज़रूर शायद झूंठ साबित होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि प्रेमकी जीत और द्वेषकी हार होगी

अभी केवल कुछ हमारे वैष्णव बालक आर्यसमाजके झगड़ेके पीछको देख चिल्ला पड़े हैं, जब हमारे बड़ोंको खबर होगी तो वह बालकोंको समझा देंगे कि बालक! पीछको भी आदमी नचाया करते हैं। हमारे पूजनीय वैष्णव भक्त अभी प्रेममें मग्न बालकों-की करतूतोंपर जरासी निगाह डाल मुस्कराकर आंखें फेर लेते होंगे, क्योंकि वह बालकोंका खेल जान इनसे मुंह मोड़ अपने भजनमें लीन हो जाते होंगे। मगर जब यह खबर पायेंगे कि हमारे भाई झगड़ालू समाजी हो चले तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह मीठे स्वरसे अमृत रूपी शब्द "प्रेम" उच्चारण कर फिर सबको एक दफा प्रेमी वैष्णव बना लेंगे। यह ध्वनि इधर हमको अमर कर देगी, उधर झगड़ालू शख्सोंकी कुटिलाई प्रेमकी हर शाखा हरी कर देगी।

जबतक हमारे परम दयालु बङ्गाली वैष्णव भक्त इधर ध्यान दें और हमारे प्राचीन वैष्णव भक्तोंकी कथाएँ सुनावें कि कैसे एक भक्त बाईस नगरोंमें पीटेजानेपर न मरे और कैसे वह पीटने-वालेका दुआ परमात्मासे मांगते रहे और फिर कैसे कसाइयोंकी प्रार्थनापर उन्होंने प्राण छोड़े मैं अपनी बालक बुद्धिसे अपने बालक भ्राताओंसे कुछ प्रार्थना करना चाहता हूं। भाइयो! हां यह ठीक है कि अभी हम वैष्णव द्विजानी नहीं हैं, अभी हमारे आपके प्रेमका जनेऊ नहीं पड़ा। मगर भाइयो! तब भी हम आप वैष्णव पुत्र तो हैं। ऐसा न हो कि हमारा आपका तो खेल खेल ही रहे और हमारे बड़ोंपर कलङ्कका टीका लगे। जैसे राजा होनेवाले

लड़केका खेल तोप और फौजका होता है और कुम्हार बननेवाले का ठीकरे रगड़नेका, हम सच्चे वैष्णव पदवी पानेवालोंका खेल भी प्रेम केवल प्रेमरूपी होना चाहिये। प्यारे भाइयो! वैष्णवोंका धर्म तो इस झगड़े टण्टेकी दुनियांको प्रेमरूपी बनानेका है, जो चीजें भी दुनियांमें पैदा हो चुकीं उनको प्रेममें रंगनेका है। अगर श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वतीजी आज होते तो मैं उनके चरण पकड़कर कहता कि हे स्वामी! तुम खुद मूर्त्ति हो, दुनियां मूर्त्तियोंसे बनी है, तुम मूर्त्ति खण्डन मत करो। हे प्रभो! अगर तुम मन्दिरोंसे हमारे सदा दयालु आनन्दकन्दकी मूर्त्ति फेकवा भी दो पर तब भी हमारे हृदयसे, हमारे मनके मन्दिरसे, हममेंसे हमारे श्रीकृष्णचन्द्र भक्तोंके, भक्तिकी प्रेमरूपी प्रतिमा नहीं हटा सकते। पर अब जमाना दूसरा है, अब लाखों भाई समाजी बन चुके, सैकड़ों इनके जगह बजगह मन्दिर स्थापन हो चुके, अब इनको प्रेमरसका प्याला पिला प्रेमी बनानेका काम हमारा है।

आपको शायद मालूम नहीं, श्रीगुरुकुल कैसे वृन्दावन धाममें आया है। सबसे पहले सन् १९०८ में मुझसे मेरे एक समाजी मित्रने कहा था कि वह गुरुकुल श्रीवृन्दावनमें लाना चाहते हैं और अगर मैं यह बाग, जो मेरे किसी कामके नहीं, गुरुकुलको दे दूं तो श्रीगुरुकुलको यहां ले आवें। मैंने देनेको तो फौरन वायदा कर लिया मगर तीन शर्त्त लगाई कि या तो गुरुकुलके लड़के श्रीप्रेम महाविद्यालयमें आकर प्रेमभरी शिक्षा पाया करें या हिन्दू लड़के उनके गुरुकुलमें रहा करें और या कोई तीन प्रतिष्ठित

हिन्दू श्रीवृन्दावन निवासी उनके प्रबन्धकर्त्ता भी में हों। कई दफा उनके मौजिज़ शख्स इस विषयमें मुझसे विचार करने आये और मुझसे कहते रहे कि वह दान ही क्या हुआ जिसमें शर्त रही? इसी तरह डेढ़ वर्ष निकल गया। आखिर जब मैंने देखा कि वह इन शर्त्तोंपर भूमि नहीं लेते और एक हिन्दूने समाजकी सेवाका अवसर जाता है तो मैंने आखिर बगैर शर्त बाग़ देनेका वायदा कर लिया और लिखा कि यह ध्यान रहे कि मैं आर्य्यसमाजी नहीं हूं, मैं हिन्दू हूं, मैं सिर्फ यह सङ्कल्प इसलिये करता हूं कि हमारा आपका विरोध दूर हो और हम आप मिलकर काम करना सीखें। आपको मेरे बालक भाई मालूम हो कि मैंने इनसे एक सच्चे वैष्णवकी तरह, बर्त्ताव किया और बाक़ायदे वक्फ़नामा तहरीर करा दिया, इसी उम्मेदमें कि श्रीवृन्दावन धामकी प्रेमरूपी आब-हवा झगड़ालू आर्य्यसमाजियोंकी गाली गलौजकी बीमारीको दूर करेगी और यह भी वैष्णव, शाक्त, सिक्ख, जैन, बौद्ध और सांख्यवादीकी तरह, जो परस्पर विरोध रखते हैं, पर फिर भी हमारे हिन्दू जाति महारासमें गोपियोंका स्वरूप रख नृत्य करते हैं, मग्न होने लग जावेंगे। मगर हाय! हमारे भाई ग्वाल बाल सखा कहलानेवाले महारासमें द्वन्द मचाते हैं और महारासको बिगा-ड़ते हैं। प्यारे भाई! यह ध्यान रहे कि अगर यह ऊधम तुमने किसी जीके खुन्सकी वजहसे उठाया है या अदावतका बदला निकालनेको दिखाया है या चार पैसेके फायदे नुक़सानकी वजहसे मचाया है या लोगोंमें शोर मचा अपना मान बढ़ानेको

करया है तो पढे दोषके भागी होंगे। प्यारे भाइयो! हममेंसे चन्द बेपेंदीके लोटेकी तरह डगमगाते रहते हैं, जिधर जोर पडा ढुलक गये, उनको हानि लाभका कुछ खयाल नहीं होता है। इनका दूसरोंको दुःख पहुंचाना ही काम होता है, परका कौआ बनाना ही इनका खेल होता है। यही ज़हरका बीज बोते हैं, हया शरमको पानीमें धोते हैं। इनका तो खेल हँसी मजाक रहना है या हमारे बडोंका अपमान और निरादर होता है। मैं हरगिज़ आर्य्य-समाजी नहीं, मुझे किसी समाजसे द्वेष या मोह नहीं। मेरे लिये तो चाहे आज ही दुनियांसे तमाम समाजें मिट जायँ, आज ही होमकी अग्निमें स्वाह हो जायँ। मुझे तो मनुष्य जातिसे प्रेम है, मैं तो केवल यह चाहता हूं कि हम सबमें प्रेम हो, प्रेमका झण्डा हर देशके मन्दिरपर लहराता हो, हम सच्चे पक्के प्रेमी बनें और दङ्गा फिसाद जो औरोंसे सीख लेते हैं हमारे चित्तसे दूर हों। बालक भ्रातृगण! झगडे फिसादसे झगडा फिसाद बढ़ता है। वैष्णवोंका तो केवल प्रेम ही हथियार है और मनोंसे गाली गलौजकी सीख ले झगडालू समाजकी नकल न उतारो, एक वैष्णव पुत्रकी इस दीन प्रार्थनापर जरा ध्यान दो।

आप जानते हैं कि श्रीकृष्णचन्द्र महाराजकी कृपासे धन दौलतको तो पहले ही लात मार चुका हूं। अपने शरीरको मनुष्य जातिके अर्पण कर चुका हूं, मरने जीनेको सिर्फ कपडे बदलना समझता हूं, दुःख सुख केवल शारीरिक मानता हूं, मान अपमानको दुनियावी फन्दा जानता हूं, मेरे जैसे बालकका तो सिर्फ

मनुष्य खेल खिलौना है, मुझे तो और कुछ न झगड़ा, न लेना देना है, मुझे चाहे आप अच्छा समझो, चाहे बुरा, इसका मुझे कुछ डर नहीं, आपका मेरेसे मेरा आपसे कुछ अटका नहीं। मुझे तो सिर्फ हमारे प्रेमका झण्डा उठानेकी शरम है, इसीसे बारम्बार यह निवेदन है कि प्रेम झण्डा उठाये रहो, इसीसे देश विदेशको जीतते रहो। प्रेम ही केवल अपना आभूषण समझो, प्रेम ही अपना बिस्तरा और भोजन समझो। जो भी समझो या न समझो, मैं तो यह जानता हूं कि समझदारको एक अक्षर ही बहुत होता है और अन्धेके सामने रोना अपने नयन खोना व्यर्थ होता है। मैं अपना वक्त वादविवादमें हरगिज खर्च नहीं कर सकता हूं। आप जो भी इसमें खराब समझें या काबिल जवाब समझें उन सबका जवाब मेरी तरफसे प्रेम है। परमेश्वरने चाहा तो इसी मन्त्रके जपसे हृदयके द्वेष दूर होंगे, इसीपर अमल करनेसे परमात्मामें लीन होंगे। प्रेम! प्रेम!! प्रेम!!!

आपका प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

पाठक देखा यह "प्रेम पत्र" सचमुच प्रेम पत्र है। एक एक अक्षर प्रेमसे भरा हुआ है। कैसे सुन्दर शब्द हैं कि '*मुझे तो मनुष्य जातिसे प्रेम है, मैं तो केवल यह चाहता हूं कि हम सबमें प्रेम हो, प्रेमका झण्डा हर देवके मन्दिरपर लहराता हो, हम सच्चे पक्के प्रेमी बनें और दङ्गा फिसाद जो औरोंसे सीख लेते हैं हमारे*

विषसे दूर हों। बालक भ्रातृ गण! झगडे फिसादसे झगड़ा फिसाद बढता है। वैष्णवोंका तो केवल प्रेम ही हथियार है।"* अहो, एक प्रेम पुजारीके सिवाय, कलेजेमें पैठनेवाले ऐसे सुन्दर शब्द किसके हृदयसे निकल सकते हैं। ऊपरके वाक्यका एक एक शब्द अनमोल है। कैसी अपूर्व शिक्षा है कि केवल "प्रेम" ही हथियार है। कितने भावुक वचन हैं कि प्रेमका झण्डा हर-देवके मन्दिरपर लहराता है। पर अफसोस! यह मनुष्य-जाति अपने स्वार्थरूपी दलदलमें इतनी फंसी हुई है कि प्रेम मंत्रको एक दम भूल गई है। स्वार्थका गहरा रंग आंखोंमें इतना गहरा छा गया है कि प्रेम-मंत्र दिखलाई नहीं पड़ता है। "लैला मजनूं" और आशिक-माशूकके सैकडों, हजारों किस्से सुने जाते हैं पर मनुष्य जातिसे प्रेम करनेवाले चैतन्य महाप्रभु, महात्मा गांधी, राजा महेन्द्रप्रताप बहुत थोड़े दिखलाई पडते हैं। ऐसे एक नहीं अनेक आशिक मिलते हैं जो अपने एक माशूकके पीछे लाखका घर खाक कर चुके हों, पर इस संसारमें ऐसे कितने मनुष्य हैं, जिन्होंने मनुष्य-जातिकी भलाईके लिये, धन-दौलतको लात मारी हो। ऐसे बहुत कम आदमी हैं, जिनका हृदय प्रेमसे ही रङ्गा हुआ हो। राजा महेन्द्रप्रताप भी इन थोडेसे आदमियोंमेंसे हैं, ऊपरवाले प्रेम-पत्रमें राजा साहबके अन्तिम शब्दोंपर विचार कीजिये। आपके इस पत्रमें प्रकाशित अन्तिम शब्द साफ साफ बतला रहे हैं कि

* ये अक्षर हमने मोट कर दिये हैं। लेखक

मनुष्य खेल खिलौना है, मुझे तो और कुछ न झगड़ा, न लेना देना है, मुझे चाहे आप अच्छा समझो, चाहे बुरा, इसका मुझे कुछ डर नहीं, आपका मेरेसे मेरा आपमें कुछ अटका नहीं। मुझे तो सिर्फ हमारे प्रेमका झण्डा उठानेकी शरम है, इसीमें वारम्वार यह निवेदन है कि प्रेम झण्डा उठाये रहो, इसीसे द्वेष विरोधको जीतने रहो। प्रेम ही केवल अपना आभूषण समझो, प्रेम ही अपना बिछनरा और भोजन समझो। जो भी समझो या न समझो, मैं तो यह जानता हूं कि समझदारको एक अक्षर ही बहुत होता है और अन्धेके सामने रोना अपने नयन खोना व्यर्थ होता है। मैं अपना वक्त वादविवादमें हरगिज खर्च नहीं कर सकता हूं। आप जो भी इसमें खराब समझें या काबिल जवाब समझें उन सबका जवाब मेरी तरफसे प्रेम है। परमेश्वरने चाहा तो इसी मन्त्रके जपसे हृदयके द्वेष दूर होंगे, इसीपर अमल करनेसे परमात्मामें लीन होंगे। प्रेम! प्रेम!! प्रेम!!!

आपका प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

पाठक देखा यह "प्रेम पत्र" सचमुच प्रेम पत्र है। एक एक अक्षर प्रेमसे भरा हुआ है। कैसे सुन्दर शब्द हैं कि *मुझे तो मनुष्य जातिसे प्रेम है, मैं तो केवल यह चाहता हूं कि हम सबमें प्रेम हो, प्रेमका झण्डा हर देवके मन्दिरपर लहराता हो, हम सच्चे पक्के प्रेमी बनें और दङ्गा फिसाद जो औरोंसे सीख लेते हैं हमारे*

चित्तसे दूर हों। बालक भ्रातृ गण! झगड़े फिसादसे झगड़ा फिसाद बढ़ता है। वैष्णवोंका तो केवल प्रेम ही हथियार है।"* अहो, एक प्रेम पुजारीके सिवाय, कलेजेमें पैठनेवाले ऐसे सुन्दर शब्द किसके हृदयसे निकल सकते हैं। ऊपरके वाक्यका एक एक शब्द अनमोल है। कैसी अपूर्व शिक्षा है कि केवल "प्रेम" ही हथियार है। कितने भावुक वचन हैं कि प्रेमका झण्डा हर-देवके मन्दिरपर लहराता है। पर अफसोस! यह मनुष्य-जाति अपने स्वार्थरूपी दलदलमें इतनी फंसी हुई है कि प्रेम मंत्रको एक दम भूल गई है। स्वार्थका गहरा रंग आंखोंमें इतना गहरा छा गया है कि प्रेम-मंत्र दिखलाई नहीं पड़ता है। "लैला मजनूं" और आशिक-माशूकके सैकड़ों, हजारों किस्से सुने जाते हैं पर मनुष्य जातिसे प्रेम करनेवाले चैतन्य महाप्रभु, महात्मा गांधी, राजा महेन्द्रप्रताप बहुत थोड़े दिखलाई पड़ते हैं। ऐसे एक नहीं अनेक आशिक मिलते हैं जो अपने एक माशूकके पीछे लाखका घर खाक कर चुके हों, पर इस संसारमें ऐसे कितने मनुष्य हैं, जिन्होंने मनुष्य-जातिकी भलाईके लिये, धन-दौलतको लात मारी हो। ऐसे बहुत कम आदमी हैं, जिनका हृदय प्रेमसे ही रङ्गा हुआ हो। राजा महेन्द्रप्रताप भी इन थोड़ेसे आदमियोंमेंसे हैं, ऊपरवाले प्रेम-पत्रमें राजा साहबके अन्तिम शब्दोंपर विचार कीजिये। आपके इस पत्रमें प्रकाशित अन्तिम शब्द साफ साफ बतला रहे हैं कि

* ये अक्षर हमने मोटे कर दिये हैं। लेखक

आपका हृदय प्रेममें रङ्गा हुआ है। पाठक एक बार "प्रेम-पत्र" में प्रकाशित इन शब्दोंपर ध्यान दीजिये कि राजा साहब क्या कहते हैं:—"श्रीकृष्णचन्द्र महाराजकी कृपासे धन दौलतको पहिले ही लात मार चुका हूं। अपने शरीरको मनुष्य जातिके लिये अर्पण कर चुका हूं, मरने जीनेको सिर्फ कपड़े बदलना समझता हूं, दुःख सुख केवल शारीरिक मानता हूं, मान, अपमानको दुनियाकी फन्दा जानता हूं, मेरे जैसे बालकका तो सिर्फ मनुष्य खेल *खिलौना है*, मुझे तो और कुछ न झगड़ा, न लेना देना है, मुझे चाहे अच्छा समझो चाहे बुरा इसका मुझे कुछ डर नहीं। मुझे तो सिर्फ हमारे प्रेमका झण्डा उठानेकी शर्म है, इससे बारम्बार यह निवेदन कि *प्रेम झण्डा उठाये रहो इसीसे देश, विदेशको जीतते रहो, प्रेम ही केवल अपना आभूषण समझो प्रेम ही अपना बिस्तरा और भोजन समझो × × × × × × आप जो भी इसमें खराब समझें या काबिल जवाब समझें उन सबका जवाब मेरी तरफसे प्रेम है। परमेश्वरने चाहा तो इसी मन्त्रके जपसे हृदयके द्वेष दूर होंगे, इसीपर अमल करनेसे परमात्मामें लीन होंगे। प्रेम ! प्रेम !! प्रेम !!!* राजा साहबके यह शब्द १३-१४ वर्ष पहलेके हैं तेरह, चौदह वर्ष पहले आपने सिर्फ मनुष्य ही अपना खेल खिलौना बतलाया था। उस समय आपने प्रेमके बलसे देश विदेश जीतनेका परामर्श दिया था। प्रेम ही अपना आभूषण समझनेकी सलाह दी थी। प्रेमसे ही परमात्माके प्राप्त

करनेका परामर्श किया था। वास्तवमें सच्चे प्रमसे क्या नहीं हो सकता है। बडेसे बड़े कठोर हृदय भी प्रेमके बलसे हिलाये जा सकते हैं। भारतके अनेक योगी, महात्माओंकी कथायें प्रचलित हैं, जिन्होंने अपने योगबल और प्रेमसे बडे बड़े खूंखार जानवर शेर भालू आदिको बच्चोंके समान सीधा कर दिया था। वास्तवमें किसी कार्यकी सच्चे दिलसे लौ लगनी चाहिये, वही सच्चा प्रेम है। महात्मा गांधीजीके अहिंसात्मक असहयोग और इस प्रेम-पुजारीके प्रेम मन्त्रमें क्या अन्तर है, इस विषयमें विवेकी पाठक स्वयं सोचें, हम तो यही समझते हैं कि महात्मा गान्धीजीके अहिंसा व्रतमें घृणाका भाव बिलकुल नहीं है, प्रेमका भाव है। अपने विपक्षी अथवा शत्रुके हृदयपर प्रेमसे ही विजय प्राप्त करने का आदेश है और हमारे चरित-नायक प्रेम-पुजारी तो बहुत दिनोंसे केवल प्रेमहीकी उपासना करते रहे हैं। इससे कोई यह न समझे कि हम राजा महेन्द्रप्रतापकी महात्मा गांधीजीसे तुलना कर रहे हैं। नहीं कदापि नहीं, महात्मा गांधीजीसे किसीकी भी तुलना नहीं की जा सकती है। यह निर्विवाद सिद्ध है कि समस्त संसारमें उनका सबसे ऊंचा स्थान है। यहा हमारे लिखनेका केवल इतना ही प्रयोजन है कि राजा महेन्द्रप्रताप बहुत दिनोंसे प्रेमके उपासक हैं। आपकी प्रेम-उपासनाके विषयमें आगे और भी लिखा गया है।

बीमारी—दूसरी बार विलायतसे लौटनेके पीछे राजा महेन्द्रप्रताप बीमार पड़ गये। कुछ लोगोंका खयाल हुआ कि

आपको राजयक्ष्मा (तपेदिक) की बीमारी हो गई है। वृन्दावनके श्रीमाध्व सम्प्रदायके वैष्णवोंने आपको आरोग्यता लाभ होनेके लिये हरिकीर्त्तिन किया। इसके संचालक श्रीयुक्त श्रीराधाचरणजी गोस्वामी और परमप्रियबन्धु स्वर्गीय श्रीयुक्त श्रीराधाकृष्ण गोस्वामी थे। इस हरिकीर्त्तिनके अतिरिक्त कितने ही हिन्दू मुसलमानोंने अपनी अपनी धार्मिक रीतिके अनुसार मन्दिर और मसजिदोंमें प्रार्थना की प्रेम-महाविद्यालयके छात्र और कर्मचारियोंने भी विशेष रूपसे प्रार्थना की और हवन किया। परमेश्वरके दरबारमें यह प्रार्थना खाली नहीं गई। सबकी सम्मिलित प्रार्थना ईश्वरने सुनी। कुछ दिनों बाद राजा साहब रोगसे मुक्त हुए और स्वास्थ्य लाभ किया।

(६)

अन्य कार्य और पुत्र-जन्म

स्वास्थ्य लाभ होनेके पीछे, संवत् १९७६ वि०में राजा साहब नैनीताल गये। वहींसे विश्वविद्यालयके डेप्यूटेशनमें सम्मिलित हुए और कई स्थानोंमें डेप्यूटेशनके साथ भ्रमण किया। संवत् १९७० विक्रमीके श्रावण मासमें आपकी भींदवाली श्रीमती रानी साहिबाके पुत्र उत्पन्न हुआ। आपने अपने इस पुत्रका नाम "प्रेम" रखा। इसी वर्ष आपने प्रेम-महाविद्यालयमें एक बड़ी प्रदर्शिनी की, जिसमें ३०६) पुरस्कार प्रदर्शिनीकी चीजोंपर रखा, जिसमें बाहरकी चीजें भी थीं। उनको भी पुरस्कार दिया गया था।

इस प्रदर्शिनीके साथ ही साथ—"प्रेम महाविद्यालय"का वार्षिकोत्सव बहुत शानदार हुआ। श्री पं० मदनमोहन मालवीय,श्रीस्वामी सत्यदेव, बाबू ब्रजनाथ वकील (मुरादाबाद) नन्दकुमार देव शर्म्मा, स्वर्गीय पं• रुद्रदत्त शर्म्मा, स्वर्गीय स्वामी सोमदेवजी, स्वर्गीय श्रीयुक्तश्रीराधाकृष्ण गोस्वामी आदि महानुभावोंके शिक्षा तथा शिल्प उद्योग धन्धोंके विषयमें सुललित,हृदयग्राही व्याख्यान हुए थे। श्रीपूज्य पं मालवीयजीको प्रेम महाविद्यालयकी ओरसे एक अभिनन्दनपत्र भी समर्पित किया गया था। यह भी सुना जाता है कि राजा साहबने हिन्दू -विश्वविद्यालयके फण्डमें एक हजार रुपया दान किया था।

(१०)

अछूतोंके उद्धारकी चेष्टा

भारत! तेरे छः करोड़ लालोंकी बड़ी बुरी दशा है। तेरे ये लाल अपने घरमें ही अपने भाइयोंके अत्याचारसे ही दबे जाते हैं। अपने भाइयोंके सहानुभूतिका सन्देश न पाकर उलटे अज्ञानान्धकारमें ढकेले जाते हैं। यहांतक कि अपने मनुष्यरूपी अधिकारोंसे भी वञ्चित हैं। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द स्वरस्वती, श्रीमहादेव गोविन्द रानाड़े, स्वामी विवेकानन्द, स्वाम रामतीर्थने समय समयपर इनकी दुर्दशा मेटनेकी चेष्टा की है। आज भी महात्मा गान्धीके रचनात्मक कार्यक्रम (प्रोग्राम) में अन्य विषयोंके साथ एक अछूत जातियोंका उद्धारक विषय है।

स्वामी श्रद्धानन्दजी तथा उनके साथी बरावर भारत माताके इन छः करोड़ लालोंके कष्ट मिटानेकी चेष्टा कर रहे हैं। हमारे चरित्र नायक राजा महेन्द्रप्रतापका हृदय भी इन अछूत जातियोंके दुःखको देखकर कुछ कम विह्वल नहीं हुआ था। यह हम पहले कह आये हैं कि आप जो कुछ कहते हैं करके दिखलाते हैं। आप छूआछूतके पक्षपाती नहीं हैं। आपके जो कुछ विचार हैं, उन्हें डङ्केकी चोट प्रकट करते हैं। केवल प्रकट ही नहीं करते किन्तु उनके अनुसार कार्य करते हैं। अछूत जातियोंके विषयमें भी आपने ऐसा ही किया। संवत् १९७०-७१ विक्रमीमें देहरादून, मसूरीमें आप विशेष रहे थे। वहांसे आपने अछूत जातियोंके उद्धारका उपाय किया। आपका सदैव से यह सिद्धान्त रहा है कि व्याख्यानबाजी न करके, क्रियात्मकरूपसे कार्य किया जाय। मसूरी आदिकी ओर टमटोंकी एक जाति है। एक प्रकारसे यह जाति भी अछूत समझी जाती है। वहाके निवासी इस जातिके लोगोंको अपने फर्शपर नहीं आने देते हैं, इनके हाथका छुआ जल नहीं पीते हैं। वहां इन्हें भँगियोंसे कुछ ऊंचा, चमारोंके समान समझा जाता है। राजा साहब खुशी खुशी इन टमटोंके घर गये और उनके यहां भोजन किया। इन्हीं दिनोंमें एक शुद्धि सभा स्वर्गीय पण्डित रामभजदत्त चौधरीके प्रयत्नसे बनी थी। शुद्धि सभाको देखकर, राजा साहबने "प्रेम" में "शुद्धि" शीर्षक एक लेख लिखा था। इस छूआछूत लेखसे "शुद्धि" और अन्त्यज जातियोंके सम्बन्धमें आपके विचारोंका अच्छा पता लगता है।

(११)

शुद्धि

आजकल हम शुद्धिकी बहुत चर्चा सुन रहे हैं। कहीं सभा सुसाइटी बन रही हैं और कहीं कोई महाशय शुद्धि करते फिरते हैं। यह देख हमारे जीमें बहुतसी शंकायें उठती हैं। हम नहीं जानते कि कैसे इन महाशयोंने अपने आपको शुद्ध और दूसरोंको अशुद्ध ठहरा लिया है और किससे यह अधिकार ही उन्होंने पाया है और फिर वह कौनसी दवा है जिससे एकदम शुद्धि हो जाती है ?

इसमें तो हमें बहुत सन्देह है कि यह शुद्धि सभाओंके सदस्य किसी प्रकार उन अशुद्ध समझे जानेवाले मनुष्योंसे विशेष शुद्ध हैं। हम तो देखते हैं कि जैसे वह मनुष्य है वैसे ही वह। यदि आप कहें "नहीं जी" कर्मोंका अन्तर है तो हम पूछेंगे कि क्या इन सभाओंके सभ्य दावेसे कह सकते हैं कि उनके कर्म श्रेष्ठ हैं। यदि कोई मनुष्य भुजा उठा ऐसा कहेगा तो हमें उसके मनुष्यत्वपर ही सन्देह हो जायगा। यह भी फिर हमारे समझमें नहीं आता कि कौनसे कर्मोंको आप अच्छा कहते और कौनसेको बुरा कहते हैं। हमने कई शुद्धि करनेवाले भाइयोंसे सुना है कि चमारका चमड़ेका काम करना अशुद्ध है। भाई! काम क्या बुरा ? क्या तुम कोई यह उचित समझोगे कि चमड़ोंको व्यर्थ फेंका जाय। यदि कहोगे कि "नहीं" क्योंकि इसके सिवाय और कह ही

क्या सकते हो, नियम है,कि प्रत्येक वस्तुसे लाभ उठाना चाहिये, किसीको व्यर्थ न फेंक देना चाहिये तब फिर कोई न कोई चमड़ेका काम अवश्य करेगा। तब चमड़ेका काम करना मनुष्य धर्मका पालन हुआ। अब चाहे हम करें, चाहे आप। इसी प्रकार पाखाना उठाना हमारा आपका धर्म है। इसको भी बुरा काम कह घृणा नही कर सकते। बात तो यह है कि हमारे बड़े बड़े पण्डित भी दिनमें दो दफा किसी न किसी अंशमें पाखाना साफ करते ही हैं। इसको हम आप सब कोई जानते हैं। फिर वह कौनसा बुरा कर्म रहा, जिसके करनेसे किसीको अशुद्ध ठहराया जाय या जातिकी जातिको अछूत बताया जाय। भाइयो! अशुद्धि कर्म तो केवल मनुष्य धर्मको न पालना ही है। झूठ बोलना अपने लाभके लिये दूसरोंको दुःख देना ही है। और यह बातें तो हम अपने बड़े बड़े विद्वानोंमें भी पाते हैं और इसीलिये कहते हैं कि यह शुद्ध करनेवाले, अशुद्ध समझे जानेवालोंसे कदापि शुद्ध नहीं हैं।

शुद्ध करना अथवा अशुद्ध करना केवल परमात्माके हाथमें है। उसने अपने धर्मानुकूल सभी मनुष्योंको समान बनाया है। सभीके दो हाथ हैं। दो पैर हैं। सभीकें दो आंखें, दो कान हैं। कुछ अछूत जाति कानी और ऊँची जाति बननेवाली, तीन आंखों वाली नहीं है। यदि यह ऊँची जातिवाले चार भुजावाले होते तो हम समझ लेते कि कदाचित् परमात्माका पत्र ही ले आये हों। किन्तु सब बात बराबर पानेपर, प्रत्येक जातिमें अच्छे बुरे

देखनेपर यह कहना ही पडता है कि परमात्माने सबको समान बनाया है और ऊंची जातियोंने दुष्टतासे दूसरोंको दुःख दिया है।

उस दवाके जाननेकी भी हमारी बडी इच्छा है कि जिसके देते ही मनुष्य अशुद्धसे शुद्ध बन जाता है। यदि ऐसी कोई विधि है तो उसका सबसे अधिक शुद्ध बननेवाली जातिको ही आवश्यकता है, क्योंकि हम देखते हैं कि यह अपनेको शुद्ध बताती हुई भी महा कुकर्म करती है।

यदि कोई भाई कहें कि 'नहीं' शुद्धि करना हमारे वेदमें लिखा है और इसीलिये दूसरोंको शुद्ध बनाना हमारा कर्त्तव्य है तो हम कहेंगे कि प्यारे भाइयो! वेदानुसार पहिले आप ही शुद्ध हूजिये। आप ही वेद क्या जानते हैं। वेदको नाहक बदनाम करते हैं। वेद केवल ज्ञानका नाम है, किसी पुस्तकका नाम नहीं और ज्ञान उदय होनेके पश्चात् ऊँच नीचका भेद रह ही नहीं सकता।

इसलिये ज्ञानवान पुरुषोंकी सेवामें हमारी यही प्रार्थना है कि शुद्धिके आडम्बरको हटाइये। मनुष्यत्वके अधिकारको जताइये। सब मनुष्य स्वयं शुद्ध हैं ऐसा बताइये।

मनुष्यमात्रमें प्रेम करनेके लिये न किसी शुद्धि सभाकी आवश्यकता है, न किसी शुद्धि-आन्दोलनकी जरूरत है। यदि है किसी बातकी जरूरत, तो केवल इस बातकी कि आप घृणा छोड़ें, ऊँच, नीच जातिमें भेद करना भूलें। बगैर किसी ख्यालके सबके साथ खावें, पीवें, और किसीको अपनेसे नीचा न समझें।

हमने तो इसी सिद्धान्तको प्रत्यक्षरूपसे सिद्ध करनेके लिये

अबके अलमोड़ेमें टमटोंके घर जा भोजन किया। हमको बहुत प्रकार लोगोंने समझाया था कि टमटोंको कोई फर्शपर नहीं आने देता। इनको पहाड़में देशके चमारोंके सदृश समझा जाता है। इन्हें अभी किसी समाजने नहीं लिया है और न इनकी शुद्धि ही हुई है। पर हमको इससे क्या प्रयोजन था। हम तो मानते हैं कि मनुष्य देह पाते ही जीव शुद्ध हो लिया। सब मनुष्य समान हैं। कोई माने या न माने साथ दे या न दे। हम जैसा कहते हैं वैसा करनेको तैयार हैं। हम सहर्ष इनके घर गये और भोजन किया जिससे हमें बड़ा ही आनन्द हुआ। दुःख हुआ तो केवल यह जानकर कि यह भी अपनेसे छोटी छोटी जातियां मानते हैं। भंगीको अपनेसे नीचा समझते हैं।

इस जगह हम किसी जातिको यह सिद्ध कर दिखाना और यह शिक्षा देना कि अपनेसे नीची जातिको मिलाना ही देशके लिये उपयोगी है, उचित नही समझते। किन्तु यह अवश्य कह देना चाहते हैं कि हमारी अब बड़ी इच्छा है कि किसी भंगी मण्डलीमे भोजन पावें और उनके साथ बैठ भ्रातृभाव दिखावें। कहने सुननेका अब समय नही, अब तो काम करनेका वक्त आया है। काम न करनेसे धर्मका अपमान है। जो मनुष्य अब अपने कर्त्तव्यमें विलम्ब करेगा वह महा पापी बनेगा। अब तो समय है कि 'करो'। कल प्राण जाय कि रहें। आज ही कर डालो, नीचसे नीच जाति जिसको लोग कहते हैं उसीके साथ खाओ, पीओ, भ्रातृभाव वर्तो। किसीसे न पूछो, न गछो, न किसी औरके

करनेका अथवा कहनेका पैडा देखो। यदि तुम्हें यह विश्वास हो गया है कि मनुष्य मनुष्य बराबर हैं, नीच, ऊँच जाति कुछ नही होती, जाति पांतिके झगड़ोंहीने देशकी दुर्दशा की है तो फिर भाई शुद्धिकी कुछ आवश्यकता नहीं। आजहीसे भंगियोंके साथ खाओ, पीओ। जहां भी तुम हो वहीं पर अपने मित्रोंको भोज दो, जिसमें कि भंगी ही परोसे और प्रबन्ध करें। यह करनेकी रीति है। गाल बजाकर तो समय हमने बहुत व्यर्थ गवां लिया। आओ अब सब मिलकर काम करें और मनुष्य जातिमें भ्रातृभाव फैलावें।

सचमुच राजा साहबने जैसा कहा, वैसा करके दिखलाया। उन्होंने आगरेमें एक मेहतरके साथ भोजन किया। इससे बड़ी खलबली मची। यद्यपि हम इस बातके पक्षपाती नहीं कि किसीके साथ भोजन करनेसे ही प्रेम बढ़ता है, तथापि हमसे राजा साहबके इस साहसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता है कि जैसे आपके विचार हैं, वैसा आप करके दिखला देते हैं। किसीके विरोध भावकी परवा नहीं करते हैं। आपने वृन्दावनमें भी अछूत जातियोंके उद्धारके विषयमें एक सभा की थी। जिसके सभापति, श्रीयुक्त मधुसूदन गोस्वामीके सुयोग्य पुत्र, हमारे बन्धु स्वर्गीय* श्रीराधाकृष्ण गोस्वामी थे। इससे पहले

*—श्रीराधाकृष्ण गोस्वामी बड़े हसमुख बड़े मिलनसार बड़े अच्छे व्याख्याता थे। इस निबन्धके लेखकसे उनकी बड़ी मित्रता थी। जब कभी आप वृन्दावन जाते तब उनसे घटों बातें हुआ करती थीं। पर अफसोस! पूर्ण युवावस्थामें ही मृत्युने उनको इस संसारसे उठा लिया।

एक और घटना वृन्दावनमें हुई, जिससे विशेष हलचल मची। वह घटना यह है कि जब आप दूसरी बार विलायतसे लौटे तब आपने अपने विलायती कपडे, सब नौकरोंको बांट दिये। नौकरोंके अतिरिक्त, जो कोई आपके पास गया, और जिसने आपसे जो चीज मांगी, वही आपने दे दी। जिस समय आप नौकरोंको विलायती कपड़े बांट रहे थे, उस समय प्रेम-महाविद्यालयकी डिसपेन्सरीका एक कम्पाउण्डर भी आपके पास पहुचा और उसी समय आपका मेहतर भी वहीं आया। आपने कम्पाउण्डर और मेहतर दोनोंको कपड़ोंके एकसां सूट दिये और कहा कि यहीं पहनो। आपकी आज्ञाके अनुसार दोनोंने वहीं कपड़े पहन लिये। आपने हंसी-हंसीमें कहा कि वाह! क्या अच्छी जोडी मिली है। अच्छा तुम (कम्पाउण्डर) इस (मेहतर) से हाथ मिलाओ। कम्पाउण्डरने झट ही मेहतरसे हाथ मिला लिया। इससे वृन्दावनमें बड़ा तूफान मचा। सीधी सादी बात तो यह थी कि कम्पाउण्डरको स्नान करा दिया जाता और उसके कपड़े धुलवा दिये जाते। पर नहीं उस कम्पाउण्डरसे जो शायद सारस्वत या सनाढ्य जातिका था, प्रायश्चित्त कराया गया। उसका सर मुंडवाया गया और न जाने उसको क्या क्या दण्ड दिया गया। राजा साहबके चित्तपर इससे बडी ठेस लगी और बात भी ठीक थी। न मालूम परमेश्वर हिन्दू जातिकी बुद्धिको कब ठिकाने लावेंगे। श्रीस्वामी विवेकानन्दने हिन्दू जातिकी इस मूर्खतापर अनवरत आंसुओंकी धारा बहाते हुए कहा था कि "मैंने हिन्दुओं-

का जैसा पागल कोई नहीं देखा, मलावार आदि स्थानोंमें एक फेरिया* घृणाकी दृष्टिसे देखा जाता है। ऊँची जाति बननेवाले हिन्दू उसको अपने घरमें नहीं आने देते, उसको देखना अपवित्र समझते हैं, फिर वही फेरिया क्रिश्चियन हो जाता है तब ऊंची जाति बननेवाले हिन्दू बडे फख्रसे उससे हाथ मिलाते हैं और उससे हाथ मिलानेमें बड़ा सम्मान समझते हैं। भला इससे भी बढ़कर और क्या पागलपन होगा"। हिन्दू जाति! तेरी अधोगतिके अनेक कारणोंमें एक यह भी है कि तू हमेशा अपने लालोंके साथ बड़ा बुरा और कडा व्यवहार करती रही है। तूने अपने लालोंको अपनी गोदीमें स्थान नहीं दिया, पर जब वे बिगानोंको गोदीमें चले गये तब तू उन्हें अपनी गोदीमें बिठलानेको आतुर हुई। अपनी गोदीमें तूने अपने लालोंको घृणाकी दृष्टिसे देखा, उनके प्रति प्रेम करना तूने अपना कर्त्तव्य नहीं समझा। पर जब वे दूसरोंकी गोदमें जा बैठे तब तूने उन्हें प्यार किया, प्रेमकी दृष्टिसे देखा। तू अपनी इस करनीका फल भोग रही है। अब भी चेत! मत समझ, आगे तुझे अपनी करनीका फल न भुगतना पड़ेगा। होशमें आ, यदि ऐसा ही हाल रहा तो किसी न किसी दिन तू रसातलमें समा जायगी। इस दुनियांसे तेरी हस्ती मिट जायगी। कोई नाम लेवा, पानी देवा नहीं रह जायगा।

राजा महेन्द्रप्रतापका हृदय हिन्दुओंकी अछूत जातियोंकी

*—दक्षिणमें एक जाति होती है जो मेहतर आदिके समान समझी जाती है।

ऐसी दुर्गतिसे अत्यन्त दुःखी हुआ। सम्वत् १९७० विक्रमीमें आपने मुरादाबाद, चंदौसी आदि स्थानोंमें भ्रमण किया। इस भ्रमणमें आपने स्थान स्थानपर अछूत जातियोंकी सभाएँ कीं, उन्हें शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नतिके अनेक साधन बतलाये, उनसे कहा कि तुम इस देशके मालिक हो, प्राण हो और गवर्मेण्टके रक्षक हो। इस प्रकारकी उन्हें कितनी ही बातें समझाईं। अछूत जातियोंके घरपर आप स्वयं जाते थे। उन्हें हर प्रकारसे उपदेश देते थे और समझाते थे कि तुम उठो। राजा साहबका यह कार्य थोड़े दिन ही रहा, क्योंकि आप कुछ दिनों बाद ही विलायत चले गये। आपके पीछे यह कार्य शिथिल पड़ गया। अगर अछूतोंके उद्धारका काम, राजा साहबके चलाये हुए ही ढङ्गसे चलता रहता तो आज न मालूम अछूत जातियोंका संघटन कैसा होता?

इसी वर्ष सम्वत् १९७० विक्रमीमें स्वर्गीय श्रीगोखले महोदयके प्रयत्नसे दक्षिण अफरीकाके प्रवासी भारतवासियोंके सहायतार्थ चन्दा इकट्ठा हुआ। महात्मा गान्धीजीकी अध्यक्षतामें दक्षिण-प्रवासी भारतवासियोंने दक्षिण-अफरीकाके गोरोंके अत्याचारसे उकता कर सत्याग्रहका युद्ध किया था, महामति गोखले महोदय बराबर इस युद्धमें महात्मा गान्धीजीको सहायता देते रहे। उनके प्रयत्नसे हिन्दुस्तानके घर घरमें दक्षिण-अफरीका प्रवासी भारतवासियोंके दुःखकी चर्चा होने लगी। उस समय बड़ी व्यवस्थापिका सभाके अधिवेशन होनेके कारण

श्रीगोखले महोदय दिल्लीमें थे। राजा महेन्द्रप्रताप देहरादूनसे आते समय दिल्लीमें ठहरे और एक हजार रुपया, श्रीगोखले महोदयको दक्षिण अफरीकाके प्रवासी हिन्दुस्तानियोंके सहायतार्थ दिया।

(१२)

निर्बल सेवकका जन्म

संवत् १९७१ विक्रमीमें राजा महेन्द्रप्रतापने देहरादूनसे "निर्बल सेवक" नामक हिन्दीका एक साप्ताहिक पत्र निकाला। इस पत्रके सम्पादकीय विभागमें "विश्वमित्र"के भूतपूर्व सम्पादक हमारे प्रिय मित्र पं० मातासेवक पाठक भी काम करते थे। "निर्बल-सेवक "अपने ढङ्गका एक ही साप्ताहिक पत्र था। बड़ा मजेदार अखबार था। राजा साहब स्वयं इस पत्रके सम्पादक थे। आप स्वयं अग्रलेख और टिप्पणियां लिखते थे। यूरोपीय महासंग्राम छिड़ चुका था, यूरोपियन समरकी गति और उसके भविष्य परिणामपर बड़े मार्केके लेख होते थे। राजा साहबकी इच्छा थी कि भारतवर्षीय राष्ट्रीय महासभाके सब सभापतियोंके व्याख्यानोंका हिन्दीमें उल्था हो जाय, इस विचारसे राष्ट्रीय महासभाके सभापतियोंके अभिभाषणोंका अनुवाद भी "निर्बल-सेवक"में निकलता था। यदि इस निबन्धका लेखक भूलता नहीं है तो कह सकता है कि राष्ट्रीय महासभाके सभापति, स्वर्गीय श्री बदरुद्दीन तैय्यबजी तकके अभिभाषणके कुछ अंशका अनुवाद "निर्बल-सेवक" में प्रकाशित हो चुका था। देहरादूनके कलक्टरकी

"निर्बल-सेवक" पर बड़ी कोप दृष्टि रहती थी और शायद उस कोप दृष्टिके कारण "निर्बल-सेवक" का अन्त हुआ *।

"निर्बल सेवक" वास्तवमे "निर्बल-सेवक" था। दुःख है कि इस चरित्रके लिखते समय हमें "निर्बल सेवक" का एक भी अङ्क नहीं मिल सका जिसके कारण हम उसके एक भी लेखका मजा पाठकोंको न चखा सके। "निर्बल-सेवक" हमारी सब ही निर्बलताओंको दूर करनेकी चेष्टा करता था। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी निर्बलताओंपर विचार किया जाता था। हमारे समाजके जो दो मुख्यस्तम्भ "किसान" और "अछूत"—("अछूत" शब्द कहते दुःख होता है) अथवा दलित जातियां हैं पर हमने अपनी मूर्खताके कारण हिन्दू-समाजकी इन दोनों शिलाधारोंको निर्बल बना रखा है, राजा साहबके "निर्बल सेवक" में इन दोनों शिलाधारोंको मजबूत करनेकी चेष्टा की जाती थी। इस संसारमें "निर्बल सेवक" थोडे दिन ही रहा। पर इन थोड़े दिनोंमे ही वह अपना अपूर्व चमत्कार दिखला गया। जिसकी याद अभीतक उसके प्रेमी पाठकोंको आती है।

"निर्बल-सेवक" में लेखोंके प्रकाशित करनेके अतिरिक्त, राजा साहब सदैव दीन दुःखियोंका दुःख मेटनेको तैयार रहे हैं। "प्रेम" में आपके ऐसे बहुतसे लेख निकले हैं, जिनमें दीन, दुःखियोंकी

---

* स्वर्गीय श्रोत्रिय शङ्करलालजीके सुयोग्य पुत्र श्री श्रोत्रिय जगदीश दत्तने संवत् १९७५ विक्रमीमें बिजनौर से जो "निर्बल सेवक" निकाला था उसका इस "निर्बल-सेवक" से कुछ सम्बन्ध नहीं था।

फरियाद, स्त्रियोंकी यन्त्रणा, वकीलोंकी ताकघात, कोठीवालोंके अन्याय, जमीन्दारोंके अत्याचार, समाजके अगुओंकी उद्दण्डता और नौकरशाहीकी कठोरता और कपट नीतिका चित्र आपने बड़े ही भावमय शब्दोंमें खींचा है। संवत् १६६६ विक्रमी २५ वीं अक्टूबर सन् १६१२ ई०के "प्रेम" में आपका एक लेख "गरीबका रोना" प्रकाशित हुआ है। इस लेखके पढ़नेसे ज्ञात होता है कि राजा साहब समता और भ्रातृभावके कितने पक्षपाती हैं। आज हम गाधी युगमें रह रहे हैं। इसलिये आज हम सब ही लोगोंके हृदय तन्त्रीसे समानताकी झङ्कार निकले तो आश्चर्य ही क्या है? रूससे साम्यवादकी ध्वनि हमारे कानमें पड़ रही है। रूसका साम्यवाद कैसा है? अच्छा है या बुरा इसके विचार करनेका हम लोगोंको मौका ही कहा मिला है। रूसका साम्यवाद, यहां-वालोंने अपनी आंखोंसे नही देखा है। अभीतक रूसका साम्य-वाद हमें उनकी आंखोंसे ही दिखलाई पड़ा है, जिनकी आंखोंमें पक्षपातका गहरा रङ्ग छा रहा है। तब भला उस साम्यवादके सम्बन्धमें हम भली या बुरी सम्मति कैसे स्थिर कर सकते हैं। पर हम यहां बिना किसी सङ्कोचके यह कहनेको तैयार हैं कि जब रूसी साम्यवादके प्रवर्त्तक श्रीलेनिनका नाम हिन्दुस्तानके सर्व साधारण जन समाजमें सुनाई नहीं पड़ रहा था, तभी राजा महेन्द्रप्रताप समदर्शी थे। राजा साहबका जन्म ही इस ससारमें इसलिये हुआ है कि आप प्राणीमात्रको एक ही दृष्टिसे देखें, गरीब अमीरमें कुछ भेद-भाव न रखें, ऊंच, नीचका ढकोसला न करें,

जबरदस्त शक्तिका अत्याचार सहन न करें। विचारी अवलाओंको न सताया जाय। कोठीवाल विचारे मजदूरको पीस न डालें। राजा साहबका "गरीबका रोना" शीर्षक लेख नीचे प्रकाशित किया जाता है। उससे पता लगता है कि राजा साहबके इस विषयमें कैसे विचार हैं। इस लेखको पढ़ते समय यह ध्यानमें रखना चाहिये कि यह लेख ग्यारह बारह वर्ष पहलेका है। उस समयके भारतमें और आजके भारतमें बड़ा अन्तर है। राजा साहबने इस लेखमें हमारे देशको उन सब आवश्यकताओंपर प्रकाश डाला है जिनकी आज हमारे देशमे चर्चा हो रही है।

गरीबका रोना

आज समाजमें घोर अत्याचार हो रहा है। जिधर देखो उधर ही अन्यायका डंका बज रहा है। कहीं भोली अबलाओंको पर्देमें मूंद मूंद रखा जा रहा है। कहीं कहीं नन्हे बच्चेको गृहस्थी-के जंजालमें फांसा जा रहा है। कही जमीदार काश्तकारका दम घूट रहा है, तो कहीं साहूकार निर्बलको लूट रहा है। वकील सभीको फसाता है। पुलिस निर्धनको सताती है। भाई शूद्रको वृथा दुःख दिया जाता है। अन्य भाईयोंको नीचा बता सताया जाता है। अन्याय! अन्याय! संसारमे घोर अन्याय हो रहा है। मारे और रोने न दे, आज वह हाल हो रहा है।

हे परम पिता परमेश्वर! क्या तैने हम बच्चोंको इसीलिये पैदा किया है! पृथ्वी माता! क्या तूने हमें इसीलिये जना

कैसे जाति पांतिका अत्याचार सहन करते रहें। कैसे भला बनावटी ऊंची जातिकी जूती सहते रहें, जबतक ब्राह्मण, क्षत्री, और वैश्य यह शब्द ही न मिटेंगे, हमारे हृदयके काटे कदापि कदापि न निकलेंगे।

यह क्या आज हजार हमें दुःख देनेवाले हैं और हम गरीब सबके दण्ड सहनेवाले हैं।

डाक्टर, हकीम रण्डीके समान रुपये पर मरते हैं और बिचारे निर्धनपर कुत्तेकी तरह दौड दौड पड़ते हैं। मुन्शीजी ही लाटका लटका बोलते हैं। हाकिम भी धनीकी हवा खाते डोलते हैं।

पर हैं! कहे तो किससी कहें ये सभी हमारे भाई हैं, और हम हमारे भाइयोंके अनुयायी हैं। नाथ! सभीको सुखी रखो पर सुमति दो। किसीका बुरा न चाहें, हमें केवल यही वरदान दो और किसी तरह इस संसारको सुख रूपी बना दो। हमारा सिर चक्कर खाता है दुःखके मारे कलेजा फटा जाता है।

नाथ! नाथ! नाथ!

परमेश्वर।

रोने पीटनेसे काम नहीं चलता।

उठ! सम्हल! खड़ा हो!

ज्ञान उदय होता है।

देख! देख! ज्ञानकी आंखोंसे देख!

मैं कुछ नहीं करता और कदापि नही कर सकता।

यह सब तेरा ही किया है।

तू जो चाहे सो कर सकता है।

देख ले! मैं तू है! तू मैं हूं! भेद यह तेरी ही माया है।

स्त्रीने वृथा अपनेको अधीन समझ रखा है।

स्त्री पुरुष बराबर हैं।

सर्व युवक देशके बालक हैं।

मनुष्य जातिको सब बच्चोंकी रक्षा करनी चाहिये।

जमींदारोंको बता दे कि धर्ती उसकी है जो उसकी सेवा करे।

साहुकारोंको समझा दे कि धन दौलत किसी एक मनुष्यका नहीं।

सर्व मनुष्य जाति धन दौलतका मालिक है।

वकील तेरी अविद्यासे पैदा हुए हैं।

पुलिस तेरी दुष्टताका फल है।

जाति पांति तेरी ही मूर्खताका कारण है।

डाक्टर, वैद्य, मुन्शी, इत्यादि समाजकी बीमारी हैं।

तू गरीब नहीं, तेरी भूल है।

भूमण्डल तेरा ही है।

तूने ही उसे दो चारके हाथ सौंप यह दशा बनाई है।

उठ! अब नई समाज बना।

नये ही नियम रच।

सब मनुष्य जातिके लड़के साथ मदरसोंमें पढ़ेंगे।

किसी लड़केको बापका ज्ञान न होगा।

न कोई पिता पुत्रको पहचानेगा।

इन देश बालकोंको उनकी योग्यतानुसार वेतन और काम मिलेगा।

भूमि धन मनुष्य जातिका साझेका माल रहेगा।

सब बालक और बालिकाओंको मनुष्य जाति पालेगी।

और सब बूढ़े टेढ़े और रोगियोंकी जाति रखवाली करेगी।

उठ! अपना कर्त्तव्य पालन कर और सुख भोग!!

उठ!

ज्ञान! ज्ञान! ज्ञान!

निःसन्दे भूल थी। मैं जो चाहूं सो कर सकता हूं। चाहूं तो आज ही भूमण्डलको लोट पोट कर सकता हूं।

मैं ही तो हूं। जहां देखो वहां मैं ही तो हूं। स्त्री, जन सख्याको दूनी करनेवाला मैं ही तो हूं। प्रत्येक घरका प्रबन्ध करनेवाला मैं ही तो हूं। जमींदारका चपरासी मैं ही तो हूं। साहूकारका चौकीदार मैं ही तो हूं। वकीलका दादा बाबा मैं ही तो हूं।
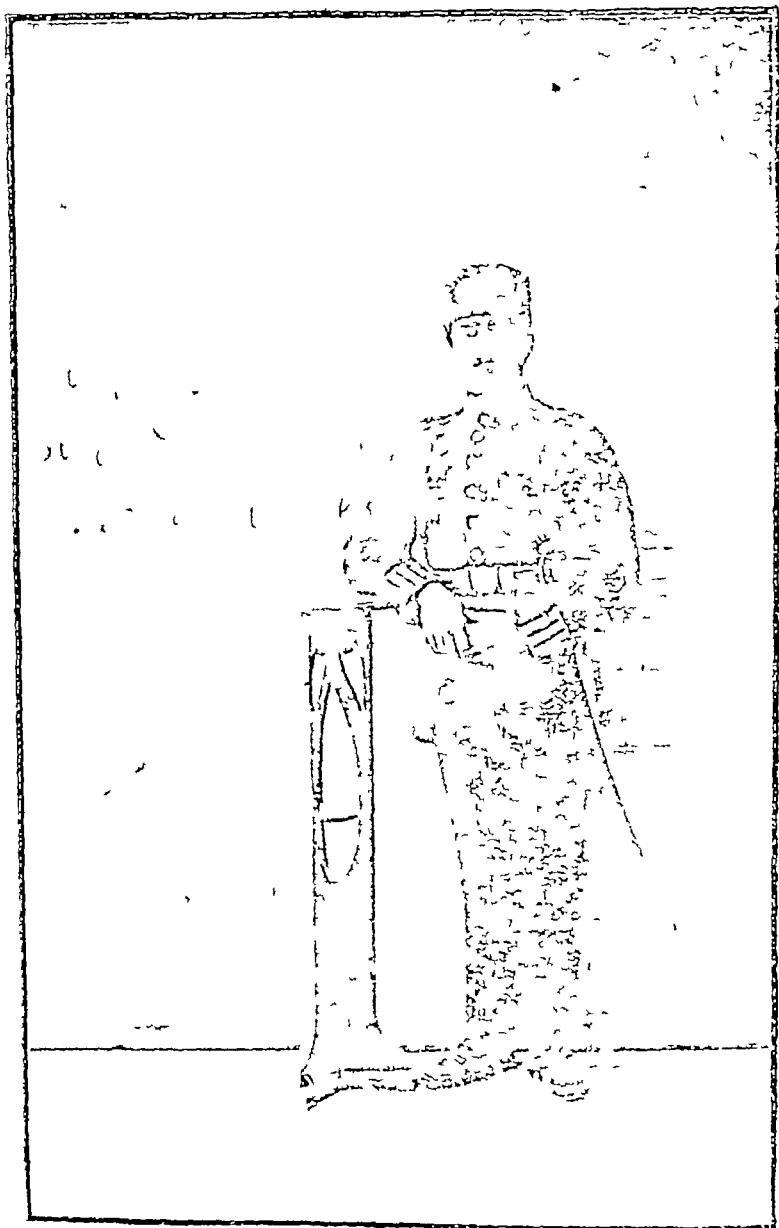
यह अफगानिस्तानके अमीर, अमीर अमानुल्ला खां साहिबकी तस्वीर है जिसे १९२० में अमीर साहिबने स्वयं अपने हस्ताक्षरसे राजा साहबको भेंट की थी। उसमें अमीर साहबका हस्ताक्षर मौजूद है।

यह उस पत्रका चित्र है जो टर्कीके सुलतानने राजा महेन्द्रप्रताप द्वारा १९१५ में अफगानिस्तानके अमीरके पास भेजा था।

डाकूर हकीमको गढ़नेवाला मैं ही तो हूं। पुलिसमैन और फौज-का सिपाही मैं ही तो हूं और वेचारा बाबू, मुन्शी मैं ही तो हूं, अमीरको अमीर बनानेवाला मैं ही तो हूं, और हाकिमको हाकिम रखनेवाला मैं ही तो हूं।

हम आजहीसे समस्त संसारकी सरकारोंसे प्रार्थना करेंगे और यही मांगेंगे कि महाराज कानून बतलाइये। बापकी जायदाद बेटेको ही मिले, ऐसा न रखिये। यदि हमारे हाथ यह नियम लग गया तब तो बस सारा दुःख दूर होगया।

इच्छा किये कारज मिले काम किये परिणाम
मोल प्रेम फल लीजिये प्रेमहि केवल दाम।

प्रेम! प्रेम!! प्रेम!!!

इसी प्रकार आपने अपने एक दूसरे लेखमें उन अत्याचारों और अन्यायोंका वर्णन किया है जो देशमें, नहीं नहीं दुनियामें धनके मदमाते करते हैं। आपकी लेखनीमें एक विचित्रता है कि हंस भी लो और शिक्षा भी ग्रहण कर लो, राजा साहबका यह लेख भी ग्यारह वर्ष पहले "प्रेम" में प्रकाशित हुआ था।

प्रेमकुटी, श्री वृन्दावन

सेवामें तारीख २५ मई सन् १९१२

श्रीमान् प्राइवेट सेक्रेटरी साहब
श्रीमान् महाराजाधिराज
श्री १०८ श्रीमस्तरामसिंह बहादुर
भचतनगर

श्रीमान्‌को बारम्बार दण्डवत्,

हमारी यह पहुंच कहां जो आपके दर्शन कर पावें। आप आजकल एक महाराजाधिराजके प्राइवेट सेक्रेटरी ठहरे, इससे इस पत्र द्वारा ही कुछ अपना दुखड़ा रोते हैं, अपनी मुसीबत बयान करते हैं। आशा है कि आप एक निगाह तो हमारी अर्जीपर डालेंगे। हमारी तकलीफोंपर तरस खा दो आंसुओंके मोती हमारे नामपर दे डालेंगे। पूर्ण विश्वास है कि आपका हृदय इतना कॅंजूस नहीं कि दो पानीके मोती भी खैरात न करें, हम गरीबोंको दान न करें। इसीसे यह प्रार्थना है, इसीसे यह मांगना जांचना है। महाराज सेक्रेटरीजी! आपको याद न रहा होगा (क्योंकि आपको आजकल काम बहुत रहता है) कि यह दास आपका सगा भाई है। हम आप एक बाप परमेश्वर और एक माता पृथ्वीके पुत्र हैं। फरक है तो बस इतना कि आपने लक्ष्मीसे विवाह किया है और हमने दरिद्रतासे फेरे डाले हैं। हमने कंगाल बन सुधबुध गँवाई है और आप धनके नशेमें मतवाले हैं।

प्यारे भाई! तुम्हारी अगर नौकरी छूट गई तो बस फिर यह तुम्हारी प्रतिष्ठा खाकमें मिल गई। पर हमें जिस बातका फिक्र है, उसे हमसे कोई छीन नही सकता। हम अपने मां बापके भक्त ही कहावेंगे। प्यारे भाई! तुम्हें मैं अपने हकीक़तकी याद दिलाना चाहता हूं, नौकरीकी जड़ ढाई हाथ जमीनसे ऊँची होती है यह बताना चाहता हूं और तुम अगर यह कहो कि नौकरी छूट

भी जाय तो क्या। हम जो रुपया बना लेंगे, वह तो हमारे काम आवेगा तो मैं तुम्हें जरूर समझाऊंगा कि लक्ष्मी चञ्चल होती है, न मालूम के दिन तुम्हारे पास ठहरे और यह तो मानी हुई बात है कि एक ही घराना सदा अमीर नहीं रहता। आज जैसे तुम औरोंको लूट रहे हो, कल तुम्हारे बच्चोंसे और लोग लूटेंगे। जैसे तुम आज लोगोंको गरीब बना रहे हो, कल तुम्हारे बच्चोंको और लोग कङ्गाल बनावेंगे।

और प्यारे भाई! बात तो यह है कि तुम्हारे राजा भी तो हमारे भाई हैं और यह भी तो कल गरीब थे, आज राजा हुए तो क्या। कोई पृथ्वीका आदिसे तो राजा नहीं, इन्होंने तुमसे चन्द भूले भटकोंको जालमें फांस अपना बना, अपने ही निर्बल भाइयोंपर हुकूमत बिठाई है। तुम्हीं लोग एक गिरोह बना दूसरे भाइयोंको लूट रहे हो और कहो कि इन्तिजाम और हमारे फायदे के लिये यह तुमने ढोंग रचा है तो फिर यह कहांकी बात है कि तुम रेशमकी शय्यापर विश्राम करो और अपने भाइयोंको कङ्कडोंमें डाल रखो। एक मदहक सुबहसे शामतक पाप करनेवालेकी तुम खिदमत करते रहो और गरीब भाइयोंके कमाये रुपयेको लूटते रहो। प्यारे भाई! तुम खुद समझो, अपने राजाको सुधारो। उस बिचारेको बताओ कि वह शराब नहीं पीता बल्कि गरीब किसानका खून पीता है। वह खुद ऐश आराम नहीं उड़ाता बल्कि रिआयाको भाड़में भूनता है। एक जानके लिये हजारों नौकर रख लोगोंको काहिल बना या उनका समय व्यर्थ गवां देशका

चाहिये या मनुष्य-जातिका नुकसान करना है, बहुत चटकीली भड़कीली फिजूल चीजें खरीद गरीब भाइयोंका समय फिजूल चीजें बनानेमे लगाता है। अगर यही करोडों मनुष्य जो अमीरोंके लिये फिजूल चीज बना रहे हैं कामकी चीजें बनाने लग जावें या खेती करें तो क्या कोई भूखा मरे और क्या कोई नङ्गा फिरे? याद रहे, कहावत है, कि "राजाके सेवक नरकमे जाते हैं"। तुम अगर राजाके सुधारकी चेष्टा न करोगे, तो महा पापके भागी होगे। राजाके साथ नरकमें वास करोगे। हम भाईका फर्ज अदा करते हैं। इसीलिये यह पत्र आपकी सेवामें भेजते हैं।

आपका प्रेमी—

प्रेम—दासाहिक

नेह डोरमें उड़ाई है पाती पतङ्ग।
जावेगा शमेपर जरूर ही पतग।

सेक्रेटरीजी! प्रेमके सेवककी भी जरा पाती पढ़ियेगा, इस गुलामकी भी प्रार्थनापर ध्यान धरियेगा। दासको न भूल जाइयेगा। इसे हमेशा अपना प्रेमी पाइयेगा। हम आप तो दो तरहके भाई हैं, मनुष्य जातिका रिश्ता, फिर गुलामोका नाता ठहरा, हमारे आपसमें होनी चाहिये मुहब्बत, जब तअल्लुक है ऐसा गहरा। प्रार्थना है कि जिन्हें तुम सेवक कहते हो, उन्हें भूल न जाना। याद रहे तुम भी किसीके सेवक हो, मदमें फूल न जाना। पण्डितजीकी सी लफङ्गबाजी मुझसे नहीं आती। मुझसे तो लिखी जाती है ऐसी ही पाती।

घिसटते घिसटते क़लम रो गया।
कागज़का काला मुंह हो गया।

आपका प्रेमी—
महेन्द्रप्रताप, सम्पादक

इस लेखके अतिरिक्त उन्हीं दिनोंमें राजा साहबका एक और लेख—"पण्डितजीसे भेंट" शीर्षक "प्रेम" में प्रकाशित हुआ था। उक्त लेख भी नीचे उद्धृत किया जाता है, जिसको पढ़नेसे यह पता लगता है कि हमारे देशमें जो सामाजिक अत्याचार हो रहे हैं, उनको मिटानेके लिये राजा साहब कितने उत्सुक हैं। आपका वह लेख यह है:—

पण्डितजीसे भेंट

पण्डितजी, नमस्कार

"मैं आज आपकी सेवामें कुछ वार्तालाप करने आया हूं। कुछ सीखने और कुछ सिखाने आया हूं। क्रोधित न हूजिये, मैं तो केवल वह शिक्षा दे सकता हूं जो कोई मनुष्य को देते हैं और आपके दर्शनसे तो मुझे बहुत लाभ हुआ और होगा।

इसमें कुछ सन्देह नहीं, आप महाराज विद्वान् हैं आप सब कुछ जानते हैं। परन्तु आप जो कहते हैं वह केवल भारतवर्षका विचार करके। आप दुनियांका कुछ ख्याल नहीं करते। महाराज! आज दिन मूर्ख हिन्दुस्तानियोंमें तो आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है पर आपको और उन विद्वानोंको भी जो आपकी आव भगत

करते हैं बाहर दो कौड़ीको भी कोई नहीं पूछता। वे हमें गवांर और काला आदमी बता चुटकियोंपर उड़ाते हैं।

महाराज! आप क्या भारतवर्षको लिये फिरते हैं, यह तो महाराज दुनियांका एक कोना है। दुनियांमें बड़े बड़े देश हैं जहां धन दौलतका कुछ ठिकाना नहीं है, जहां गरीबसे गरीब मजदूरको ३) तीन रुपये प्रति दिन मिलते हैं, जहां करोड़पतिको केवल अमीर कहते हैं।

नहीं, लक्ष्मी ही नहीं, हमारी सरस्वतीजी भी आज दिन वहीं विराजती हैं। वहीं नई नई चीज बना हमको मुहताज कराती हैं। जरा सी चीजको भी हम उन देशवालोंका ही मुंह ताकते हैं। आप यूं तो बहुत पुरानी चाल चलते हैं। धोती और बगलबन्दी ही पहनते हैं। किन्तु यह मलमल महाराज, उन्हींके हाथकी बनी है, जिन्हें आप म्लेच्छ बताते हैं।

अजी बस! बैकुण्ठको जाने दीजिये, मोक्षका ख्याल छोड़िये प्रत्यक्षकी बातें कीजिये। खानेको तो पेटभर रोटी नहीं मिलती, पहरनेको कपड़ा नसीब नहीं होता। कितने भाई प्लेगसे बेमौत मरते हैं। कितने हैजेके शिकार बनते हैं। अजी महाराज! वह भी तो देश हैं जहां मनुष्य यहीं बैकुण्ठका मजा उठा रहे हैं, जहां प्लेग, हैजेका नाम ही नहीं, जहां गुलामीका नाम ही नहीं।

महाराज! अब मुर्दोंको रोटी न खिलाकर जीतोंकी फिकर कीजिये। आगमें रोटी न झोंककर हम गरीब भाइयोंका पेट

पालन कीजिये। मुफ्तखोरी न सिखाकर कुछ धन्दा बताइये, स्वर्गका ख्याल छोड़ इस दुनियांहीमें सीधा मार्ग दिखाइये।

महाराज मुफ्त खाना खिला काहिल बनाना हरगिज पुण्य नहीं ; यह विष खिलाना है हरगिज भोजनदान नहीं। सोचिये, अगर यही लाखों आदमी बजाय दूसरोंकी बैठे कमाई खानेके काम करने लगें तो देशमें कितना और काम होने लगे। फिर यही देश प्रत्यक्ष वैकुण्ठ बनने लगे।

आप अपना फिकर न करें। इस हालतमें पण्डितोंकी तो जरूरत ही रहेगी, सिर्फ शक्ल तबदील हो जायगी। अब आप ख्याली पुलाव पकाते हैं, फिर आप रोटी पकाया करना। अब आप कहानी कह जी बहलाते हैं, फिर आप इतिहास सुनाया करना। अब आप मुर्दाजबान पढ़ाते हैं, फिर आप प्रचलित भाषा सिखाया करना। आपकी रोटी कभी नहीं मारी जा सकती। आप खातिर जमा रखिये, कुछ फिक्र न कीजिये। पर अपनी रोटीके ख्यालसे दूसरोंको जालमें फांस रखना महा पाप है। याद रहे कि इस थोड़ी जिन्दगीके बाद आखिर काल है, जिससे बचनेको तुम्हारे पास हथियार है न ढाल है।

आहा! यह सुनकर मुझे बडा हर्ष हुआ। आपने मेरे जैसे तुच्छ प्राणीकी बात मान ली, देशके उपकार करनेकी ठान ली। आइये! हम आप मिलकर एक काम करें। कोषसे म्लेक्ष, शूद्र इत्यादि शब्दोंको निकाल दें, फिर सब भाई भाई बन इकट्ठे हो इस देशको सुधार लें। दुनियांमें गिरी दशासे भारतको उबार

लें। गरीबोंका पक्ष लेना पण्डितोंका काम है। इसीमें हमारा तुम्हारा नाम है।"

राजा साहब पुरानी लकीरके फकीर नहीं। वे समाजसे सब प्रकारकी कुरीतियां हटाना चाहते हैं। ११—१२ वर्ष पहले आपने "प्रेममें" एक टिप्पणी लिखी थी। जिसका शीर्षक यह था :—

लीक पीटनेमें क्या धरा है ?

सज्जनो !

"मतोंके भेदने हमारी यहांतक मत हर ली है कि हम आचार-विचार दस्तूर और रिवाजके गुलाम हो आपसमें द्वेष करते हैं। अपने ही भाईके साथ इसलिये कि वह अपनेको मुसलमान या ईसाई कहता है न खाना खाते हैं और न अपने बच्चोंको ब्याह शादी करनेहीकी इजाज़त देते हैं। चाहे मनुष्य जातिका नुक़-सान हो वह हमें मंजूर है। परन्तु हमारे दस्तूर न टूटें, पुराने लीक पीटनेके आचार न बिगड़ें। बलिहारी इस समझ और बुद्धिकी !

यही नहीं प्यारे भाइयो ! दस्तूर और रिवाज हमारे छोटे छोटे बच्चोंको फांसी लगाते हैं और हमारी स्त्रियोंको काल कोठरीकी सज़ा देते हैं। हा ! छोटी उमरकी शादी और पर्देका रिवाज, हम इसलिये जारी रखते हैं कि हम दस्तूर और रिवाजके आज दिन गुलाम हैं।

भाई मैं तो यह मानता हूं कि जो प्रेमके दुश्मन नहीं हैं, वे ऐसे आचार-विचार, दस्तूरों और रिवाजोंको दूर करके प्रेम हर हृदय-मन्दिरमें स्थापित करें और सब ही मनुष्य जातिके प्रेमियों-का यह धर्म है।"

आप कूपमण्डूक रहनेके पक्षपाती नहीं हैं। न्यूयार्क प्रदर्शिनीके समय आपकी इच्छा थी कि एक खास जहाज तैयार किया जाय। जो यहांसे यात्रा-प्रेमी नवयुवक भारतवासियोंको प्रदर्शिनीके समय ले जाय। इस जहाजमें प्रेम-महाविद्यालयके कुछ अध्या-पक और लेखकोंको भी ले जाया जाय। यह जहाज, सारी दुनियांमें घूमे। इस जहाजमें अध्यापक लोग, प्रबन्धकर्त्ताओंका काम करें और कुछ लडके, कुलियोंका काम करें। जहाजमें चार घण्टे पढाई हो, इस जहाजमें जानेवाले प्रेम महाविद्यालयके विद्यार्थी और अध्यापकोंसे कुछ खर्चा न लिया जाय। अन्य यात्रा-प्रेमी नवयुवकोंसे फीस ली जाय। आठ हजार पहले दर्जेका किराया और पांच हजार दूसरे दर्जेका किराया रखा जाय। पर कई कारणोंसे आप अपना यह विचार पूरा नहीं कर सके। अतएव यह काम अधूरा रह गया। यदि राजा साहबके इस विचारके अनुसार प्रेम-महाविद्यालयके छात्र और अध्यापक दुनियाकी हवा खाते तो उनके विचार ही और हो जाते, उनके मनमें नई आकांक्षायें, नई इच्छायें और नये भाव पैदा होते, सम्भव है कि कुछ नवयुवक देशसेवाके लिये किसी विशेषरूपसे तैयार हो जाते। पर यह कार्य न हो सका।

(१३)

तीसरी यूरोप-यात्रा

"निर्बल सेवक" के निकलनेके कुछ दिन पीछे यूरोपमें महा-संग्राम छिड़ गया। राजा साहबकी भी इस संग्रामके देखनेकी प्रबल इच्छा हुई। अतएव आप संवत् १९७१ विक्रमीके शिशिर ऋतुमें श्रीयुक्त हरिश्चन्द्रजी विद्यालङ्कारके साथ विलायत गये। जेनोवामें एक चेंपलेन (पादरी) हैं, वे पहले किसी समयमें बम्बईमें रहते थे, वे राजा साहबके केवल परिचित ही नहीं, बड़े हितैषी भी हैं। राजा साहब कुछ दिन उनके यहा ठहरे, वहांसे आप वार्सेलमें गये, जो जेनोवाका फ्राण्टियर है। वहांसे आप वापिस नहीं आये। आपको जो मनीआर्डर, पत्र वगैरह भेजे गये, सब लौट आये, और आपका कुछ भी पता नहीं लगा कि आप कहां हैं? इससे सब लोगोंको वड़ी चिन्ता हुई। इधर उधर आपकी खोजमें पत्र भेजे गये। पर कहींसे कुछ पता नहीं चला। तब अन्तमें लाचार होकर श्रीकुँवर हुकमसिंहने यूरोपके एक पत्रमें विज्ञापन दिया, जिसका सारांश यह था कि जो राजा साहबका पता बतावेगा, उसे इनाम दिया जायगा। इस विज्ञापनको पढ़कर उस चेंपलेनने लिखा:—"राजा साहब एक ऐसे सज्जन और उच्च विचारके हैं कि मैं उनका वर्णन नहीं कर सकता। मैं इनाम नहीं चाहता। मैं तो केवल प्रेम मूर्त्ति (राजा साहब) का भूखा हूं। जब मुझे कुँवर साहबकी याद आती है तब मुझे

कुछ भला नहीं मालूम पडता, अब मुझे पता लगेगा तो मैं फिर लिखूंगा।"

इस यूरोपियन युद्धमें राजा महेन्द्रप्रतापकी दशा महाभारतके वर्णित एक ब्राह्मणकी कथाके समान ही हुई। वह कथा यह है कि एक ब्राह्मण महाभारतके महासंग्रामको देखने जा रहा था, उसे देखकर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रको कुछ वहम हुआ। वे सोचने लगे कि यदि यह ब्राह्मण अपने ब्रह्मतेजसे कौरवोंकी सहायता करेगा तो पाण्डवोंकी सेनामें बडा प्रलयकाण्ड उपस्थित होगा। अतएव उन्होंने ब्राह्मणसे प्रश्न किया कि "हे भूदेव! आप कहा जा रहे हैं?" ब्राह्मणने उत्तर दिया कि "मैं युद्ध देखने जा रहा हू।" भगवान् श्रीकृष्णने फिर पूछा कि आप केवल युद्ध ही देखेंगे अथवा और भी कुछ करेंगे। उसने उत्तर दिया कि "मैं जिसका निर्बल पक्ष देखूंगा, उसको अपने मन्त्रबलसे उत्साहित करूँगा।" भगवान्ने देखा कि यह सचमुच बड़ा भयङ्कर जीव है, सोचा कि इससे बचनेका कुछ उपाय करना चाहिये। अतएव उन्होंने उसका सिर काटकर एक पेड़पर ऐसे स्थानपर रख दिया कि जहासे वह दोनों ओरकी लडाई देख सके। इस प्रकार श्रीकृष्णने उस ब्राह्मणकी युद्ध देखनेकी इच्छा पूरी की।

उदाहरण ठीक न होनेपर भी हमारे चरित्रनायक, राजा साहबके सम्बन्धमें किसी न किसी अंशमें फबता ही है। जिसके कारण आप अभीतक हिन्दुस्तानको लौट नहीं सके हैं। हिन्दुस्तानसे बाहर रहकर इस दुखिया भारत माताके भाग्यके निबटारेके

लिये, आपने क्या क्या प्रयत्न किये और आपके प्रयत्न, कहांतक उचित और अनुचित थे, कहांतक सफल हुए, इसकी आलोचना करनेका अभी समय नहीं आया है और हिन्दुस्तानसे बाहर रहकर आपने जो कुछ काम किया है, उसके सम्बन्धमें न कोई निश्चयात्मक और प्रामाणिक सम्मति दे सकता है। यह मानी हुई बात है कि स्वाधीन और पराधीन देशोंके इतिहासोंमें बड़ा भेद होता है। अवस्था भेदके अनुसार इतिहास-भेद भी हो जाता है। बहुतसी ऐसी बातें होती हैं जो पराधीन देशमें और ही निगाहसे देखी जाती हैं और स्वाधीन देशमें और ही निगाहसे। प्रायः देखा गया है कि स्वाधीन देशमें जो विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है, वही पराधीन देशमें अत्यन्त घृणित और हेय समझा जाता है। प्रायः यह भी इतिहाससे पता लगता है और देखनेमें आता है कि जब कभी किसी पराधीन देशका निवासी अपनी समझके अनुसार अपने देशके उद्धार करनेकी चेष्टा करता है तब अनेक लोग उसको और उसके उद्योगको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं पर जब उसका उद्योग सफल होता है तब उसकी और उसके उद्योगकी सराहना करते हैं, इतिहासमें उसको बहुत ऊंचा स्थान दिया जाता है। अनेक लेखक उसके उद्योग और उसकी प्रशंसाके पुल बांध देते हैं, कवि लोग अपनी कविता द्वारा उसकी कीर्त्ति कौमुदीका विस्तार करते हैं। सर्वसाधारण ग्राम्यजन उसके और उसके उद्योगके विषयमें अनेक गीतोंकी रचना कर डालते हैं। वे गीत, घर घरमें बड़े चावसे गाये

जाते हैं। वंश परम्परा गत, पीढ़ी दर पीढ़ी लोग उसकी और उसके उद्योगकी चर्चा करते रहते हैं। कहनेका मतलब यह है कि प्रत्येक देशकी अवस्थाके अनुसार ही, राजा महेन्द्रप्रताप जैसे व्यक्तिओंके कार्यको नापा जाता है और विचार किया जाता है। अतएव यह कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि विदेशोंमें राजा महेन्द्रप्रतापका कौनसा अच्छा और कौनसा बुरा काम हुआ है?

जब राजा साहबके घरके लोग, माता, इष्ट मित्र बन्धु आपका पता जाननेके लिये चिन्तित हो रहे थे तब आप भी चुपचाप शांतिपूर्वक विदेशमें बैठे नहीं रहे। जब यहाके लोग इस फेर और चक्करमें पड़े हुए थे कि राजा साहब कहां हैं तब आप विदेशोंमें चक्कर काट रहे थे। बड़े लाटकी कौन्सिलमें आपके विषयमे कई प्रश्नोत्तर हुए थे, तब स्वयं राजा साहबने एक लेख अखबारोंमें प्रतिवादमें लिखा था, जिसमें अपने दौरेका वृत्तान्त उल्लेख किया है। बड़े लाटकी कौन्सिलके सवाल जवाब और आपका लेख नीचे प्रकाशित किया जाता है, जिससे आपकी परिस्थितिका पता लगता है। आश्विन मास सम्वत् १९७९ वि० में बड़े लाट साहबकी व्यवस्थापिका सभाके एक सदस्यके प्रश्न करनेपर सरकारकी ओरसे यह उत्तर दिया गया कि भारत सरकारको मई सन् १९१६ ई० में कुँवर महेन्द्रप्रतापसिंहकी यूरोपमें बागियाना कारवाइयोंका हाल मालूम हुआ। इस कारण यह उचित समझा गया कि उनकी जायदादकी आयका कुछ भी भाग उनको अपने

प्रचारके लिये न पहुचे, यह उचित समझा गया कि उनकी जायदाद, रेग्यूलेशन नं० ३ सन् १८१८ के अनुसार कुर्क कर ली जावे। अतएव १ जुलाई सन् १६१६ को वह कुर्क कर ली गई। ऐसा ज्ञात होता है कि भारत सरकारको कुंवर महेन्द्रप्रतापसिंहके भारत वापिस आनेमें कोई आपत्ति नहीं है, यदि वे आवेंगे तो न्यायालयमे उनका विचार किया जायगा। भारत सरकार जायदाद कुंवर महेन्द्रप्रतापसिंहके नाबालिग लड़केको देना और कुंवर साहबके निजी अधिकारोंको समाप्त करना तजवीज करती है। सन् १६१६ ई० में उनकी जायदादकी जायद आमदनी दस हजार रुपया माहवार थी और साढ़े बाईस हजार रुपया बचता था। कुंवर महेन्द्रप्रतापसिंहकी धर्मपत्नी, झींदके राजा रणबीरसिंहकी बहिनको २००) रुपया मासिक और उनके बच्चोंको ४००) रुपया मासिक जिसमें एक यूरोपियन आया (दाई) का वेतन भी सम्मिलित है, दिया जाता है। भारत सरकार कुँवर महेन्द्रप्रतापसिंहके राजनीतिक और शिक्षा सम्बन्धी कार्योंसे केवल इतनाही परिचित है कि वे एक बड़े जोशीले सज्जन थे, जो शिक्षा सम्बन्धी बढ़े चढ़े विचारवालोंसे सलाह लिया करते थे, वह भारतसे १६१५ के आरम्भमें ही महायुद्धके कुछ दिनों पीछे स्विट्जरलैण्ड चले गये और युद्धके समयमें जो कुछ उनसे होसका, बादशाहके दुश्मनोंको सहायता देते रहे, और अपने कार्य्योंकी सफलताके लिये, मध्य एशियामें सन् १६१५ ई० में आये, जहाँ वे सन् १६१७ तक रहे। तबसे उन्होंने अपना समय विशेष कर जर्मनीमें ही

व्यतीत किया है। जनताको कुँवर महेन्द्रप्रतापसिंहका* नाम इस कारण याद है कि उन्होंने प्रेम-महाविद्यालय नामक संस्था स्थापित करनेके लिये बहुतसा दान दिया है, जोकि एक साहित्य शिल्प और उद्योगका स्कूल है।

ऊपर जो कुछ लिखा गया है वह सरकारके कथनका सारांश है, राजा महेन्द्रप्रतापने सरकारके कथनके प्रतिवादमें "इन्डिपेन्डेन्ट" में जो लिखा, वह भी राजा साहबके शब्दोंमें सुनिये :— "मुझे आपके पत्रमें यह गलत खबर पढ़कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि, सितम्बरके महीनेमें गवर्मेण्टने लेजिस्लेटिव असेम्बलीके मेम्बरोंसे कहा था कि मैंने महायुद्धमें गवर्मेण्टके दुश्मनोंको सहायता दी थी। ब्रिटिश सरकारने इस सम्बन्धमें जो झूठी बातें कही हैं, उनकी असलियत इस तरह पर है। मैं २० दिसम्बर सन् १९१४ को हिन्दुस्तान छोड़कर फ्रांस पहुंचा। वहांसे स्वीट्जरलैण्ड, इटाली होता हुआ, जर्मनी पहुचा। कैसरने बड़े मानके साथ मेरा स्वागत किया। फिर मैं टर्की पहुंचा और सुलतान महमूद पांचवेंसे मिला। टर्कीके सुलतान और कैसरने अमीर काबुलसे मिलनेको मुझे शाही चिट्ठिया दीं। मैं कुछ जर्मन और तुर्क अफसरोंको साथ लेकर, भूपालके मौलाना बर्कतुल्ला सहित रवाना हुआ। घोड़ों और गाड़ियोंपर सारा फारिस तैकरके हम लोग २ अक्टूबर सन् १९१५ को काबुल पहुचे। हमारी अफगान

* राजा साहबने अपने नामके पीछेसे सिंहकी उपाधि उड़ा दी, इसलिये वे राजा महेन्द्रप्रताप कहलाते हैं।

सरकारने बड़ी खातिर की। मैं यहां फरवरी सन् १९१८ तक रहा। मैं यहांसे रूस होता हुआ जर्मनीको रवाना हुआ। मैंने अपने हाथसे अमीरकाबुल और सुलतानकी चिट्ठियाँ जर्मनीके कैसरको दीं। मैं सन् १९१९ की वसन्त ऋतुतक यूरोपमें रहा। अफगान युद्धकी खबर पाकर काबुलको रवाना हुआ। रास्तेमें मैं अपने सच्चे साथी मोशिये लेनिनसे मिला। रूसी मिशनको लेकर मैं काबुल पहुंचा। यहां चार महीने रहकर, एक सालतक बदखशाँ इत्यादिमें घूमा। मुझे काबुलके अमीर अमानुल्लाखांने चीनके प्रेसीडेण्ट, दलाई लामा तथा शाह जापानके लिये चिट्ठियां दी थीं। मैं चीनी तुर्किस्तान होकर तिब्बत जाना चाहता था। मैंने संसारका दो बार भ्रमण किया। काशगढ़के अंगरेज कौन्सिल जनरलने मेरे जानेमें बडी सख्त रुकावटें पैदा कीं। चीनी सरकारकी मेहरबानी होनेपर भी इस अंगरेज अधिकारीके कारण मैं चीनी तुर्किस्तान होकर न जा सका। मैंने शाही चिट्ठियां चीनके प्रेसीडेण्टको भेज दीं और काबुलको लौटा दीं। मैं फिर यूरोप गया और जनरल वलीमोहम्मदखाके साथ कुछ अर्सेतक रहा। इसके बाद मैं फ्रांस, मैक्सिको होता हुआ, गत महीनेमें जापान पहुचा। मैं यहां लगभग तीन महीने ठहर कर पेकिङ्ग जाऊंगा। वहांसे तिब्बत पहुचूंगा। खास कर मेरा उद्देश्य धार्मिक है। लेकिन मैंने राजनीतिका बहिष्कार नहीं किया है। मैं जो कुछ भी कहता हूं, यह सब धार्मिक और मानवताकी दृष्टिसे। मैं आज कल अफ़गानिस्तानका एक नागरिक हूं।
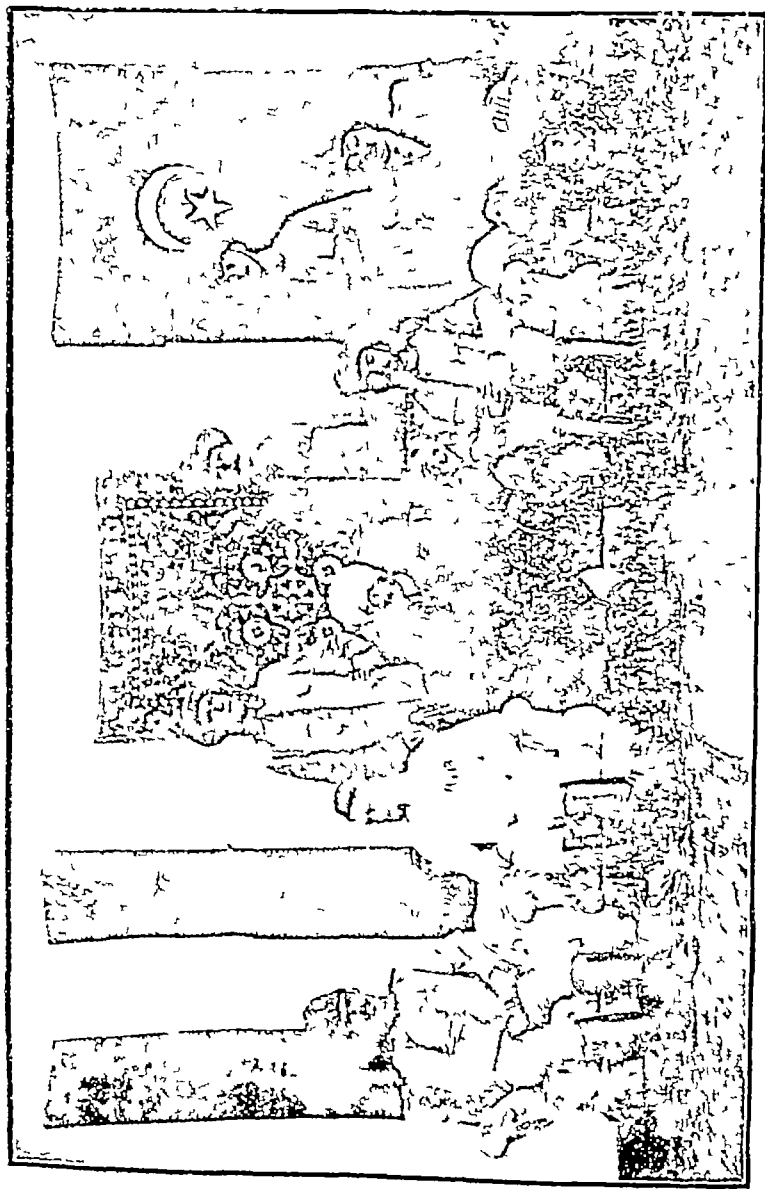
इण्डो-टर्को-जर्मन मिशनके प्रतिनिधिके साथ राजासाहब पगड़ी बांधे बीचमें बैठे हुए हैं।
(यह मिशन २ अक्तूबर १९१५ में काबुल पहुंचा था)

(१४)

मनुष्यमात्रसे प्रेम

राजासाहबके उपरोक्त कथनसे स्पष्ट है कि आपका उद्देश्य-धार्मिक है पर इसका यह अर्थ नहीं है कि आप राजनीतिसे कोसों दूर भागते हैं। विक्रमी संवत् १९६९ में पार्लमेंटके कुछ सवाल जवाबोंके विषयमें—"बुरे शकुन" शीर्षक एक लेख आपने लिखा था, उससे आपकी राजनीतिक दूर दर्शिता प्रकट होती है। यह लेख १५ अगस्त सन् १९१२ ई० में "प्रेम" मे प्रकाशित हुआ है। लेख का कुछ अंश नीचे दिया जाता है।

"पर हां! अब फिर यह बुरे शकुन क्यों हो रहे हैं? क्यों लायड जार्ज उधर ऊटपटाङ्ग कह जर्मनीको क्रोधित कर रहा है? क्यों इधर कर्जनका दूसरा अवतार कर्जनसे क्यूवन हिन्दुस्तानको दुखित कर रहा है? यह क्यों अशान्तिका फिर बीज बोया जा रहा है? फिर क्यों उपद्रवोंका नकशा खींचा जा रहा है? क्या अब जर्मनी इंग्लिस्तान लड मरेंगे ही? क्या फिर हिन्दुस्तानके लोग जानपर खेलेंगे ही? हमारी जर्मनी कब सुनेगी कि लड़ाईसे सभ्यता (Civilisation) का अपमान है? क्रोधी हिन्दुस्तानी हमारी कब मानेंगे कि उपद्रवसे देशकी हानि है? यही डर है कि कहीं जर्मनी उधर लड़ाई करके हमारे मुकुटको ही न उतारे? यही फिकर है कि कहीं हिन्दुस्तान गुस्सेमें भर जूता पैजारकी न ठाने।"

बुरे शकुन

इसके अतिरिक्त आपका एक लेख, *भारतीय जनताको आवा हन*, शीर्षक शनि २ सितम्बर १६२२ ई० के "वर्त्तमान" में प्रकाशित हुआ है। उससे आपके विचारोंका अच्छा पता लगता है। आप लिखते हैं :—"अङ्गरेज लोग भारतपर विजय पानेका गर्व करते हैं। परन्तु सारी दुनियां जानती है कि अङ्गरेज लोगोंकी पराजय महायुद्धके आरम्भ होते ही हो चुकी है। अंटवार्पमें उनकी पूरी हार हुई। वह केवल फ्रांसकी सहायता थी, जिसके कारण वे ट्रेञ्चोंमे छिपकर कुछ देरतक लड़ सके। अगर अमरीकन फौज न पहुचती और आखिरी घड़ीमें इटलीवाले करामातें न दिखाते तो जर्मन बाज़ी मार लेजाता।

"अंगरेजोंकी बनावटी शानका भण्डाफोड़ सन् १६०० ई० में ट्रान्सवाल युद्धमें ही हो चुका था। अब तो अंगरेजोंका शासन कमजोर पड़ गया है। ज़रा देखिये! आयरलैंडने लड़कर होमरूल ले लिया। मिस्रने अपना क्रोध प्रकट करके आधी-स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। अफ़ग़ानिस्तानने युद्ध करके संसारके स्वतन्त्र राष्ट्रोंमें अपना उचित स्थान प्राप्त कर लिया। यहांतक कि *भारतके शान्तपूर्ण संग्रामके सामने भी सरकारकी पंगुताके लक्षण प्रकट होने लगे हैं।** संसारमें इस समय जिस नाटकका विराट अभिनय चल रहा है, उससे भारत अलग नहीं रह सकता।

* ये अक्षर मोटे हमने कर दिये हैं—सम्पादक

संसारके राष्ट्रोंमें इस समय नवीन दलबन्दियां हो रही हैं। फ्रांस अगरेजोंके खिलाफ है। फ्रास और जापानके स्वार्थ एकसे हैं। इसलिये वे एक साथ हो जायगे। जर्मनीने रूससे दोस्ती कर ली है। अमरीका विचार कर रहा है और अपने मौकेके लिये इन्तजार कर रहा है। इटली किसी भी तरफ झुक सकता है। परन्तु विचारे इंगलैंडको संसारके हर कोनेमें भयका भूत दिखाई पड़ रहा है। वह सबको खुश रखना चाहता है परन्तु, उसे खेद यह है कि, कोई उसपर खुश नहीं, सब उससे अविश्वास करते हैं।

मुझे खूनखराबीसे नफरत है। युद्धके लिये मेरे हृदयमें कोई आकांक्षा नहीं है। मेरा धर्म प्रेमका धर्म है परन्तु जब आंधी चलती है तब सब प्रकारकी सावधानी करनी पडती है। गावभरमें आग लग जानेपर कोई चुप थोड़े ही बैठ सकता है।

संसारमें किसी नवीन आपत्तिका समय आने पर भारतको पूर्ण स्वतन्त्रताकी घोषणा करनी ही पड़ेगी। अगर अंगरेजोंकी किसी चालसे, अथवा अनुभवहीन भारतीयके प्रभावमें आकर भारत वैसा नहीं करेगा, तो, फिर दूसरे किसी राष्ट्रका गुलाम बनना पड़ेगा। आगे आपने इस लेखको समाप्त करते हुए हिन्दुस्तानियोंको स्वार्थी भारतीयोंकी बातोंमें न आनेकी सलाह दी है। पाठकोंने राजा साहबके ऊपर उद्धृत लेखमें पढ़ा होगा कि आप स्पष्ट कह रहे हैं कि मुझे खूनखराबीसे नफ़रत है। युद्धके लिये मेरे हृदयमें कोई आकांक्षा नहीं है। मेरा धर्म प्रेमका धर्म है। जो लोग राजासाहबको मारकाट खूनखराबीका

पक्षपाती समझते हैं, वे राजा साहबको बिलकुल नहीं पहचानते हैं। हमको भी "वर्त्तमान" के शब्दोंमें कहना पड़ता है कि यदि राजा महेन्द्रप्रतापके लेखोंका अध्ययन करके सारांश निकाला जाय, तो वह यह होगा कि भारतकी सामाजिक और राजनैतिक क्रान्तिके लिये अभी बहुत ज्ञान प्राप्त करना बाकी है और ज्ञान प्राप्त करने तथा उद्धारकी तैयारी करनेके लिये उद्दण्डतासे कभी काम न लेना चाहिये। उनको हम क्रान्तिवादी कह सकते हैं लेकिन वे विध्वंसकारी उपायोंके समर्थक नहीं हैं। बम बनाकर या हथियार एकत्रित करके स्वाधीनता प्राप्त करना उनकी दृष्टिमें एक पतित पाप है। वास्तवमें "वर्त्तमान"के ऊपर उद्धृत वाक्यका एक एक अक्षर सच है। आजसे नहीं बहुत दिनोंसे लगभग १४-१५ वर्षोंसे राजा महेन्द्रप्रतापका उद्देश्य, संसारमें प्रेम-प्रचार रहा है। आपने इस प्रेम-प्रचारके लिये ही प्रेम-महाविद्यालयकी स्थापना की। इसी उद्देश्यसे "प्रेम" पत्रका जन्म हुआ। यहांतक कि आपने अपने पुत्रका नाम भी प्रेम ही रखा। यह पीछे कई स्थानोंपर लिखा जा चुका है कि आप प्रेम-पुजारी हैं। विश्व-प्रेमके पक्षपाती हैं। जिन दिनों आप प्रेम-सम्पादन करते थे, उन दिनों आपने सैकड़ों बार "प्रेम" में विश्व-प्रेमका आदेश दिया है। बार बार आपने मनुष्य-मात्रके साथ प्रेम करनेका उपदेश दिया है। सम्वत् १९६९ वि० ५ वी अगस्त सन् १९१२ ई० के "प्रेम" में आपकी लिखी हुई "हे -परमेश्वर" शीर्षक एक प्रार्थना प्रकाशित हुई है, उसमें आप लिखते

हैं—"परमात्मन् ! प्रेमकी वृष्टि करो, हम सबमें सच्चा भ्रातृभाव बन्धुवत स्नेह स्थापन कर—हे—जगदीश्वर ! हमारे हृदयमें बिना किसी रोक टोकके मनुष्यको केवल मनुष्यहीका नाता जानकर प्रेम भरी दृष्टिसे देखनेका भाव उत्पन्न कर, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, कलह, फूट और वैर-भावको दूरकर प्रेमाङ्कुर उत्पन्न कर। सच्चे हृदयके कैसे शब्द हैं। राजा साहबका सन्देश द्वेषका नहीं प्रेमका है। उन्हीं दिनोंमें "प्रेम" में आपने एक लेख लिखा, जो नीचे प्रकाशित किया जाता है, उससे इस प्रेम-पुजारीके हृदयकी थाहका पता लगता है। आपका लेख यह है।

सच्चा प्रेम बढाओ

प्यारे दोस्तो !

दुनियामें आज दिन हमारे भाई तरह तरहकी तदबीर हमारी तुम्हारी भलाईके लिये कर रहे हैं, मगर तामाशा यह है कि मित्र ! भलाई करते करते छुरी भी चलाते जाते हैं या यों कहिये कि एक हाथसे अमृत पिलाते हैं तो दूसरेसे विष। हमारी भलाईके लिये अगर बेद, पुराण, इंजील और कुरानका प्रचार करते हैं तो साथ ही हमें इन्हींका द्वेषी बनाते हैं। कोई एकको अच्छा कहता है तो दूसरेको बुरा। फिर वादविवाद यहांतक बढ़ता है कि मनुष्य जातिकी भलाई, *जिसको भलाईको यह तमाम ग्रन्थ रचे गये* भूल जाते हैं और एक एक ग्रन्थकी झूठी भलाईके लिये हम बिचारे गरीबोंको दुःख देते हैं। हमारी गर्दनपर छुरी

चलाते हैं। मित्र! मैं किसी खास ग्रन्थोंका प्रेमी नहीं, मैं तो मनुष्य जातिका सेवक हूं और मेरी यही इच्छा है कि जैसे हो, हममे प्रेम बढ़े और सबही खुश रहें।"

क्या अब भी आंखके अन्धोंको चिराग लेकर बतलाना होगा कि राजा महेन्द्रप्रतापका हृदय प्रेम सरोवर है। "प्रेम" अखबारके जन्म देते समय आपने प्रथम अङ्कमें प्रथम लेख लिखा है, वह भी देखिये :—

प्रेम! प्रेम!! प्रेम!!!

प रे म—प रे म—प रे म

पण्डितजी महाराज अपने ही नामके उपासक हैं हम उन खुद बदौलतके आशिक हैं।

साहब सुनिये!

पण्डितजी तो अब सिधार गये, उनकी तो रागनी हो ली, अब उनके धुरपद सुन लीजिये।

"ढाई अक्षर प्रेमका पढ़े सो पण्डित होय
पण्डित होय तो होय नहीं तो खण्डित होय।"

मैं महाराज हां! खंडित हो गया! इसी कारण पण्डितजीका सेवक रह गया। सेवककी भला क्या पदवी समझिये, जैसे रण्डीका भंड़आ अच्छा गावै तो तारीफ करनी। हमें तो सिर मारे ही जाना। हमको तो जो रोटी दे, उसका ही गुण गाना। कैसे भी समझिये हमारे लिये तो हमारे पण्डितजी

साक्षात् प्रेमावतार हैं। आप प्रेममय भगवान् हैं। आपको किसीसे द्वेष नहीं। आपका कोई खास भेष नहीं। अपने आपको आप यहांतक स्वयंपूर्ण समझते हैं कि आप किसीकी नहीं सुनते। मैंने बहुत कही कि महाराजजी आप किसी प्रेमरूप वृन्दावन निवासीकी सहायता लेकर काम उठाइये परन्तु एक न मानी। आपने प्रेम मदर्सेसे तो इसलिये सन्धि नहीं की कि आपका ख्याल है, विद्यालयके फन्देमें फंसकर आप अपनी स्वतन्त्रता खो बैठेंगे और किसी प्रेम-समाजसे इसलिये मेल नहीं किया कि उनके झगड़ेमें पड़कर समाजी बन बैठेंगे। अब आप ही अपनी हांका करेंगे। हम भी तमाशा देखा करेंगे। और जो काम करनेको कहेंगे वह कर दिया करेंगे।

महाराज एककी ही सेवकाई बड़ी कठिन है। इसमें मैं तो कईयोंका गुलाम ठहरा, क्या करूं, पेट भरनेको सब ही कुछ करना पड़ता है और नये कामकी ही भूख लगे तो ऐसा ही ढोंग रचना पडता है।

महाराज इस समय अपने और दूसरे कामोंकी मुसीबतका तो क्या जिकर करूं, अब तो आपसे मेरी केवल यही प्रार्थना है कि हमारे पण्डितकी कथा सुन लिया कीजिये। इससे यह मेरी पण्डितकी नौकरी बनी रहेगी। और आपकी बदौलत काममें लगा रहूंगा।

प्रेमका सेवक—

"महेन्द्रप्रताप"

चलाते हैं। मित्र! मैं किसी खास ग्रन्थोंका प्रेमी नहीं, मैं तो मनुष्य जातिका सेवक हूं और मेरी यही इच्छा है कि जैसे हो, हममे प्रेम बढ़े और सबही खुश रहें।"

क्या अब भी आंखके अन्धोंको चिराग लेकर बतलाना होगा कि राजा महेन्द्रप्रतापका हृदय प्रेम सरोवर है। "प्रेम" अखबारके जन्म देते समय आपने प्रथम अङ्कमें प्रथम लेख लिखा है, वह भी देखिये :—

प्रेम! प्रेम!! प्रेम!!!

प रे म—प रे म—प रे म

पण्डितजी महाराज अपने ही नामके उपासक हैं हम उन खुद बदौलतके आशिक हैं।

साहब सुनिये!

पण्डितजी तो अब सिधार गये, उनकी तो रागनी हो ली, अब उनके धुरपद सुन लीजिये।

"ढाई अक्षर प्रेमका पढ़े सो पण्डित होय
पण्डित होय तो होय नहीं तो खण्डित होय।"

मैं महाराज हां! खंडित हो गया! इसी कारण पण्डितजीका सेवक रह गया। सेवककी भला क्या पदवी समझिये, जैसे रण्डीका भंड़आ अच्छा गावै तो तारीफ करनी। हमें तो सिर मारे ही जाना। हमको तो जो रोटी दे, उसका ही गुण गाना। कैसे भी समझिये हमारे लिये तो हमारे पण्डितजी

साक्षात् प्रेमावतार हैं। आप प्रेममय भगवान् हैं। आपको किसीसे द्वेष नहीं। आपका कोई खास भेष नही। अपने आपको आप यहांतक स्वयंपूर्ण समझते हैं कि आप किसीकी नहीं सुनते। मैंने बहुत कही कि महाराजजो आप किसी प्रेमरूप वृन्दावन निवासीको सहायता लेकर काम उठाइये परन्तु एक न मानी। आपने प्रेम मदर्सेसे तो इस लिये सन्धि नहीं की कि आपका ख्याल है, विद्यालयके फन्देमें फंसकर आप अपनी स्वतन्त्रता खो बैठेंगे और किसी प्रेम-समाजसे इसलिये मेल नहीं किया कि उनके झगड़ेमें पड़कर समाजी बन बैठेंगे। अब आप ही अपनी हांका करेंगे। हम भी तमाशा देखा करेंगे। और जो काम करनेको कहेंगे वह कर दिया करेंगे।

महाराज एककी ही सेवकाई बड़ी कठिन है। इसमें मैं तो कईयोंका गुलाम ठहरा, क्या करूं, पेट भरनेको सब ही कुछ करना पडता है और नये कामकी ही भूख लगे तो ऐसा ही ढोंग रचना पड़ता है।

महाराज इस समय अपने और दूसरे कामोंकी मुसीबतका तो क्या जिकर करूं, अब तो आपसे मेरी केवल यही प्रार्थना है कि हमारे पण्डितकी कथा सुन लिया कीजिये। इससे यह मेरी पण्डितकी नौकरी बनी रहेगी। और आपकी बदौलत काममें लगा रहूंगा।

प्रेमका सेवक—

"महेन्द्रप्रताप"

आपके प्रेम सम्बन्धी बालकालकी एक कथा सुनी जाती है, कि आप बालकपनमे भगवान् श्रीकृष्णके परम प्रेमी और भक्त थे। यहांतक कि आप श्रीकृष्णकी जिस प्रतिमाका पूजन करते थे उसको क्षणमात्रके लिये भी अपने पाससे अलग नहीं करते थे, सदैव अपने पास रखते थे। रातको सोनेके समय भी आप उस प्रतिमाको अपने पास रखते थे। कुछ उम्र बड़ी होनेपर आपका यह अभ्यास छूट गया पर आपके हृदय मन्दिरसे भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी प्रतिमा दूर नहीं हुई, जैसा आपने पीछे प्रकाशित अपने "प्रेम-पत्र"में कहा है कि "हे प्रभो! अगर तुम मन्दिरोंसे, हमारे हृदयसे, हमारे सदा दयालु आनन्दकन्दकी मूर्त्ति फिकवा भी दो पर तब भी हमारे हृदयसे, हमारे मनके मन्दिरसे, हममेंसे, हमारे श्रीकृष्णचन्द्र भक्तोंके, भक्तिकी प्रेमरूपी प्रतिमा नहीं हटा सकते।" क्या आपके इन शब्दोंको पढ़कर यह नहीं कहा जा सकता है कि आपका हृदय भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी भक्ति और प्रेमसे रङ्गा हुआ है। वही प्रेम धीरे धीरे क्रमसे विकास होता हुआ मानव समाजकी सेवामें बदल गया है। इतने पर भी आप ऐसे प्रेमके पक्षपाती नहीं हैं, जिससे कुदरती (स्वाभाविक) हकपर पानी फिर जाय।

आप मनुष्योंके सच्चे, कुदरती स्वत्व (हक) और अधिकारके सदैवसे पक्षपाती रहे हैं। इसमें किसी तरहका सन्देह नहीं है कि सच्चा प्रेम तब ही हो सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपने स्वत्व और अधिकारका असली कीमत समझे, अपने अधि-

कारोंका दुरुपयोग न करे। अपनी ड्यूटीको पूरा करे। कठोर-कर्त्तव्य पालन करनेमें किसी प्रकारसे जी न चुरावे। यदि मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करें तो सचमुच प्रभुकी इस मंगलमय सृष्टिमें दुःखका लेशमात्र भी न रहे। वह प्रेम कदापि प्रेम नहीं है कि जो अपनेसे ज़बरदस्त शक्तिके अत्याचारोंके सहन करनेसे किया जाय। ज़बरदस्त शक्ति हमारे अधिकार कुचलती जाय और हम उसके सामने सिर नवाते जायं। वह प्रेम क्या खाक प्रेम होगा। सुनिये राजा साहब इस विषयमें क्या कहते हैं—

इस दुनियाको वैकुण्ठ बनाओ

प्रिय भ्रातृगण !

कुछ एक हमारे लोग हाकिमकी पदवी पा अपने ही भाइयोंको पातालका पशु और अपने आपको स्वर्गका पशु समझने लगते हैं, और इस प्रकारसे भी भाइयो ! मनुष्य जातिको प्रेमके एवज़ विष घोल घोल पिलाया जाता है। इसमें भी शक नहीं कि ताली दोनों ही हाथोंसे बजती है। कुछ लोग उसमेंसे, जिसे प्रचलित भाषामें प्रजा कहते हैं, बैठे बैठे अपने ही भाई हुक्कामों अथवा कहिये सेवकोंको बात बात पर गाली सुना झगड़ेका बीज बोते हैं और इस तरह इस दुनियाके रागको जो सुरीला गाना होना चाहिये एक भयानक शोर बना देते हैं।

मित्रो ! मैं तो यह समझता हूं कि अगर हमारे भाई हाकिम

वन अपने फर्ज हमारी सेवकाईको न भूल जावें और प्रजा अपने धर्मपर चलें तो यही दुनियां वैकुण्ठ वन जावे !" आपकी यह टिप्पणी भी १०-१२ वर्ष पहले प्रेममें प्रकाशित हुई थी।

राजा साहबके शब्द साफ बतला रहे हैं कि मनुष्यमात्रकी सेवा करते हुए सच्चे हक़के लिये, जन्मसिद्ध स्वत्वके लिये किसीसे झगड़ना पड़े और "चोरकी डाढ़ीमे तिनका" कोई सच्ची बातको भी अपने ऊपर समझ तो लाचारी है। किसीसे दव कर प्रेम नहीं होता है। डंडेके वल, सेवा नहीं की जाती है। सच्ची सेवा प्रेम और भक्तिसे होती है। जो काम प्रेम और भक्तिसे किया जाता है वह डरसे कोई नही करता है। आपका कहना है कि कोई मनुष्य अपने निजी नफा नुकसानका विचार न करके, जिसमें मनुष्यमात्रकी भलाई हो, वह करे। मनुष्य-समाजकी भलाई, बुराईपर ही हरेक आदमीका नफा नुक़सान है। हरेक मनुष्यका दृष्टिकोण विस्तृत होना चाहिये, यह नही कि—"अन्धा बांटे रेवड़ी और फिर फिरकर अपनेको दे।" आपके तीन लेख जो—"ज्ञान" "सेवा" और "ईश्वर" शीर्षक हैं—इसी विषयके विचारोंसे भरे हुए हैं। इन लेखोंके पढ़नेसे साफ मालूम होता है कि आप अन्याय, अत्याचारके द्वेषी हैं नकि किसी विशेष जाति अथवा व्यक्तिके।

ज्ञान (Knowledge)

स्वास्थ्य और शिक्षाका उद्देश्य सच्चा ज्ञान है। जबतक यह ज्ञान प्राप्त नही होता, शिक्षा और स्वास्थ्यको दूषित समझना चाहिये।

जब स्वास्थ्य दुरुस्त होता है और शिक्षा विस्तृत होती है, या कुछ विशेष शिक्षा और अनुभव प्राप्त होता है, तो प्रायः ज्ञान प्राप्त हो जाता है। धर्म जो बड़े काम करता है उनमेंसे एक यह है कि इससे मनुष्य सहज ही सच्चा ज्ञान प्राप्त करने लगता है। समयानुसार धर्म हमें यह समझाता है कि कोई आदमी अपने नफे और नुकसानका अलग अलग विचार न करे, मनुष्यको जानना चाहिये कि इसका असली नफा या नुकसान उसी बातमें है जिसमें तमाम मनुष्य जातिका नफा या नुकसान है, क्योंकि मनुष्य तमाम सृष्टिमें आगे बढ़ा हुआ है, मिट्टी, पत्थर, घास, पेड, कीड़े और रेंगनेवाले जानवरोंमें तथा पशु और पक्षियोंमें मनुष्य उन्नत है, मानों मनुष्य इस संसारकी भौतिक सृष्टिका मस्तिष्क है। इसलिये सबके फायदेमें मनुष्यका फायदा है, और सबकी उन्नतिमें मनुष्यकी उन्नति है।

मनुष्य उन्नतिकी ओर बढ़कर अपने आपको तथा ब्रह्माण्डको सुख देता है। जो मनुष्य अकेले अपने नफेका विचार करता है, वही स्वयं अपना उन्नतिमें बाधा डालता है, तथा पूर्ण सुखकी प्राप्तिमें विलम्ब करता है। संक्षेपमें सच्चा धर्म यह है कि मनुष्य इस बातको जान ले और इसका पूर्णरूपसे विश्वास करने लग जाय कि एक एक व्यक्तिके नफा और नुकसानका अलग अलग विचार करना पापमय है। सबसे प्रथम कर्त्तव्य भी यही है कि वह अपना नफा और नुकसान भी इस बातमें समझे, जिसमें सबका नफा और नुकसान हो।

वन अपने फर्ज हमारी सेवकाईको न भूल जावें और प्रजा अपने धर्मपर चलें तो यही दुनियां वैकुण्ठ वन जावे !" आपकी यह टिप्पणी भी १०-१२ वर्ष पहले प्रेममें प्रकाशित हुई थी।

राजा साहवके शब्द साफ वतला रहे हैं कि मनुष्यमात्रकी सेवा करते हुए सच्चे हक़के लिये, जन्मसिद्ध स्वत्वके लिये किसीसे झगड़ना पड़े और "चोरकी डाढ़ीमे तिनका" कोई सच्ची बातको भी अपने ऊपर समझ तो लाचारी है। किसीसे दव कर प्रेम नहीं होता है। डंडेके वल, सेवा नहीं की जाती है। सच्ची सेवा प्रेम और भक्तिसे होती है। जो काम प्रेम और भक्तिसे किया जाता है वह डरसे कोई नहीं करता है। आपका कहना है कि कोई मनुष्य अपने निजी नफा नुकसानका विचार न करके, जिसमें मनुष्यमात्रकी भलाई हो, वह करे। मनुष्य-समाजकी भलाई, वुराईपर ही हरेक आदमीका नफा नुक़-सान है। हरेक मनुष्यका दृष्टिकोण विस्तृत होना चाहिये, यह नही कि—"अन्धा बांटे रेवड़ी और फिर फिरकर अपनेको दे।" आपके तीन लेख जो—"ज्ञान" "सेवा" और "ईश्वर" शीर्षक हैं—इसी विषयके विचारोंसे भरे हुए हैं। इन लेखोंके पढ़नेसे साफ मालूम होता है कि आप अन्याय, अत्याचारके द्वेषी हैं नकि किसी विशेष जाति अथवा व्यक्तिके।

ज्ञान (Knowledge)

स्वास्थ्य और शिक्षाका उद्देश्य सच्चा ज्ञान है। जबतक यह ज्ञान प्राप्त नहीं होता, शिक्षा और स्वास्थ्यको दूषित समझना चाहिये।

जब स्वास्थ्य दुरुस्त होता है और शिक्षा विस्तृत होती है, या कुछ विशेष शिक्षा और अनुभव प्राप्त होता है, तो प्रायः ज्ञान प्राप्त हो जाता है। धर्म जो बड़े काम करता है उनमेंसे एक यह है कि इससे मनुष्य सहज ही सच्चा ज्ञान प्राप्त करने लगता है। समयानुसार धर्म हमें यह समझाता है कि कोई आदमी अपने नफे और नुकसानका अलग अलग विचार न करे, मनुष्यको जानना चाहिये कि इसका असली नफा या नुकसान उसी बातमें है जिसमें तमाम मनुष्य जातिका नफ़ा या नुकसान है, क्योंकि मनुष्य तमाम सृष्टिमें आगे बढ़ा हुआ है, मिट्टी, पत्थर, घास, पेड़, कीड़े और रेंगनेवाले जानवरोंमें तथा पशु और पक्षियोंमें मनुष्य उन्नत है, मानों मनुष्य इस संसारकी भौतिक सृष्टिका मस्तिष्क है। इसलिये सबके फायदेमें मनुष्यका फायदा है, और सबकी उन्नतिमें मनुष्यकी उन्नति है।

मनुष्य उन्नतिकी ओर बढ़कर अपने आपको तथा ब्रह्माण्डको सुख देता है। जो मनुष्य अकेले अपने नफेका विचार करता है, वही स्वयं अपनी उन्नतिमें बाधा डालता है, तथा पूर्ण सुखकी प्राप्तिमें विलम्ब करता है। संक्षेपमें सच्चा धर्म यह है कि मनुष्य इस बातको जान ले और इसका पूर्णरूपसे विश्वास करने लग जाय कि एक एक व्यक्तिके नफा और नुकसानका अलग अलग विचार करना पापमय है। सबसे प्रथम कर्त्तव्य भी यही है कि वह अपना नफा और नुकसान भी इस बातमें समझे, जिसमे सबका नफा और नुकसान हो।

पाठको !

अगर तुम्हें अभी तक यह ठीक समझ नहीं हुई है, तो इसके लिये विद्या प्राप्त करो, पढ़ो लिखो, अच्छी सङ्गतिमें रहो, दुनियांको देखो, अनुभव प्राप्त करो और अपने स्वास्थ्यको सुधारते हुए अपने प्रयत्न जारी रखो जबतक कि तुम्हें यह सच्चा ज्ञान प्राप्त न हो और अगर स्वास्थ्य शिक्षा अनुभव या धर्मसे तुम्हें यह सच्ची समझ पहिलेसे ही हो गयी हो या भविष्यमें हो जाय तो यह जान लेना कि स्वास्थ्य और शिक्षामें तुम्हारी उन्नति होनेसे सबका फायदा है। अपने स्वास्थ्यको ठीक रखते हुए अधिकाधिक शिक्षा प्राप्त करते हुए धर्मकी सेवामें लगे रहो। सुस्त मत बैठो, रुको मत, कार्य्य और उन्नतिका ही नाम जिन्दगी है।

प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

सेवा (SERVICE)

विचार करो, तमाम धर्म तुम्हें क्या सिखाते हैं। संसारके आरम्भसे तुम्हें क्या सिखाया जा रहा है। क्या तुम्हें यह नहीं दर्शाया गया कि एक आदमी जो कुछ काम करता है,उसीके अनुसार उसे अपना पारितोषिक मिलता है। अच्छे आदमीको अच्छा और बुरेको बुरा परिणाम प्राप्त होता है। सब धर्मोंने यह आदेश किया है कि ऐसे ऐसे कार्य्य करनेसे तुम्हें फायदा होगा और ऐसे ऐसे कार्य्योंके करनेसे तुम्हे नुकसान होगा। तुम्हें यह सिखाया

गया है कि अगर तुम गरीबोंपर दया करोगे तो तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी और अगर तुम अपनी अपनी बात हांकोगे, अपने स्वार्थके लिये दूसरोंको दुःख दोगे, अनुचित क्रोध प्रकट करोगे, धोखा दोगे, असत्य भाषण करोगे, या दूसरोंका माल हड़प करोगे तो तुम्हें कठोर दण्ड मिलेगा। सारांश यह है कि दूसरोंका ध्यान रखनेसे, दूसरोंकी सेवा करनेसे तुम्हें पारितोषिक मिलता है और इस प्रकार तुम भी जनताके लिये उन्नति करते हो, और यह भी धर्मसेवा कहलाती है।

स्वास्थ्यको ठीक रखना, शिक्षा प्राप्त करना और सच्चा ज्ञान हासिल करना भी इसीलिये जरूरी है, कि तुम इन अस्त्रोंसे सुसज्जित होकर संसारके दुःख और अज्ञानके विरुद्ध युद्ध करो। मनुष्य जातिकी प्रसन्नता और शिक्षाको बढ़ाकर तुम ब्रह्माण्डकी सच्ची उन्नति कर सकते हो और इस तरह उन्नति करते हुए तुम अपने जीवनका लक्ष्य प्राप्त कर सकते हो। अगर तुम पारितोषिक चाहते हो, अगर तुम धर्मकी सेवा करना चाहते हो, अगर तुम्हारा उद्देश्य प्रसन्नता प्राप्त करना है तो इसी बातकी जरूरत है कि तुम दूसरोंकी सेवा करो और दूसरोंके लिये जिन्दा रहो। ऐसा करनेसे पारितोषिक स्वयं मिल जायगा, धर्मसेवा यही है। अन्तमें पूर्ण प्रसन्नता मिलनेमें क्या सन्देह रह जायगा।

प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

ईश्वर (God)

तुम अपने हृदयकी आखें बन्द कर लो और विचारोंमें पड जाओ, तो तुम्हे अपने आपका या अपनी बुद्धिका ख्याल रहेगा। लेकिन जब कभी तुम अपने हृदयकी आखोंसे ब्रह्माण्डके कुछ अंशको देखोगे, तो तुमको पता चलेगा कि दुनियामें तुम्हारे जैसे लाखो आदमी हैं, इनमेंसे हर एक तुम्हारी तरह सोच विचार कर सकता है, हर एक आदमीकी अपनी अपनी बुद्धि है, अपने विचारोंके अनुसार वह काममें भी लगा हुआ है। दुनियामें न केवल मनुष्य हैं, वरन् करोड़ो कीड़े और रेंगनेवाले जानवर हैं, पक्षी और अन्य जीव जन्तु हैं जो तुम्हारी तरह खाते पीते हैं, व अपने जीवनमे आनन्द लेते हैं, बच्चे पैदा करते हैं और इस तरह जिन्दगी-का सिलसिला जारी रखते हैं। जब तुम इनमेंसे छोटेसे छोटेके भी शरीरका विचार करोगे, इस छोटे शरीरमे खाने पीने और बच्चे देनेके अंग अपना काम कर रहे हैं, यही क्या जब तुम सोचोगे कि तुम्हारी दुनिया जैसी असंख्य दुनिया है, सूर्य्य भी हजारों हैं, येभी अपना कार्य कर रहे हैं, असंख्य मनका वजन रखनेवाले पदार्थ उसी प्रकार नियमोंका पालन करते हैं, जब तुम अपने हृदयकी आंखोंसे ये सब बातें देखोगे तो तुम यह समझ सकोगे कि तुम्हें अपने बारेमें अहंकार करनेका कोई कारण नहीं।

सम्भव है तुम अपनी समझसे इस सृष्टिको घृणाकी दृष्टिसे देखो परन्तु कितने दिनके लिये ? केवल कुछ कालतक। परन्तु दुनियां करोड़ो वर्षोंसे काम कर रही है और सृष्टि अबों वर्षोंसे

अपना कर्त्तव्य पालन कर रही है। उनके सामने एक बहुत ही अस्थायी आदमी और उसकी बुद्धि क्या चीज है जो कि सर्वोत्तम कारखानोंमें भी प्रकृतिके आश्रयके बिना छोटेसे छोटा नया जीव भी पैदा नहीं कर सकता। जब तुम अपने मनमें इन बातोंका विचार करोगे, तभी तुम सृष्टिसे अपना सम्बन्ध समझ सकोगे। इस दशामें यह कहना या समझना कि यह सृष्टि किसी अर्थको नहीं या बिना विचार या इत्तफाकसे पैदा हो गयी, तुम्हारी बे-परवाही या मूर्खता होगी जब तुम देखते हो कि छोटेसे छोटा रेतका जर्रा और करोड़ों मनका भारी पदार्थ एक ही प्रकारके नियमोंका पालन करते हैं, जब तुम देख सकते हो कि सृष्टिका कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो खास नियमोंका पालन न करता हो तो तुम्हें विश्वास करना चाहिये कि सृष्टि एक क्रम या ढगपर बनी है और यह तुम आसानीसे समझ सकते हो कि क्रम या ढङ्ग देनेके लिये सोच विचारकी आवश्यकता है। जिस सोच विचारने सृष्टिको क्रम या ढङ्ग दिया वही हमेशा हर एक जर्रेको क्रममें रखेगा।

इसी ईश्वरीय विचारसे पत्थर सख्त है, पानी पानी है, हवा हवा है, उसी विचारसे तुम्हारा दिल प्रति मिनिट अनेक बार धड़कता है, खुद रक्तको हरकतमें रखता है और जीवनको बनाये रखता है। सारांश यह कि हर एक जगह और हर शालामें वही विचार है, यही विचार ओ३म्, देव, प्रेम, अल्लाह, ईश्वर है।

प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

विदेशसे भी आपने अपने सम्बन्धी, मित्र, बन्धुबान्धवोके नाम समय समयपर जो पत्र भेजे हैं, उनमें भी आपने विश्व-प्रेमका ही आदेश किया है। इन पत्रोमें आपने बार बार मनुष्यमात्रकी सेवा करना ही अपना धर्म बतलाया है। आपने पिछले वर्ष अपनी माताको जो पत्र भेजा है उसकी नकल नीचे ज्योंकी त्यों प्रकाशित की जाती है, उससे आपकी मातृ-भक्तिके साथ ही साथ आपका मनुष्यमात्रके प्रति प्रेमका भी अच्छा परिचय मिलता है। आपका पत्र यह है :—

वर्लिन-जर्मनी

४—१—१९२२

"सिद्धिश्री सर्व उपमा विराजमान सकलगुण निधान श्री १०८ श्रीमती मांजी साहब हाथ जोड़कर राम राम व प्रेम स्वीकार करें। परमात्माकी कृपा व आपकी दयासे सकुशल हूं। अभी अफ़ग़ानिस्तानसे दूसरी बार लौटकर जर्मनी पहुंचा हूं। मुझे आपकी बड़ी याद आती है। मैं आपका अपराधी हूं। मुझसे आपकी सेवा न हो सकी, क्षमा करें, क्षमा करें। आप यदि चाहें तो मेरे साथ अमरीका अथवा जापानमें रह सकती हैं। मैं अभी हिन्दुस्तान नहीं आ सकता। मुझे आपके दर्शन चाहिये"।

"परमात्मा जाने इस चोलेमें मिलेंगे अथवा नहीं। मैं सब प्रकार सन्तुष्ट हूं। मनुष्य जातिकी सेवा करता हूं।

आपका पुत्र—

"महेन्द्रप्रताप"
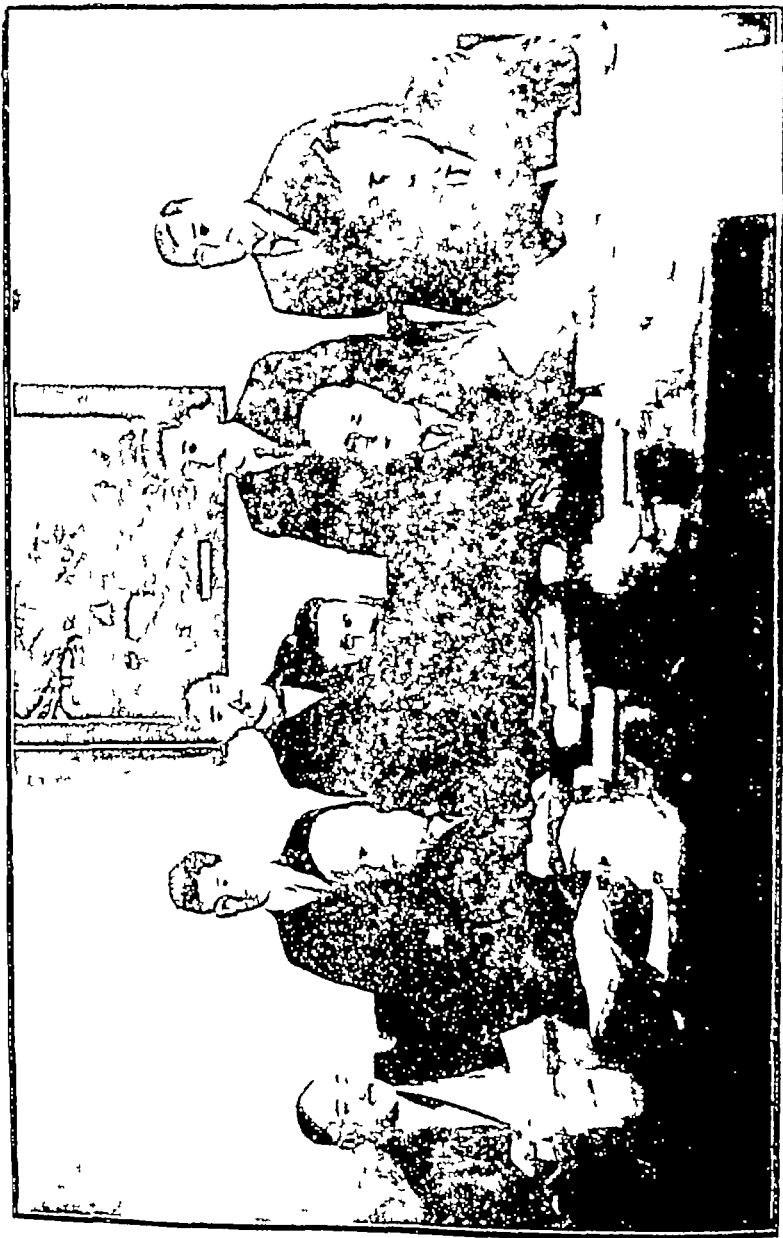
तोकियोके लार्ड मेयर तथा जापानके कतिपय अन्य प्रसिद्ध व्यक्तियोंके साथ राजा साहब बीचमें बैठे हैं। बायीं ओर लार्ड मेयर हैं।

टोकियो (Tokyo) जापानसे आपने २५ वीं दिसम्बर सन् १६२२ ई०को अपने एक मित्रको हिन्दीमें ही पत्र भेजा है, जिसमें आप लिखते हैं कि आज श्रीमान् ईसामसीहके जन्म उत्सवपर छुट्टी मनानेके लिये भगवान् बुद्धके प्रसिद्ध मन्दिरोंकी यात्रा करने कामा कूरा गया था। बडा ही पवित्र व सुन्दर स्थान है। सवेरे-का गया अभी सन्ध्याको लौटकर आया हूं। समुद्रके किनारे और पहाड़ियोंपर ऊपर नीचे घूमता घूमता कुछ थक तो गया हूं पर आजके शुभ-दिनकी बधाई देनेके लिये, अभी यह पत्र लिखने बैठ गया हूं। मुझे आशा है कि हमारे सभी मित्रगण भी प्रसन्न व सुखपूर्वक होंगे। एक विशेष सूचना भी निवेदन करता हूं। यहांके पत्रों द्वारा विदित हुआ है कि कोई ११—१२ बुद्ध पुजारी और उच्च कोटी (कोटि) के बुद्ध धर्म कर्मचारी यात्रा करनेके लिये भारतवर्ष पधार रहे हैं। यह लोग ३१ जनवरीको वम्बई पहुचेंगे। हिन्दुस्तानमें टामस कूक एण्ड सन्स, वम्बई की मार्फत भ्रमण करेंगे। मैंने इन लोगोंको यहा भी पत्र द्वारा प्रेम-विद्यालयकी सूचना दे दी है और यह भी लिख दिया है कि मैं सीधा आपको लिखता हूं। मेरा यह विचार है कि आप विद्यालयके प्रबन्धकर्त्ताओंसे कहकर एक या दो विद्यार्थी इनके साथ नियत कर दें कि वे इनके साथ साथ भ्रमण करें और अच्छे अच्छे लोगोंसे भेंट करावें। मैं तो कहूंगा कि वहांके विद्यार्थियोंको सदा ही ऐसा अवसर ताकते रहना चाहिये और विशेषकर पड़ोसी देशोंके यात्रियोंके साथ साथ।"

क्या आपके इस पत्रसे मानव-समाजमें प्रेम-सञ्चारकी बलवती लालसाका पता नहीं लगता है? आप केवल मौखिक प्रेमके ही पक्षपाती नहीं हैं। आपने मानव-सेवा और प्रेमका क्रियात्मक और व्यवहारिक रूपसे कितनी ही बार परिचय दिया है जिसके विषयमें पीछे कई बार लिखा जा चुका है। यहां उनके विश्व-प्रेमकी एक दो घटना लिखी जाती है। एक बार प्रेम-महाविद्यालयके बोर्डिङ्ग-हाऊसका एक लड़का मथुरासे वृन्दावन आते वक्त इक्केसे गिर गया। जब बोर्डिङ्ग हाऊसमें यह खबर पहुंची तब कुछ विद्यार्थी सेवा करनेके लिये पहुंचे। सर्दीके दिन थे, उस लड़केके बड़ी गहरी चोट आई थी। विद्यार्थियोंसे उसकी सेवा ठीक तौरसे न बन सकी पर वे यथाशक्ति लड़केको आराम पहुचानेकी चेष्टा कर रहे थे। कुछ देर पीछे यह समाचार राजा साहबके कानोंमे पहुचा, आप फौरन घटना-स्थलपर पहुंचे। लड़केकी देखभाल करनेके पीछे कपड़ेके अभावमें अपनी नई कमीज़ फाड़कर उसकी चोटको सेंकने लगे। भगवानकी कृपासे थोडे दिनों पीछे वह लड़का अच्छा हुआ। राज साहबको इस प्रकार एक साधारण मनुष्यकी सेवा करते देखकर पास खड़े हुए आदमियोंको—खासकर उन आदमियोको जो अपनी अकड़में ऐंठे जाते हैं, अच्छा सबक़ मिला।"

आपके प्रेम और सेवा-धर्मके ऐसे कितने ही उदाहरण हैं। आप अपने पास रहनेवाले छोटेसे खिदमतदारसे लेकर बड़ेसे बडे कर्मचारीको उसकी उन्नतिके लिये कैसे उत्साहित करते रहते

थे, सो भी सुनिये। आपके यहां एक पानी पिलानेवाला था जो आपकी प्याऊ (पौसला) पर लोगोंको पानी पिलाया करता था। आप उस प्याऊवालेको देखकर ताड गये कि यह होनहार है, यदि इसे अपनी योग्यताके विकास करनेका मौका दिया जाय तो यह अपनी अच्छी उन्नति कर सकेगा। बस फिर क्या था, राजा साहबने उसे पढ़ाया और उसने भी ऐसी उन्नति की कि वह एक साधारण प्याऊवालेकी हैसियतसे राजासाहबका प्राईवेट सेक्रेटरी बन गया। पर अफसोस ! वह मनुष्य, प्राईवेट सेक्रेटरी होनेके थोडे दिनों पीछे मर गया। अपने सगे सम्बन्धीकी भांति आप उसकी मृत्युसे दुखी हुए। आपने उसका अन्त्येष्टि संस्कार अपने बाग़मे कराया और उसके घरवालोंको मासिक वृत्ति देते रहे।

यह पीछे लिखा जा चुका है कि राजा साहब प्रेम-महाविद्यालयके छात्रोंको नोट बुक दिया करते थे। नोट-बुक बांटते समय आप विद्यार्थियोंको आज्ञा देते थे कि जिस विद्यार्थीकी नोट बुकमें सबसे अच्छे विचार होंगे, उसे पारितोषिक दिया जायगा। नियत तिथिपर नोट बुकोंकी जांच स्वयं राजा साहब करते थे। आपके विचारमें जिस विद्यार्थीकी नोट बुक अच्छी रहती थी, उसको आप कुछ न कुछ पुरस्कार देते थे। एक बार आप एक विद्यार्थीकी नोट बुक देखकर इतने प्रसन्न हुए कि आपने उसे एक दुशाला इनाम दिया। इस भांति आप प्रेम-महाविद्यालयके छात्रोंको अपने मानसिक विचारोंको परिष्कृत और सुधारनेके लिये उत्तेजित करते रहते थे।

केवल विद्यार्थियोंको ही क्यों आपका यही व्यवहार अपने खिद्मतदार और नौकरोंके साथ भी रहता था। एक समयकी बात है कि आपने अपने निवासस्थानमें फुलवाड़ी बनाई और अपने सब नौकरोंको आज्ञा दी कि इस फुलवाड़ीमें सब नौकर अपनी अलग अलग क्यारी बनावें, हरेक क्यारीमें अपनी इच्छाके अनुसार फूल पत्ते बेल लगावें, जिसकी क्यारीमें सबसे पहले बेल या फूल उग गये, उसको इनाम दिया जायगा। स्वयं राजा साहबने भी एक क्यारीमें पत्ते लगाये थे। कुछ दिन पीछे आपने अपने एक नौकरको इस कार्यमें सफलता होनेपर इनाम दिया था। आपके प्रत्येक काममें मनुष्य-सेवा और प्रेमकी झलक दिखलाई पड़ती है। संवत् १९६९ वि० में कुछ लोग हिन्दीकी और कुछ लोग उर्दूकी हिमायत करके आपसमें वैमनस्य फैलाते थे, उस समय आपने हिन्दी-उर्दूके विषयमें अपनी यह सम्मति "प्रेम" मे प्रकट की थी।

"मित्रगण! आज कुछ लोग हिन्दीके प्रेमी हैं और कुछ उर्दूके और इनमें आपसमें खींचतान है कि एक दूसरीकी भाषाके लफ़्ज़ोंको अपने द्वेषकी चलनीमें छान छान फेंक रहे हैं, यहांतक कि एक खट्टा माल तयार कर रहा है तो दूसरा कसैला। जरा नहीं सोचते कि यह पदार्थ जो तैयार कर रहे हैं किसके हितके लिये हैं। आखिर वह चाहते तो यही होंगे कि मनुष्य-जातिके लिये एक शुद्ध पदार्थ तैयार करें, जिसमें कोई अवगुण न रहे, मगर यह नहीं समझते कि ये मनुष्य-जातिमें एक और बीमारी बढ़ा रहे हैं।

ख्याल करनेकी बात है कि आज एक ही भाषा बोलनेवालोंमेंसे अगर कुछ लोग ऐसे हो जावें कि उर्दू का एक लफ़्ज़ न समझें और कुछ ऐसे जो हिन्दीका एक शब्द न जानें तो आपसका फर्क बढ़ा कि घटा। मित्र! इसलिये बैठे बिठाये और बीचमें मेंड लगा लगा दो भाषा बनाना, द्वेष बढ़ाना है। मैं तो यह जानता हूं कि हमारा कर्त्तव्य मनुष्य-जातिकी भलाई है न कि हिन्दी या उर्दू मिश्रित भाषा बोलना। यह उम्मेद करना कि सारे संसारमें एक ही भाषा बोली जाय यह तो अभी बहिश्तका स्वप्न देखना है, परन्तु पञ्जाब, राजपूताना, सिंध, ब्रजमण्डल, अवध, बिहार, ग्वालियर, बुन्देलखंडमें तो अभी हम प्रचलित कर सकते हैं। और फिर बङ्गाल, नागपुर, बम्बई, गुजरात, काठिया-वाड़ और हैदराबादमें जल्दी एक भाषा ही व्यवहार होनेकी उम्मेद कर सकते हैं। इसी तरह अगर कभी स्वप्न भी प्रत्यक्ष हो तो असम्भव नहीं।

मित्र! और लिखनेके बारेमें मेरा यह ख्याल है कि हम इस देशवासियोंको हिन्दी, उर्दू दोनों ही अक्षरोंका ज्ञान हो तो अच्छा है। जैसा कि इसमें शक नहीं कि छपने और साफ बही खाते लिखनेके लिये हिन्दी अक्षर ही ठीक हैं, वैसे ही इसमें सन्देह नहीं कि जल्दी लिखने और खत पत्र लिखनेको उर्दू हरूफ जियादा मौज़ूं हैं। खैर, इसकी हमें यहां बहस नहीं। हिन्दी अक्षरोंमें ही हम पोथी, पत्रा, छपना उचित समझते हैं।

जैसी राजा साहबकी हिन्दी-उर्दू के सम्बन्धमें सम्मति है वैसी

केवल विद्यार्थियोंको ही क्यों आपका यही व्यवहार अपने खिद्मतदार और नौकरोंके साथ भी रहता था। एक समयकी बात है कि आपने अपने निवासस्थानमें फुलवाड़ी बनाई और अपने सब नौकरोंको आज्ञा दी कि इस फुलवाड़ीमें सब नौकर अपनी अलग अलग क्यारी बनावें, हरेक क्यारीमें अपनी इच्छाके अनुसार फूल पत्ते बेल लगावें, जिसकी क्यारीमें सबसे पहले बेल या फूल उग गये, उसको इनाम दिया जायगा। स्वयं राजा साहबने भी एक क्यारीमें पत्ते लगाये थे। कुछ दिन पीछे आपने अपने एक नौकरको इस कार्यमें सफलता होनेपर इनाम दिया था। आपके प्रत्येक काममें मनुष्य-सेवा और प्रेमकी झलक दिख लाई पड़ती है। संवत् १९६९ वि० में कुछ लोग हिन्दीकी और कुछ लोग उर्दूकी हिमायत करके आपसमें वैमनस्य फैलाते थे, उस समय आपने हिन्दी-उर्दूके विषयमें अपनी यह सम्मति "प्रेम" में प्रकट की थी।

"मित्रगण! आज कुछ लोग हिन्दीके प्रेमी हैं और कुछ उर्दूके और इनमें आपसमें खींचतान है कि एक दूसरीकी भाषाके लफ़-ज़ोंको अपने द्वेषकी चलनीमें छान छान फेंक रहे हैं, यहांतक कि एक खट्टा माल तयार कर रहा है तो दूसरा कसैला। जरा नहीं सोचते कि यह पदार्थ जो तैयार कर रहे हैं किसके हितके लिये हैं। आखिर वह चाहते तो यही होंगे कि मनुष्य-जातिके लिये एक शुद्ध पदार्थ तैयार करें, जिसमें कोई अवगुण न रहे, मगर यह नहीं समझते कि ये मनुष्य-जातिमें एक और बीमारी बढ़ा रहे हैं।

ख्याल करनेकी बात है कि आज एक ही भाषा बोलनेवालोंमेंसे अगर कुछ लोग ऐसे हो जावें कि उर्दू का एक लफ़ज़ न समझें और कुछ ऐसे जो हिन्दीका एक शब्द न जानें तो आपसका फर्क बढ़ा कि घटा। मित्र! इसलिये बैठे बिठाये और बीचमें मेंड लगा लगा दो भाषा बनाना, द्वेष बढ़ाना है। मैं तो यह जानता हूं कि हमारा कर्त्तव्य मनुष्य-जातिकी भलाई है न कि हिन्दी या उर्दू मिश्रित भाषा बोलना। यह उम्मेद करना कि सारे संसारमें एक ही भाषा बोली जाय यह तो अभी बहिश्तका स्वप्न देखना है, परन्तु पञ्जाब, राजपूताना, सिंध, ब्रजमण्डल, अवध, बिहार, ग्वालियर, बुन्देलखंडमें तो अभी हम प्रचलित कर सकते हैं। और फिर बङ्गाल, नागपुर, बम्बई, गुजरात, काठिया-वाड़ और हैदराबादमें जल्दी एक भाषा ही व्यवहार होनेकी उम्मेद कर सकते हैं। इसी तरह अगर कभी स्वप्न भी प्रत्यक्ष हो तो असम्भव नहीं।

मित्र! और लिखनेके बारेमें मेरा यह ख्याल है कि हम इस देशवासियोंको हिन्दी, उर्दू दोनों ही अक्षरोंका ज्ञान हो तो अच्छा है। जैसा कि इसमें शक नहीं कि छपने और साफ बही खाते लिखनेके लिये हिन्दी अक्षर ही ठीक हैं, वैसे ही इसमें सन्देह नहीं कि जल्दी लिखने और खत पत्र लिखनेको उर्दू हरूफ जियादा मौजूं हैं। खैर, इसकी हमें यहां बहस नहीं। हिन्दी अक्षरोंमें ही हम पोथी, पत्रा, छपना उचित समझते हैं।

जैसी राजा साहबकी हिन्दी-उर्दू के सम्बन्धमें सम्मति है वैसी

ही मजहबोंके सम्बन्धमें है। आपका जो कुछ धर्म और नेम है, वह प्रेम है, प्रेमके सिवा, आपका ध्यान दूसरी ओर दौड़ता ही नहीं। आपके धर्म सम्बन्धी विचार बड़े उदार हैं।

आपके धर्म सम्बन्धी विचारोंका नमूना, पाठकोंको पिछले पृष्ठोंमें मिल चुका है। आप किसी खास धर्मके न तो कट्टर पक्षपाती हैं और न कट्टर विरोधी हैं। आपकी निगाहमें सब धर्म समान हैं। आप धर्म सम्बन्धी दिखावट और बनावटके बिलकुल पक्षपाती नहीं हैं। धर्मका वास्तविक उद्देश्य किसीका जी न दुखाना और दीन दुखियोंकी सेवा करना, आप मानते हैं। आप किसी धर्मके खास रङ्गमें रङ्गे हुए नहीं हैं। इस निबन्धके लेखककी समझमें राजा साहबका बहुत ही अच्छा विचार है। सच पूछिये तो इन धार्मिक मतभेद और पक्षपातोंने इस देशको एकदम रसातलको पहुंचा दिया है। "अपनी अपनी डफली और अपना अपना राग" अलापनेसे कोई धर्मध्वजी नहीं हो सकता। स्मरण रहे कि धर्म किसी खास पुस्तकके पन्नोंके भीतर बन्द नहीं है। न किसी विशेष समाजमें ही "धर्म" पड़ा हुआ मिलता है। न कोई खास पोथी, इलहामी अथवा ईश्वरीय ज्ञान है, जिसके भीतर, समस्त संसारका ज्ञान भरा हो। न किसी खास नदीमें अपना शरीर धोनेसे, न किसी खास समयपर आंखें मूंदने, पलथी मारकर बैठने और पानी उछालनेसे और न किसी खास पोथीके मन्त्रों अथवा छन्दोंके रटनेसे कोई धर्मात्मा हो सकता है। धर्मका सम्बन्ध हृदयसे है, जिसका हृदय स्वच्छ है,

वही धर्मात्मा है। जो पराये दुःखमें दुःखी है, वही धर्मात्मा है। यही राजा महेन्द्रप्रतापका धर्म है और प्रत्येक मनुष्यका होना भी चाहिये।

कोई यह न समझे कि अब विदेशोंमें रहकर राजा साहबके ऐसे बिचार हो गये हैं, नहीं बहुत दिन पहलेहीसे आपके ऐसे विचार हैं। यहां एक घटनाका उल्लेख किया जाता है, जिससे पाठकोंको पता लगेगा कि आप धार्मिक सहनशीलता (Religious Toleration) के कितने पक्षपाती हैं। घटना दस, ग्यारह वर्ष पहलेकी है। जब राजा साहबने "प्रेम" अखबारसे अपना सम्बन्ध परित्याग कर दिया और "प्रेम" को प्रेम-महाविद्यालयका मुखपत्र बना दिया, तब 'प्रेम' के व्यवस्थापक और सम्पादक दोनों सज्जन आर्यसमाजी हुए। उन दोनोंने यह न विचार कर कि प्रेम-महाविद्यालय, कोई विशेष धार्मिक संस्था नहीं है और न किसी खास धर्म, जाति और रङ्गका पक्षपाती है "प्रेम"के पहले पेजके सिरपर "ॐ"रखा, जिसे हिन्दू अथवा आर्य-समाजियोंका धर्मसम्बन्धी चिह्न समझना चाहिये। इस निबन्धके लेखकको यह बात खटकी, उसकी समझमें यह बात उस समय भी प्रेम-महाविद्यालयके उद्देश्यको देखते हुए अनुचित थी और अब भी है। उसने राजा साहबको एक चिट्ठीमें लिखा कि क्या प्रेम महाविद्यालयके उद्देश्य और सिद्धान्तोंको देखते हुए—"प्रेम" अखबारके ऊपर "ॐ" रखना उचित हुआ है। इसके उत्तरमें राजा साहबने लेखकके पास जो चिट्ठी भेजी थी वह ज्योंकी त्यों नीचे

प्रकाशित की जाती है। चिट्ठी साधारण होनेपर भी इसका इच्छा प्रमाण है कि आप किसीका जी दुःखाना, अथवा धार्मिक स्वतन्त्रतामें बाधा पहुंचाना अच्छा नहीं समझते हैं। चिट्ठी यह है:—

CATHERINE VILLA
MUSSORIE
29th May, 1913.

Dear Sir !

I am writing to Brahmacharyjee direct

I shall be very glad to see you sometime. Will you not grace your institution at its next anniversary in august.

Re Om on the Prem, I think if I will insist on the exclusion of a certain form so much, I will be creating a new form, for that will be a form of exclusion.

I look upon these different forms as the forms of one

YOURS SINCERELY,
M. "PRATAP"

चिट्ठीका भावार्थ यह है :—

प्रिय महाशय !

"मैं ब्रह्मचारीजीको सीधा पत्र भेज रहा हूं। आपके किसी समय आनेपर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। क्या अगस्त मासमें आप अपने प्रेम-महाविद्यालयके वार्षिकोत्सवपर न पधारेंगे ?

प्रेमके ऊपर जो ॐ छपता है, उसके विषयमें मैं समझता हूं, यदि मैं किसी चिह्नके हटानेके लिये हठ करूँ तो मैं एक नये चिह्नको उत्पन्न करता हूं, और वह चिह्न वहिष्कारका रूप होगा।

मैं इन भिन्न भिन्न चिह्नोंको, एकका ही रूप (चिह्न) समझता हूं।

सच बात यह है कि राजासाहब व्यवहारिक धर्म अर्थात् दूसरोंकी भलाई करनेके पक्षपाती हैं सिर्फ जवानी जमा खर्चसे अथवा किसी दूसरेसे विरोध ठाननेसे कोई धर्मात्मा नहीं होता है। सच्चा धर्मात्मा वही है जो ईश्वरके पुत्र पुत्रियोंको प्यार करे। राजासाहब धर्म सम्बन्धी लड़ाई, झगड़ेके बिलकुल पक्ष-पाती नहीं हैं।

देखिये आपके धर्म सम्बन्धी उदार विचारोंका नमूना नीचे प्रकाशित दो लेख हैं :—

हमको मजहबोंने डुबोया

शोक है! पर सत्य है। यदि मजहब कुछ और सिखाते, यदि हमारे मत कोई और मार्ग दिखाते तो हम कदापि इस अवस्थाको न प्राप्त होते। कदापि इस महासागरमें न पड़े होते।

हे हिन्दूमत! तैंने हमारे साथ बड़ा अनर्थ किया है, तैंने हमारे नेताओंको हमसे छुड़ा मोक्ष किया है।

ओ मुसलमान मजहब! तूने हमारे खिजरको बहिश्त पहु-चाया और हमें रास्ता भुलाया।

ईसाई धर्मने हमारी सहायता न की थोड़ोंको स्वर्ग (Heaven) बाकियोंको मार्ग एजादी अर्थात् जहन्नुमका रास्ता बताया।

जब समस्त मत हमें अनेक रीतियोंसे यही बताते हैं कि हम जैसा करते हैं वैसा पाते हैं, अच्छा कहते हैं तो हमारी इच्छा पूर्ण हो जाती है, हिन्दूको मोक्ष, ईसाई और मुसलमानको बहिश्त मिल जाती है, तो न मालूम क्यों धर्मोंने हमारे बड़ोंका ऐसा विचार ही किया, जिससे उन्होंने उच्चपद पाया हमारा साथ छोड़ दिया। हां! आज धर्मावलम्बियोंकी हम इसी लिये बुरी दशा देखते हैं कि, जो जीव-जन इस योग्य होते हैं कि धर्मकी सेवा करें जभी वह मोक्ष-पद पाते हैं, अथवा स्वर्ग पधारते हैं। करें तो हमारा उद्धार करें कौन, हमें जैसे बनती है अपना रास्ता टटोलते हैं और भूलते भालते जैसा होता है आगे बढ़ते हैं। पर क्या? जो लोग पहले भूल चूक कर चुके हैं, उसीको हम फिर करते हैं। पहले आदमियोंकी परीक्षाओंसे बहुत कम लाभ उठा सकते हैं। यदि हमारे मतमें यह लिखा है कि जीवके मोक्ष या स्वर्गसे कुछ लाभ नहीं, क्योंकि हम मोक्षवाले जीवों और स्वर्गवासियोंको भी खींचकर गिरा देंगे, इसलिये जब प्राणी मात्रकी मोक्ष हो,जभी मोक्ष पूर्ण हो सकती है। आज उन जीवोंके नहीं रहनेसे काम बहुत सरलतासे हो सकता था और दुनियां भी सुखदायक बन जाती, और दिन जिसको कि सभी मोक्षको प्राप्त होते दूर न होता।

क्या मैं आस्तिक हू ?

संसारकी बड़ी विचित्र गति है। हम सब कुछ देखते भालते हुए सदा एक ऐसी अवस्थामें निमग्न रहते हैं कि कभी अपनी निजी अवस्था तक पर ध्यान नहीं देते। इसीलिये आज यह प्रश्न आपके सम्मुख विचारार्थ उपस्थित किया जाता है कि "क्या मैं आस्तिक हूं या ईश्वरवादी अथवा ईश्वरपर विश्वास रखता हूं या नहीं ?" अपनी अवस्थापर विचार करना मनुष्यका एक ऐसा आवश्यक कर्त्तव्य है कि यदि मनुष्य ऐसा नहीं करता तो मनुष्य मनुष्य नहीं रहता क्योंकि मननशील होनेहीसे मनुष्यको मनुष्य कहा वा माना जा सकता है। वास्तवमें यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण दोषोंपर आप दृष्टि डालता रहे तो मानों वह अपने भविष्यको स्वयं सुधारता है अथवा अपने उन्नति मार्गको आप सरल बनाता है। इसी प्रयोजनसे हम एक आवश्यक प्रश्न प्रत्येक ईश्वरानुयायी पुरुषके सम्मुख उपस्थित करते हैं जिसका ऊपर उल्लेख है। यह प्रश्न क्यों आवश्यक है ? इसकी भी किञ्चित् विवेचना कर देना उचित प्रतीत होता है। अतएव विदित हो कि जो पुरुष अपनेको ईश्वरके माननेवाले मानते वा कहते हैं वे अपनेमें सर्वप्रधान गुण यही समझते हैं कि हम "ईश्वरवादी" अथवा "आस्तिक" हैं। तो फिर क्या ऐसे मनुष्यको स्वयं यह उचित नहीं है कि वह इस बातकी पड़ताल करे कि "मैं कहांतक आस्तिक हूं" अथवा "आस्तिक हूं वा नहीं ?" क्योंकि वास्तवमें उसकी कितनी बड़ी

हानि है यदि वह विचारसे इस परिणामपर पहुंचे कि मैं ईश्वर-वादी नहीं हूं किन्तु केवल कपोलकल्पी और मिथ्याभिमानी हूं तो ऐसी अवस्था उसके लिये कैसी शोकजनक हो अतएव इस प्रश्नपर ही विचार करना प्रत्येक आस्तिक पुरुषका परम कर्त्तव्य प्रतीत होता है।

सज्जन महानुभाव !

इस प्रश्नको सम्मुख रखनेपर किसी अन्य साक्षीसे निरधारण नहीं कराना है न किसी मजिस्ट्रेटसे फैसला लेना है किन्तु इसमें तो प्रत्येक पुरुष स्वयं ही साक्षी है और स्वयं न्यायाधीश है। ऐसा विलक्षण अभियोग आपने पहिले कभी न देखा होगा? आइये हम आप सब अपनी साक्षी आप देकर आप ही न्याय करें।

प्रिय पाठकवर्ग !

यह बड़ा कठिन भार है कि स्वयं साक्षी देकर स्वयं ही फैसला भी दें क्योंकि जब कोई पुरुष अपने आपको साक्षीकी स्थितिमें करके पूछेगा तो अपने आपको असत्य कहकर धोका नहीं दे सकता और पुनः उस दी हुई साक्षीपर असत्य निर्णय भी नहीं कर सकता।

ओहो सज्जनगण ! मैं अपनी अवस्थाकी क्या कहूं। मैंने जो अपने हृदय-मन्दिरको विचार दृष्टिसे देखा तो बड़ा दुर्गन्धित, महा मलिन और अपवित्रता परिपूर्ण पाया। स्थल स्थलपर पापी हृदय ऐसी अवस्थामें ग्रस्त मिलता है कि कभी वह मदान्ध होकर निर्बल स्त्री पुरुषोंपर अन्याय करनेको प्रस्तुत हो जाता है, कभी

दीन पुरुषोंको दुःखित कर उनका धन हरण करना चाहता है। कभी रिश्वत लेनेमें बेखटक हो जाता है। कभी असत्य भाषण करनेपर उद्यत हो जाता है। कभी परधन हरणकी युक्ति सोचने लगता है। कभी छल कपट भावके व्यवहारमें बेधड़क हो जाता है। कभी कामान्ध हो बड़ी बड़ी सती, साध्वी, पतिव्रता, और धर्मात्मा स्त्रियोंके धर्म नष्ट करनेको कटिबद्ध होता है। कभी घोर अन्याय करनेमें निर्भय हो जाता है। कभी पक्षपात करना अपना कर्त्तव्य मान लेता है। निदान कहांतक कहें जितने अनुचित् अधर्म और अकर्त्तव्य कार्य्य हैं सभी कुछ सोचते विचारते और करते हुए यह पापात्मा किञ्चित् भी यह स्मरण नहीं रखता है कि मैं क्या कर रहा हूं, और मेरे आन्तरिक विचारों और गुप्त दुराचारोंका कोई साक्षी है वा नहीं और कोई ऐसी घट घट वासिनी, सर्व व्यापक, सर्व द्रष्टा, महान्शक्ति भी है वा नहीं कि जो हमारे मन, वचन और कर्म द्वारा किये हुए गुप्तसे गुप्त कार्य्यको भी देख रही है। ऐसी अवस्था यदि वास्तवमें हो तो क्या कोई न्यायशील आत्मा ऐसा निश्चय कर सकती है कि किसी ईश्वरवादी और ईश्वर विश्वासी आत्माके ऐसे भाव हो सकते हैं और मैं आस्तिक हूं?"

इसके अतिरिक्त जब हम यह देखते हैं कि हम मनुष्य होकर दूसरे मनुष्योंसे घृणा करते हैं, दूसरे मनुष्योंको नीच समझते हैं, कारण दूसरोंको हानि पहुचानेपर उद्यत हो जाते हैं, किसीको अपना और किसीको अन्य समझने लगते हैं, किसीको अछूत

उठा लिया। पर इसके पीछे आपने देहरादूनमें एक कोठी खरीदी जिसका नाम आपने धर्म-कोठी रखा। उस कोठीमें सब ही धर्मवालोके व्याख्यान होते थे। और सब लोग बिना किसी धर्म, रङ्ग और जातिके पक्षपातके उसमें ठहरते थे। आपके हिन्दुस्तानसे चले जानेके पीछे यह सिलसिला बन्द होगया।

संसार आनन्दधाम है

आजसे ही नहीं किन्तु जबसे राजा महेन्द्रप्रतापका सार्वजनिक जीवन आरम्भ हुआ है तबसे ही आपकी इच्छा रहती है कि यह संसार शान्ति-सुख और आनन्दका धाम बने। हिन्दुस्तानमें रहते समय तो आप प्रेम-धर्मका आदेश करते ही रहे, पर हिन्दुस्तानसे बाहर जाकर भी आपने यूरोप-अमरीका जैसे प्रकृतिवादी देशोंमे भी प्रेमका सन्देश पहुचाया। पश्चिमी देश विज्ञानका आसुरी और अनुचित लाभ उठा रहे हैं, जिससे परम पिता परमेश्वरकी मङ्गलमय सृष्टिमें अमङ्गल, अशान्ति और प्रलयकाण्ड उपस्थित हो रहे हैं। राष्ट्र और मनुष्योंका जीवन दुःख और अशान्तिपूर्ण हो रहा है। राजा साहब चाहते हैं कि संसारको इस अशान्तिको प्रेमसे दूर किया जाय। आप चाहते हैं मनुष्य समाजमें सच्चे प्रेमकी स्थापना करके, संसारका शासन चलाया जाय। इसी विचारवश जर्मनीमे रहते समय आपने एक "हेपीनेस-पार्टी"—अर्थात् आनन्द-मण्डली स्थापित की राजा साहबका कहना है :—"मानव-जातिकी शान्तिको भङ्ग करनेवाले व्यक्तिगत स्वार्थ सर्वत्र फैले हुए दिखलाई पड़ रहे हैं। ये स्वार्थी

मनुष्य राष्ट्रको, धार्मिक अथवा जातीय विभागोंके नामसे मनुष्य जातिको कुमार्गकी ओर लिये जा रहे हैं। ...हमलोग एक दूसरेके विरुद्ध कुछ स्वार्थियोंकी स्वार्थ-पूर्तिके लिये लड़ाये जा रहे हैं। हमारे सामने ऐसी सामग्रियाँ उपस्थित की जा रही हैं, जिनके प्रभावसे हम मनुष्य-जातिकी स्वाभाविक एकता तकको भूले जा रहे हैं। विज्ञानके सिद्धान्तोंके नामसे हमें ऐसी झूठी बातें सिखलाई जा रही हैं, जिनसे हमारे मानव जीवनमें हजारों प्रकारसे बेचैनी बढ़ती जा रही है। ' हम इन उपदेशकों और मन्त्रियोंको नहीं चाहते, जो विद्वेष फैलाकर शासनकी नीति काममें ला रहे हैं। हम बोलनेके ऐसे ओज और लिखनेकी ऐसी सुन्दरता नहीं चाहते जो मनुष्य-जातिका गुलाम बनानेमें सहायता देती है। हम तो बिना किसी भेद भावके सब जाति वर्ण और रङ्गके लोगोंके लिये समान स्वाधीनता चाहते हैं।" इसके आगे राजा साहब जो कुछ लिखते हैं, वह और भी अमूल्य हैं "हमें मनुष्य-समाजको आनन्दमयी जीवन-चर्या बनानेके अतिरिक्त कोई अच्छा विज्ञान नहीं मालूम है। हमारा विश्वास है कि, ये जितने मतमतान्तर प्रकट हुए हैं, सबका एक ही उद्देश्य रहा है, अर्थात् मनुष्यको सुखी बनाना। इसलिये हमारा यह भी विश्वास है कि, सरकारें मनुष्य-जातिके लाभके लिये बनी रहें। लेकिन, इन समस्त संस्थाओंका वही एक उद्देश—मनुष्य जातिका सुखमय जीवन-निर्माण—रखना चाहिये।...वर्तमान समयके समस्त राजनैतिक आन्दोलन केवल कुछ स्वार्थियोंके

व्यक्तिगत अथवा संघ-बद्ध स्वार्थोंको प्रकट करते हैं। इस स्वार्थियोंके संग्रामसे व्यापक अशान्तिका जन्म होता है। हमें इस अशान्ति-प्रचारको समस्त शान्तिमय उपायोंसे रोकना चाहिये और संसारके समक्ष सुखमय जीवनका सच्चा दृश्य उपस्थित करना चाहिये।"

इसमें सन्देह नहीं कि राजा साहबके इन विचारोंका कार्यमें परिणत होना कठिन दिखलाई पड़ता है। पर इन विचारोंके अनुसार कार्य हो तो इस संसारमें शान्तिका साम्राज्य हो जाय। सब ही व्यक्ति और राष्ट्र अपने स्वत्वोंकी रक्षा करते हुए, दूसरे व्यक्ति और राष्ट्रोंके प्रति प्रेम और भ्रातृभाव रखें तो इससे संसारके आनन्द धाम बननेमें क्या देरी लगे; पर ऐसा होना कठिन यों दिखलाई पड़ता है कि स्वयं राजासाहब स्वीकार करते हैं कि मनुष्य एक हठी प्राणी है और अपनी बातपर अड़ जानेपर अपने स्वार्थपुष्टिमें संलग्न रहनेका स्वभाव रखता है। ऐसी अवस्थामें राजा साहबकी पार्टी सर्व राष्ट्रीयरूपमें काम न करके, अलग अलग देशोंमें विशेष विभागोंके रूपमें काम करे तो विशेष सफलता प्राप्त होनेकी सम्भावना है और आप प्रेमका जो साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं, सम्भव है कि वह किसी अंशमें स्थापित हो जाय।

"वर्त्तमान" के शब्दोंमें हमें भी यह कहना पडेगा कि यदि अकेले भारतके उद्धारके लिये राजासाहब काम करना चाहें, तो उन्हें पहले अकेले भारतकी मुक्तिके लिये इन सिद्धान्तोंपर काम

करना पड़ेगा। इसी प्रकार अन्य देशोंमें अलग अलग काम करना पड़ेगा। इस कार्यके अनन्तर सब देशोंके उद्देश्योंमें समता लाकर तब एक साथ प्रेम-साम्राज्यकी संस्थापना की जा सकती है।

राजासाहबको संसारमें आनन्दके अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखलाई पड़ता है, जैसा आपके निम्नलिखित लेखसे प्रकट है।

आनन्द

ऐ पाठक या श्रोता! जो कुछ तुम देखते हो, वह निस्सन्देह सब एक है। यह तमाम ब्रह्माण्ड एक ही जीवनकी एक दशा है। तुम जो विविध पदार्थ देखते हो ये सब एक ही जीवनकी भिन्न भिन्न लहरें हैं। तुम भी इसीकी एक लहर हो। जब यह जीव प्रसन्नताकी इच्छा करता है, तब ब्रह्माण्डकी उत्पत्ति होती है। एकमात्र आत्माकी प्रसन्नताके लिये यह ब्रह्माण्ड साधन है। पहली सृष्टिका स्वरूप पहली इच्छाके अनुसार होता है। सृष्टिमें वे सब गुण हैं, जो पूर्ण जीवमें होते हैं और बुराई इस सृष्टिका एक अनिवार्य परिणाम है।

जिस तरह एक लहर दूसरी लहरको पैदा करती है, इसी तरह पहली लहर अन्य दूसरी लहरोंको पैदा करती चली जाती हैं। क्या तुम नहीं देखते हो कि एक चीजसे दूसरी चीज और एक जोड़ेसे दूसरा जोड़ा पैदा होता रहता है। एक चीजका आरम्भ प्रायः उसकी पूर्व चीजोंके अनुसार होता है। एक आदमीका जन्म बहुधा उसके माता पिता तथा पड़ोसियोंके कार्योंके अनुसार होता है और यह सिलसिला ब्रह्माण्डके लिये जारी है। जो

कुछ पैदा हुआ था, या पैदा होता है, अथवा पैदा होगा, सब अपने कामोंकी लहरें छोड़ते हैं और कामोंकी ये लहरें ब्रह्माण्डमें अच्छा या बुरा प्रभाव उत्पन्न करती रहती हैं तथा एकमात्र जीवनको सुख या दुःख देती रहती हैं।

ब्रह्माण्डका लक्ष्य सम्पूर्णजीवन है। परिमित मस्तिष्कसे उसे समझना निन्तात असम्भव है। पहाड़, समुद्र, पृथ्वी, आकाश और करोड़ों सृष्टियां, ये ही नहीं, असख्यजगत जिनमेंसे कुछ इस दुनियासे बड़े हैं ये क्या कर रहे हैं और किस प्रकार अक्षय जीवनको सुख दे रहे हैं यह कहना कठिन है। अगर तुम इतनी बात नही समझा सकते कि तुम एकमात्र जीवनके अङ्ग हो और तुम उच्च ज्ञानके अनुसार काम करते हो तो तुम्हें कभी व्यक्तिगत दुःख या कष्ट न होगा। तुम भी सम्पूर्ण जीवनके सुखका उपभोग कर सकोगे, यही पूर्ण आनन्द है।

प्रेमी—

"महेन्द्रप्रताप"

आप बड़े आनन्दी जीव हैं। आपके एक एक वाक्यमें आनन्दकी झलक प्रतीत होती है। आपके निम्नलिखित पद्य हमारे इस कथनके साक्षी हैं।

खुद अयां देखा

दिमागे आशमांमें हां खयाले अबरूआं देखा।
कभी गर दूरकी सूझी तो नूरे बर्क अयां देखा॥

उसीके ख्वावमें हर शव सितारोंका मजा देखा।
जो दिनमें लग गई झपकी तो सूरज वां चढ़ा देखा॥
जो देखा माह कामिलको तो देखा गोह और मोह।
मगर अक्से खयाले खुद जिधर देखा उधर देखा॥
नहीं है कुछ खवर यां पर कि क्या देखा कहां देखा।
सुआवे आसमां देखा खयाले "खुद अयां देखा॥"

(१५)

स्वभाव

राजासाहबके स्वभावके सम्बन्धमें विशेष न लिखकर केवल इतना ही कहना है कि जैसे किसी चित्रकारके बनाये चितसे अथवा किसी कविकी कवितासे चित्रकार और कविके स्वभाव और रुचिका पता लगाया जाता है, ठीक वैसे ही राजा साहबके जो लेख जहां तहां इस पोथीमें उद्धृत किये गये हैं, उनको पढ़कर पाठकोंने राजा साहबके स्वभाव और रुचिका पता लगा लिया होगा। यह स्वाभाविक है कि किसी भक्त अथवा प्रशंसकको अपने नायकके, किसी मित्रको अपने मित्रके दोष नहीं दिखलायी पड़ते हैं और यह भी सम्भव है कि किसीको किसी व्यक्तिके दोष प्रतीत होते हों, तो वही दोष उस व्यक्तिके मित्रोंको गुण प्रतीत होते हैं। अतएव इस विषयमें विशेष न कहकर केवल इतना ही कहना है कि प्रभुकी इस मङ्गलमय सृष्टिमें कोई पदार्थ निर्दोष नहीं है। विशेषतः कोई मनुष्य ऐसा नहीं दिखलाई पड़ता है, जिसमें

परिशिष्ट

राजासाहबने प्रवाससे समय समय पर भारतीयोंके सम्बधमें जो विचार प्रगट किये हैं उनसे उनके वर्त्तमान विचारोंका पता लग जाता है। कुछ एक लेख यहांपर उद्धृत किये जाते हैं :—

राजा महेन्द्रप्रतापके विचार

मैं सदासे ही प्रेमका भक्त रहा हूं, कलाकौशलके कालिजका नाम प्रेम-महाविद्यालय रखकर और "प्रेम" नामका पत्रका सम्पादन करके मैंने आरम्भमें प्रेमकी भक्तिका प्रमाण दिया था।

महात्मा गान्धीका भी मैं बहुत पुराना भक्त हूं। १९१३ के दिसम्बर मासमें जब मैंने सुना कि महात्मा गान्धी दक्षिण अफ्रीकामें कैद कर लिये गये और श्रीमान् गोपालकृष्ण गोखले वहांके भारतवासियोंकी सहायताके लिये चन्दा इकट्ठा कर रहे हैं, तब मैंने गोखलेजीके पास जो कुछ चन्दा भेज सका भेजा और उन्हें सूचित किया कि मैं भी इस कार्यमें मदद देनेको तैयार हूं। गोखलेजीने मुझे दिल्लीमें मिलनेकी आज्ञा दी, जहां वे बड़े लाटकी कौंसिलके कार्यमें लगे हुए थे। मैंने उनसे दिल्लीमें मुलाकात की और कहा कि मैं दक्षिण अफ्रीकामें जाकर वहांके अन्यायपूर्ण कानूनकी अवज्ञा कर जेल जाना चाहता हूं। उन्होंने मेरे चन्देको स्वीकार किया परन्तु मुझे दक्षिण अफ्रीका जानेसे मना किया ; क्योंकि उन्होंने मेरा वहां जाना जरूरी नहीं समझा। मैंने उनकी

सलाह मान ली। महात्मा गान्धीके प्रति मेरी सहानुभूति और श्रद्धाका परिचय इन बातोंसे मिल सकता है।

सन् १९१४ में मैं "निर्बल-सेवक" नामक एक साप्ताहिक पत्रका भी सम्पादन करता था। इस पत्रका उद्देश्य किसानोंकी हालत सुधारना और प्रेमके सिद्धान्तका प्रतिपादन करना था।

१९१६ से मैं हर जगह प्रेमका ही प्रसार करता रहा हूं। सन् १९१८ में जर्मनीमें मेरी "प्रेमका धर्म" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जो जर्मन भाषामें लिखी गई थी। अब इस पुस्तकका अङ्गरेजीमें भी अनुवाद हो गया है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि मैं प्रेमका कट्टर भक्त हूं और मुझसे यह अधिकार कोई भी छीन नहीं सकता। परन्तु महात्माजीका आदर करते हुए भी मैं श्रीकृष्णके उपदेशोंको त्याग नहीं सकता। श्रीकृष्ण भी प्रेमके ही अवतार थे। उन्होंने प्रेमका उपदेश दिया और प्रेमका ही अनुसरण किया, परन्तु साथ ही साथ अपने अधिकारोंकी रक्षाके लिये धर्म-युद्ध करनेका भी उपदेश दिया। मैं महात्मा गांधीके सामने सादर सर झुकाता हूं परन्तु पैगम्बर मोहम्मदके सिद्धान्तोंके विरुद्ध नहीं चलना चाहता। उन्होंने भी आत्मरक्षाके लिये जिहाद करनेकी आज्ञा दी है। रक्तपातको रोकनेका सबसे अच्छा तरीका इस प्रकारका धर्म-युद्ध या जिहाद ही है। मैं रक्तपातके विरुद्ध हूं, परन्तु मैं यह निसर्ग-सिद्ध नियम भी नहीं भूल सकता कि मानवी समाजमें कुछ न कुछ उपद्रव

होते ही रहेंगे। मैं तूफान उठाना नहीं चाहता और न मैं मृत्यु ही पसन्द करता हूं परन्तु तूफान और मृत्यु निसर्गके दो बडे नियम हैं। जो मनुष्य हमें तूफान और मृत्युके सामने शान्तिके साथ सर झुकानेको कहता है वह निसर्गके इन दो बड़े नियमोंको बिलकुल भूल जाता है। जो राजनैतिक चिह्नोंको देखता है, वह जानता है कि आज या कल शीघ्र ही भारतके सामने एक जटिल स्थिति पेश होनेवाली है। मेरे मतानुसार वही आन्दोलन सबसे अच्छा है जो बहुत कम रक्तपात करके योग्य परिवर्तन करा दे। मेरे पत्रका भावार्थ यही है।

महात्मा गान्धीने मनुष्यमात्रका ध्यान मनुष्यके दैवी गुणों-की ओर आकर्षित किया है, इसलिये सारा संसार इस सम्बन्धमें उनका बड़ा ऋणी है। मेरा विश्वास है कि महात्मा गांधीके कार्य अमर रहेंगे। परन्तु महात्मा गान्धीका मुकाबला कृष्ण या मोहम्मदसे करना उनका अपमान करना है। यह सच है कि कृष्णके समान चन्द व्यक्तियां प्रेमके बलपर बिना शस्त्र लिये अपने शत्रुओंको जीत सकता हैं परन्तु जब प्रेम और अहिंसाका शत्रु अधर्मका युद्ध छेड दे तब सेनाओंकी जरूरत होती है। यही धर्म युद्ध या जिहाद है।

जरूरत आज यह है कि महात्मा गान्धी और उनके साथी आनेवाले तूफानका मुकाबला करनेके लिये भारतकी जनतामें आवश्यक आत्मसंयम पैदा करें ताकि जब तूफान आवे तब हम उसका मुकाबला ठीक तौरपर कर सकें और हमारा उत्साह या

शक्ति कम न हो। मेरे शब्दोंका गलत अर्थ न निकालो। मैं यही कहता हूं कि हमें बुरेसे बुरे समयका सामना करनेके लिये तैयार रहना चाहिये।

राजाओं, महाराजाओं, नवाबों, जमींदारों और व्यापारियोंके नाम

मैं आपसे मनुष्यताके हितकी दृष्टिसे बातचीत करता हूं। इस बातका सन्देह भी न कीजिये कि आपकी भलाईके सिवाय अन्य कोई हेतु मेरे मनमें है। मैं स्वयं एक जमींदारके कुलका हूं। सौ वर्ष पूर्व मेरा खानदान राज्य करता था, मैं आपके हितके लिये आपसे सत्य कहता हूं कि आप संकटकी अवस्थामें हैं। वर्तमान समयकी नाजुक परिस्थितिको मैं थोड़ी बहुत जानता हूं। मैंने सारे संसारमें भ्रमण किया है और जर्मनी, टरकी, अफगानिस्तान और प्रशियामें तो मैं कई बार गया हूं। सबसे बुरे स्वेच्छाचारी शासनसे लेकर बढ़िया सामाजिक प्रजातन्त्र पद्धतितकका मैंने अध्ययन किया है।

एक मित्रकी हैसियतसे मैं आपको सूचित करता हूं कि आप अपनी वर्त्तमान उदासीनता, कार्य-शून्यता, अथवा दगाबाजीके खुले कार्योंसे बचे रहें। आपके देश भाई आगे बढ़ रहे हैं। दुनियाका परिवर्त्तन हो रहा है। आपको समझ लेना चाहिये कि आप स्वयं या आपकी विदेशी सरकार, जर्मनी और आस्ट्रियाके कैसरों या रशियाके साम्राज्य-सरकारोंसे अधिक बलवान नहीं है। कैसर दुनियासे भाग गया है, जारकी मृत्यु हो चुकी

और व्यापारियोंका सर्वस्व एशियामें नष्ट हो चुका है। मुझे खेद है कि, यदि आप अपने देश भाइयोंके साथ सहयोग न करें या दुनियाकी राजनीतिके साथ न रहें, तो यही हाल आपका भी होगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप महात्मा गान्धी, हसरत अली और मालवीयजी महाराजकी आज्ञाका पालन करें। आपकी लोक-सेवासे ही आपके भविष्यका निश्चय होगा। आपको यह न समझ लेना चाहिये कि अलग रहकर आप सही सलामत रह सकेंगे। आप मनुष्य-जातिके कुटुम्बके साथ बँधे हुए हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वरके लिये, अपने देशके लिये, अपने कुटुम्बके लिये आप जागृत हो जाइये और अपना कर्त्तव्य कीजिये। आप बुद्धिहीन नहीं हैं। इङ्गलैण्डके सरदारोंकी अपेक्षा आपमें समझ अधिक है। आप अपनी योग्यताका उपयोग नहीं करते। आप अग्रलोचीकी दृष्टिसे भविष्यकी ओर नहीं देखते। मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा। परन्तु आपका कर्त्तव्य यहीं समाप्त नहीं होता। आपको हिन्दुस्तानके अन्तिम ध्येयकी पूर्त्ति करनी चाहिये। पुरानी सभ्यतासे नयी भौतिकतावादी दुनियाको शिक्षा देनी चाहिये। शीघ्रता कीजिये। समस्त मनुष्य जातिको सच्चे प्रेम और सुखकी शिक्षा देनेके लिये एक सगठन तैयार कीजिये। मैं आशा करता हूं कि आप कृपाकर मेरी "प्रेम-धर्म" और सुख-सचारक दलकी योजना नामकी पुस्तकें भी पढ़ेंगे।

भारतभाइयोंके प्रति

भारत-भाइयो! उठो, जागो, कुछ आगे पीछेकी सोचो, यों लेट मारते, हाँ हाँ करते काम न चलेगा। देखो, शत्रु बहुत प्रकारसे तुमको अचेत रखता है। तुम्हारे कानमें कुछ फूंक तुम्हें बर्रवा देता है। तुम नीदमें कुछकी कुछ हाँक बैठते हो। यदि केवल बर्राते ही तो भी कुछ डर न था। नहीं, तुम स्वप्नमें इधर उधर हाथ फेकते हो। अपने ही भाइयोंकी आंखोंमें उङ्गली ठूसते हो। अगर भाई अन्धे हो गये तो भी जागनेपर आपसमें सर फोड़ डालेंगे। फिर पश्चात्तापसे भी काम न चलेगा।

साफ साफ कहूं न, मुझे यह हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा सुन कर वडा खेद हुआ है। मन मलीन व हृदय दुखित है। महात्मा गाँधीजीको अभी एक ही वर्ष जेलमें हुआ है और अभीसे हिन्दू मुसलमानोंमें अनवन! भाइयो क्यों? क्या आपको सदा ही महात्माजी साथ चाहिये। महात्माजीका शरीर अकाली नहीं है। वह भी एक न एक दिन नष्ट होगा। फिर क्या इससे भी अधिक घरेलू लड़ाई लड़ोगे?

पर सिद्धान्त कभी नहीं मरता। देखो न राम, कृष्ण, बुद्ध ईसा, मोहम्मदने जो शिक्षा दी थी वह आजतक जीवित है। उन्हीकी अमर शिक्षाका फल है कि आज तक भी हमारे कुछ प्रिय भाई अपनेको हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान कहते हैं। पर इन महान् पुरुषोंने यह नहीं सिखाया था कि तुम नींदमें अपने ही भाइयोंकी आंखें फोड़ना, शत्रुके वहकानेमें आपसमें

ही सिर तोड़ना। उन्होंने भलाई बुराईका ज्ञान सिखाया था और भलाई ग्रहण करनेको हमें हमारा धर्म बताया था। पर क्या यह भलाई है कि तुम चार पैसेके शाही नौकरको अलापमें अलाप लगाओ। किसी मान-प्रतिष्ठाकी लालचसे हिन्दू मुसलमानमें झगड़ा लगाओ। बस, भाई बस। जो हिन्दू मुसलमानसे झगड़ता है और जो मुसलमान हिन्दूसे लड़ता है, वह न हिन्दू है न मुसलमान। वह म्लेक्ष वा काफिर है, और कदापि सच्चे हिन्दू व मुसलमानोंको उन म्लेक्ष व काफिरोंका साथ नहीं देना चाहिये।

जी हां, आपके हृदयमें ऐसे भाव उत्पन्न होते हैं कि हिन्दू समाज कम हो चली, हिन्दू समाजका निरादर हो गया, हमारी बात न रही और इसी प्रकार कोई और सोचते हैं—तो क्या अब मुसलमान बिलकुल ही गिर गये, क्या मुसलमान हिन्दुओंसे भी गये गुजरे हो गये, क्या मुसलमानोंका फर्ज नहीं कि लाठीसे काम लें और हिन्दुओंको दबाकर रखें! पर भाई! अब आपसे मेरा यह कहना है कि इन हिन्दू मुसलमानोंमेंसे जिन्हें आप हिन्दू मुसलमान समझते हैं बहुत ही थोड़े सच्चे हिन्दू मुसलमान हैं, आप स्वयं अपने ही हृदयसे पूछें कि क्या आप ही सच्चे हिन्दू या मुसलमान हैं। दिखावटी खान-पान या नहाने धोनेको जाने दीजिये, पर क्या आप सदा धर्म व दीनके अनुकूल चलते हैं? क्या आप सच बोलते हैं? क्या आप सदा दुखियोंका दुःख देख-कर उनकी सहायता करते हैं? भाई, आप चाहें जो कुछ भी हों

पर क्या यह पैसेके लालची, शत्रुके नौकरशाही, अंग्रेजोंके खुशामदी—क्या यह सब हिन्दू या मुसलमान हैं ? यदि हाँ, तो आप झूठ बोलते हैं और यदि नही तो फिर आप किनके लिये लड़ते हैं ?

अभी हालमें मैंने सुना था कि किन्हीं महान पुरुषने किन्हीं मुसलमानोंको हिन्दू बना लिया। मुझे भय है कि यह महान पुरुष भी हिन्दू मुसलमानका अर्थ नहीं समझते। यह बेचारे भी किन्हीं धूर्तोंके बहकावेमें आ बैठे बिठाये व्यर्थमें द्वेषके भागी बने। इन महान पुरुषकी शुद्ध चेष्टामें कोई दोष नही, परन्तु अब यह समय नही कि दलित समाजकी वृद्धि की जाय। समय है कि हिन्दुओंको सच्चा हिन्दू और मुसलमानोंको सच्चा मुसलमान बनाया जाय। इस विषयमें जो बहुतसे लेख लिखे गये उनको पढ़नेसे समाजकी गिरी दशाका पता अवश्य चलता है। लोगोंने लिखा है कि यह 'राजपूत हिन्दुओंकी भांति व्याहशादी करते थे इत्यादि। अर्थात् इनकी रीतियां ही इन्हें हिन्दू ठहराती थीं! वाह जी वाह! केवल रीतिके लिये हलचल! किसीने यह नहीं कहा कि यह अपने वचनके सच्चे थे अथवा यह दुखियोंका दुख दूर करते थे। बात यह है कि उनमें शुद्ध आचरण नहीं है जो अपनेको केवल हिन्दू या मुसलमान समझते हैं और इसलिये वह दूसरोंमें भी यह धर्म नियम पाना आवश्यक नहीं समझते।

भाई जागो! भलाईका पक्ष बहुत कुछ गिर चुका है। भलाई बुराई हो चली है। भाई, प्राचीन अमर सिद्धान्तोंका पक्ष लो।

राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मोहम्मदको निष्ठासे भजन करो। व्यर्थके झगड़ोंमें न पड़ो। भारतवर्षके हित करो! ऐसा एक समाज उत्पन्न करो जो अपनेको हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, मुसलमान बराबर समझे, केवल प्रेम व न्यायपर चले। इसी समाजको भारतकी बागडोर अपने हाथमें लेनी चाहिये और बिना भेद-भाव मेलका स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहिये। यह समाज ही समस्त भूमण्डलके झगड़ोंको दूर कर सकेगा और समस्त मनुष्य-जातिमें प्रेम-भाव फैला देगा। क्या छोटे छोटे घरेलू झगड़ोंपर समय नष्ट करते हो। तुम्हें इस समय समस्त संसारको शान्ति प्रदान करनी है। चीन, जापान, अफगानिस्तान, रूस और तुर्की तुम्हारे साथ हैं, इटली और फ्रांसकी तुमसे सहानुभूति है। जर्मनी आज निर्बल है पर उसका तुम्हारे साथ प्रेम है। अमेरिकामें भी कुछ लोग तुम्हारे पक्षपाती हैं। देखो—बाहर देखो, तुम्हें बहुत कुछ काम करना है। इन्हीं विचारोंको फैलाओ। आपसमें मेल होगा। तुम्हारी जीत होगी।

मनुष्य-जातिका सेवक—

"महेन्द्रप्रताप"

oooooo

हिन्दू मुसलमानोंका झगड़ा

देशभक्त राजा महेन्द्रप्रतापने काबुलसे निम्नलिखित पत्र भेजा है :—

झगड़ा है, फसाद है, बल्कि युद्ध हो रहा है। किनमें ? हि

और मुसलमानोंमें। एक ही मिल्लतके दो बाजुओंमें और सर सैयद अहमदके कथनानुसार एक ही चेहरेकी दो आंखोंमें! दुनियांमें कुछ भी तअाजुबकी बात नहीं। देखिए जब आंखें अन्धी हो जाती हैं या अपना फ़र्ज अदा नही करतीं तो अपने ही पैरोंको किसी पत्थरसे ठुकरवा देती हैं और जब बीमारीका दौरा होता है तो अवगुणकारी चीजोंको खानेको मन चला करता है। दुनियांमें कुछ भी तअाजुबकी बात नहीं है। आंखें लड़ें, हाथ हाथको ठोकें, पैर पैरसे ही लड़ जायँ और चाहे हजरत इन्सान आप ही अपना गला घोंट लें, आत्महत्या कर लें, दुनियांमें कुछ भी तअाजुबकी बात नहीं। परन्तु प्राकृतिक नियमके अनुसार प्रत्येक घटनाका कुछ मौलिक कारण अवश्य होता है। तूफ़ान आता है, गरमी इसका कारण होती है। पौधा उपजता है वर्षा इसका कारण कही जा सकती है। मनुष्यका जो बच्चा पैदा होता है वह दो व्यक्तियोंके प्रेमका परिणाम है। सारांश प्रत्येक घटनाका कुछ न कुछ कारण होता है। अब देखना यह है कि एक ही हिन्दुस्तानके ये दो आधार, एक ही घरके ये दो भाई, एक ही शरीरके यह दो अंग, ये हिन्दू मुसलमान आपसमें क्यों लड़ते हैं! अपने ही प्राणोंको क्यों हनन करते हैं! अपनी ही मिल्लतको क्यों बरबाद करते हैं? इसका कारण क्या!

हम जानते हैं कि जय आंखें अन्धी या असावधान होती हैं तो मनुष्य ठोकर खाता है और जब रोग दौड़ता है तो हमारा ही मन हमारे ही प्रतिकूल काम करता है। आज हिन्दुस्तानी मिल्लत

अवश्य बीमार है। इसके भीतरी शरीरमें बाहरी रोग घुस गया है। उसके सारे शरीरमें उसका दौरदौरा है। उसने मनको निर्बल और आखोंको धुंधला कर दिया है। ऐसी अवस्थामें हम ठोकरें खायें या आत्मघात करनेपर उतारू हो जायँ तो अचम्भेकी क्या बात है? अगर हम अपने ही हाथसे अपना खून करना नहीं चाहते तो हमको हर समय यह याद रखना चाहिये कि हम बीमार हैं, हमको हमारा रोग दबाये-हुए है और यह रोग सब प्रकारसे हम-को मिटा देनेकी चेष्टा कर रहा है। यदि यह विचार हर समय हमारी खोपड़ीमें रहे तो हम कभी अपने ही मन या अपनी ही आखोंको दोषी न ठहरावेंगे। आप सभी दशाओंमें झगड़ेसे बचनेका प्रयत्न करेंगे। हर रोगकी कुछ दवा अवश्य होती है सम्भव है कि हम दवा न जानें या जान बूझकर रोगके प्रभावमें पडकर बदपरहेजी करें, पर रोगकी भी सीमा है,रोगकी भी मृत्यु है। अगर हम ठीक उपायोंसे काम लें तो रोग अवश्य मिट सकता है। हम आरोग्य अवश्य प्राप्त कर सकते हैं। डाक्टर, वैद्य, हकीम और जादूटोना करनेवाले सभी अपनी अपनी रायें और अपनी अपनी दवाइयां रखते हैं। यह पहलेसे कहना बड़ा कठिन है कि किस रोगीको किस अवस्थामें किस दवासे लाभ होगा। हम तो कहते हैं कि अगर रोग बढ़ रहा हो तो जितनी दवाइयां हो सकें सबकी परीक्षा करो और कभी अवसर आये तो हमारे जादूटोनाका भी असर देखो। हमारा दावा है कि हमारा चुटकुला किसी भी मन्तर जन्तरसे कम या किसी भी दवासे हार

खानेवाला नहीं है। अगर हमारे चुटकुलेसे काम लोगे तो ईश्वरने चाहा तो हरएक रोगको आराम कर सकोगे और जल्दी ही स्वस्थ होकर नये जीवनका एक नया पट्टा लिखा लोगे।

सबसे पहिले हिन्दुओंसे कहना चाहिये कि तुम गैर आदमीके हाथका छुआ नही खाते और अपना तमाम धर्म इसीपर समझते हो। पर जो लोग तुममेंसे अँग्रेजोंकी नौकरी करते हैं या किसी तरह उनका पैसा खाते हैं उनको तुम फिर भी हिन्दू कहते रहते हो और मुसलमानोंसे भी साफ साफ कहना चाहिये कि तुम जो कुफ्रकी गुलामीको हराम मानते हो तो अँग्रेजी नौकरोंको कैसे मुसलमान समझ सकते हो? अगर हिन्दू मुसलमान जरा सोचें तो वे तमाम खराबी और अपने दीनोंकी बरबादीका मूल कारण इन्हीं हिन्दू मुसलमान कहलानेवालोंको पावेंगे जो तिलक लगाने या जनेऊ पहिनने और लम्बी चौड़ी नमाज पढ़नेमें तो सबसे बाजी ले जाते हैं परन्तु दूसरी ओर लोगोंमें झगड़े फैलाते हैं। इसी बातको सामने रखकर महात्मा गांधीने और मौ० मोहम्मद-अली व शौकतअलीने सत्याग्रहकी व्यवस्था दी थी। और यह आदेश धार्मिक दृष्टिसे आज भी प्रत्येक हिन्दू और मुसलमानपर लागू है।

यह तो एक ख्याल है और बड़ोंका ख्याल है इसलिये पहिले अरज किया गया, पर मैं तो समझता हूं कि हिन्दू और मुसल-मानोंमें यह ख्याल खूब फैलाना चाहिये कि जो लूटमार करते हैं? जो झगड़ा बढ़ानेमें खुश होते हैं उनको न मुसलमान समझना

चाहिये न हिन्दू । "जमात करामात" ठगों और डाकुओंका जरूर मकौल रहा है। मगर एक सच्चे दीनदारको झगड़ेलू समूहपर गर्व न करना चाहिए ।

तीसरे हिन्दू मुसलमानोंसे बार बार पूछना चाहिये कि लाखों सीधे सादे मुसलमान और हिन्दू जो अपने आपको हिन्दू या मुसलमान कहते हैं, क्या ये सच्चे हिन्दू या मुसलमान हैं ? इनमें से बहुतसे यह भी नहीं जानते कि कुरानशरीफमें और वेदपुराणोंमें क्या लिखा है। यह तो केवल अपने भोलेपनमें हिन्दू मुसलमान नामोंपर लड़ मरनेको तैयार रहते हैं और वह भी थोड़ेसे स्वार्थी लोगोंके जालमें फँसकर।

हम क्यों न अपने सभी भाइयोंको चाहे वे अपने आपको मुसलमान कहें या हिन्दू साफ साफ दिखा दें कि उनका अपने आपको हिन्दू या मुसलमान समझना कुछ ऐसे कारणोंपर निर्भर है जिसपर उनका कोई निजी बड़ा अधिकार नहीं और उनका आज कोई भी मज़हब हो उसमें उनका अपना कोई गुण नही और न कोई दोष देखो। जब एक बच्चा पैदा होता है तब उसका कोई धर्म या मत नहीं होता। वह कोई भाषा भी नहीं जानता पर उसके मां बाप उसे कई ख्यालोंसे मुहब्बत और कई बातोंसे घृणा करना सिखाते हैं और कोई भाषा सिखा देते हैं। पर जैसे एक बच्चेकी भाषा हिन्दी, तुर्की, ईरानी होना न उसका गुण है और न उसका दोष, उसी प्रकार एक आदमीका हिन्दू या मुसलमान होना न उसका गुण है न उसका अवगुण। और इसलिये ऐसे

कई नामोंके लिये लड़ना झगड़ना तो महामूर्खता है। ईश्वर करे कि हमारे भाइयोंकी आखें खुलें और वे सच्चाईको जानकर झगड़ेको छोड़ दें और प्रेमको स्वीकार करें।

प्रवासी भारतीयोंकी समस्या

आपने सत्याग्रह आश्रमके हमारे भाई पं० बनारसीदास चतुर्वेदीका प्रवासी भारतीयोंके सम्बन्धमें एक गश्ती पत्र पढ़ा होगा या उसके बारेमें सुना होगा। मेरा विश्वास है कि भारतमें पैदा होनेवाला और विदेशोंमें केवल इसी कारणसे कि वह भारतीय है सब प्रकारके कष्टों और अपमानोंको सहनेवाला प्रत्येक मनुष्य अपने देशभाइयोंके प्रवासी भारतीयोंके सम्बन्धमें इन उद्‌गारोंकी प्रशंसा करेगा।

परन्तु मैं साफ साफ कह दूं कि न तो मैं और न पं० बनारसीदास ही इस विषयमें कुछ अधिक कर सकते हैं। हां प्रत्येक मनुष्य इस प्रश्नको इस तरह उठानेके लिये चतुर्वेदीजीका कृतज्ञ है और होना भी चाहिये। मगर इन अभागोंकी सच्ची मुक्ति अन्दरसे आयेगी—उन्हींके द्वारा होगी। उन्हें प्रत्येक केन्द्रमें महान सिद्धान्त—सार्वभौम न्यायके सिद्धान्तके अनुसार अपना सङ्गठन करना चाहिये। उन्हें चाहिये कि वे अपने स्थानके ऐसे मनुष्योंसे जिन्हें उन्हींकी तरह कष्ट है मिल जायं और साथ ही वे समस्त न्याय-प्रेमी बन्धुओंकी सदिच्छा-सहानुभूति प्राप्त करें। इस समय जो जातिगत लड़ाइयां चल रही हैं उनकी तरह उन्हें हथि-

यार न बांधने चाहिये, क्योंकि उनके सम्मुख श्रीराम, गौतमबुद्ध, मुहम्मद, ईसाकी कहीं अधिक उत्तम शिक्षायें और उनके कार्य करनेका ढङ्ग है। परन्तु अनादि कालकी परम्पराके नामपर उन्हें धन और भूमिलोलुप मनुष्योंसे तो लड़ना ही होगा।

ऐसा होना ही चाहिये। इस्लाम यही कहता है, हिन्दू-धर्म, सिक्ख-पंथ, स्वामी दयानन्द—यदि कोई मनुष्य उनकी आत्माको पहचानता है तो—का अभिप्राय भी उस अत्याचारपूर्ण बुराईको रोकनेका है जो अपना उल्लू सीधा करनेके लिये धर्मके नामपर की जाती है। मतलब यह कि हमारे प्रवासी भाइयोंको उस अनादि धर्मके महान और सार्वभौम सिद्धान्तके अनुसार सङ्गठन करना पड़ेगा जो सब सच्चे धर्मोंमें पाया जाता है और जो अफरीका निवासियों, हबशियों, दक्षिणी सागरके निवासियों, यूरोपियन और अमेरिकन मजदूरोंके लिये एकसा है, जो इतना शिष्ट है कि जिसमें रङ्गका शैतानी पक्षपात है ही नही।

मेरा विश्वास है कि केवल ऐसा ही सङ्गठन उनकी हालतको सुधार सकता है और अन्तमें उसीसे उद्धार हो सकता है। इसके विरुद्ध भारतवासियोंके अनुचित हस्तक्षेपसे मामला और भी उलझ जायगा और हमारे प्रवासी मित्रोंको घरमें भी समानता न मिलेगी।

हां, भारतके भारतीयोंको अपने प्रवासी भाइयोंको अपना दृढ़ सङ्गठन करनेमें सहायता देनी चाहिये। यदि हम ऐसा कर सके, यदि हमारे प्रवासी भाई इस मार्गपर चल सके तो भारत

संसारको एक नयी सभ्यता—जिसकी कि संसारको आवश्यकता है—प्रदान कर देगा।

अन्तमें मैं चतुर्वेदीजी सरीखे अपने बन्धुओंसे यही प्रार्थना करूंगा कि वे मेरी इस तजवीजपर विचार करें। हमें ऐसे स्वार्थी मनुष्योंके कहेनेमें न आजाना चाहिये जो हर जगह हमें भिड़ाना चाहते हैं और जो हमें अपने इन देशोंके बन्धुओंसे लड़ते देखकर ही खुश हैं, जिन्हें हमने अपना लिया है। आओ, हम ससारके प्रत्येक कोनेको नया सन्देश भेजें और बुराईपर विजय प्राप्त करनेके लिये मिलकर कार्य करें। ईश्वर हमारी सहायता करे।
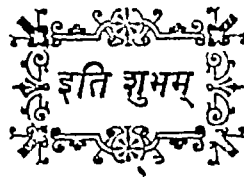
(राजा महेन्द्र-प्रतापका वंश-वृत्त)

माखन सिंह—(विक्रमी संवत् १६५७)

ठाकुर नन्दराम—मुरसान—मृत्यु सम्वत् १७५४ वि०

जलकरन सिंह—मुरसान

कुशल सिंह

ठाकुर पोपसिंह मृ० सं० १७६५

राजा भगवन्तसिंह-मुरसान

राजा टीकमसिंह-मुरसान
मृत्यु सं० १६३५ वि०

कुंवर किशन प्रसाद सिंह
(अपने पिताके सामनेही परलोक सिधारे)

फौजदार जयसिंह स० १८०६ वि० मृत्यु।

राजा वदनसिंह—हाथरस
मृ० सं० १८२५

भूरीसिंह-सं० १८३२

ठाकुर नवलसिंह वेसवां

इनके वंशधर वेसवां और केंडूमें रहे

ठाकुर शक्तसिंह

इनके वंशधर करोल, जरोई आदि गांवोंमें हैं

सावन्त सिंह

मुकरम सिंह

बलवन्त सिंह
किशन सिंह

राजाघनश्याम सिंह मुरसान

राजा दत्तप्रसाद सिंह, कुँवर बलदेव सिंह-राजा मन्हेद्रप्रताप

ठाकुर दयाराम–हाथरस
मृत्यु-संवत् १८९८ वि०

राजा गोविन्द सिंह–हाथरस
मृत्यु सं० १९१८ वि०

राजा हरिनारायण सिंह-दत्तक पुत्र
ज० स० १९२० मृ० सं० १९५२ वि०

*राजा महेन्द्र प्रताप–(मुरसानसे गोद आये)

---

* सरकारसे राजाकी उपाधि नहीं है, किन्तु वश परम्परागत वैभव होनेके कारण ये राजा कहलाते हैं।
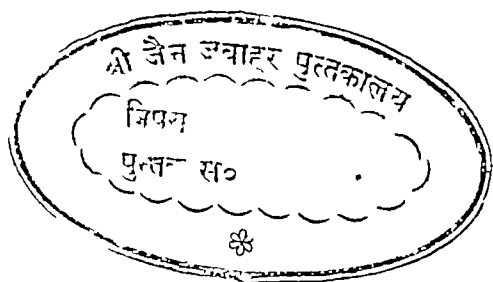
Manak Chand Kothari

श्रीमान् मरुधराधीश की पवित्र सेवा में,

हमारी विलायत यात्रा ।

Manak Chand Kothari

P.O. Sujangarh

लेखक— Bikaner

केदाररूप रॉय,

शिवजीराम अंगोलिया. B.S.

2 - Rajawoodment Street

Calcutta

Telephone No 2325 - Cal

सम्पादक—

प्रतापचन्द्र माथु

Sujangarh

श्रीमान् मरुधराधीश की पवित्र सेवा में

हमारी विलायत-यात्रा

चका चौंध-सी चख लगत, लख लंदन जग-जोत ।
चितवन हारे चितवतहि, चकित चित्र से होत ॥
जो करती निज रूप तें, इन्द्रपुरी को मात ।
जा लंदन सन स्वर्ग की, सुन्दरता सकुचात ॥
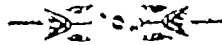
लेखक और प्रकाशक—

केदाररूप राय और शिवजीराम अँगोलिया.

सम्पादक—

प्रतापचन्द्र माथुर

सन १९२३ ई०

मूल्य १।) सजिल्द २).

मुद्रक—
प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर।

पुस्तक मिलने का पता—
मैनेजर राजपूताना स्कूल बुक डिपो,
सिंघीजी का त्रिपोलिया
जोधपुर (मारवाड़)

प्रेमोपहार ।

सेवा में श्रीमान बाबू

धनपतसींघजी कोठारी चोपड़ा

प्रेषक—

नेमचन्द वैद

लाडनूं नीवासी

कलकता

ता:२७ ७/२७

हमारी विलायत यात्रा

जिनत्रेता देखी नहीं, राम लखन की प्रीत ।
वे देखे कलिकाल मे, भूप उमेद अजीत ॥

श्रीमान् मरुधराधीश राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्री मेजर सर उमेदसिंहजी साहब बहादुर के सी. वी ओ, के सी एस. आई और श्रीमान् के अनुज श्री १०५ श्री अजीतसिंहजी साहब बहादुर।

समर्पण ।

सेवा में—

क्षत्रिय-कुल-गौरव, राठौर-कुल-तिलक, श्रीमान्
मरुधराधीश राज राजेश्वर महाराजाधिराज
हिज हाईनेस श्री उमेदसिंहजी साहब
बहादुर के० सी० वी० ओ०, के०
सी० एस० आई०

स्वामी !

जिस प्रकार कि समुद्र-जल, समुद्र से निकल करके, पुनः समुद्र ही में प्रवेश करता है, ठीक उसी प्रकार, हे सूर्य-कुल-श्रेष्ठ महीपति ! यह, श्रीमान द्वारा प्राप्त 'विलायत यात्रा' रूपी कृपा-प्रसाद, श्रीमान ही की पवित्र-सेवा में, श्रीमान के सेवकों-विनीत लेखकों-द्वारा, 'भक्ति-अर्घ' स्वरूप, श्रद्धा और प्रेम के साथ, सादर समर्पित है ।

श्रीमान् मरुधराधीश का
जीवन चरित्र ।
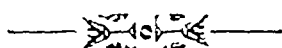
श्रीउमेद मरुधर धनी, मरुधर प्रान अधार ।
दृग-पुतरी इमि बसत जो, दृग- मरुधर नरनार ॥
पढ़ि हैं सुनि हैं चित्त दे, जासु पवित्र-चरित्र ।
करि हैं हृदय पवित्र वे, परसत हृदय पवित्र ॥

आज हम जिन यशस्वी और निर्मल-चरित्र पुरुष का चारु-चरित्र लिख रहे हैं, वे हैं, विश्व विख्यात क्षत्रिय-कुल-गौरव, राठोर-कुल-तिलक, मारवाडाधिपति, श्रीमान धीर वीर चिर प्रतापी, राजराजेश्वर, महाराजाधिराज, महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्री मेजर सर उमेदसिंहजी साहब बहादुर के. सी. वी. ओ., के. सी. एस. आई. इत्यादि ।

श्रीमान् का शुभ जन्म सं० १९६० के आषाढ शुक्ला चतुर्दशी बुधवार तदनुसार ता० ८ जुलाई १९०३ ई० को, तीसरे पहर, मूला नक्षत्र, में जोधपुर में हुआ था ।

श्रीमान् मरुधराधीश का
जीवन चरित्र ।
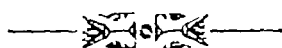
श्रीउमेद मरुधर धनी, मरुधर प्रान अधार ।
दृग-पुतरी इमि वसत जो, दृग- मरुधर नरनार ॥
पढ़ि है सुनि हैं चित्त दे, जासु पवित्र-चरित्र ।
करि हैं हृदय पवित्र वे, परसत हृदय पवित्र ॥

आज हम जिन यशस्वी और निर्मल-चरित्र पुरुष का चारु-चरित्र लिख रहे हैं, वे हैं, विश्व विख्यात क्षत्रिय-कुल-गौरव, राठोर-कुल-तिलक, मारवाड़ाधिपति, श्रीमान् धीर वीर चिर प्रतापी, राजराजेश्वर, महाराजाधिराज, महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्री मेजर सर उमेदसिंहजी साहब बहादुर के. सी. वी. ओ., के. सी. एस. आई. इत्यादि ।

श्रीमान् का शुभ जन्म सं० १९६० के आषाढ़ शुक्ला चतुर्दसी बुधवार तदनुसार ता० ८ जुलाई १९०३ ई० को, तीसरे पहर, मूला नक्षत्र, मे जोधपुर में हुआ था ।

आप बाल्य-काल ही से शान्त-प्रकृति और मधुर भाषी थे तथा बहुत सी नीति-कविताएँ, कंठस्थ करली थीं, इसलिये आप के इन गुणों पर मुग्ध होकर, आपके पूज्य पिता स्वर्गवासी महाराजाधिराज श्री सरदारसिंहजी साहब बहादुर जी. सी. एस. आई., आपसे बहुत स्नेह-भाव रखते थे तथा आपको प्यार में "जनरल" नाम से सम्बोधन किया करते थे।

देशाटन, जो विद्या का एक विशेष अंग और चातुर्य-मूलक समझा जाता है, उसका आरम्भ आपके बाल्यकाल ही में होगया था। आप अपने पूज्य पिताजी के साथ, जहाँ कहीं वे पधारा करते थे, पधारते थे और भारत के प्रायः सभी बड़े-बड़े शहर आपने अपने पिताजी के साथ रह कर देखलिये थे, जिससे आपकी विशेष ज्ञानोन्नति हुई थी।

सन् १९१० ई० में आप अपने जेष्ठ भ्राता के साथ, केप्टिन विलियम की देख रेख में, अजमेर के मेयोकालेज में भरती कर दिये गये।

ता० २० मार्च १९११ तदनुसार चैत्र कृष्णा पंचमी सं० १९६७ सोमवार को आपके पूज्य पिताजी का स्वर्गवास*

---

*इस अवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने शोक-कविता लिखी थी जो ता० २९ मार्च १९११ के "मारवाड़ गजट" में प्रकाशित हुई थी।

हो जाने से आप दोनों भाईयों को कॉलेज छोड़ना पड़ा और आपके जेष्ठ भ्राता महाराजाधिराज श्रीसुमेरसिंहजी साहब बहादुर के. बी. ई. मारवाड़ राज्य के अधिपति हुए* और राज-तिलक विराज कर शिक्षार्थ विलायत पधार गये और इधर आपको एक भीषण-रोग का सामना करना पड़ा। ज्यों ही कि आपने आरोग्य-लाभ किया, उस समय के रेजीडेन्सी सर्जन मेजर ग्रांट और मिसेज ग्रांट के साथ हवा बदलने के लिये इजिप्ट पधार गये।

अक्टोबर १९११ से फरवरी १९१२ तक आपने इजिप्ट में रह कर भिन्न-भिन्न स्थानो का परिभ्रमण किया। कुछ दिन तो काहिरो (Cairo) के हुलियापुलिस होटल में विराजे थे और बादमें एक स्टीमर द्वारा नील नदी (River Nile) में घूमते हुए, लक्सर (Luxor) ऐसवान (Aswan) और वादी हल्फा (Wady Halfa) पधारे थे। वहाँ पर हजारो वर्षों के मुर्दे, मकानात और पिरैमिड (Pyramids) आदि ऐतिहासिक सामग्री का अवलोकन किया था।

इसी साल भारत सम्राट हिन्दुस्थान में पधारे थे और दिल्ली में ताज-पोशी का दरबार हुआ था। इस दरबार में

---

*इस अवसर पर भी इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी।

सम्मिलित होने के लिये आपके जेष्ठ भ्राता विलायत से पधारे थे तो आपने उनके आते और वापस विलायत को जाते समय, दोनों बार, साक्षात्कार, सय्यदबन्दर (Port Said) पर ही किया था ।

इजिप्ट से लौटने के कुछ दिन बाद आप जोधपुर के रेजीडेन्ट कर्नल विढम और मिसेज विढम के चार्ज में रहे । आपके कुछ दिन बाद ही आपके कनिष्ठ भ्राता महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब भी आपके साथ रहने लगे थे ।

सन् १९१३ के मार्च में , मिसेज विढम के साथ आप कश्मीर पधारे और कुछ काल प्रयन्त श्री नगर में रह कर गुलमर्ग नामी प्रसिद्ध पहाड़ी पर ग्रीष्म काल व्यतीत किया था । अगस्त और सितम्बर में एक २५० मील का खुसकी दौरा करके कशमीर के प्रसिद्ध स्थान गंधर्वबल, मानुष बल, इच्छा बल; इस्लामाबाद, बुलर लेक, नंगा पर्वत आदि देखे थे ।

नंगा पर्वत बर्फ से ढँका रहता है और उस पर जाने के लिये निरी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें देखकर बड़ी उम्र के आदमी भी घबरा जाते हैं, परन्तु आप के व आपके कनिष्ठ भ्राता के मुँह पर घबराहट के चिन्ह तक न थे ।

कश्मीर से लौट आने के बाद अक्टोबर १६१३ में आप, अपने कनिष्ठ भ्राता सहित, बाडमेर से जेसलमेर, पोकरण और फलोधी होते हुए, बीकानेर तक ऊँटों पर पधारे थे और यह यात्रा भी दोनों भाइयों ने सउत्साह समाप्त की थी।

रेजीडेन्सी में विराजते समय, पहले तो एक दो मास्टरो द्वारा पढ़ाई का प्रबन्ध हुआथा, परन्तु कुछ समय बाद, आप दोनों भाई, राजपूत स्कूल चौपासणी में, शिक्षार्थ, पधारा करते थे।

सन १६१५ में आप राजकोट कॉलेज में भरती कर दिये गये।

ता० १७-५-१६ तदनुसार वैशाख शुक्ला १५ सं० १६७३ को आप की पूज्य मातेश्वरी श्री हाडीजी साहिबॉ का स्वर्गवास होगया।

मार्च १६१८ तक आप राजकोट कॉलेज़ में पढ़ते रहे। बाद में गरमी की छुट्टियों में अपने जेष्ठ भ्राता के साथ उटकमंड पधार गये। इसके बाद आप को विशेष प्रकार की शिक्षादिलाने के लिये राजकोट कॉलेज छुड़ा दिया गया, परन्तु उस विशेष प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध भी न होने पाया था कि ता० ३ अक्टो-

सम्मिलित होने के लिये आपके जेष्ठ भ्राता विलायत से पधारे थे तो आपने उनके आते और वापस विलायत को जाते समय, दोनों वार, साक्षात्कार, सय्यदवन्दर (Port Said) पर ही किया था।

इजिप्ट से लौटने के कुछ दिन बाद आप जोधपुर के रेजीडेन्ट कर्नल विढम और मिसेज विढम के चार्ज में रहे। आपके कुछ दिन वाद ही आपके कनिष्ठ भ्राता महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब भी आपके साथ रहने लगे थे।

सन् १६१२ के मार्च में, मिसेज विढम के साथ आप कश्मीर पधारे और कुछ काल प्रयन्त श्री नगर में रह कर गुलमर्ग नामी प्रसिद्ध पहाड़ी पर ग्रीष्म काल व्यतीत किया था। अगस्त और सितम्बर में एक २५० मील का खुसकी दौरा करके कशमीर के प्रसिद्ध स्थान गंधर्वबल, मानुष बल, इच्छा बल; इस्लामाबाद, बुलर लेक, नंगा पर्वत आदि देखे थे।

नंगा पर्वत बर्फ से ढँका रहता है और उस पर जाने के लिये निरी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें देखकर बड़ी उम्र के आदमी भी घबरा जाते हैं, परन्तु आप के व आपके कनिष्ठ भ्राता के मुँह पर घबराहट के चिन्ह तक न थे।

कश्मीर से लौट आने के बाद अक्टोबर १९१३ में आप, अपने कनिष्ठ भ्राता सहित, बाडमेर से जेसलमेर, पोकरण और फलोधी होते हुए, बीकानेर तक ऊँटों पर पधारे थे और यह यात्रा भी दोनों भाइयों ने सउत्साह समाप्त की थी।

रेजीडेन्सी में विराजते समय, पहले तो एक दो मास्टरो द्वारा पढ़ाई का प्रबन्ध हुआथा, परन्तु कुछ समय बाद, आप दोनों भाई, राजपूत स्कूल चौपासणी में, शिक्षार्थ, पधारा करते थे।

सन १९१५ में आप राजकोट कॉलेज में भरती कर दिये गये।

ता० १७-५-१६ तदनुसार वैशाख शुक्ला १५ सं० १९७३ को आप की पूज्य मातेश्वरी श्री हाडीजी साहिबा का स्वर्गवास होगया।

मार्च १९१८ तक आप राजकोट कॉलेज़ में पढ़ते रहे। बाद में गरमी की छुट्टियों में अपने जेष्ठ भ्राता के साथ उटकमंड पधार गये। इसके बाद आप को विशेष प्रकार की शिक्षादिलाने के लिये राजकोट कॉलेज छुड़ा दिया गया, परन्तु उस विशेष प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध भी न होने पाया था कि ता० ३ अक्टो-

बर १९१८ तदनुसार आश्विन कृष्णा १४ सं०१९७५ को आप के जेष्ठ भ्राता महाराजाधिराज श्री सुमेरसिंहजी साहब का स्वर्ग वास * होगया। तब आपने, अपने स्वर्गीय जेष्ठ भ्राता के उत्तराधिकारी के रूप में, मारवाड़ के राज्य-मुकुट को, अपने सिर पर धारण किया। आप का राज्य-तिलकोत्सव १४ अक्टोबर १९१८ तदनुसार आश्विन शुक्ला ९ सं०१९७५ अर्थात विजय दशमी के दिन हुआ था, जो क्षत्रियों का इतिहास प्रसिद्ध त्योहार और विजय का दिन समझा जाता है।

उस समय आप के नाबालिग होने से राज्यकार्य, महाराजा श्री प्रतापसिंहजी साहब + की निगरानी में रीजेन्सी काउंसिल द्वारा होने लगा और आप मेयो कॉलेज अजमेर में भरती करदिये गये, जहाँ आप, कर्नल वार्डिंग्टन के चार्ज में रह कर शिक्षा प्राप्त करते रहे।

---

*इस अवसर पर भी इस पुस्तक के सम्पादक ने शोक कविता लिखी थी।

+ता० ४ सितम्बर १९२२ (भादवा सुदी १३ सोमवार सं० १९७९) को सर प्रताप का स्वर्गवास होगया। ता० १४ सितम्बर १९२२ को सर प्रताप हाई स्कूल जोधपुर में "सर प्रताप-शोक सभा" हुई थी। उस सभा में इस पुस्तक के सम्पादक ने शोक भाषण दिया व स्वरचित शोक-कविता पढ़ी थी। वह कविता ता० ४ नवम्बर १९२२ के 'मारवाड़ गजट' में प्रकाशित हुई थी।

इसी वर्ष आप गरमी की मौसम में फिर कशमीर पधारे, परन्तु पीछे आसाढ़ वदी १२ सं० १९७६ (२५ जून १९१९) को आपकी द्वितीय बहन श्रीमती सूरज कुँवर बाईजी साहिबा का शुभ विवाह श्रीमान् रीवाँ नरेश हिज हाईनेस महाराजा श्री गुलाबसिंह जी साहब से होना निश्चय होचुका था, जिससे आप को शीघ्र ही लौट आना पड़ा।

सन् १९२० की गरमी की मौसम में आप मद्रास अन्तर्गत उटकमंड अर्थात् नीलगिरी पर्वत पर पधारे थे। वहाँ से शिकार खेलने के लिये आप मैसूर पधारे थे, जहाँ पर आपने प्रसिद्ध जलप्रपात (Water Fall) श्रृंगापट्टम् (Seringapatam) जो टीपू सुलतान के समय में राजधानी थी और इस के अतिरिक्त और भी अनेक इतिहास प्रसिद्ध स्थानो का अवलोकन किया था। इसी वर्ष के अक्टोबर में आप भरतपुर पधारे थे।

सन् १९२१ की जनवरी में आप कोटे पधारे थे और फरवरी में देहली पधार कर नृपति-मंडल में सम्मिलित हुए थे और ड्यूक आफ कनाट से मिले थे। इसी वर्ष गवर्नमेन्ट ने आप के सलामी की तोपें बढ़ा कर १७ से १९ कर दीं। इस वर्ष की गरमी की मौसम में आप माउन्ट आबू पधारे थे। वहीं पर आखातीज (अक्षय तृतीया) के शुभ मूहूर्त में

आप को टीका झिलाया गया अर्थात आपकी सगाई की रसम पूरी की गई। अक्टोबर में आप १७ क्यू. वी. ओ. पूना हॉर्स के आनरेरी केप्टिन हुए। नवम्बर मे जब प्रिन्स ऑफ वेल्स हिन्दुस्तान में पधारे थे तो आप उनके साथ बम्बई, अजमेर, देहली और करांची पधारे थे। ११ नवम्बर (सं० १९७८ की कार्तिक शुक्ला ११) को आप का शुभ- विवाह, वर्तमान उमेदनगर के ठाकुर केप्टिन श्री जयसिंहजी साहब भाटी की पुण्य परायणा पुत्री, परम सौभाग्यवती श्रीमती वदन कुँवरी से हुआ था। १९ नवम्बर को प्रिन्स आफ वेल्स जोधपुर पधारे। आपने उनका, उनके योग्य ही आदर सत्कार किया था।

सन् १९२२ में आप काउंसिल में बैठकर काम देखने लगे और प्रत्येक डिपार्टमेन्ट का काम देखते रहे, जहाँ आपने राज्य-कार्य्य सम्बन्धी अच्छी योग्यता प्राप्त करली थी। इसी वर्ष के १७ मार्च को गवर्नमेन्ट ने आपको के. सी. वी. ओ. की उपाधि से भूषित किया।

सन् १९२३ का वर्ष आपकी जीवनी का सुनहरा वर्ष है। इसी वर्ष आपके बालिग होजाने पर माघ सुदी १० सं० १९७९ (२७ जनवरी १९२३) को भारत सम्राट के प्रतिनिधि भारत के वाइसराय, लॉर्ड रीडिंग महोदय, जोधपुर पधारकर
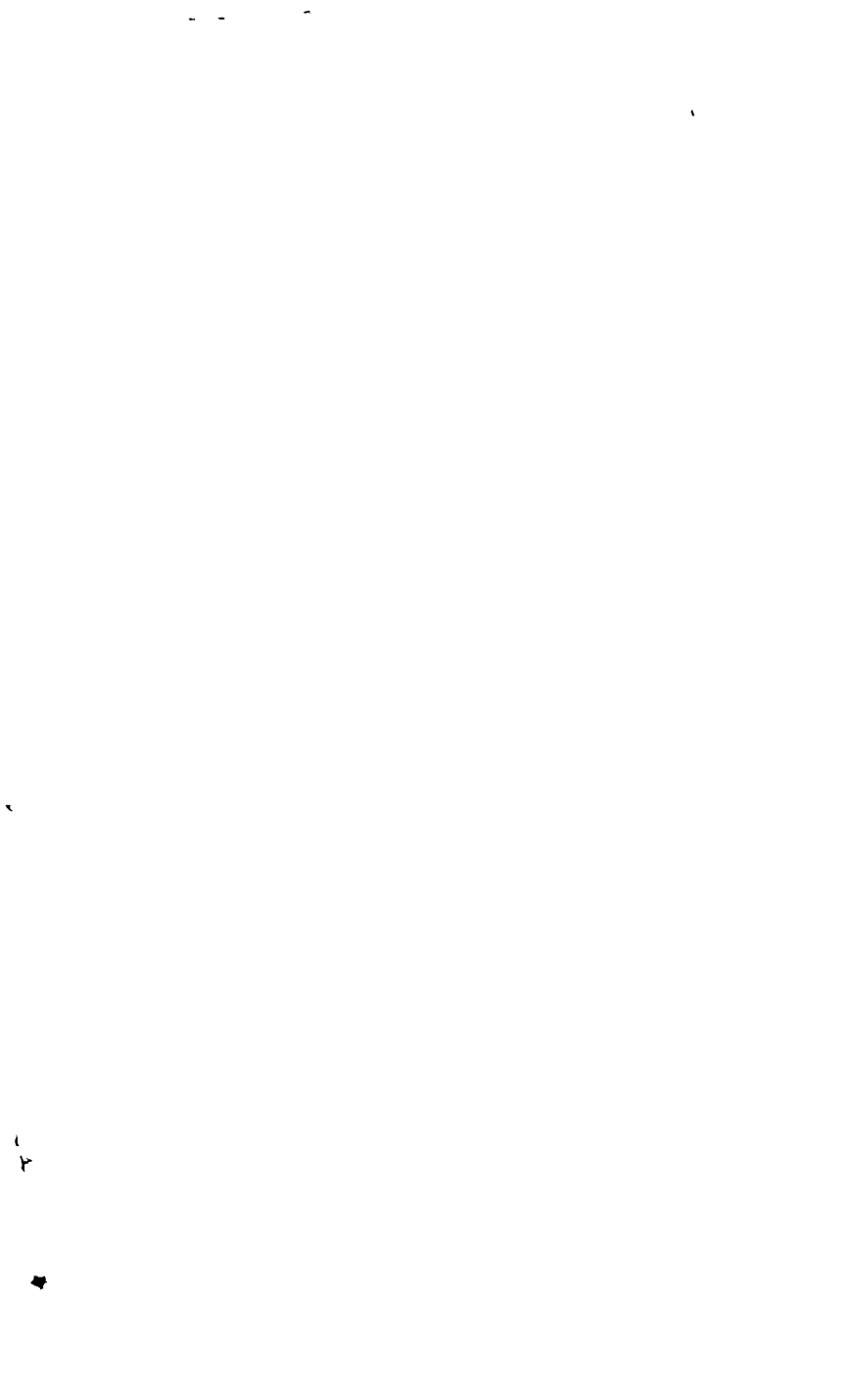
नृप कुमार सुकुमार यह, प्रजा पुण्य अवतार।
आनंदके आगार हैं, जीवनके आधार॥

चिरजीव श्री बड़े महाराज कुमार साहब
श्री १०५ श्री हणवन्तसिंहजी साहब
बहादुर, जोधपुर।

shmi Art, Bombay, 8

आपके कुल-गौरव व वर्तमान समय की शासन सम्बन्धी कठिनाइयों को बतलाते हुए, अपने अमूल्य सदुपदेशों के साथ, आप को पूर्ण राज्याधिकार सौंप दिये × आपने भी उन उपदेशों के अनुसार राज्य-शासन करने का विश्वास दिलाया और इस शुभ अवसर पर, मारवाड़ के जागीरदारों में जो रेख चाकरी की रकम बाकी थी, उसमें से ३ लाख रुपये मुआफ कर दिये और इसके अतिरिक्त स्कूलों व औषधालयो, अस्पतालों को ५० हजार रुपये प्रदान किये तथा रीजेन्सी काउन्सिल के योग्य मेम्बरों को पूर्ववत् ही उनके पदोपर रखते हुए, रिजेन्सी काउन्सिल के स्थान पर, स्टेट काउन्सिल की स्थापना की।

इसी वर्ष ता० १६ जून शनिश्चरवार तदनुसार द्वितीय जेठ शुक्ला २ सं० १९८० सायंकाल को श्रीमान् बडे महाराजकुमार साहब, चिरंजीव श्री हणवन्त सिंहजी साहब का शुभ-जन्म हुआ था *।

× इस सुअवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी, जो इस खुशी की नजर निछरावल के दिन (ता० ७ अप्रैल १९२३ को) श्री जी साहब के बंगले पर, मेम्बरान काउन्सिल की उपस्थिति में, स्वयम् लेखक द्वारा, श्री जी साहब बहादुर को पढ़ कर सुनाई गई थी।

* इस सुन्दर अवसर पर भी इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी।

इसी जून मासमें आप १७ क्यू, वी. ओ. पूना हार्स के के ऑनरेरी मेजर हुए।

माघ कृष्णा ६ सं० १६८० (३० जनवरी १६२४) को आपने अपनी प्रथम बहन श्रीमती मरुधर कुँवर बाई साहिबॉ का शुभ-विवाह श्रीमान् हिज हाईनेस सवाई मान-सिंहजी साहब जैपुर के साथ बड़ी धूम धाम के साथ किया था।

जनवरी १६२५ में महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब का शुभ-विवाह श्रीमान जैपुर नरेश की भगिनी के साथ किया और सं० १६८१ के चेत्र वदी १२ तदनुसार २१ मार्च १६२५ को श्री महारानीजी साहिबॉ, महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब, श्री महाराज कुमार साहब और स्टाफ़ तथा पोलो पार्टी सहित विलायत के लिये प्रस्थान कर दिया।

लण्डन में पहली बार आप ता० २१ मई बृस्पतिवार को रात के ६॥ बजे श्रीमान् सम्राट के दरबार (Court) में पधारे थे। श्रीमान सम्राट महोदय, बड़े ही प्रेम-भाव के साथ आप से मिले थे।

ता० ३ जून को श्रीमान् सम्राट की सालग्रह पर आप के. सी. एस. आइ. की उपाधि मे सम्मानित किये गये थे।

सं० १९८७ के असाढ़ वदी ३० तदनुसार ता० २१ जून को रात के २ बज १० मिनिट पर श्री द्वितीय महाराज कुमार श्री हिम्मतसिंहजी साहब का शुभ-जन्म* लण्डन के विम्बलडन पार्क साइड के वेलमाउन्ट हाउस में हुआ था।

ता० २५ जून को रात के ८ बजे आप श्रीमान सम्राट के दरबार में, के. सी. एस. आई. का तमगा लेने के लिये पधारे थे, जहाँ श्रीमान् सम्राट महोदय ने निज कर-कमलों से तमगा अता फरमाया था।

ता० १३ जुलाई को आप पार्लमेन्ट भवन देखने के लिये पधारे थे।

आप की पोलो पार्टी ने लण्डन में बहुत से मैच जीते थे। जिनमें माइनहेड का वेस्टसोमरसेटकप, हर्लिंघाम चम्पियन कप, राहीएम्पटन फाइनल, रगबी फाइनल और अमेरिका आरमी से जीत करके विशेष ख्याति प्राप्त की थी। यह पहला ही अवसर है कि एक देशी रईस की पोलो पार्टी ने विलायत में ऐसी प्रख्यात पोलो पार्टियों को जीत कर, इस प्रकार ख्याति-लाभ किया है।

ता० ९ अगस्त को आप लण्डन से स्काटलण्ड पधारे थे और ता० २० सितम्बर को वापस लण्डन पधार गये।

* इस अवसर पर भी इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी।

फिर ता० ८ अक्षोबर को लण्डन से रवाना होकर ता० २४ अक्टोबर की शामको, निर्विघ्न यात्रा समाप्त करके सकुशल जोधपुर पधार गये* ।

इस ग्रीष्म काल में आप उटकमंड पधारे हुए हैं। ता० १९ मई १९२६ की शाम को जब कि आप सिंह की खोज में घूमते हुए अपने केम्प को जारहे थे तो रास्ते में एक जंगली हाथी ने आप पर आक्रमण किया और आप उसके पैरों के बीचमें आगये थे, परन्तु इस प्राण संकट के समय में भी आप घबराये नहीं और मौका पाकर हाथी के पेट की तरफ से निकल गये ! यह घटना आप के वीरोचित साहस और समयोचित उपज का एक उज्वल और उत्कृष्ट उदाहरण है।

अब हम, आपने अपने राज्य-काल के स्वल्प समय में जो राज्य और प्रजा हित कर काम किये हैं और जिस

---

* इस सुअवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक द्वारा लिखी गई स्वागत कविता, यथा अवसर मुद्रित होकर प्रकाशित हुई थी और इस पुस्तक में भी यथा स्थान प्रकाशित हुई है। इस कविता के लिये स्वयम् श्रीजी साहब बहादुर ने, पोलीटीकल और जुडिशियल मेम्बर साहब की मारफत धन्यवाद भेजा था, जैसा कि चिट्ठी पोलीटीकल और जुडिशियल मेम्बर साहब नं० २४९० ता० ६ नवम्बर १९२५ जो सम्पादक के नाम सादर हुई है, उससे जाहिर होता है।

शासन-योग्यता और बुद्धि-कौशलता का परिचय दिया है, उसका कुछ उल्लेख यहाँ पर करते हैं।

राज्य की आय, जो आपको राज्याधिकार होने के वर्ष, (१९२२-२३ में) १,२३,२५,७७६) रुपयो हुई थी, वही दूसरे ही वर्ष (१९२३-२४ में) बढ़कर १,७२,७७,४९८) रुपयो की हो गई और तीसरे वर्ष (१९२४-२५ में) तो १,८२,७६,५८६) हो गई !

शिक्षा मे १९२३-२४ में, २९४४९२) खर्च हुए थे, वही १९२४-२५ मे ३१९९०८४) खर्च हुए और १९२५-२६ के लिये इसका बजट ४५८०००) का रक्खा गया है। इसके अतिरिक्त दरबार हाई स्कूल के लिये एक बहुत बड़ी बिल्डिंग बनवाई गई है और मिडिल का इम्तहान, जो अजमेर में हुआ करता था, जोधपुर ही में होने लगा है।

मेडीकल में भी जहाँ १९२२-२३ में १८४३७२) रुपये खर्च हुए थे, १९२३-२४ में १९६०६७) और १९२४-२५ में २६९३९७ खर्च हुए थे।

देवस्थान धर्मपुर में, १९२३-२४ में, ८०,७५८) रुपये खर्च हुए थे, जहाँ १९२४-२५ में ८७,९२६) खर्च हुए और आइंदा बजट में इसके लिये ९६,७००) रक्खे गये हैं।

म्यूनिसिपल कमेटी में, १९२३-२४ में, ९३,७९३) खर्च हुए थे, जहाँ १९२४-२५ में १,११,१६३) खर्च हुए हैं और आइंदा बजट में इसके लिये १,०९,३५०) रक्खे गये हैं।

पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट में, सन् १९२२-२३ में, ४७९७९४) रुपये खर्च हुए थे, जहाँ १९२३-२४ में ४९८६५४) और १९२४-२५ मे, ७०६२३२) खर्च हुए। एक पुल, जो रेलवे सड़क के ऊपर बनाई गई है और दो सड़के, जो रेलवे लाइन के नीचे होकर निकाली गई हैं, वे विशेष उल्लेखनीय हैं और इनसे बहुत आराम होगया है।

राज्य का सार्वजनिक वाचनालय "सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी" मे, जहाँ सन् १९२३-२४ मे, १४११) की पुस्तकें आई थीं, वहाँ सन् १९२४-२५ में २०७०) की मंगाई गई थीं।

जुडिशियल मे तीन सेशन कोर्टस् और दो ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट कोर्टस् नए खोले गए और पुलिस द्वारा, प्रसिद्ध डाकू मंगलदास रनजीतसिंह इत्यादि का दमन करके प्रजा को आराम पहुँचाया गया है।

इस कहत साली के वर्ष (१९२५-२६) में, आपने प्रजा और पशुओं के क्षुधा निवारणार्थ १५ लाख रुपये खर्च करने का निश्चय किया है, जिससे क्षुधा पीड़ित प्राणियों की प्राण संकट से रक्षा की जाकर पालना की जारही है।

आपके राज्य में बिजली की रोशनी, सड़कें और पानी के नलों का दिन ब दिन अधिकाधिक विस्तार हो रहा है।

सारांश यह कि आपके राज्य-काल मे रियासत की आमदनी बहुत बढ़ गई है और रियासत का बहुत अच्छा प्रबन्ध हो रहा है तथा लोकोपकारी कार्यों मे भी पहले से बहुत अधिक रूपये खर्च किये जारहे हैं।

आप बड़े ही न्याय-निष्ठ हैं और आप की न्याय-निष्ठता के एक से एक बढ़कर, सैकड़ो उज्वल प्रमाण विद्यमान हैं।

आप एक स्त्रीव्रत नरेश है और कोई दुर्व्यसन तो आप को छूतक नहीं गया। आप शराब, सिगरेट इत्यादि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करते। आपकी आयु का कदाचित् ही कोई नरेश हो, जिनमें इस प्रकार सद्गुण पाये जाते हो।

तात्पर्य यह कि आप में उदारता, सरलता, दया, क्षमा, राज्य कार्य सम्हालने की योग्ता, न्याय परायणता, बुद्धिमता, प्रजावत्सलता और सादगी तथा निर्व्यसनता-दिगुण, पूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं। आप की नीति, तर्क, वीरता और गंभीरता तो विशेष उल्लेखनीय है। आप हृदय के शुद्ध, गुणज्ञ और शान्त- प्रकृति पुरुष हैं।

आप के इन तथा ऐसे ही अन्यान्य अलौकिक गुणों को देख कर हमें राम -राज्य का स्मरण हो रहा है और है भी ऐसा ही—

आप राम रानी सिया, लखन समान अजीत।
लव कुश से द्वै लाल सो, मरुधर-गौरव- गीत॥

अन्त में हमारी ईश्वर मे प्रार्थना है कि हमारे श्रीमान् करोड़ [illegible] राज्य करें और प्रजा के सुख व चैन की वृद्धि करते रहें।

श्रीमान् मरुधराधीश के अनुज महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब का जीवन चरित्र ।

महाराज श्री अजीतसिह जी साहब, भूत पूर्व जोधपुर नरेश महाराजाधिराज श्री श्री १०८ श्री श्री सिरदार सिंहजी साहब बहादुर जी.सी. एस. आई. के तीसरे पुत्र हैं। आप का शुभ जन्म बुधवार वैशाख कृष्णा ४ सं १.९-६४ तदनुसार १ मई १.९०७ को किला-जोधपुर में हुआ था।

यद्यपि आप का बाल्य-काल आनन्द प्रद रहा है, तथापि आप पैतृक-प्रेम का पूर्णानुभव न कर सके। क्यों कि जब कि आप की आयु पूरे ४ वर्षकी भी न होने पाई थी कि आप के पूज्य पिताजी का स्वर्गवास होगया था।

सन १.९१.२ में, जब कि आप की आयु केवल ५ वर्ष की थी, आप अपनी स्नेहमयी माता से दूर किन्तु अपने जेष्ठ भ्राता (वर्तमान दरबार साहब) के साथ मिसेज विढम की निगरानी में रहने लगे। यद्यपि इस आयु के बालक के लिये अपनी माता से दूर रहना एक कठिन समस्या है, परन्तु आपने खुशी-खुशी इस समस्या को हल करली थी, जिससे आप को बड़ा लाभ यह हुआ कि आप अपनी उस छोटी उम्र में ही शुद्ध अंग्रेजी, बोलने लगे थे।

आप अपने जेष्ठ भ्राता के साथ आनन्द पूर्वक रहते थे और कश्मीर, सिमला और मंसूरी आदि स्थानों का भ्रमण कर आये थे।

आप अपनी छोटी उम्र में ही बड़े विचक्षण प्रतीत होते थे और चंचलता तो आप का विशेष गुण था।

राजकोट कॉलेज में पढ़ते समय आप अपनी क्लास में अंग्रेजी में ही नहीं, गुजराती में भी सर्व प्रथम रहते थे हालां कि क्लास के प्रायः सभी विद्यार्थियों की मातृ-भाषा, गुजराती ही थी! क्लास में प्रथम रहने के फल स्वरूप आप ने प्राइज भी प्राप्त किये थे। वहाँ पर अन्यान्य प्रकार की शिक्षा के साथ आपको संगीत-शिक्षा भी मिली थी, जिस का रंग आप पर खूब चढ़ा। आप को संगीत से बड़ा प्रेम है।

मेयो कॉलेज अजमेर में भी आपने अपने जेष्ठ भ्राता के साथ ही प्रवेश किया था। वहाँ पर आपके रहने का प्रबन्ध, कॉलेज के प्रिन्सिपल मि० लेसली जोनस की निगरानी में, उन्हीं की कोठी पर था।

मि० लेसली जोनस आप की अंग्रेजी की योग्यता और आप के चंचल स्वभाव के कारण आप को बहुत प्यार करते थे। यद्यपि आप उच्च क्लास के विद्यार्थी न थे, परन्तु उक्त प्रिन्सिपल साहब अपने खानगी समय में आप को शेक्सपियर के नाटक-ग्रन्थ पढ़ाया करते थे, जिससे आपके विकास में अच्छी सहायता मिली थी।

क्लास में पाठ समझलेने के बाद फिर उसे बारबार रटते रहने की आप को आदत नथी। एक बार अच्छी तरह समझलेने पर अपना काम कर लेते थे। अंग्रेजी में आपका नम्बर पहला रहता था। रामायण, क्लास में पढ़ने के अतिरिक्त भी समय-समय पर सुना करते थे और वह भी बड़े ही प्रेम के साथ। बहुतसी चौपाइयाँ तो आप को कंठस्थ होगईथीं।

खेलों में फुटबाल, होकी और टेनिस से भी अधिक अनुराग आपको क्रिकेट से था।

घोड़े की सवारी करना और पोलो खेलना तो आप छोटी उम्र में ही सीख गये थे। केवल १५ वर्ष की आयु में ही, आपने मेयोकॉलेज पोलो टीम में, भरतपुर पोलो टीम के साथ मैच खेला था।

इसी प्रकार आपने बन्दूक चलाने की शिक्षा भी बहुत छोटी उम्र में ही हासिल करली थी और जिस की बदौलत रीवाँ के जंगल में दो शेरों का शिकार भी अपनी छोटी उम्र में ही खेल चुके थे।

आपने जनवरी १९१९ से दिसम्बर १९२३ तक मेयो कॉलेज में शिक्षा पाई थी। बाद में रियासत का काम सीखाने के लिये आपको कालेज छोड़ाना पड़ा।

जनवरी १९२५ अर्थात सं० १९८१ की बसंतपंचमी को, आप का शुभ-विवाह ईंगरदे ठाकुर श्री सवाईसिंहजी

साहब की सुयोग्य कन्या और श्रीमान जैपुराधीश हिज़ हाईनेस महाराजाधिराज श्री सवाई मानसिंहजी साहब की प्रिय भगिनी। सौभाग्यवती श्री मती सज्जन कुमारी के साथ हुआ था *।

ता० २१ मार्च १९३५ को आप अपने पूज्य भ्राता के साथ लण्डन के लिये रवाना होगये। और ता० २४ अक्टोबर को वापस जोधपुर पधारे।

ता० १६ दिसम्बर को "सर प्रताप हाई स्कूल जोधपुर" के उन्चालीसवें वार्षिक अधिवेशन पर आपने सभापति + का आसन ग्रहण किया था। जहाँ आपने सभापति की हैसियत से सुन्दर भाषण दियाथा।

आपका स्वभाव चंचल होते हुए भी मिजाज बिल्कुल सादा है। आपको सफाई और सच्चाई से बहुत प्रेम है।

ईश्वर आपकी हजारी उम्र करे।

प्रतापचन्द्र माथुर.

---

* इस अवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी जो ता० २२ फरवरी १९३५ को श्रीमान को पढ़ कर सुनाई गई और पेश की गई थी।

+ इस अवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने स्वरचित स्वागत कविता पढ़ कर के आप का स्वागत किया था।

क्लास में पाठ समझलेने के बाद फिर उसे बारबार रटते रहने की आप को आदत नथी। एक बार अच्छी तरह समझलेने पर अपना काम कर लेते थे। अंग्रेजी में आपका नम्बर पहला रहता था। रामायण, क्लास में पढ़ने के अतिरिक्त भी समय-समय पर सुना करते थे और वह भी बड़े ही प्रेम के साथ। बहुतसी चौपाइयाँ तो आप को कंठस्थ होगईथीं।

खेलों में फुटबाल, होकी और टेनिस से भी अधिक अनुराग आपको क्रिकेट से था।

घोड़े की सवारी करना और पोलो खेलना तो आप छोटी उम्र में ही सीख गये थे। केवल १५ वर्ष की आयु में ही, आपने मेयोकॉलेज पोलो टीम में, भरतपुर पोलो टीम के साथ मैच खेला था।

इसी प्रकार आपने बन्दूक चलाने की शिक्षा भी बहुत छोटी उम्र में ही हासिल करली थी और जिस की बदौलत रीवाँ के जंगल में दो शेरों का शिकार भी अपनी छोटी उम्र में ही खेल चुके थे।

आपने जनवरी १९१९ से दिसम्बर १९२३ तक मेयो कॉलेज में शिक्षा पाई थी। बाद में रियासत का काम सीखने के लिये आपको कालेज छोड़ाना पड़ा।

जनवरी १९२५ अर्थात सं० १९८१ की बसंतपंचमी को, आप का शुभ-विवाह ईशरदे ठाकुर श्री सवाईसिंहजी

मोहन की सुयोग्य कन्या और श्रीमान जैपुराधीश हिज हाईनेस महाराजाधिराज श्री सवाई मानसिंहजी साहब की प्रिय भगिनी। सौभाग्यवती श्री मती सज्जन कुमारी के साथ हुआ था * ।

ता० २१ मार्च १९२५ को आप अपने पूज्य भ्राता के साथ लण्डन के लिये रवना होगये, और ता० २४ अक्टोबर को वापस जोधपुर पधारे।

ता० १६ दिसम्बर को "सर प्रताप हाई स्कूल जोधपुर" के उन्चालीसवें वार्षिक अधिवेशन पर आपने सभापति + का आसन ग्रहण किया था। जहाँ आपने सभापति की हैसियत से सुन्दर भाषण दियाथा।

आपका स्वभाव चंचल होते हुए भी मिजाज बिल्कुल सादा है। आपको सफाई और सच्चाई में बहुत प्रेम है।

ईश्वर आपकी हजारी उम्र करे।

प्रतापचन्द्र माथुर.

---

* इस अवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने एक कविता लिखी थी जो ता० २० फरवरी १९२५ को श्रीमान् को पढ़ कर सुनाई गई और पेश की गई थी।

+ इस अवसर पर इस पुस्तक के सम्पादक ने स्वरचित स्वागत कविता पढ़ कर के आप का स्वागत किया था।

हमारा वक्तव्य
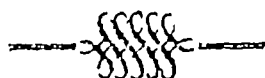
समुद्र-जल की तरंगों पर चलते हुए हमारे मन में भी कई प्रकार की तरंगें उठ रही थी। लण्डन, कितना सुन्दर शहर होगा ? उसकी सड़कें कितनी साफ सुन्दर होंगी ? वहाँ की इमारतें इत्यादि कितनी सुन्दर होंगी इत्यादि २। कभी-कभी तो कल्पना-तरंग में यहाँ तक वह चलते थे कि लण्डन शहर का कल्पनामय चित्र, आँखों के सामने आजाता था। फिर तरंग उठती, हम इस शहर की सुन्दरता का नोट क्यों न करें ? और फौरन् ही काल्पनिक चित्र पर से वहाँ की सुन्दता, हमारे हृत्पट पर अंकित होने लगती थी।

परन्तु जब लण्डन शहर में पहुँचे तो शहर की शोभा और चमक-दमक को देखते ही चौंधिया गये; तसवीर की तरह मूक औरनिश्चेष्ट हो गये ! कहाँ तो हम उसकी सुन्दरता का नोट करना चाहते थे और कहाँ यह परिस्थिति कि मूक और निश्चेष्ट ! उस समय हमें एक कवि की भविष्य वाणी का स्मरण हो आया—

शक्ल तो देखो मुसव्विर खींचेगा तसवीर यार,
आपही तसवीर उसको देखकर हो जायगा !

हमारी विलायत यात्रा

लेखक

बाबू केदाररूप राय शिवजीराम अगोलिया

Lakshmi Art, Bombay, 8

क्योंकि ठीक ऐसा ही हुआ था। लगडन की शोभा और हमारी उस समय की परिस्थिति को देखकर यदि कोई विनोद-शील व्यक्ति, किसी कवि के शब्दो में हँसता हुआ कहता कि—

तेरे जलवे का तो क्या कहना मगर,
देखने वालो को देखा चाहिये।

तो खूब फबता! फिर तो इस सुन्दर शहर के देखने का ऐसा चसका लगा कि हम लोगो को वहाँ पर सिर्फ उस शहर को देखने-भालने की ही धुन सवार थी और समय का अधिक हिस्सा प्रायः फिरने-घूमने और देखने-भालने में ही बीतता था। परन्तु जब स्काटलैण्ड को गये तो वहाँ पर देखने योग्य विशेष सामग्री के न होने से अवकाश रहा और उसी अवकाश के समय में इस यात्रा का कच्चा चिट्ठा तैयार किया गया था। इस बने बनाये म्यूजियम (लण्डन शहर) और सारे संसार को चकित कर देने वाले अद्भुतालय पर बहुत कुछ लिखा जा सकता था, परन्तु हमने तो जहाँ तक हो सका, अति संक्षेप में ही लिखा था। यद्यपि हमने, प्रायः सभी महत्वपूर्ण विषयो और दर्श-नीय-दृश्यों पर प्रकाश डाला था, परन्तु उस में न तो पूर्णता थी, न वह शृंखला बद्ध वर्णन था और न उस की भाषा ही परिमार्जित थी। अतः हम अपने उस कच्चे चिट्ठे को

श्रद्धेय श्री प्रतापचंद्रजी माथुर द्वारा वर्त्तमान रूप में परिवर्तित करा कर और पुस्तकाकार छपवा कर, पूर्ण प्रेम-भाव के साथ, अपने प्रियजनों की सेवा में विदेश से लौटे हुए व्यक्ति की तरह, चितारिनी रूप में, उपस्थित करते है ।

हमारी यह चितारनी कैसी है ? कितनी सुस्वादु, लाभ प्रद, मनोरंजक और ज्ञान वर्द्धक तथा मनोहारिणी है ? सो पाठक गण ही विचार करें। हमारे विचार से लाभ न सही, यदि इससे पाठकों का मनोरञ्जन भी हुआ तो हम अपने श्रम को सर्वथा सार्थक समझेंगे ।

हम उस परम पिता परमात्मा के निकट किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करें कि जिसकी अपार कृपा से हमे श्रीमान् जोधपुर नरेश और उनके लखनवत प्रिय अनुज महाराज श्री अजीतसिंहजी साहब की पवित्र सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

श्रीमान मरुधराधीश की सेवा में रह कर के हम लोग समग्र भारत वर्ष की यात्रा तो करही चुके थे, विलायत यात्रा भी, जो सिर्फ धनी मानी मनुष्य ही कर सकते हैं, कर आये है और उक्त श्रीमान की बहुमूल्य आर्थिक सहायता से ही यह पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं । इतना ही नहीं, हमारी प्रार्थना पर, यह पुस्तक श्रीमान को समर्पण करने की स्वीकृति भी श्रीमान ने कृपा करके प्रदान कर

दी है। अतः इस अपूर्व कृपा के लिये हम उक्त श्रीमान् को जितनी भी शुभ कामना करें वह सब थोड़ी ही है। ईश्वर हमारे श्रीमान् को हजारों उम्र करे, सकुटुम्ब, कुशल पूर्वक रक्खे और उनके ऐश्वर्यादि की दिन व दिन वृद्धि करे।

हम हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक, कवि और नाटककार प्रियवर महाशय श्री प्रतापचन्द्रजी माथुर के बहुत ऋणी है, जिन्होंने कि अपना अमूल्य समय नष्ट करके इस पुस्तक का ऐसा सुन्दर सम्पादन किया और अपने काव्य चमत्कार से पुस्तक को अलंकृत करके इसे विशेष शोभा-सम्पन्न बनादी। हम आपके इस उपकार का बदला नहीं चुका सकते। हाँ, इस उपकार का सदैव स्मरण अवश्य रक्खेंगे।

हम उन सब साहिबान के भी हृदय से आभारी है, जिन्होंने कि पुस्तक के प्रकाशन में किसी न किसी रूपमें सहायता प्रदान की है।

विनीत—

केदाररूप रॉय
शिवजीराम अंगोलिया

मेरे दो शब्द ।

कम नहीं जलवा गरी मे तेरे कूचे से बहिश्त,
एक ही नकशा है वले इस कदर आबाद नहीं ।

कवि गालिब का यह शेर, लण्डन शहर पर खूब घटता है । वास्तव में चाहे स्वर्ग की शोभा लण्डन शहर की सुन्दरता से कम न हो परन्तु वहाँ पर इतनी अधिक आबादी तो कदापि नहीं मिल सकती, जितनी कि लण्डन शहर मे है!

हिन्दी संसार में यात्रा सम्बन्धी पुस्तकों का एक प्रकार से अभाव ही है । हाँ, कोई इक्की दुक्की पुस्तक देखने मे आती है, परन्तु वह इस अभाव की पूर्ति के लिये काफी नही है, इसलिये इस विषयपर अभी कई उच्च कोटि की पुस्तकें निकलने की आवश्यकता है । विशेष कर लण्डन जैसे अद्वितीय नगर पर, जहाँ हिन्दी में एक आध पुस्तक भी न थी, एक ऐसी पुस्तक के निकलने की अत्यन्त आवश्यकता थी ।

प्रस्तुत पुस्तक में लण्डन शहर का विशद वर्णन है और जिसमें प्रायः वहाँ के सभी दर्शनीय- दृश्यो पर प्रकाश डाला गया है । लण्डन शहर, जो प्रायः सभी बातो में संसार के सभी शहरों का शिरोमणि हो रहा है, उस पर एक ऐसी पुस्तक हिन्दी की कौन कहे, कदाचित अंग्रेजी भाषा मे भी नहीं है कि जिसमें, उन सब विषयों का समावेश हो, जो

इस पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं। इसलिये लेखक महाशय इस पुस्तक के लिखने के लिये धन्यवाद के पात्र हैं और यात्रा में अपने समय का सदुपयोग करने के लिये उन्हें बधाई है।

भारतवर्ष के बहुत से राजा महाराजा विलायत जाकर आये हैं, परन्तु उनकी यात्रा का ऐसा विशद वर्णन, जिसमें लण्डन शहर का इस प्रकार विस्तार पूर्वक वर्णन हो, आजतक पुस्तकाकार नहीं निकला। इस दृष्टि से भी हमारे श्रीमान् मरुधराधीश की यह विलायत यात्रा सर्वथा सफल हुई है और उन्हीं की कृपा तथा सहायता से यह "हमारी विलायत यात्रा" रूपी अमूल्य रत्न, भारत वासियों को, विशेषतः हिन्दी–भाषा–भाषी भाइयों को, भेंट हो रहा है। अतः इस पुस्तक के निकलने का सारा श्रेय, हमारे श्रीमान् मरुधराधीश को है। उन्होंने, इस रूप में, हिन्दी भाषा का बहुत उपकार किया है।

लेखकों ने इस पुस्तक का कच्चा चिट्ठा ज्यों-ज्यों कि वे लण्डन शहर देखते गये थे, उसीक्रम से लिखा था और यात्रा सम्बन्धी पुस्तक इसी प्रकार से लिखी जानी भी चाहिये, परन्तु इसमें कठिनाई यह पड़ती थी कि पढ़ने वाले किसी भी विषय का पूरा हाल एक ही जगह पर नहीं पासकते थे, इसलिये श्रम तो कुछ अधिक करना पड़ा, परन्तु मैंने लण्डन शहर का वर्णन विषयवार लिखना अधिक लाभ प्रद समझ कर उसे विषय वार ही लिखा

है। यदि विषय वार लिखना दोष प्रद है तो यह दोष मेरा अपना है, न कि लेखकों का।

यहाँ पर यदि अपनी अयोग्ता के लिये भी कुछ निवेदन करूं तो अनुचित न होगा। मैं न लेखक हूं, न विद्वान हूं और न मैंने लण्डन शहर देखा ही है। इस पर लण्डन जैसे उन्नत और विशाल शहर का वर्णन! अतः सम्भव है कि मैंने पद २ पर अपनी अयोग्यता प्रदर्शित की हो। परन्तु अब इस के लिये इसके अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं है कि कृपालु पाठकों के समक्ष अति विनम्र भाव से अपनी त्रुटियों के लिये क्षमा प्रार्थना करूं और उन्हें क्षमा कराऊं। विद्वान गण, इस पुस्तक में रहनें वाली त्रुटियों से अगवत करने का अनुग्रह अवश्य करें, ताकि वे अगले संस्करण में सुधारी जा सकें।

जिन लेखक महानुभाव द्वारा रचित, सम्पादित अथवा प्रकाशित पुस्तकों व लेखों से तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाओं से इस पुस्तक के लिखने में सहायता ली गई है, मैं उन सब के प्रति, सच्चे हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मैं उन कविवरों का भी आभारी हूं कि जिनकी सुन्दर कविताओं के हवाले, इस पुस्तक में जहाँ तहाँ दिये गये हैं।

इस पुस्तक को पढ़कर सोने वाले जगें और जगनें वाले आँखें खोल कर देखें कि उस देश वाले अपने सतत प्रयत्न से उन्नति करते हुए कहाँ सें कहाँ पहुँच गये हैं और हमारा भारतवर्ष, कहाँ पर पड़ा हुआ है।

सम्पादक

विषय-सूची।

चित्र-सूची ।

॥ श्रीः ॥

श्रीमान् मरुधराधीश की पवित्र सेवा में

हमारी विलायत यात्रा

रवानगी और रास्ते के हालात।

रवानगी।

शनिश्चरवार ता० २१ मार्च १९२५ का दिन बड़ा ही मंगल मय था। उस दिन हमारी चिर अभिलिषित विलायतयात्रा का समारंभ अर्थात श्री गणेश था। उसी दिन शाम के ८ बजे हमारे श्री अन्नदाताजी की स्पेशल ट्रेन जोधपुर के राईका बाग स्टेशन से बड़ेही समारोह के साथ विलायत यात्रा के लिये रवाना हुई थी।

बम्बई ।

ता० २३ मार्च की शाम को बम्बई पहुँचे और कोई एक सप्ताह तक बम्बई में ठहरना पड़ा, परन्तु बम्बई पहिले कई बार देखा हुआ होने से और लण्डन देखने की उत्सुकता के प्रबलता धारण कर लेने से बम्बई का दृश्य—सौन्दर्य कुछ विशेष रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ। ता० २६ की रात सामान पर सिलसिलेवार लेबिल* लगाने में और ता० २७ का दिन जहाज पर सामान चढवाने में बीतगया, परन्तु ता० २७ की रात बड़ी ही कौतुहल पूर्ण थी क्योंकि लण्डन के लिये रवाना होने की उत्सुकता और स्वदेश से होने वाली बिछोह—व्यथा में रात भर संग्राम होतारहा था।

---

* जहाज पर चढने से पहले ही सामान तीन विभागों में करना जरूरी होता है और इसी प्रकारसे लेबिल लगाये जाते हैं। एक सामान वह होता है जो मुसाफिर अपने पास रख सकता है और जिस पर केबिन (Cabin) लेबिल लगाया जाता है। दूसरा सामान वह है जो रास्ते में जरूरत पडने पर ले सकते है। इसको ऊपर के गोदाम में रखते हैं और उसपर Wanted on Voyage का लेबिल लगाया जाता है। तीसरा सामान वह है जो जहाँ को जाना हो वहीं पर जहाज से उतरने पर मिल सकता है। उसपर "Not wanted on Voyage" का लेबिल रहता है और वह सब से नीचे के गोदाम में रखा जाता है।

ता० २८ को प्रातः काल होने के पूर्व ही हम लोगोंने अपने विस्तर छोड दिये और जल्दी जल्दी अपनी नित्य क्रिया इत्यादि से निपट ने लगे। ६ बजते ही डाक्टर साहब की सेवा में पहूँच गये और ११ बजे तक डाक्टरी परिक्षा से छुट्टी पाकर "सामाँ चला गया कल, है आज कूच अपना" की लोकोक्ति के अनुसार जहाज पर चले गये।

जहाज।

हम लोग जिस जहाज पर चढे थे, उस का नाम "नार-कुण्डा" था। उसकी ताकत १५३०० घोड़ों की और वजन १६२३० टन था। उसकी लंबाई लगभग एक फरलांग, चौड़ाई लगभग ४० फीट और ऊँचाई ५ डेक (खण्ड) थी जो पानी के ऊपर थी। इसके अतिरिक्त ३५ फीट जहाज का हिस्सा पानी के भीतर था, जिसमें सामान, राशन, मशीन, कोयला, इत्यादि के गोदाम थे। जहाज प्रति घंटा १५ मील की गति से चलनेवाला था और उसमें मुसाफिर फर्स्ट, सेकिन्ड इत्यादि के मिला कर ७५० से अधिक और लगभग ४०० के छोटे बड़े सब मिलाकर जहाज के कर्मचारी थे।

जहाज पर अधिकतर सामान क्रेन द्वारा चढाया जाता है। चढाने की विधि बड़ी आश्चर्य कारी होती है। डाक इत्यादि के चढाने की विधि देख कर तो आश्चर्य चकित

होना पड़ता है। जहाज पर चढ़े हुए सामान को प्रत्येक मुसाफिर के पास उसके यथा स्थान पहुँचाने में बहुत सावधानी रक्खी जाती है। सैकड़ों मुसाफिरों का सामान * एकसाथ चढ़ने पर भी सामान गुम होजाने की शिकायत नहीं सुनी गई।

ज्योंही कि दो बजनेका समय निकट आता जाता था, जहाज के कर्मचारी, बिगुल द्वारा जहाज के रवाना होनेकी सूचना देते थे। और मुसाफिरों के मित्र सम्बन्धी जो उनको पहुँचाने के लिये जहाज पर चढ़ आए थे, अपना स्नेह–स्रोत बहाते हुए बिदाई का अनुशासन देते थे। कोई फूलों का हार पहिना रहा था तो कोई गले मिल कर प्रेमाश्रु बहा रहा था। बहुत से व्यक्ति जहाज के नीचे खड़े हुए टोपी और रुमाल हिला कर अपना स्नेह प्रकट कर रहे थे।

इतने में लगभग डेढ़ बजे कि एक घंटी हुई। जिस का अभिप्राय यह था कि मुसाफिरों के अतिरिक्त जो लोग जहाज पर चढ़ आये थे वे नीचे उतर जाँय। इसी प्रकार दो बजते बजते एक और घंटी हुई और जहाज लंगर उठाकर धीरे धीरे बन्दरगाह से हटने लगा।

---

* सामान की जाँच परताल जहाज में पूरी तरह से की जाती है और जहाज में चढ़नेसे पहले सामान की जोखम बेच दीजाती है ताकि सामान में कमी होने पर पूरी कराई जासके।

जब तक बन्दरगाह नजर आता रहा, तब तक मित्र सम्बन्धी रुमाल और टोपी हिलाते हुए नजर आते रहे, परन्तु थोड़ी देर बाद ही स्वप्न दृश्य की भाँति अलोप हो गये। इसी तरह कोई डेढ़ दो घंटा बाद बम्बई भी एक छोटेसे टापू के समान दिखाई देने लगी और थोड़ा दूर और आगे बढने पर क्रमशः क्षीणता को प्राप्त होती हुई अन्तमें ओस बूंद के समान अदृश्य हो गई। जहाज समुद्र की विशालता को मापता हुआ अपनी उसी अविराम गति से आगे बढता रहा और देखते देखते ही इतना आगे बढगया था कि अब पृथ्वि भी नजरों से गायब होगई थी और चारों ओर पानी ही पानी नजर आता था।

अब हम लोग इधर से उधर घूम फिर कर जहाज की विशालता और सजावट शोभा को देखने में समय व्यतीत करने लगे।

जहाज में प्रत्येक काम के लिये अलग २ विभाग है, जिन-का संचालन जहाज के गमन कालमें जहाज के केपटिन द्वारा होता है। आवश्यकतानुसार थोड़ा सामान खरीदने के लिये जहाज में एक दुकान भी रहती हैं। पी. एन्ड. ओ. डाक

जहाज * में मुसाफिरों के खुराक की कीमत तो टिकिट की कीमत के शामिल ही लेली जाती है, परन्तु शराब, सोडा, लेमन इत्यादि और कपड़ों की धुलाई वगैरः का चार्ज अलग होता है।

जहाज के फर्स्ट और सेकिन्ड क्लास पेसेजरों के रहने को केबिन बने होते हैं। प्रत्येक केबिन में अधिक से अधिक चार मुसाफिर एक साथ रह सकें, उतनी जगह होती है। फर्स्ट और सेकिन्ड क्लास मुसाफिरों के खाने पीने, बैठने उठने का अलग अलग बन्दोबस्त रहता है।

जहाज में मुसाफिरों के आराम का अधिक ध्यान रखा जाता है। बैठने उठने को बड़े बड़े गोल्ज कमरे और स्मोकिंग रूम और ऊपर टहलने को डेक बने हुए होते हैं, जहां अपनी अपनी कुरसियों पर बैठ कर दिन को आराम किया जाता है। बहुतसे लोग डेक पर खेल कूद भी प्रायः किया करते हैं।

---

* इसके थर्ड क्लास पेसेन्जर 'डेक पेसेन्जर' कहलाते हैं और Servants (नौकरों) के सिवा दूसरे थर्ड क्लास पेसेन्जरस नहीं लियेजाते और न थर्ड क्लास पेसेन्जरस के बैठने के लिये कोई खास जगह होती, सिर्फ डेक पर ही रहना पड़ता है। पी एन्ड. ओ के सिवा दूसरे जहाजो में डेक पेसेन्जरस के लिये भी जगह रहती है, परन्तु उनमें खाने की कीमत टिकिट की कीमत के शामिल नही लीजाती। अलग देनी पड़ती है।

वैसे तो दिन में टहलते समय फर्स्ट क्लास मुसाफिर सेकिण्ड क्लास डेक पर जासकते हैं, परन्तु नाच, गाना, खाना, पीना, बैठना उठना और एशो आराम दोनों क्लासों का अलग अलग होता है।

खाना सब मुसाफिरों को क्लासवार और एक साथ दिया जाता है, परन्तु कारण वश अपने केबिन में मंगा कर भी खा सकते है। प्रत्येक मुसाफिर को दो समय चाय और तीन समय भोजन देने का नियम है। मुसाफिरों के अधिक संख्या में रहने पर भी उनको भोजन अच्छा और इफरात से दिया जाता है। भोजन सामग्री के खर्च करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं की जाती। लगभग बारह सौ आदमियों को एक दिन में दो दफा चाय और तीन दफा भोजन देनेसे एक महीने में जिस कदर सामान की जरूरत होती है वह जहाज में पहले से ही रख लिया जाता है।

जहाज में पीने को मीठा और स्नान करने को खारा पानी मिलता है, परन्तु खारे पानी से स्नान करलेने के उपरान्त थोड़ा मीठा पानी भी मिलता है जिस से कि खारे पानी का चेप दूर हो जाय।

जहाज का मेडीकल विभाग एक सर्जन डाक्टर के अधिकार में रहता है, जो बदस्तूर सब काम करता है।

जहाज की सफाई का काम बहुत ही उत्तम रीति से होता है। जहाज के डेकों को नित्य प्रति धोना पोंछना उनका पीतल साफ करना इत्यादि कार्य तो खलासी करते हैं जो अधिकतर हिन्दुस्तानी मुसलमान होते हैं। परन्तु जहाज के केबिनों की सफाई करना स्टूअर्डों का काम है जो अकसर योरोपियन ही होते हैं। हरएक स्टूअर्ड के जिम्मे ७-८ केबिन रहते हैं, जिनको झाड़ना पोंछना, सुबुह के वक्त मुसाफिरों को पलंग पर ही छोटी हाजरी पहुँचाना, उनके कपड़ों को साफ करना इत्यादि काम उसका आवश्यक कर्त्तव्य होता है।

इसी प्रकार ७-८ केबिनो के बीच एक नर्स रहती है जो स्त्रियों का कार्य किया करती है।

जहाज में स्नानागार और तारत कई जगह पाँच छः एक ही लाइन में पास पास बनेहुए रहते है उनपर एक स्टूअर्ड रहता हैं जो हरएक मुसाफिर की आवश्यकता को पूरी करता है।

इसी प्रकार खाने के कमरे में आठ दस मुसाफिरों को खिलाने के लिये एक आदमी रहता है, जो हमेशा नीयत समय पर अपनी टेबल का काम पूरा करता है।

जहाज का संचालक भी हर सुबुह को सब जगह घूम फिर कर देखता है कि कहीं मैला कुचैला तो नहीं है। यदि

कहीं मैला कुचैला पाता है तो तुरन्त ही सफाई करा देता है।

जहाज के संचालक का स्थान सब मे ऊपर रहता है, जहॉ से वह जहाज की गति का नियन्त्रित करता है।

जहाज में हवाई तार विभाग भी मौजूद रहता है जो चलते जहाज में से जहाँ चाहो वहाँ तार भेज सकता है।

जहाज में सप्ताह में एक दफा खतरे मे बचने की घंटी होती है, तब सब मुसाफिरो को पेटियॉ बांध कर नियत समय और स्थान पर उपस्थित होना पड़ता है और जहाज का उच्च कर्मचारी सब का निरीक्षण करता है।

जहाज का प्रत्येक कार्य सराहनीय है और यहॉ पर मुसाफिरो की सब तरह की आवश्यकताऍ पूर्ण करने के साधन विद्यमान हैं। धन्य है इसके आविष्कार कर्त्ता की बुद्धि को कि जिसने मुसाफिरो के सब प्रकार के सुभीते और उनकी आवश्यकताओ को ध्यान में रखकर ऐसे उत्तम जहाज का निर्माण किया।

समुद्र शोभा।

ता० २८ की शाम, समुद्र में सूर्य्यास्त का दृश्य देखने की पहली ही शाम थी। आकाश और समुद्र के पाट

जुड़े हुए से मालूम होते थे। जिनके बीच, समुद्र जल के भीतर, छिपते हुये सूर्य्य का प्रतिबिम्ब और फिर अरुण अस्ताचल की परछाँई बहुत ही भली मालूम होती थी। यों तो शाम का समय प्राकृतिक शोभा युक्त ही होता है, परन्तु समुद्रगत शाम की शोभा कुछ निराली ही होती है। वह लहरों का उठना और विलीन हो जाना, वह गगन मंडित लालिमा का पानी मे क्रीडा करना और ठंडी ठंडी वायु का चलना व जिधर दृष्टि डालिये उधर ही उसी नील वर्ण समुद्र ही समुद्र का दिखाई देना, अनुपम शोभा व आनन्द दे रहा था।

भारत की याद।

हमारी दृष्टि जहाज के पीछे की तरफ गई तो जहाज के चलने से पानी में दूर तक एक सड़क सी पड़ी हुई दिखाइ दी। सड़क जो जहाज के पीछे पीछे चली आ रही थी उसे देखकर याद आगया कि "दूर तक आई है हमको यादे वतन समझाने को।"

शाम का खाना और आमोद प्रमोद।

इतने में शाम के सात बज गये और जहाज के नियमानुकूल, खाने की बिगुल बजने लगी। इधर आकाश में अंधेरा भी छा गया था, सब मुसाफिर कपड़े बदलने के

लिये अपने अपने केबिन में चले गये। इतने में दूसरी बिगुल बजने लगी और सब मुसाफिर अपनी अपनी खाने की मेजों पर जा बैठे। हम लोगों ने भी अपने साथ का खाना जो बम्बई से लेआये थे, खाना शरू किया। खाना खा चुकने पर फर्स्ट और सेकिण्ड क्लास पेसेन्जरस तो ताश इत्यादि खेलों में आमोद प्रमोद करने लगे और हम सब लोग इकट्ठे बैठ कर बात चीत मे समय व्यतीत करने लगे।

विश्राम।

रात के ग्यारह बजे तक जहाज के कर्मचारियों को छोड़ कर सब पैसेन्जरस् अपने अपने विश्रामालय को चले गये थे। हम भी आँखें बन्द करके निद्रा देवी की आराधना में लगगये थे, परन्तु कान खुले हुए थे और मानवी कोलाहल शान्त हो चुका था, जहाज के चलने के शब्द ने ज़ोर पकड़ करके हमारे आराम में बाधा पहुँचानी चाही, परन्तु दिन भर के थके हुए थे, इसलिये अन्त में निद्रा देवी ही की विजय हुई और रात भर नींद ही में बीत गई।

ता० २९ के प्रातःकाल नींद से उठे, परन्तु यह स्थिर नहीं कर सके कि कहाँ पर हैं! चारों ओर जहाँ तक नज़र जाती थी पानी ही पानी दिखाई देता था और जहाज अपनी उसी गति मे, कई दिन और रात चलता रहा था।

एडन (Aden)

बुधवार ता० ३ अप्रैल के प्रातः काल जहाज के कर्मचारियों मे कुछ हलचल सी दिखाई दी। दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि आज दोपहर तक जहाज एडन पहुँच जावेगा। कोई दो घंटे बाद पहाड़ और किनारे नजर आने लगे। जहाज के दोनो बाजू सीढ़ियें लगादी गई थीं और जो मुसाफिर एडन में उतरने वाले थे, उनका सामान डेक पर इकट्ठा कर दिया गया था। हम लोगों ने भी एडन पर डाक में डालने के लिये चिट्ठियाँ लिख कर तय्यार रक्खी थी। लग भग दो बजे एडन का बन्दरगाह दिखाई देने लगा। बन्दरगाह पर आवश्यक सामान से भरे हुए छोटे छोटे बोट जो पहिले से ही मौजूद थे, जहाज के पहुँचते ही व्यवसाय करना आरम्भ कर दिया। बहुत से मुसाफिर तो यहाँ पर उतरने वाले थे और बहुत से एडन देखने के लिये जाने वाले थे। वे सब जहाज से उतर कर छोटी किश्तियों द्वारा बन्दरगाह पर गये थे।

एडन ब्रिटिश सरकार का एक छोटा टापू है, जो चारों ओर से पहाड़ो से घिरा हुआ है। पहाड़ दूरसे काले रंग के दिखाई देते हैं। मीठे पानी की यहाँ पर बहुत कोताही है। अतः समुद्र का खारा पानी मीठा बनाकर काम चलाया

जाता है। यहाँ के निवासी अधिक संख्या में हिंदुस्तानी और कुछ अरब व अंग्रेज भी हैं। जहाज ने आवश्यकतानुसार सामान लेकर छः बजने के कुछ पहिले बन्दरगाह से लंगर उठा दिया और आगे के लिये रवाना होगया।

लाल सागर (Red Sea)

एडन से रवाना हो कर तीन चार दिन लाल सागर में व्यतीत किये, जहाँ पर बहुत सख्त गरमी से सामना करना पड़ा। यहाँ की गरमी देख कर मारवाड़ की गरमी याद आजाती थी। कहा जाता है कि लाल सागर में हमेशा इसी तरह की गरमी पड़ा करती है।

स्वेज (Suez)

एतवार ता० ७ की सुबह को जहाज स्वेज में पहुँच गया। स्वेज अरेबिया का मुख्य द्वार है और स्वेज केनाल (नहर), हिन्दुस्तान, चीन, जापान आदि देशों से आने वाले जहाजों को रूमसागर (Mediterranean Sea) में प्रवेश करने के लिये एक फाटक के समान है। हमारे जहाज ने भी डाक्टरी परीक्षा हो लेने के बाद स्वेज केनाल में प्रवेश किया था।

स्वेज केनाल जमीन खोद कर बनाई गई है और

उसके मुहानों पर समुद्र मिला है। इस मुहाने पर लाल सागर मिला है तो उस मुहाने पर रूमसागर का संयोग हुआ है। स्वेज केनाल की लम्बाई एक सौ चार मील और चौड़ाई डेढ सौ फीट है। केनाल में जहाज बिलकुल धीरे धीरे चलता है। यदि सामने से कोई जहाज आरहा हो तो वह इधर की जहाज के निकलने तक एक ओर को बाँध दिया जाता है ताकि यह आसानी से पास हो जाय। केनाल के बीच एक दो तालाब भी पड़ते हैं। जहाँ, तालाव के आजाने से केनाल की गहराई और चौड़ाई कुछ अधिक हो जाती है वहाँ पर जहाज कुछ तेज भी चला करता है। केनाल में थोड़े २ फासले पर केनाल से रेत निकालने के लिये मशीनें भी लगी हुई हैं, जो रेत निकाल कर हर समय केनाल को साफ रक्खा करती है। केनाल के किनारों पर छोटे २ स्टेशन भी बने हुए है, जो छोटे २ स्टीमरों के ठहरने के स्थान है। केनाल के किनारो पर की भूमि हमारे मारवाड़ की सी रेतीली और बञ्जर पड़ी हुई प्रतीत होती थी। स्वेज केनाल में सब दिन चल कर शाम को रोशनी होने के कुछ पहले हमारा जहाज सय्यद बन्दर (Port Said) पहुँच गया था।

सय्यद बन्दर (Port Said)

सय्यद बन्दर एक बड़ा शहर और बन्दरगाह है।

यह इजिप्ट का शहर है और अरब के अधिकार में है। इस बन्दर पर जहाजो के ठहरने के लिये सैंकड़ो गोदियाँ बनी हुई हैं। किनारों पर बड़े बड़े कार्यालय और होटल भी बने हुए है। यहाँ पर योरोप के हरएक देश के निवासी कार्यार्थ रहा करते है। यह वेश्याओं का प्रधान स्थान है और यहाँ पर हर एक देश की वेश्याएँ आकर रहा करती हैं। यहाँ से काहिरा (Cairo) और सिकन्दरिया (Alexandria) को ट्रेन से जाने में पांच घण्टे लगते है। यहाँ के दरिया की शोभा बड़ी ही मनोहर है। हजारों किश्तियाँ स्टीमर हवाखोरी को जाने के लिये तैयार रहते हैं। वैसे तो यहाँ के बन्दर पर अंग्रेजी, फ्रेन्च इत्यादि सभी भाषाओं के समझने वाले मौजूद है, परन्तु अधिकतर व्यवहार अरबी भाषा का है। यहाँ पर उतरने वालों की जाँच परताल विशेष देख रेख के साथ की जाती है।

हमारा जहाज पहुँचा ही था कि चारों ओर जगमग करती हुई रोशनी ही रोशनी दिखाई पड़ने लगी। सैकड़ों किश्तियों मे कोयला और खाने पीने का सामान भराहुआ पहिलेसे ही तैयार था. जो जहाज के पहुँचते ही लेना शुरू करादिया गया था। बहुतसे मुसाफिर शहर देखने के लिये जहाज से उतरने लगे थे। जहाज के चारो ओर बहुत

अधिक शोर हो रहा था। इसी शोर गुल में रातके बारह बज गये और जहाज अपना लंगर उठा कर चलता हुआ।

सय्यद बन्दर से आगे बढ़ने पर रात को कुछ सर्दी मालूम होने लगी। ता० ८ को सुबह उठकर देखा तो जहाज के सब कर्मचारियों ने गरम काली वर्दी पहन रक्खी थी। इसी प्रकार मुसाफिरों ने भी अपने गरम कपड़े पहन लिये थे।

हमारे चलते हुए जहाज के पास होकर जब कोई दूसरा जहाज जाता हुआ दिखाई देता था, तब सब मुसाफिर दूरबीनों से टकटकी लगा कर उसकी ओर देखा करते थे। कभी कभी रातके अन्धेरे में भी जगमगाहट करती हुई रोशनी दिखाई दे दिया करती थी, जिससे भी किसी जहाज के होने का खयाल किया जाता था।

इटली की पर्वत श्रेणी।

सय्यद बन्दर से निकलने पर अक्सर पहाड़ और किनारे दिखाई देते थे। जब इटली के पहाड़ नजदीक आये तो दोनों ओर को बड़े २ शहर बसे हुए दिखाई दिये जिन में कोर्सिका (Corsica) और सार्डिनिया (Sardinia) इत्यादि प्रसिद्ध शहर है। इसी समय सिसिली (Sicily) का इटना नाम का ज्वाला मुखी पहाड़ दिखाई दिया, जिसमें

से हर समय धुआँ निकलता हुआ दिखाई देता है। इसको देखने के लिये मुसाफिरो में बहुत पहिले से ही हल चल मच जाती है और जब तक कि वह बहुत पीछे नही छूट जाता, तब तक सब लोग उसी ओर देखते रहते है।

मार्सेल्स (Marseilles)

ता० १० बुधवार के सुबह चार बजे के पूर्व ही हमारा जहाज मार्सेल्स पहुँच गया था परन्तु रात होने से किनारे पर नही लगाया जाकर कुछ दूरही रक्खा गया। मार्सेल्स पहुँचने का सुनते ही हम लोगों की नींद खुलगई। उतरने की जल्दी में दिन निकलने के पहिले ही सब लोग तैयार होगये थे, परन्तु अभी उतरने में देरी थी। जहाज के एक योरोपियन पेसेंजर को रास्ते में शीतला निकल गई थी और जिसकी इत्तिला हवाई तार द्वारा पहिले से ही फ्रान्स सरकार को दी जा चुकी थी, इसलिये जब तक के डाक्टरी जाँच न हो जाय, जहाज पर से नही उतर सकते थे। वैसे तो डाक्टरी जाँच हरेक बन्दर-गाह पर होती है, परन्तु कारण विशेष उपस्थित हो जाने पर जाँच में विलम्ब हो जाता है। दिन के ८ बजे बाद फ्रेन्च डाक्टर आए और उन्होने पूछताछ जाँचपरताल करली, तब जहाज किनारे पर लगाया गया।

अधिक शोर हो रहा था। ऐसेही शोर गुल में रातके बारह बज गये और जहाज अपना लंगर उठा कर चलता हुआ।

सय्यद बन्दर से आगे बढ़ने पर रात को कुछ सर्दी मालूम होने लगी। ता० ८ के सुबह उठकर देखा तो जहाज के सब कर्मचारियों ने गरम काली वर्दी पहन रख ली थी। इसी प्रकार मुसाफिरों ने भी अपने गरम कपड़े पहन लिये थे।

हमारे चलते हुए जहाज के पास होकर जब कोई दूसरा जहाज जाता हुआ दिखाई देता था, तब सब मुसाफिर दूरबीनों से टकटकी लगा कर उसकी ओर देखा करते थे। कभी कभी रातके अन्धेरे में भी जगमगाहट करती हुई रोशनी दिखाई दे दिया करती थी, जिससे भी किसी जहाज के होने का खयाल किया जाता था।

इटली की पर्वत श्रेणी।

सय्यद बन्दर से निकलने पर अक्सर पहाड़ और किनारे दिखाई देते थे। जब इटली के पहाड़ नजदीक आये तो दोनों ओर को बड़े २ शहर बसे हुए दिखाई दिये जिन में कोर्सिका (Corsica) और सार्डिनिया (Sardinia) इत्यादि प्रसिद्ध शहर हैं। इसी समय सिसिली (Sicily) का इटना नाम का ज्वाला मुखी पहाड़ दिखाई दिया, जिसमें

से हर समय धुआँ निकलता हुआ दिखाई देता है। इसको देखने के लिये मुसाफिरों में बहुत पहिले से ही हल चल मच जाती है और जब तक कि वह बहुत पीछे नहीं छूट जाता, तब तक सब लोग उसी ओर देखते रहते हैं।

मार्सेल्स (Marseilles)

ता० १.० बुधवार के सुबह चार बजे के पूर्व ही हमारा जहाज मार्सेल्स पहुँच गया था परन्तु रात होने से किनारे पर नहीं लगाया जाकर कुछ दूर ही रक्खा गया। मार्सेल्स पहुँचने का सुनते ही हम लोगों की नींद खुलगई। उतरने की जल्दी में दिन निकलने के पहिले ही सब लोग तैयार होगये थे, परन्तु अभी उतरने में देरी थी। जहाज के एक योरोपियन पेसेंजर को रास्ते में शीतला निकल गई थी और जिसकी इत्तिला हवाई तार द्वारा पहिले से ही फ्रान्स सरकार को दी जा चुकी थी, इसलिये जब तक के डाक्टरी जाँच न हो जाय, जहाज पर से नहीं उतर सकते थे। वैसे तो डाक्टरी जाँच हरेक बन्दरगाह पर होती है, परन्तु कारण विशेष उपस्थित हो जाने पर जाँच में विलम्ब हो जाता है। दिन के ८ बजे बाद फ्रेन्च डाक्टर आए और उन्होंने पूछताछ जाँचपरताल करली, तब जहाज किनारे पर लगाया गया।

सब से पहिले डाक उतरने लगी। देख कर आश्चर्य हुआ कि सैकड़ों डाक के थैले क्रेन द्वारा एक साथ ऊपर उठा कर पहाड़ के समान ढेर लगा दिया गया था। डाक उतरने के बाद जहाज पर कुली आने लगे, जिनमें बहुत से कम्पनियो की तरफ से आए हुए भी थे। कुली प्रायः फ्रेन्च भाषा ही बोला करते हैं इसलिये इशारो से ही समझाए जाते थे। कोई कोई कुछ शब्द अंग्रेजी के भी समझ सकता था।

यहाँ के कुलियों की ताकत सराहने योग्य है। इन में मामूली कुलियो से अधिक फुरती और अधिक बोझा उठाने की ताकत पाई जाति है। इनके शरीर भी हृष्ट पुष्ट हैं। ज्योंहि मुसाफिरो को जहाज से उतरने की आज्ञा मिलती है, कुली अपना काम शुरू कर देते हैं। कोई यह चाहे कि उसका सामान हिफाजत के साथ आहिस्ता आहिस्ता उतरे तो ये ना मुमकिन बात है। जिस प्रकार कि माली मूलों को फेंकता है, वही गति सामान की भी होती है। कुली सिर्फ नम्बरदार ही जहाज पर जा सकते हैं।

जहाज पर कुलियों के आने के पहिले पहिले स्टुअर्ड लोग अपने अपने केबिन का सामान निकाल कर डेक पर ढेर लगा देते हैं। यहाँ पर भी सामान दो हिस्सों में बाँटना

पडता है। जरूरी सामान तो ट्रेन में साथ ले लिया जाता है और दूसरा भारी सामान जहाज द्वारा ही भेजा जाता है जो एक सप्ताह बाद लंडन में मिल जाता है।

मार्सेल्स से जहाज में जाने वाले तो एक सप्ताह में लंडन पहुंचते हैं परन्तु ट्रेन से जाने वाले दुसरे दिन ही पहुँच जाते हैं। इसलिये ट्रेन से जाने में किराया अधिक लगने पर भी ज्यादेतर मुसाफिर ट्रेन द्वारा ही लंडन जाते हैं।

यो तो मार्सेल्स से लण्डन जाने के तीन रास्ते हैं और उनमें किराये का भी फरक पड़ता है परन्तु जो जल्दी और आराम से जाना चाहते है वे पी० एण्ड० ओ० स्पेशल ट्रेन द्वारा ही जाया करते हैं, मगर हाँ, किराया इसका सब से अधिक अवश्य लगता है।

मार्सेल्स फ्रांस का एक बहुत बडा बन्दरगाह है, जहाँ पर हजारो जहाज खड़े रहते हैं। बडे २ जहाज़ो के ठहरने के लिये गोदियाँ बनी हुई है। हमारा जहाज जिस गोदी में ठहरा था, उसके पास ही ट्रेन की लाइन मिली हुई थी। यहाँ पर सब देशो के जहाज कोयले व पानी लिया करते हैं। यहाँ पर हमारे जहाज के पहुँचने पर सब उतरने वाले मुसाफिरो के पासपोर्ट की जाँच पड़ताल की गई थी। पास-

पोर्ट की जॉच होने तक जहाज की सीढ़ियों के पास फ्रेंच पुलिस का पहरा था और कोई भी मुसाफिर जहाज से उतरने नही पाता था। जब फ्रेंच पासपोर्ट ओफिसर ने एक २ कर के सब पासपोर्टों की जॉच कर उन पर फ्रेंच सरकार की छाप लगादी, तब कहीं मुसाफिरो को जहाज से उतरने की आज्ञा मिली।

हमारे साथ ज्यादा सामान होने मे वह उतरने वाले सब मुसाफिरों के सामान के उतर जाने के बाद जहाज पर से उतरा। जहाज से सामान उतार कर एक गोदाम में लेजाया जाता है और वहॉ पर दो भागों में बॉटा जाता है। यदि चाहे तो सूटकेस और हाथ मुँह धोने का सामान ट्रेन में साथ भी ले सकते है, अन्यथा सब सामान ब्रेक में रख दिया जाता है। यहॉ के ट्रेनों की हालत अत्यन्त प्रशंसनीय है। पेसेन्जर को जितना आराम चाहिये, उससे भी अधिक का आयोजन है। न तो साथ मे बिस्तर लेने की आवश्यकता है और न हाथ मुँह धोने का साबुन, टावल की ही जरूरत है। यहॉ की ट्रेनो के साधारण डिब्बे भी हिन्दुस्तान की ट्रेनो की फर्स्ट क्लास से भी अच्छे होते है। हरेक डिब्बे में दो २ सीट (बैठक) के कम्पार्ट-मेन्ट (कमरे) अलग बने रहते है, जो पेसेन्जर को पहले

ही रिजर्व (सुरक्षित) करा लेने पड़ते हैं अन्यथा समय पर सीट का मिलना कठिन हो जाता है। यहाँ से पी० एण्ड० ओ० की स्पेशल ट्रेनों के अतिरिक्त दूसरी बहुत सी ट्रेनें भी जाया करती हैं और मुसाफिर जिस ट्रेन से जाना चाहता हो उसकी सूचना पहिले से ही करनी पड़ती है।

हमारी स्पेशल ट्रेन जहाज गोदाम से मिली हुई पहिले से ही तैयार खड़ी थी और उसके साथ डाइनिंग कार (Dinning Car) का प्रबन्ध भी पहिले से ही किया हुआ था। साधारण ट्रेनों की अपेक्षा फर्स्ट और सेकिण्ड क्लास गाड़ियाँ भी अच्छी लगाई गई थी। दूसरी स्पेशल ट्रेनों के रवाना होने के बाद लग भग पांच बजे शाम को हमारी स्पेशल ट्रेन रवाना हुई थी। उधर शाम होने आई थी और सूर्य्य भगवान अस्ताचल को पधार रहे थे।

कुछ समय पहिले जिन आंखों के सामने सिवाय समुद्र जल के और कुछ भी नहीं था उन्हें अब चारों ओर को पृथ्वी ही पृथ्वी दिखाई देती थी।

इतने दिनों की समुद्र यात्रा का भारी बोझ तो सर पर था ही, उधर जहाज से उतरने पर कार्य्य की अधिकता

रहने से बोझा और भी बढ़ गया था अतः भोजन से निवृत्त हुए ही थे कि निद्रा देवी ने अपनी प्यारी गोद में सुला कर श्रमित चित्त में शान्ति संचरन करने का काम आरम्भ करदिया।

फ्रांस भूमि।

हमारी ट्रेन रात भर फ्रान्स भूमि में चलती रही थी। कभी कभी हमारी आँख खुल जाती थी तो हम भी स्टेशन का नाम पूछ लिया करते थे। ता० ११ के प्रातः काल जब हमारी आँख खुली तो ट्रेन को एक विशाल स्टेशन पर खड़ी हुई पाई। दरयाफ्त पर मालुम हुआ कि यह पेरिस स्टेशन है। पेरिस का नाम सुनते ही शीघ्रता से उठे और कपड़े पहिन कर नीचे उतरे ही थे कि ट्रेन को रवानगी की सूचना मिली। वापिस ट्रेन पर चढे और ट्रेन चलती हुई। ट्रेन लग भग एक घराटा तक पेरिस शहर मे चलती रही और हम लोग पेरिस शहर की शोभा देखते रहे। फिर छोटे २ ग्रामो को देखते हुए चले। जिधर देखिये उधर जमीन काश्त की हुई मालूम देती थी। पृथ्वी का कोई भाग ऐसा दिखाई नहीं दिया जो बन्जर पड़ा हो। इस प्रकार चलते २ दिन को साढे ग्यारह बजे हमारी स्पेशल ट्रेन केले स्टेशन पर पहुँच गई थी। यहाँ पर भी मार्सेल्स की तरह ही रेलवे लाइन जहाज के स्टेशन से मिली हुई थी

केले (Calais)

केले से जहाज द्वारा इङ्गलिश चेनल में होकर इङ्गलेण्ड की भूमि पर जाना पड़ता है, इस लिये इसको इङ्गलैण्ड का मुख्य द्वार कहेतो अधिक संगत है। वैसे तो दो तीन रास्ते रहने से मनुष्य इच्छानुसार जिस रास्ते से जाना चाहे जा सकता है, परन्तु डाक का गमनागमन इसी रास्ते से होने से इधर ज्यादा हजूम रहता है और यह जगह विशेष महत्व की समझी जाती है।

हमारी ट्रेन के पहुंचने के पहिले से ही केले के बन्दरगाह पर एक छोटा बोट डाक लेने के लिये खड़ा हुआ था। वह दोमंजिल का था। पहिली मंजिल में इंजिन और सामान रखने की जगह थी और कुछ केबिन बने हुए थे। दूसरी मंजिल में आठ दस केबिन और एक छोटा स्मोकिंग रूम था। इन सब कमरों के चारों ओर व ऊपर छतपर डेक था जिस पर बहुत सी कुर्सिएँ पॅसेन्जरों के लिये लगी हुई थी। जहाज बहुत बड़ा न होने पर भी बहुत सुन्दर था और सफेद रंगा हुआ था। यह जहाज हम लोगों को छोटा प्रतीत हुआ, इसका सिर्फ यही कारण था कि हम लोग पहिले दिन ही एक बहुत बड़े जहाज का सहवास छोड़ कर आए थे।

हम लोग ट्रेन से उतर कर इस जहाज पर सामान चढ़ाने के पश्चात् खुद भी जहाज पर जा बैठे। दूसरी ट्रेनों के पेसेंजर भी चढ़ने लगे। थोडी देर बाद जहाज पर इतनी भीड़ होगई थी कि बैठने के लिये ढूंढने पर भी जगह नहीं मिलती थी। जब दूसरी ट्रेनों के मुसाफिर आ चुके तो जहाज ने सीटी देकर लंगर उठा दिया।

इंगलिश चेनल (English Channel)

केले से जहाज के रवाने होने के थोड़ी देर बाद ही किनारे का दीखना बन्द होगया। धुंध के अधिक रहने से यह भी भान नही रहा था कि किधर जा रहे हैं। जहाज भी अपना रास्ता साफ करने के लिये थोड़ी २ देर बाद सीटी देता था ताकि किसी दूसरे स्टीमर से टकराने का भय न रहे। हम जिस समुद्र में हो आए थे उस में तूफान न आने से किसी को कै वगैराः नही हुई थी, परन्तु लोग कहते थे कि इंगलिश चेनल में ऐसा होने की सम्भावना है। हमारा जहाज ज्यों २ केले मे आगे बढ़ता गया त्यों २ सरदी भी बढ़ती गई। लोग कहा करते है कि "Pass channels keep flannel" अर्थात चेनल में गुजरते ससय काफी गरम कपड़ा पास रहना चाहिये, यह बिलकुल ही सही मालूम हुआ। हम लोगों को उस

दिन ऐसी ठंड से सामना करना पड़ा था कि जिस का कुछ वर्णन ही नहीं हो सकता। एक तो ठंडी हवा का चलना और उस पर फिर जहाज का तेज २ चलना, आग में आहुति देने का-सा काम कर रहा था। यद्यपि हम लोगो ने ठंड से बचने के लिये काफी बचाव कर रक्खा था, तद्यपि हाथ और मुँह तो ऐसे हो गये थे, जैसे उन्हें काठ मार गया हो। शरीर के प्रायः सभी अंग शीतल पड़ गये थे। जब कभी टाप कोट का बटन खुल जाता था तो उसका वापिस देना एक कठिन काम होजाता था। ऐसी कड़ी ठंड का सामना करते हुए लगभग सवा घराटा गुजरा होगा कि किनारे से तोपो की आवाजें सुनाई देने लगी जो धुन्ध के अधिक रहने से जहाज को किनारे का भान कराने के लिये चलाई गई थी। जहाज तोपो के शब्दसंकेत के सहारे अपने वाञ्छित स्थान डोवर बन्दरगाह मे जा लगा।

डोवर (Dover) और इङ्गलैण्ड का रेल पथ।

डोवर इंगलैण्ड की भूमि का मुहाना है और जहाँ पर बहुत ज्यादा किलेबन्दी का सामान रहता है। हजारो किश्तियाँ और स्टीमर तैयार रहते हैं। रेलवे स्टेशन, बन्दरगाह से जुड़ा हुआ है और पास ही शहर है। इसी स्टेशन पर हम लोगो की स्पेशल ट्रेन खड़ी हुई थी। सामान

उतार कर ट्रेन में चढ़ाया गया, इस असनाय में दिन के तीन बज गये थे। लग भग साढे तीन बजे हमारी स्पेशल ट्रेन डोवर से रवाना हुई थी। हम इंगलैण्ड की भूमि को देखते हुए चल रहे थे। रास्ता कहीं तो पहाड़ीला था और कही जमीन पर होकर गुजरता था। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दीख पड़ती थी। चार पॉच छोटे बड़े शहर भी दिखाई दिये थे कि इतने में लण्डन का विम्बलडन स्टेशन आ पहुँचा।

विम्बलडन (Wimbledon)

हमारी ट्रेन विम्बलडन स्टेशन पर आकर लगी। ट्रेन से उतरते ही देखा कि सूचनानुसार मोटरें और लोरियें आई हुई तैयार हैं और हज़ारों आदमी मेला लगाये खड़े हुए हैं। सामान उतरवा कर लोरियॉ भरवाई गई। यद्यपि इंगलिश चेनल में कुछ देर हो जाने से हमारी स्पेशल ट्रेन कुछ लेट पहुॅची थी तद्यपि अभी तक अन्धेरा नहीं हुआ था। हॉ, सायङ्काल होने वाला अवश्य था। हम लोग मोटरों में बैठ कर विम्बलडन मुहल्ले में गुजरते हुए अपनी कोठी को जारहे थे। सड़कों पर मेले की तरह अपार भीड़ और बडी २ दुकानें देखने मे आई थीं। हम लोगों को खयाल हुआ कि आज कोई मेला या खेलतमाशा होगा इसीलिये

इतनी भीड़ दिखाई देती है। परन्तु बाद के अनुभव से मालूम हुआ कि यहाँ पर तो हमेशे ही इतनी भीड़ रहा करती है।

मोटर ने अपनी तेज चाल मे रास्ता तय कर लिया। एक फाटक में प्रवेश करने पर ज्ञात हुआ कि यही हमारे ठहरने का निश्चित स्थान वेलमोन्ट हाउस (Belmont House) है। कुछ आगे चलने पर बगीचा और कोठी का मुख्य द्वार दिखाई दिया। मोटर के रुकते ही हमलोग नीचे उतर पडे। यह कोठी विम्बलडन मे पार्क साइड (Park side) पर बनी हुई है। इसके मालिक फ्रांस के एक जागीरदार है जो वेलजियम (Belgium) के बादशाह के साले होते है। कोठी सुन्दर और विशाल बनी हुई है। छोटे बडे पचास साठ कमरे और पाँच खंड है। चारो ओर सुन्दर बगीचा है और बडे २ वृक्षो ने कोठी को घेर रक्खा है। कोठी के फाटक पर एक छोटा किंतु सुन्दर मकान बना हुआ है। इसमे कोठी की निगरानी रखने के लिये एक परिवार रहता है। परिवार की वृद्ध महिला भवन रक्षिका (House Keeper) है। इसका काम फाटक खोलना, तार चिट्ठी पार्सल अन्दर पहुँचा देना और हर तरह की खबरदारी रखना है। इसका स्वामी रात भर जागृत रह कर के कोठी की खबरदारी करता है।

कोठी की भीतरी सजावट भी अपने ढंग की अच्छी थी।

उतार कर ट्रेन में चढ़ाया गया, इस असनाय में दिन के तीन बज गये थे। लग भग साढे तीन बजे हमारी स्पेशल ट्रेन डोवर से रवाना हुई थी। हम इंगलैण्ड की भूमि को देखते हुए चल रहे थे। रास्ता कही तो पहाड़ीला था और कही जमीन पर होकर गुजरता था। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दीख पड़ती थी। चार पॉच छोटे बड़े शहर भी दिखाई दिये थे कि इतने में लण्डन का विम्बलडन स्टेशन आ पहुँचा।

विम्बलडन (Wimbledon)

हमारी ट्रेन विम्बलडन स्टेशन पर आकर लगी। ट्रेन से उतरते ही देखा कि सूचनानुसार मोटरें और लोरियें आई हुई तैयार हैं और हज़ारों आदमी मेला लगाये खड़े हुए हैं। सामान उतरवा कर लोरियॉ भरवाई गईं। यद्यपि इंगलिश चेनल में कुछ देर हो जाने से हमारी स्पेशल ट्रेन कुछ लेट पहुँची थी तद्यपि अभी तक अन्धेरा नहीं हुआ था। हॉ, सायङ्काल होने वाला अवश्य था। हम लोग मोटरों में बैठ कर विम्बलडन मुहल्ले में गुजरते हुए अपनी कोठी को जारहे थे। सड़कों पर मेले की तरह अपार भीड़ और बड़ी २ दुकाने देखने में आई थीं। हम लोगों को खयाल हुआ कि आज कोई मेला या खेलतमाशा होगा इसीलिये

इतनी भीड दिखाई देती है । परन्तु बाद के अनुभव से मालूम हुआ कि यहाँ पर तो हमेशे ही इतनी भीड़ रहा करती है।

मोटर ने अपनी तेज चाल से रास्ता तय कर लिया। एक फाटक में प्रवेश करने पर ज्ञात हुआ कि यही हमारे ठहरने का निश्चित स्थान बेलमोन्ट हाउस (Belmont House) है । कुछ आगे चलने पर बगीचा और कोठी का मुख्य द्वार दिखाई दिया । मोटर के रुकते ही हमलोग नीचे उतर पड़े । यह कोठी विम्बलडन मे पार्क साइड (Park side) पर बनी हुई है । इसके मालिक फ्रांस के एक जागीरदार है जो बेलजियम (Belgium) के बादशाह के साले होते है । कोठी सुन्दर और विशाल बनी हुई है । छोटे बड़े पचास साठ कमरे और पॉच खंड है । चारो ओर सुन्दर बगीचा है और बड़े २ वृक्षो ने कोठी को घेर रक्खा है । कोठी के फाटक पर एक छोटा किंतु सुन्दर मकान बना हुआ है । इसमें कोठी की निगरानी रखने के लिये एक परिवार रहता है । परिवार की वृद्ध महिला भवन रक्षिका (House Keeper) है । इसका काम फाटक खोलना, तार चिट्ठी पार्सल अन्दर पहुँचा देना और हर तरह की खबरदारी रखना है । इसका स्वामी रात भर जागृत रह कर के कोठी की खबरदारी करता है।

कोठी की भीतरी सजावट भी अपने ढंग की अच्छी थी।

फर्श पर सुन्दर रंग बिरंगे कालीन बिछे हुए थे। दीवारों पर फेशन २ के कागज चिपकाए हुए थे। पूरेकद (Life-Size) मे भी बड़े बड़े हजारों रुपयों की लागत के सुन्दर हस्तचित्रित (Oil peint) तैलचित्र भी लटकते हुए नज़र आरहे थे। बिजली के झाड़ और फानूस भी लग रहे थे, जिनके प्रकाश में कोठी की सुन्दरता चमक उठी थी।

बहुत से योरोपीयन स्त्री पुरुष जो हमारे श्रीमान् की सेवार्थ रक्खे गये थे, वे इधर से उधर फिरते और काम करते हुए दिखाई देते थे। हम लोग सफ़र से थके हुए आ रहे थे, इसलिये शरीर शिथिल पड़ गया था और ठंडी हवा के चलने से कुछ सुकड़ गया था। ऐसी अवस्था मे यह सारा दृश्य स्वप्न का-सा प्रतीत होता था और ऐसा मालूम होता था जैसे किसी नाटक का सीन देख रहे हों। परन्तु यह अवस्था ज्यादे समय तक न रही "चाकर चकुआ चतुर नर आठों पहर उदास" की लोकोक्ति के अनुसार सामान जो आने वाला था उसको सम्हालने और यथास्थान पहुँचाने का फिक्र आ उपस्थित हुआ। इतने मे सामान की लोरियाँ भी आ पहुँचीं। सामान यथास्थान जमाने में लगभग नौ बज गये थे। फिर थोडा बहुत भोजन कर के विश्राम किया। थकावट रूपी मदिरा के सेवन मे इतना नशा छागयाथा कि सुबह तक चेत नहीं हुआ।

हमारी इस सफर के मीलों और किराये का ब्योरा इस प्रकार हैः—

कहाँ से	कहाँ तक	मील		किराया आने जाने का					
				फर्स्ट क्लास			सेकिण्ड क्लास		थर्ड क्लास
		जुगराफिया	स्टेन्डर्ड	ए	बी	सी	ए	बी	डेक
बम्बई	लंडन	१६५०	१८९७	२१०५)	१८६०)	१६५०)	१४७०)	१३२०)	६९५)
लंडन	पोर्टसेड	१ १०	१५०७						
पोर्ट सेड	मारसल्स	१५०६	१७३३						
मारसल्स	कैले	•	५८५						
कैले	डोवर	०	२१						
डोवर	विम्बलडन (लण्डन)	०	६३						

फर्स्टक्लास से भी बड़ा और बढ़िया एक दर्जा केबिन डी लक्से (Cabin de Luxe) होता है। उसमें फर्स्टक्लास से भी अधिक आराम का आयोजन रहता है परन्तु उसके आने जाते के एक पूरे केबिन के किराए के रु० ३६४५) अर्थात् फर्स्टक्लास से भी रु० १५००)अधिक लगते हैं।

पी० एराड० ओ० कम्पनी ने अपने जहाज के मुसाफिरों के सुभीते के लिये ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मुसाफिरों को मार्सेल्स पर जहाज से उतरते ही स्पेशल ट्रेन मौजूद मिलती है और इसी तरह केले पर जहाज और डोवर पर भी स्पेशल ट्रेन तय्यार मिलती है। ऐसी ट्रेनों में एक ही दर्जा होता है और खाने पीने सोने का भी हर तरह का सुभीता रहता है। इस के एक सीट के किराए के मार्सेल्स से लराडन तक रु० २०२॥) लगते हैं।

लण्डन (London) दृश्य ।

चका चौंध सी चख लगत, लख लन्दन जग-जोत ।
चितवन हारे चितवतहि, चकित चित्र से होत ॥

विषय प्रवेश ।

वर्तमान लण्डन शहर का पहिला नाम लिनडिन (Llyndin) था। लिन (Llyn)* के माने तालाव या झील और डिन (Din) के माने पहाडी मे लिये जाते है। जहाँ पर कि अभी लण्डन पुल वना हुआ है, वहाँ पर पहिले टेम्स (Thames) नदी का पाट बहुत चौड़ा होने मे वह झील की भाँति दिखाई देता था और उसके समीप ही एक पहाड़ है जिस पर अभी सेन्टपाल गिरजा (St Pauls Cathedral) वना हुआ है। इसी मे इसका नाम लिनडिन पड़ा था। परन्तु जवकि रोमन लोगो (Romans) ने इस शहर को फतह करलिया तो उन्होने इसका नाम लोन्डोनियम (Londonium)§ रक्खा, जो विगड़ते सुधरते लण्डन नाम मे परिणत होगया।

---

* यह केलटिक (Celtic) है। § यह लेटिन (Latin) है।

इस समय लण्डन शहर, अंग्रेजी साम्राज्य की राजधानी है और इसके समान बड़ा शहर इस पृथ्वी पर दूसरा नही है। शहर का विस्तार लग भग सात सौ वर्गमील (Square miles) है और शहर की सब सड़कों की लम्बाई लग भग सात हजार मील है, जिसमें अधिक चौड़ी सड़कों की लम्बाई दो हजार दो सौ तेईस मील है, जिसपर पचास लाख रूपये तो रोशनी में खर्च होते है और इक्कीस हजार पुलिस तैनात है। लग भग चार लाख टेलीफोन (Telephone) इस्तेमाल के स्थान हैं और टेलीफोन का तार इतना फैला हुआ है कि जिससे अठावन वार सारी पृथ्वी लपेटी जा सकती है, परन्तु तारीफ यह है कि वाहिर एक भी तार दिखाई नही देता। लग भग तीनसौ रेलके स्टेशन है और कोई ढाईसौ मील में रेल की सड़क विछीहुई है। इस महा नगर की मनुष्य गणना लग भग पिचहत्तर लाख और भवन गणना चौदह लाख सत्तर हजार है।

लण्डन एक प्रसिद्ध वन्दर और व्यापार का केन्द्र स्थान है। यहाँ पर हजारों जहाज और लाखों मुसाफिर रोज आया जाया करते हैं और व्यापार्थ और सिद्धार्थ आये हुए, प्रत्येक देश के मनुष्य, प्रत्येक समय पर मौजूद मिलते है। ऐसे धनाढ्य नगर में सुन्दर और ऐतिहासिक

इमारतो की कमी नहीं है। यदि कोई निठल्ला आदमी होतो बराबर कई महिनों तक बिलकुल ही नई नई और एक २ से बढ़ कर इमारतें देखा करे। शहर, इतनी अधिक आबादी होने पर भी, बहुत ही कुशादगी से बसा हुआ है और जगह जगह पर बगीचे लगे हुए है, परन्तु कुछ बड़े बड़े बाग़ (पार्क) तो ऐसे है कि सुन्दरता मे अपनी जोड़ ही नही रखते। हर एक स्थान पर हवा का काफ़ी प्रबन्ध है और प्रकाश का काम बिजली से लिया जाता है। ट्रामें भी बिजली से चलाई जाती है। साल भर में कुल दश अरब रुपये बिजली की रोशनी मे खर्च होते है। छः लाख पौंड चाय और ढाई लाख पौंड साबुन रोज खर्च होता है।

शहर इतना विस्तृत होने पर भी नीचे से पोला है। रेल के स्टेशन और रेल की सड़कें, टेलीफोन और बिजली के तार, शहर के नीचे के हिस्से में है। बहुतसे मकानो के नीचे हो कर ट्रेने निकलती है और टेम्स नदी के नीचे होकर भी रेल की सड़क (Tunnel) गई है। नीचे के रेल के स्टेशनों पर जाने के लिये जगह जगह पर बड़े बड़े झूले (Lift) लगे हुए हैं। जो यन्त्र बल से चढ़ते उतरते हैं। इसी प्रकार बिजली की सीढ़ियें भी लगी हुई है। नीचे के हिस्से मे भी बिजली की रोशनी और टेलीफोन का प्रबन्ध

है और वहाँ तक हवा पहुँचाने के लिये ऊपर को पम्प (Pump) लगे हुए हैं, जिनके द्वारा ठूंस ठूंस कर हवा पहुँचाई जाती है और अंधेरा रहने से दिन में भी बिजली की रोशनी से काम लिया जाता है।

यह शहर इङ्गलैण्ड के दक्षिण पूर्व में टेम्स नदी के किनारे पर बसा हुआ है। जिसके गगन चुम्बित भव्य भवन, चमकती हुई और छेह न देने वाली लम्बी लम्बी सड़कें, चौड़े व सुन्दर बाजार, दरिया की तरह निरन्तर बहने वाला जन समूह और उसका गम्भीर नाद, लाखों परन्तु साफ सुन्दर मोटरों, बसो, ट्रामों आदि का नियमित रीति से गमनागमन, शहर के बीच में होकर निकलने वाली और अपनी पुलों द्वारा शहर के दोनों हिस्सों को एकमें मिला देनेवाली टेम्स नदी का अद्भुत सौन्दर्य, बीच बीच में खुले हुए और हरी हरी दूब जमे हुए विस्तृत परन्तु शोभा सम्पन्न मैदान, जगह जगह पर आए हुए सुन्दर पार्क (Park) व रात मे भी दिन का-सा भान करा देने वाला विद्युत प्रकाश इत्यादि देख कर के मनुष्य आश्चर्य चकित हो जाता है।

यह तो हुई ऊपरी दृश्य—सौन्दर्य की बात, परन्तु जब मनुष्य यहां के भव्य भवनो के भीतरी दृश्य, व्यापारियों की बड़ी बड़ी कोठियाँ, उनका सुप्रबन्ध तथा नम्र व्यवहार,

रेल, डाक, तार, पुलीस आदि का उत्तम प्रबन्ध, यहाँ के संग्रहालय, नाटक, सिनेमा, होटल, पुस्तकालय तथा यहाँ वालोंका हस्तलाघव, शिल्प दाक्षिण्य, मानवी चतुरता, वैज्ञानिक उद्योग, सामुद्रिक कला कौशल, व्यापार, सफाई, अध्यवसाय, शिक्षा सभ्यता, क्रीड़ा, आमोद प्रमोद, रहन सहन, वैभव व पारस्परिक व्यवहार को देखता है तो और भी अधिक आश्चर्य करता है।

तात्पर्य यह कि जिस बात में लीजिये उसी मे ही लगडन शहर सब शहरों का मुकुट मणि और एक अद्वितीय नगर हो रहा है। उसकी अतुल रूप राशि, अनुपम सुन्दरता और अपार वैभव को देख कर हमने जिस अलौकिक आनन्द का अनुभव किया है उसका शब्दों द्वारा व्यक्त करना हमारे ऐसे अल्पज्ञों के लिये सर्वथा ही असम्भव है। इस लिये हम तो "गिरा अनयन नयन बिन बानी" कह कर ही चुप लगा कर बैठ जाना चाहिये था, परन्तु उत्साह के अनुरोध से और कर्तव्य की प्रेरणा से यह विचार कर के कि "कुछ भी न करने से तो कुछ करना अच्छा ही है" हमने जो कुछभी देखा भाला है, उसे अपने सामर्थ्यानुसार आगे के प्रकरणों में प्रगट करने का साहस करते हैं।

बाज़ार, और सड़कें।

चौड़े चौड़े साफ़ सुन्दर बाज़ार और रास्तों में ऊँचे ऊँचे मीनार और गुम्बज, सत खंडी कोठियाँ, गगन स्पर्शी अट्टालिकाएँ, सुसज्जित दुकानें, बढ़िया बढ़िया पोशाकों में अपार नरनारियों का समागम तथा सैकड़ों बसों, मोटरों, ट्रामों इत्यादि सवारियों का जमघट, देख करके इन्द्र की अमरावती और कुबेर की कुबेरपुरी भी कदाचित लज्जित होजायगी। चौराहों की तो बातही छोड़दीजिये, कोई साधारण रास्ता तथा गली भी ऐसी नहीं मिलेगी कि जो शोभा सम्पन्न न हो और जहाँ के हजूम को देख कर मेला सा लगा हुआ प्रतीत न होता हो।

प्रत्येक सड़क के दोनों ओर पग डंडियाँ (Foot path) बनी हुई हैं, परन्तु सड़क के इस पार से उस पार को जाना अपने प्राणों को संकट में डालना है क्यों कि ज़रा चूका कि मरा! परन्तु इतनी भीड़ रहने पर भी ऐसा बहुत कम होता है कि गाड़ियाँ आपसमें लड़ जाएँ या मनुष्य कुचल जाएँ। प्रत्येक वाहन सड़क पर और मनुष्य पग डंडियों पर अपने नियत मार्ग में अर्थात् अपने बायीं ओर को दबे हुए चले जाते हैं।

सड़क के संगम (चौगद्दों) पर नीली वर्दी पहिने पुलीस वाला खड़ा रहता है। उस के हाथ उठाते ही सब सवारियें रुक जाती है। उस समय हजारो मोटर और बसें तथा असंख्य पैदल मनुष्य खड़े रहजाते हैं। चाहे कोई मनुष्य कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो और चाहे उसे जाने की बहुत जल्दी ही क्यो न हो, बिना पुलीस वालेका इशारा पाये अपनी सवारी को आगे न बढ़ायगा। उस अदने पहरे वालेकी आज्ञा बड़े से बड़े मनुष्य के लिये भी माननीय होती है। इस नियम का पालन होने से ही, ऐसे महान नगर की सड़कों पर आना जाना भय रहित हो रहा है।

योतो इस महानगर मे एक से एक बढ़ कर सैकड़ो सुन्दर सडकें है, परन्तु विस्तार भय से हम यहाँ पर सिर्फ कुछ सडकों का संक्षिप्त हाल ही निवेदन करेंगे।

विम्बल्डन और पटनी।

(Wimbledon & Putney)

यह दोनो जगह हमारी कोठी से समान फासले पर हैं, जहाँ पर हमें प्रायः हमेशे ही जाना पड़ता था। कहने को तो यह मुहल्ले ही कहे जाते है, परन्तु अपनी सुन्दरता,

व्यापार और अधिक भीड़ के कारण यह शहर को भी मात कर गये हैं। इन मुहल्लों में रेलवे स्टेशन, डाकघर, तारघर, नाटक, सिनेमा और बड़ी २ दुकानें हैं, जहाँ पर बहुत अधिक भीड़ रहा करती है। इन मुहल्लों की सुन्दर सड़कों पर हर समय मेला सा लगा रहता है।

चेरिङ्ग क्रास और ट्रेफल्गर स्क्वायर
Charing Cross & Trafalgar Square

यह इस नगर के बीच का हिस्सा है। यहाँ पर आठ नौ रास्ते इकट्ठे होते हैं। यहाँ से पाँच सात मील किसी ओर को चले जाइये, सुन्दर शहर ही बसा हुवा दिखाई देगा। यहाँ पर बहुत बड़ा चौक पड़ता है, जहाँ पर सुन्दर पानी के हौज़ और फव्वारे बने हुए हैं। यहाँ पर एक विशाल थम्भ खड़ा हुआ है, जो "नेल्सन् स्मारक" (Nelson's Monument) के नाम से विख्यात है। इस थम्भ पर ट्रेफलगर महासमर विजेता साहसी वीरवर नेलसन् (Nelson) की मूर्ती विराजमान है। इस स्थान का ट्रेफलगर नाम भी वीरों को उत्साहित करने के लिये उसी रण क्षेत्र का स्मरण दिलाता है तथा महावीर नेलसन् (Nelson) की रण-कुशलता का परिचय देता है। सच-मुच देश के महापुरुषों का समुचित आदर करना यहाँ के

National Gallery: St Martin's Church, Trafalgar Square, Gordon Monument, Nelson's Monument
नेशनलगैलेरी सेंटमार्टिन्स चर्च ट्रफलगार स्क्वायर गोर्डन मोनुमेन्ट नेलसन मोनुमेन्ट

निवासी ही जानते हैं। थम्भ के चारों कोणों पर पत्थर की बनी हुई विशालकाय सिंह मूर्तियाँ रक्खी हुई हैं। चौक के नीचे अन्डर ग्राउन्ड (Underground) और ट्यूब (Tube) रेलवे का ट्रेफलगर स्क्वायर (Trafalgar Square) स्टेशन है। चौक में बहुत से कबूतर चुगा करते हैं। ट्रेफलगर स्क्वायर के उत्तर की ओर नेशनल गैलेरी नाम का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा भवन है।

व्हाइट हाल (White Hall)

ट्रेफलगर स्क्वायर से एक सड़क पार्लिमेन्ट हाउस के चौराहे तक जाती है जो व्हॉइट हाल के नाम से प्रसिद्ध है। व्हाइट हॉल को, यदि लगडन (London) शहर की कुंजी कहें तो, इसमें कोई अत्युक्ति न होगी, क्योंकि इस सड़क के दोनों ओर को मुख्य २ कार्यालय और ऑफिसेज़ आये हुए हैं, जैसे फॉरिन ऑफिस (Foreign Office) होम ऑफिस (Home office) वार ऑफिस (War office) मिनिस्टर ऑफिस (Ministers office) हेल्थ ऑफिस (Health office) लेबर मिनिस्टर ऑफिस (Labour Ministers office) प्रिवी कौन्सिल ऑफिस (Privy Council office) बोर्ड ऑफ एज्युकेशन (Board of Education) इत्यादि २। मिलट्री ऑफिस (Military-

office) के बाहर दो सवार और एक सन्तरी फुलड्रेस (Full dress) अर्थात अपनी पूरी वर्दी चढाये बडी ही अकड़ के साथ हर समय पहरे पर (On duty) खड़े रहते हैं।

ब्रोम्पटन (Brompton)

हाइड पार्क के पीछे की तरफ से पटनी (Putney) की ओर को आते हुए हाइड पार्क होटल (Hyde Park Hotel) के पास में एक नाइटसब्रिज (Nights Bridge) नाम का मुहल्ला आता है, जिसके बीच में यह ब्रोम्पटन नाम की प्रसिद्ध सड़क है। इसी सुन्दर सड़क पर प्रसिद्ध २ व्यापारियों की कोठियॉ है। हर्डस् कम्पनी (Harrods Ltd) की प्रसिद्ध और बहुत बडी कोठी भी इसी सड़क पर है। हमारे यहॉ हर प्रकार का सामान इसी दुकान से आता था।

पिकेडली (Piccadilly)

हाइड पार्क और ग्रीन पार्क के बीच की सड़क से आगे बढ़ने पर पिकेडली नाम की प्रसिद्ध सड़क है और इस से आगे बढ़ने पर पिकेडली सर्कस (Piccadilly Circus) नाम का प्रसिद्ध चौराहा आता है, जहॉ पर पॉच प्रसिद्ध २ सड़को का समागम होता है। पिकेडली क्या है
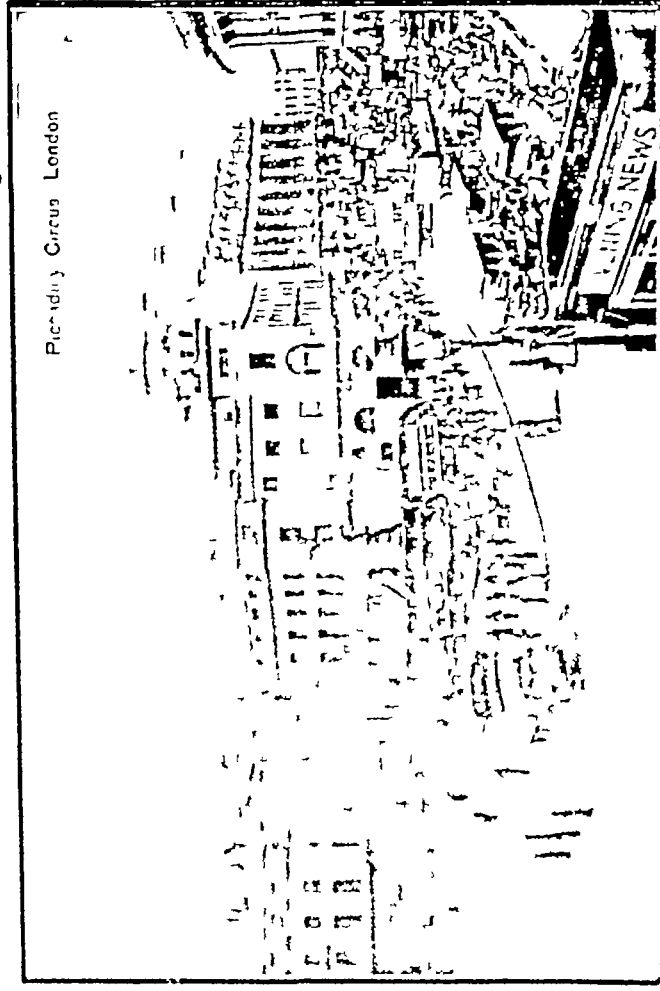
पिकेडिली सर्कस ।

मानो लण्डन की शोभा है । यहाँ की सड़क लण्डन शहर की और सब सड़कों से चौड़ी है और यहाँ की रोशनी (Light) दुनिया भर में विख्यात है । पिकेडली की सुन्दरता को भी सुन्दरता देने वाले यहाँ के विद्युत प्रकाश को देख कर गोस्वामी तुलसीदासजी की " सुन्दरता कहँ सुन्दर करही, छवी ग्रह दीप शिखा जनु बरही " की उक्ति का स्मरण हो आता है । नगर के नर नारी अमूल्य वस्त्राभूषणों से सज्जित हो कर, यहाँ पर भ्रमण करने आया करते हैं । संसार के अमूल्य से अमूल्य पदार्थ यहाँ पर बिक्री के लिये हर समय तैयार रहते हैं । रेशमी वस्त्र, जवाहिरात, आभूषण इत्यादि के ढेर के ढेर लगे हुए दिखाई देते हैं । यही कारण है कि यह कुबेरपुरी-पिके-डली-योरोप भर में विख्यात हो रही है । यहाँ पर बड़े २ रेस्टोरेन्ट्स (Restaurants) होटल (Hotel) नाटक, सिनेमा बने हुए हैं और इनके अतिरिक्त भी मनो तृप्ति के अनेकानेक साधन सुलभ होरहे हैं । पिकेडली में पूर्णतया रमणी राज्य ही दिखाई देता है, जहाँ रात्रि की [illegible] में, और इस प्रकार प्रसिद्ध विद्युत प्रकाश में, अगणित रमणियाँ, सुन्दर वस्त्र भूषण से भूषित और रूप गर्विता से अलंकृत अपनी कला से पुरुषों को आकर्षित करती हैं । इन ललनाओं को [illegible] तथा यहाँ की [illegible] हुए,

चातुर्य पूर्ण मधुर संभाषण, उनकी सहज सुन्दरता का विकाश ही नही करता, उन के रूप रत्न पर आवही नहीं चाढ़ाता, वल्कि अपनी सुन्दरता रूपी तलवार पर सान चढाता है ! ऐसे समय मे यदि किसी रेस्टोरेन्ट या होटल की छवी देखी जाय तो मानवी बुद्धि को भूलकर, स्वर्ग की अप्सराओं के साक्षात्कार का आनंद ही अनुभव किया जायगा ! रेस्टोरेन्टस् के खान पान नाच रंग में मस्त भाव से डूबी हुई सुन्दरियों के रूप लावण्य को देख कर ऐसा कौन मनुष्य होगा कि जो अपने आप को भूलकर उन्हीं को एकटक दृष्टि से न देखता रहजाय ? इसी मादकता के कारण यह पिकेडली कुछ अधिक प्रसिद्ध होरही है और जहँ तहँ पिकेडिली का नाम आतही लोक मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं।

विक्टोरिया स्ट्रीट (Victoria Street)

वेस्ट मिनस्टर एबे (Westminster Abbey) से आगे बढ़ने पर विक्टोरिया स्ट्रीट नाम की सुन्दर सड़क है। इसी सड़क पर रोमन केथोलिक कैथेड्रल (Roman Catholic Cathedral) नाम का प्रासिद्ध गिरजा घर है।

स्ट्रान्ड (Strand)

चेरिंग क्रास से आगे बढ़ने पर यह स्ट्रान्ड नाम की प्रसिद्ध सडक आती है। यह बड़ी धूम धाम की सडक है। यहाँ की दुकानों में बहुत अधिक भीड रहा करती है। इस सडक पर बडे बड़े थियेटर हैं और लण्डन कोर्ट भी इसी सडक पर बना हुआ है।

लड़गेट रोड (Ludgate Road)

स्ट्रान्ड रोड से आगे बढ़ने पर लडगेट हिल (Ludgate Hill) नाम का बाजार आता है। यह एक प्रसिद्ध बाजार है । इसी लडगेट हिल के चौकमें सेन्टपाल कैथेड्रल (St Pauls Cathedral) नाम का प्रसिद्ध गिरजाघर है। इस चौकमें बहुत से कबूतर चुगा करते हैं। इस सडक के बीच में एक प्रसिद्ध चौराहा है, जिसका नाम लडगेट सर्कस (Ludgate Circus) है। यहाँ पर बहुत सुन्दर और विशाल भवन बनेहुए हैं और प्रसिद्ध लोगों का समागम होता है।

कुइन विक्टोरिया स्ट्रीट

(Queen Victoria Street)

लडगेट सर्कस के चौक से आगे बढ़ने पर कुइन विक्टोरिया रोड नाम की सडक आती है। यह भी एक सुन्दर सडक है।

किंग स्ट्रीट (King Street)

कुइन विक्टोरिया स्ट्रीट से एक ओर चलने पर यह किंग स्ट्रीट नाम की सड़क आती है, जो जनरल पोस्ट आफिस (General Post Office) की ओर जाती है।

फ्लीट स्ट्रीट (Fleet Street)

इस सड़क पर बहुत से मुद्रणालय (छापेखाने) हैं। दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र पत्रिकाएँ, यहाँ से प्रकाशित होती है, और प्रति दिन नवीन रोचक पुस्तकें भी प्रकाशित हुआ करती है, जो साहित्य और विज्ञान का भंडार भरती हैं। इस सड़क पर बहुत चहल पहल रहती है। पुरुष और बालक दौड़ दौड़ कर समाचार पत्र बेचा करते हैं और साइकिल व मोटर लोरियाँ दौड़ाकर बहुत शीघ्रता से इस मानसिक भोजन को शहर भर मे पहुँचाया करते हैं।

ओक्सफोर्ड स्ट्रीट (Oxford street)

यह ओक्स फोर्ड स्ट्रीट, लण्डन की और सब सड़कों से लम्बी और एक दो सड़कों को छोड़ कर और सब सड़कों से चौड़ी है। इस सड़क पर भीड़ भी बहुत अधिक रहा करती है। बड़ी २ दुकानें और कार्य-

लिसेस्टर स्क्वायर ।

लय इस सड़क पर बहुतायत से आये हुए हैं । इस सड़क के बीच में भी एक बहुत बड़ा चौगान है और इसके चारो ओर को एक ही प्रकार के बने हुए विशाल भवन शोभा-यमान हैं । यहाँ पर लण्डन की प्रसिद्ध सड़क रीजेन्ट स्ट्रीट (Regent Street) का संगम होता है ।

लिसेस्टर स्क्वायर (Leicester Square)

यह एक प्रसिद्ध मुहल्ला है । यहाँ पर राज महल लि-सेस्टर हाउस (Leicester House) के आजाने से, इसका नाम लिसेस्टर स्क्वायर पड़ा । इस राज महल में पहले के राजा जॉर्ज द्वितीय (George II) और फ्रेडरिक (Frederick) के रहने से और किसी समय इस मुहल्ले में फ्रेंच, इटेलियन और भिन्न लोगों के वास करने से तथा यहाँ पर बहुत बड़े २ और अधिक संख्या में नाटकों तथा विश्रामालयों [illegible] के आ जाने से, इस मुहल्ले का नाम बहुत प्रसिद्ध होगया है । सन १८७४ ई० में प्रसिद्ध धनाढ्य बैरन ग्रान्ट (Baron Grant) ने यहाँ पर एक रमणीक बाग लगा कर इस के बीच में शेक्सपियर (Shakespeare) की और चारों कोनों पर न्यूटन ([illegible]) हन्टर (Hunter) हागर्थ ([illegible]) और रेनल्ड ([illegible]) की सुन्दर मानवी [illegible] बनी थीं । [illegible] पर रहने वाले

अत्याचारों का निवारण करने वाली राष्ट्रीय सभा (National Society for the Prevention of cruelty to children) का दफ्तर भी इसी जगह पर है । यह एक बहुत सुन्दर जगह है ।

इन प्रसिद्ध सड़कों के अतिरिक्त पिकेडली के इर्द गिर्द की प्रायः सभी सड़कें सुन्दर और प्रसिद्ध है, जहाँ पर बड़ी २ और प्रसिद्ध २ दुकानें और बड़े २ सिनेमा, नाटकघर तथा होटल इत्यादि है । इनमे से बोन्ड स्ट्रीट (Bond Street), हे मार्केट (Hay Market), शेफ्टसबरी एवेन्यु (Shaftesbury Avenue), सेन्ट जेम्स स्ट्रीट (St James Street), पाल माल (Pall Mall) और रिजेन्ट स्ट्रीट (Regent Street) आदि सड़कें, उल्लेखनीय है।

नदी, पुल और टनल

River, Bridges and Tunnels

कज्जल जला टेम्स नदी (Thames River) लण्डन शहर के बीच में होकर निकली है। इसका पाट चौड़ा है और पानी गहरा है तथा दिन में दो तीन दफा पानी चढ़ता उतरता रहता है। नदी में हजारों किश्तियें और स्टीमर दिन रात चला करने है। नदी के किनारों पर

गगन चुम्बित भवन और बड़े २ गोदाम तथा कार्यालय शोभा दे रहे हैं। इन गोदामों में स्टीमरों (Steamers) में माल चढ़ाया जाता है। बहुत से स्त्री पुरुष हवा खोरी के लिये ही स्टीमरों में घूमा करते हैं। नदी के शहर के बीच में आजाने से, कई प्रकार की सुविधाएँ हैं और शहर की शोभा द्विगुणित हो गई है।

समुद्र-तट के निकट होने और टेम्स नदी में काफी पानी रहने के कारण, लण्डन एक विशाल बन्दर भी है, और दुनिया का अधिकतम बन्दर है, जहाँ रोज हजारों जहाज आया जाया करते हैं। दूर से देखने से टेम्स नदी के ऊपर मस्तूलों का जंगल सा मालूम होता है। जहाजों पर माल चढ़ाने उतारने के लिये नदी-तट पर अनेकों जहाजी स्टेशन बने हुए हैं। यहां से दुनियाँ के सारे किनारों को माल लाया जाया करता है। लण्डन तथा [illegible]

शहर के दोनो हिस्सो को मिलाने के लिए इस नदी पर बीस बड़े पुल और चार टनल बने हुए हैं। पुलों की सुन्दरता, विशेष शोभा प्रद है। पुलो पर ट्रामें, ट्रेनें, मोटरें और घोड़ा गाड़िएँ इतनी अधिक गुज़रती हैं कि जिनका कुछ हिसाब ही नही हो सकता। पुलों के किनारो पर पैदल मनुष्यो के जाने के लिये पगडंडिएँ (Foot path) बनी हुई है। जो पुल जिस स्थान के पास आगया है वह उसी नाम से विख्यात है। टनल नदी के पानी के नीचे की ज़मीन को खोद कर निकाले गये है। इस में से तीन टनलो में से ट्यूब रेलवे (Tube Railway) गुज़रती है और एक टनल जो ग्रीनिच (Greenwich) के पास आगया है वह मनुष्यों के आने जाने के लिये बनाया गया है। कुछ प्रसिद्ध पुलो का हाल यहाँ पर दिया जाता है:—

लगडन ब्रिज (London Bridge)

यह पुल और सब पुलों से अधिक विख्यात है। इस पुल पर अन्यान्य सब पुलो से अधिक भीड़ रहती है। अनुमानतः एक लाख पच्चीस हजार पैदल और बीस हजार सवारियाँ रोज़ाना इस पुल पर से गुज़रती है। यह
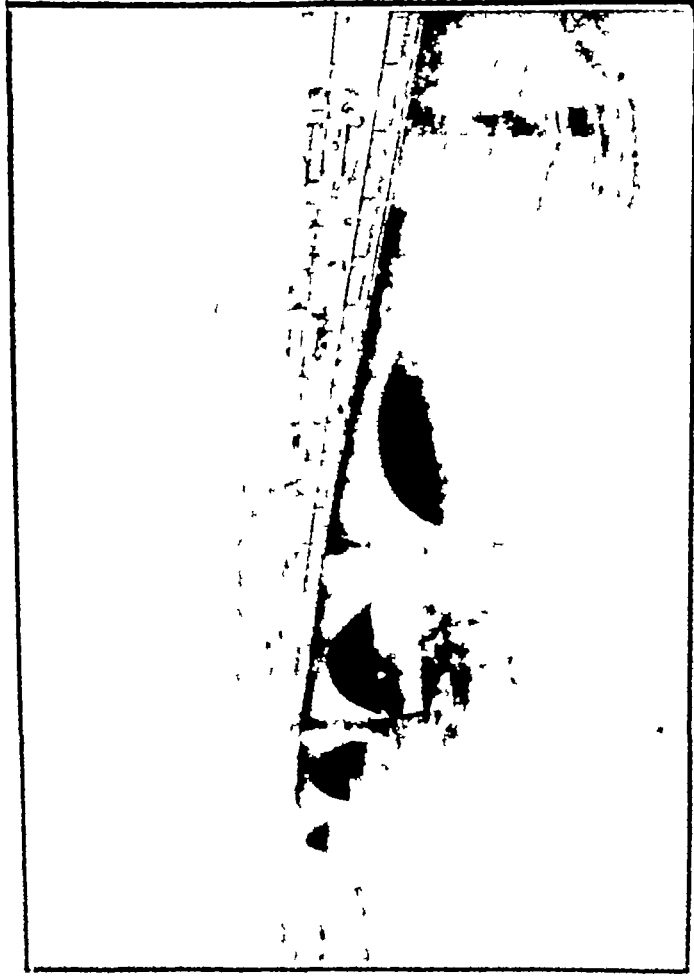
लण्डन ब्रिज। London Bridge

ब्रिज सन् १८३१ ई० में बन कर तैयार हुआ था। ब्रिज बहुत बड़ा और बहुत सुन्दर है।

टॉवर ब्रिज (Tower Bridge)

यह भी लण्डन ब्रिज के समान ही बहुत बड़ा और सुन्दर ब्रिज है। टॉवर नाम के किले के पास होने से यह ब्रिज, टॉवर ब्रिज के नाम से विख्यात है। इसकी बनावट बड़ी ही आश्चर्यकारक है। यह जैसा दूर से, वैसा ही पास जाने पर भी, सुन्दर प्रतीत होता है। यह ब्रिज सन १८९४ ई० में बन कर तैयार हुआ था। बनाने वालों ने बड़ी ही कारीगरी से इस ब्रिज को बनाया है। इसके बनाने में पन्द्रह लाख पाउन्ड अर्थात दो करोड़ पच्चीस लाख रुपये खर्च हुए थे। इस ब्रिज पर से चौबीस घन्टो मे तेरह हज़ार पाँच सौ सवारियाँ और पचपन हज़ार पैदल मनुष्य गुज़रते हैं। सब से बड़ी तारीफ़ इस पुल की यह है कि बड़ा जहाज़ आने पर पुल खोल दिया जाता है। यह कुल काम मशीन द्वारा होता है। कुल तीन मिन्ट में पुल खुल करके वापिस जुड़ जाता है। पुल के खुलने के एक मिनिट पूर्व सवारियाँ और मनुष्यो का आना जाना रोक दिया जाता है। इसके दोनों ओर टेलीफोन से काम लिया जाता है।

पटनी ब्रिज (Putney Bridge)

पटनी से लण्डन जाते समय इस ब्रिज पर होकर जाना पड़ता है। इसीलिये यह पटनी ब्रिज के नाम से विख्यात है। यह भी एक अच्छा पुल है। इसके एक ओर पटनी और दूसरी ओर फलहम नाम के दो लण्डन के प्रसिद्ध मुहल्ले हैं।

वाटरलू ब्रिज (Waterloo Bridge)

यह ब्रिज सन् १८०६ से १८१७ तक बन कर तैयार हुआ था। इसके बनाने में दस लाख पाउन्ड अर्थात् डेढ करोड़ रुपये लगे थे। इसके नीचे की महराब ग्रनाइट नाम के पत्थर की बहुत सुन्दर बनी हुई है, जो एक सौ बीस बीस फीट चौड़ी है।

वेस्ट मिनस्टर ब्रिज।
(Westminster Bridge)

यह लण्डन शहर की सब से बढ़िया और सुन्दर ब्रिज समझी जाती है। सन् १७५० मे यहांपर पत्थर की ब्रिज बनीहुई थी उसके ऊपर सन् १८५६ से १८६२ तक यह ब्रिज बनी है। इस पर से लण्डन शहर की शोभा बहुत सुन्दर मालूम होती है।

नदी पर के गोदाम हर समय माल से भरे रहते है, जिस मे यहाँ पर चूहे बहुत होगये है, जो माल को नुकसान पहुँचाया करते हैं। इस लिये उन गोदामों के चूहों को मारने के लिये बिल्लियाँ किराये पर लाई जाती हैं, जिससे यहाँ पर बिल्लियों के पालने का शौक बढ़ रहा है। एक मनुष्य के १५० बिल्लियाँ है, जिनके किराये की सौ पाउन्ड अर्थात् पन्द्रह सौ रुपयों की आमदनी प्रति मास होती है।

इमारतें।

चली हैं चूमने आकास को यह,
लिये उल्लासमय मृदुहास को यह।

लण्डन ऐसे शोभा सम्पन्न शहर में चाहे जिस रास्ते से चले जाइये और चाहे जिधर नजर उठाकर देखिये, एक मे एक बढ़िया इमारतें ही देखने को मिलेंगी। एक साथ और एक मे एक बढकर सैकड़ों सुन्दर इमारतो को आँखोके सामने पाकर मनुष्य की बुद्धि डावाँ डोल हो जाती है अर्थात् मनुष्य किसी एक ही इमारत पर स्थिर दृष्टि होकर नही रह सकता है, प्रत्येक की सुन्दरता मनुष्य को अपनी अपनी ओर खींचती रहती है।

इन सब इमारतों के सुन्दर दृश्य मनुष्य देख सके तो कैसे ? और उनका वर्णन करे तो क्योंकर ? हाँ, कुछ प्रसिद्ध इमारतें, जिनके देखने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है, उन्हीं की छवि छटा का कुछ उल्लेख यहाँ पर किया जाता है।

पार्लीमेन्ट भवन।

(House of Parliament)

हेनरी तीसरे (Henry III) ने अपने राजत्वकाल (सन् १२१६-७२) में जब एक कान्फ्रेन्स (Conference) प्रजा के दुखों पर विचार करने के लिये संगठित की तब तत्कालीन किसी समाचार पत्र ने उसे पार्लीमेन्ट कहा। उसी समय से इस शब्द ने इङ्गलैण्ड मे जड़ पकड़ली और इसी से, इङ्गलैण्ड की यह राष्ट्रीय सभा इसी नाम से प्रसिद्ध है।

यह पार्लीमेन्ट, सन् १२६५ ई० से स्थायी रूप से है और उसका आधुनिक स्वरूप सन् १८३२ ई० से है।

पार्लीमेन्ट में प्रजा की ओर से चुने हुए पंच एकत्र हो राज्य सम्बन्धी कार्यों पर विचार करते है तथा प्रजा क्लेश निवारण की सम्मति दृढ करते है और सत्य तथा धर्म के लिये न्योछावर होने का प्रस्ताव समर्थन करते है।
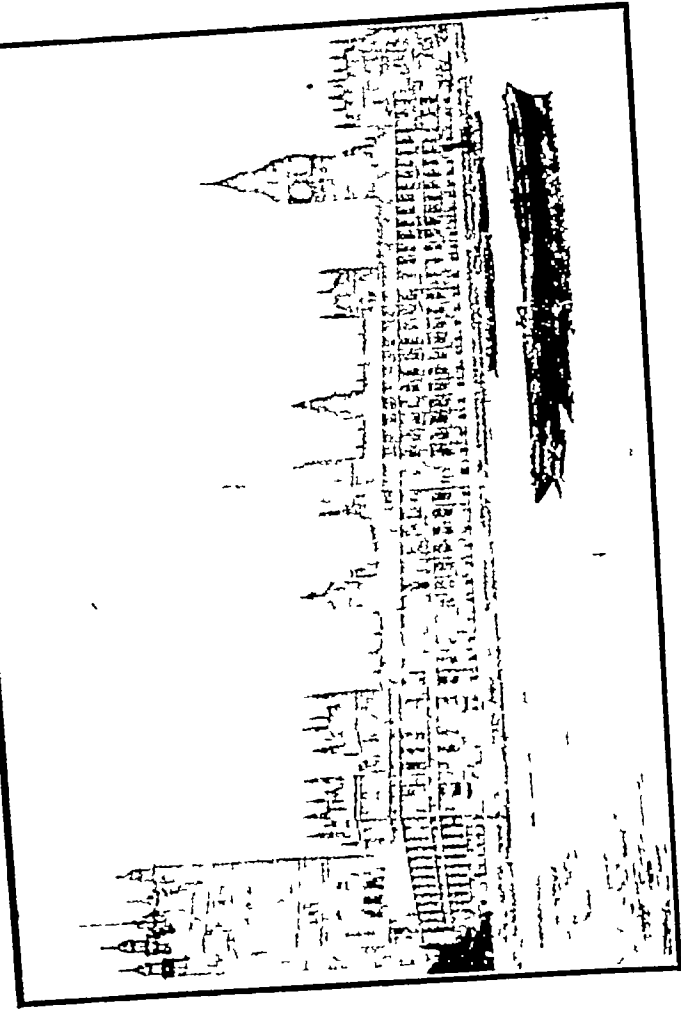
पार्लमिन्ट भवन। **Parliament House**

Lakshmi Art, Bombay, 8

यदि यह न्याय मन्दिर-विश्वप्रेम का दृढ़ स्मारक-इस देश में न होता तो यह देश कदापि इतनी अतुल कीर्ति प्राप्त नहीं करता। यहाँके मर्मज्ञ राजनितिज्ञो की कामना संसार में सदैव शान्ति फैलाने की रही है।

पार्लीमेन्ट का आरम्भ तत्कालीन राजा के निवास स्थान वेस्टमिनिस्टर महल (Westminster Palace) में हुआ था। परन्तु जब से कि राजा दूसरे स्थान पर रहने लगे और यह महल राजप्रासाद न रहा तो यह पार्लीमेन्ट हाउस के नाम से पुकारा जाने लगा। यहाँ पर एक बडा हॉल है जो अब भी वेस्टमिनिस्टर हॉल (Westminster Hall) के नाम से प्रसिद्ध है। मानो वह अपने पहले नाम का चिन्ह स्वरूप है।

वैसे तो यह इमारत बहुत पुरानी मानी जाती है परन्तु दो बार के भयंकर अग्नि-प्रकोपो से ऐसी ही सुन्दर बनी हुई इमारतें दो बार नष्ट प्राय होगई थी। यह अग्नि-प्रकोप, लण्डन के भयङ्कर प्रकोपो के नाम से इतिहास प्रसिद्ध है। वर्तमान विशाल भवन की नीव सन १८४० ई० मे रक्खी गई थी, जो सन १८५७ ई० तक बन कर तैयार हुआ था और इसपर तीस लाख पाउन्ड अर्थात्

साढ़ेचार करोड़ रुपये खर्च हुए थे। यह भवन कोई आठ एकड़ भूमी के विस्तार में है।

पार्लमिन्ट हाउस एक संसार प्रसिद्ध विराट् भवन है जिसका गौरवपूर्ण इतिहास बहुत माहात्मय रखता है। यह विशाल भवन वाइट हाल (White Hall), बर्ड केज वॉक (Bird cage walk), विक्टोरिया स्ट्रीट (Victoria Street), ग्रोवनर रोड (Grosvenor road) और वेस्ट मिनिस्टर ब्रिज रोड (Westminister Bridge Road) के संगम पर बना हुआ है। इसके नीचे होकर टेम्स नदी बहती है। सिर्फ शनिश्चरवार को दिन के दश बजे से साढ़ेतीन बजे तक ही इस भवन के भीतरी दृश्य देखे जा सकते है। हम लोग भी पार्लमिन्ट भवन देखने को तो शनिश्चरवार को ही गये थे परन्तु कामन्स सभा की कार्यवाही देखने को बृहस्पति वार ता० १६ जुलाई १९२५ को गये थे।

इस भवन के दोनों ओर को दो, और उन दोनों के बीच मे एक, कुल तीन मीनारें है। पहले मीनार को क्लोक टॉवर (Clock Tower) कहते है। यह चौकोर बना हुआ है और इसकी चौडाई हरतरफ से ४० फीट और ऊँचाई ३१६ फीट है। इसके चारों ओर विशालकाय घड़ियॉ शोभा देती है, जिनके बीचका व्याम (Diameter) तेईस

फीट है। इन घड़ियो के मिनिट के सुयो की लम्बाई १४ फीट और घण्टे के सुयो की लम्बाई ६ फीट है। घड़ियो के भीतर के अङ्क-चिन्ह दो दो फीट और उनके लटकन (Pandulum) तेरह तेरह फीट लम्बे है। दूसरी ओर के मीनार का नाम विक्टोरिया मीनार है। यह भी चौकोर बना हुआ है और इसकी चौडाई हरतरफ मे ७५ फीट और ऊँचाई ३३६ फीट है। इन दोनों के बीच का मीनार ३०० फीट ऊँचा है और यह हवा और प्रकाश के वास्ते बनाया गया है।

वैसे तो इस भवन में बहुत से कमरे. हैं जो अपनी २ प्रसिद्धता मे एक एक ही है. परन्तु इन सब में कुछ कमरे अधिक प्रसिद्ध है। भवन मे प्रवेश करते, उत्तर की तरफ हाउस ऑफ कामन्स (House of Commons) और दक्षिण की तरफ हाउस ऑफ लार्डस (House of Lords) नाम के सुन्दर कमरे हैं, जिन मे बैठ कर वे अपनी अपनी सभाएँ किया करते हैं। इन दोनो कमरो के बीच में एक बहुत बड़ा हॉल बना हुआ है। लार्ड भवन की सम्राट की कुर्सी, जो लार्ड भवन के दक्षिण पार्श्व मे उत्तर की ओर मुँह कर के रक्खी हुई है, वहाँ से कामन्स भवन के उत्तर पार्श्व मे दक्षिण की ओर मुँह कर के रक्खी हुई अध्यक्ष की कुर्सी

हॉल में होकर साफ नजर आती है। इन दोनों भवनों के आगे इन से लगा हुआ एक एक कमरा है और उन कमरों के पश्चिम की तरफ भी बड़े बड़े कमरे है, जिन में होकर इन भवनों में प्रवेश किया जाता है।

इस के बायीं ओर का बडा हॉल वेस्ट "मिनिस्टर हॉल" के नाम से प्रसिद्ध है। यह हॉल दूसरे सब हॉलों से बडा है, परन्तु यह आरास्ता नही है। यह एक इतिहास प्रसिद्ध हॉल है क्यो कि सन १२२४ ई० से सन् १८८२ ई० तक ला कोर्ट (Law Courts) का कार्य इसी हाल में संचालित होता रहा था और इस अरसाय में यहाँ पर कई इतिहास प्रसिद्ध घटनाएँ, घटित हुई थीं।

पास ही सेन्ट स्टिफिन्स हॉल " (St Stephens Hall) है, जिस में पार्लीमेन्ट के भूतपूर्व बड़े बड़े नीतिविशारदों की मूर्तियाँ रक्खी हैं; इसी से यह "सेन्ट स्टिफिन्स चैपेल" (St Stephen's Chapel) भी है, जहॉ तीन सौ वर्षों तक कामन्स सभा बैठी थी।

पार्लीमेन्ट हाउस के प्रत्येक कमरे की छत मे बढ़िया सोनेका काम किया हुआ है और दीवारों पर बढ़िया बढ़िया चित्र चित्रित हैं। उन चित्रो में बहुत से तो प्रसिद्ध लड़ाइयों के और बहुत से शाही खानदान सम्बन्धी हैं।

इस भवन में छोटे बड़े सब मिलाकर ग्यारह सौ कमरे (Apartments) हैं, जिनमें से सात सौ कमरों में तो सिर्फ स्मृतिचिन्ह (Monuments) ही रक्खे हुए हैं। कुल मिलकर लग भग एक सौ के ज़ीने है।

कामन्स सभा

इस कमरे में इस सभा ने ता० १३ मई १८५० ई० को प्रवेश किया था। यह कमरा बढ़िया लकड़ी की कोरनी के काम से सजा हुआ है। इसके तीनो तरफ चमड़े की पोशिश से मंडी हुई वेन्चो की तीन तीन लाइन करीने से सजाई हुई है, जिन पर ४७० मेम्बर बैठ सकते हैं। इस सभा के मेम्बरों की संख्या तो ६७० है, परन्तु सभी मेम्बर एक ही समय पर इकट्ठे नहीं होते। जिस मेम्बर का जिस विषय से सम्बन्ध रहता है, उसका उसी विषय पर विचार होते समय उपस्थित रहना आवश्यक होता है। कमरे के बीच में एक मेज रहती है और मेज के सिरे पर तीन कुर्सियाँ रहती हैं। एक कुर्सी पर सभा का सेक्रेटरी (Secretary) और दो पर दो बैरिस्टर क्लर्क (Barrister Clerk) बैठते हैं, जो सभा की कार्यवाही लिखते हैं। कमरे के प्रवेश द्वार के सामने और उन तीनों कुर्सियों के पीछे की ओर एक बड़ी कुर्सी अध्यक्ष (Speaker) की रहती है। अध्यक्ष ही इस कामन्स सभा का संचालन

करता है और उसी की आज्ञा से सभा विसर्जित होती है परन्तु वाद विवाद का निपटारा बहुमत से होता है। अध्यक्ष सिर्फ इज्जत के लिये ही होता है। मेज पर प्रथम श्रीमान् सम्राट का न्याय दंड (Rod of justice) रख दिया जाता है तब सभा की कार्यवाही शुरू की जाती है। जो मेम्बर बोलना चाहता है वह सीट (Seat) पर खड़ा होकर बोलता है। सब मेम्बरों का जवाब अध्यक्ष क्रमशः देता है। सभा की कार्यवाही, सोम, मङ्गल, बुध, बृहस्पति को दिन के पौनेतीन बजे से रात के ग्यारह बजे तक और शुक्र को दिन के बारह बजे से शाम के पाँच बजे तक होती है।

अध्यक्ष के ऊपर की गैलेरी में अखबारों के रिपोर्टर्स (Press Reporters) बैठते है और उनके पीछे एक ऊँची गैलेरी होती है, जहाँ पर मेम्बरों की स्त्रियाँ बैठा करती है और जिसके बाहिर की तरफ जाली लगी हुई होती है। कहा जाता है कि एक बार एक स्त्री ने किसी मेम्बर पर प्रहार कर दिया था, तभी से यह जाली लगाई जाती है।

दोनों ओर के मेम्बरों की सीटस् (Seats) के ऊपर की गैलेरियाँ तो मेम्बरों के हितार्थ ही रहती है, परन्तु

इन गैलेरियों मे जुडती हुई अर्थात् अध्यक्ष के सामने की सीटस् (Seats) के ऊपर को एक वहुत वड़ी गैलेरी होती है, जिसमें प्रतिष्ठित पुरुष वैठा करते है, जो यातो किसी मेम्वर की इजाजत लेकर आते है या लार्डो के भेजे हुए होते हैं। हम लोग भी इसी गैलेरी में वैठे थे। इस गैलेरी में पहुँचने से पहिले विजिटर वुक (Visitors' Book) में अपना नाम और पता लिखना पड़ता है।

हम लोगों को प्रथम तो इण्डिया आफिस (India Office) में लिखकर के पास हासिल करना पड़ा था और उस पास से पार्लीमेन्ट हाउस में प्रवेश करने पर, सारजेन्ट आफिस (Office of the Sergeant Arms) में जाकर दूसरा पास लेना पडा था, और फिर वहुत देर के वाद ऊपर जगह खाली होने की सूचना मिलने पर, इस सुन्दर दृश्य के देखने का अवसर प्राप्त हुआ था।

हम लोगो को कोई दो घंटो तक उक्त सभा की कार्य्यवाही देखने का सौभाग्य मिला था। सभा में वडी ही शान्ति के साथ जल सेना सुधार पर विचार हो रहा था।

लार्डस सभा

यह कमरा सन १८०० ई० में वना था। यह कभी तो वॉइटहॉल (White Hall) और कभी प्रार्थनालय (Court of request) कहलाता रहा।

ता० १३ अप्रेल सन् १८८७ ई० को इस लार्ड सभा ने इस कमरे में प्रवेश किया था। इस सभा के कुल ४७८ मेम्बर हैं। मुख्यतः इस सभा का इतना ही अधिकार है कि कोई भी नया कानून बिना इसकी मंजूरी के नहीं बन सकता। इस सभा को न तो कामन्स सभा जितना काम है और न यह रात के ग्यारह बजे तक बैठती है। यह तो अपने काम की आवश्यकता के अनुसार कभी एक घंटा तो कभी दो, तीन, चार घंटे भी, बैठ कर के अपनी कार्य्यवाही कर लिया करती है। इस सभा की कार्य्यवाही के देखने का अवसर सिर्फ उन्हीं लोगों को मिल सकता है जिनके लिये कि कोई लार्ड अपनी ओर से सिफारश करे। कमरे में चारों ओर गैलेरियाँ बनी हुई हैं। कमरे के दक्षिण पार्श्व में कुछ ऊपर को उठी हुई दो कुर्सियाँ, सिंहासन के समान लगी हुई हैं, जिन पर श्रीमान् सम्राट और श्रीमती सम्राज्ञी, जब इस भवन में पधारते हैं तो विराजा करते हैं। इन कुर्सियों के सामने एक लम्बी मेज़ लगी हुई है। उसके सिरे पर जो कुर्सी लगी हुई है, उस पर लार्ड चान्सलर (Lord Chancellor) बैठते हैं। उनके पीछे तीन कुर्सियों पर सभा के मंत्री और क्लर्क आदि बैठा करते हैं। यह कमरा कामन्स सभा के कमरे से कुछ अधिक सजा हुआ है।

हाउस आफ लार्डस के कमरे के पीछे की ओर को रोयल गैलेरियाँ (Royal Galleries) हैं, जहाँ पर बड़े २ चित्र टंगे हुए हैं। उनके पीछे श्रीमान् सम्राट के पोशाक बदलने का कमरा है। जब श्रीमान् सम्राट, लार्डसभा में पधारते हैं तो गैलेरियों में होते हुए बड़े ही जलूस के साथ पधारा करते हैं।

इसी हाउस के पीछे नदी की तरफ स्पीकर (Speaker) के रहने का स्थान है, जिसके आगे थोड़ा बाग लगा हुआ है और उसके पीछे कामन्स और लार्डस् की लाइब्रेरियाँ (Libraries) हैं और जिनके बीच में डाइनिङ्ग रूम (Dining Room) अर्थात भोजनालय है। श्रीमान सम्राट के भवन में प्रवेश करने का द्वार विक्टोरिया टॉवर (Victoria Tower) के नीचे है। यह स्थान टेम्स नदी (River Thames) के किनारे पर आजाने से बहुत सुन्दर प्रतीत होता है। इसके सामने पाँच छः रास्तों का मिलान होने से यहाँ पर हर समय पर बहुत अधिक भीड़ रहा करती है। इसके पास ही अन्डर ग्राउन्ड रेलवे का स्टेशन है।

बकिंघाम महल (Buckingham Palace)

यह राज-प्रासाद लण्डन प्रसिद्ध ही नहीं, बल्कि संसार प्रसिद्ध स्थान है। हमारे सम्राट जब लण्डन शहर में पधारते है, तब इसी महल में रहा करते है। इस महल के आगे एक विशाल चौक और चौरास्ता है जो सुन्दर सड़कों से शोभायमान है। जिसके बीचमें सम्राज्ञी विक्टोरिया का स्मारक, "विक्टोरिया मेमोरिल" (Victoria Memorial) सफेद संगमर्मर का बना हुआ है जो यहाँ की विशेष शोभा वृद्धि कर रहा है। यह महल सुन्दर कुंज मे घिरा हुआ है और यहाँ से दूर दूर तक हरी हरी दूब ही दूब बिछी हुई दिखाई देती है। इस महल के बायी ओर को कुछ फासले पर ग्रीनपार्क (Green Park) है। नजदीक में और किसी बड़े भवन के न होने से यहाँ की शोभा और भी अधिक शोभा सम्पन्न और चिताकर्ष प्रतीत होती है। यह महल शहर के बीच मे आया हुआ है। महल के सामने हर समय सन्तरी अपने फुल ड्रेस (Full dress) में टहलते रहते है।

विण्डसर कासल (Windsor Castle)

यह मुख्य राज-प्रासाद है, जो लण्डन मे पच्चीस मीलके फासले पर और टेम्स नदी के किनारे पर, एक

ऊँची जगह पर, बना हुआ है। इसमें पहले के सम्राट रहते आये है और वर्तमान सम्राट भी प्रायः रहा करते हैं। इस विशाल भवन में बहुत से शाही मकानात बने हुए है। सम्राज्ञी विक्टोरिया ने इसमें कुछ मकानात बनवाने में कोई नौ लाख पाउन्ड खर्च किये थे। शाही खानदान के बड़े महमान प्रायः इसी स्थान पर ठहराये जाते है। भवन बहु मूल्य चित्रो आदि से सजा हुआ है। भवन के नीचे होमपार्क (Home Park) और गेटपार्क (Gate Park) नाम के दो बड़े और सुन्दर बाग आये हुए हैं। होमपार्क के तीनों तरफ टेम्स नदी के बहते रहने से और गेटपार्क के दक्षिण की ओर विर्जिनावाटर (Virginia water) नामी, प्रसिद्ध और सुन्दर झील के आजाने से इस महल की शोभा अत्यन्त मनोहारिणी हो गई है। पहिला बाग चार सौ. और दूसरा. अठारह हजार एकड़ भूमिमें है। नदी के उस पार एटन (Eton) नामका एक गॉव है, जहॉ का एटन कॉलेज (Eton College) बहुत प्रसिद्ध है। इस कॉलेज की स्थापना हेनरी छट्टे (Henry VI) ने सन १४४० ई० में की थी। इस कॉलेज के सामने एक मेमोरियल (Memorial) बना हुआ है जो दक्षिण अफ्रीका (South Africa) वार में मरे हुए वीरो की यादगार मे बनाया गया था। इस के पास ही एक स्कूल (School)

और लाइब्रेरी (Library) है। यह लाइब्रेरी दो सौ वर्षों से स्थापित है। इसमें २५ हजार अप्राप्य ग्रन्थों का अमूल्य संग्रह है। कई ग्रन्थ तो ऐसे हैं कि जिन के नाम संसार के किसी पुस्तकालय की सूची में नहीं मिलते। जापान के युवराज, जब इसे देखने आये थे, तो उन्होंने भी चार सौ महत्त्व पूर्ण जापानी ग्रन्थ-रत्न इस के भेंट किये थे। यहाँ पर लण्डन से दिन में कई ट्रेनें (Trams) और बोट (Boats) आते जाते रहते हैं।

नेशनल गैलेरी (National gallery)

चेरिंग क्रोस (Charing cross) और ट्रेफलगर स्क्वायर (Trafalgar square) जो शहर के बीच का हिस्सा है और जहाँ आठ नौ रास्ते इकट्ठे होते है, वहाँ पर एक चौक पड़ता है। उस चौक के ऊपर की तरफ नेशनल आर्ट गैलेरी (National Art Gallery) नाम की एक बहुत बड़ी इमारत बनी हुई है, जिस में प्राचीन व आधुनिक समय के मुग्ध करदेने वाले स्मारक चिन्ह, अनुपम वस्तुएँ तथा प्रत्येक प्रदेश के चकित करदेने वाले पदार्थ रक्खेहुए हैं। विशेष कर यहाँ पर पृथ्वी भर के सिद्धहस्त चित्रकारों द्वारा चित्रित, उत्तमोतम चित्रों का अमूल्य संग्रह है। चित्र बड़े ही नयनाभिराम हैं और सुन्दर ढंग से सजे हुए हैं। चित्रों

में अन्यान्य प्रकार के चित्रों के साथ ईसाई धर्म के ऐतिहासिक चित्रों का भी सुन्दर संग्रह है। किसी किसी चित्र की कीमत तो लाख लाख रुपयों से भी अधिक बतलाई जाती हैं। खास कर यह इमारत इन्हीं चित्रों के लिये बनाईगई है, जिस का एक एक कमरा इतना बड़ा है कि जिसे देख कर ताज्जुब करना पड़ता है। इन कमरों की छतोंमें प्रकाश के वास्ते काँच के रोशनदान बने हुए हैं और नीचे को लकड़ी का सुन्दर फर्श बंधा हुआ है, जो काँच के समान चिलकता है। हजारों मनुष्यों के प्रतिदिन आते जाते रहने पर भी कमरों में रजकण का नाम तक दिखाई नहीं देता। कमरों की फर्श के नीचे चारों ओर को गैसपाइप (Gas pipe) लगे हुए हैं जो नहीं दिखते हुए भी, सरदी की मौसम में कमरों को गरम रखते हैं।

हेम्पटन कोर्ट (Hampton Court).

यह भी एक शोभा सम्पन्न और देखने योग्य भवन है। यह लण्डन से पन्द्रह मील के फासले पर टेम्स नदी के किनारे पर बनाहुआ है। इस भवन को सन १५१५ ई० में कार्डीनल वुल्सले (Cardinal Wolsley) ने जो उस समय का एक प्रभावशाली पुरुष था, अपने रहने के लिये बनवाया था. परन्तु उस समय के सम्राट हेनरी अष्टम

(Henry VIII) के विरोध से विवश होकर उसे यह भवन सम्राट को समर्पित कर देना पड़ा और जब से ही यह भवन राज-सम्पत्ति माना जाता है। इस भवन में कुल मिलाकर एक हजार कमरे हैं। प्रत्येक कमरे की दिवारों पर सम्राट का दिनचर्या-विवरण लिखा हुआ है और बहुत बड़े २ और एक से एक सुन्दर तेल चित्र (Oil paint pictures) टंके हुए हैं। भवन के मुख्य द्वार पर एक बहुत बड़ी ज्योतिष-घड़ी लगी हुई है। कुछ कमरों में तो लोग रहते हैं और कुछ सिर्फ देखने के लिये ही रक्खे गये हैं, जिनमें से एक कमरा प्राचीनसमय के शस्त्रों से सजा हुआ है। इस भवन के दोनों ओर को सुन्दर बाग लगा हुआ है, जिसमें एक अंगूर की बेल और कुछ वृक्ष दो सौ वर्षों से भी अधिक पुराने हैं। एक बेलिया की बेल इस प्रकार से लगी हुई है कि जिसके बीच में प्रवेश करके मनुष्य रास्ता भूल जाता है इसी लिये यह बेल भूल भुलैया के नाम से विख्यात है। इस बाग की फुलवाड़ी ऐसी मालूम होती है जैसे कोई रंग बिरंगा कालीन बिछा हो। भवन के सामने ही सुन्दर झील आई हुई है। पास ही नदी है, जिसके जल पर लोग हाउस बोटों (House boats) में रहा करते हैं।

यहाँ की शोभा बड़ी ही हृदय ग्राही और नयन रंजक है। इस भवन के देखने में छः पेन्स (Six pence) का टिकिट लगता है।

क्रिस्टल महल (Crystal Palace)

लण्डन के आस पास की इमारतों में यह भवन भी एक देखने लायक इमारत है। कहा जाता है कि सन १८५१ ई० में हाइड पार्क (Hyde Park) में एक बहुत बड़ी शिल्प-प्रदर्शनी (Art exhibition) हुई थी, उसी के सब सामान को सजा कर रखने के लिये इस भवन का निर्माण हुआ था। यह भवन सिर्फ काँच और लोहे का ही बना हुआ है। छतें और दीवारें तक काँच की बनी हुई है। यह भवन सन १८५४ ई० में खुला था। इस भवन की कुल जमीन कोई दो सौ एकड़ होगी। भवन के दोनों ओर जो दो बड़े २ मीनार बने हुए हैं, जिनकी ऊँचाई २८२ फीट है। एक मीनार पर चढ़ने की इजाजत है जिस पर से लण्डन के चारों का दृश्य बहुत दूर तक दिखाई देता है, जो बहुत ही मनोहर मालूम होता है। भवन के सेन्ट्रल हाल (Central Hall) की लम्बाई सोलह सौ फीट है। इस हाल के बीच में एक गोल [illegible] विशाल हॉल है, जिसमें प्रायः बड़ी २ सभाएं हुआ करती

है और जहाँ पर पाँच हजार स्त्री पुरुषों के बैठने का स्थान है। यहाँ पर एक ओरगन (Organ) नाम का बड़ा बाजा है, जिसके ८३८८ स्वर (Pipes) हैं। भवन के बड़े हॉल से लगे हुए कमरों में अजायब घर (Museum) के तौर पर बहुत सा बढ़िया सामान सजाया हुआ है, जिसमे बहुत सा लकड़ी का सामान है जिस पर खुदवाँ काम किया हुआ है। इस सामान में एक लकडी की बडी गैलेरी भी है, जिस पर देवनागरी लिपि में लिखा हुआ है कि—"जो दृढ़ राखे धर्म को ताहि राखे करतार" जिससे मालुम होता है कि यह मेवाड़ की बनी हुई है। इसके सिवाय, कश्मीर का बना बढ़िया लकड़ी का सामान भी है। इस भवन की विशालता के कारण फुलावर शो (Flower Show) आदि बड़े २ खेल उत्सव यहाँ पर हुआ करते हैं। बहुत से खेल तमाशे नाटक सिनेमा आदि के अन्दर रहने से यहाँ पर हमेशे ही देखने वालों की भीड़ लगी रहती है। यहाँ पर खेल तमाशे की बहुत सी छोटी २ मशीनें लगी हुई है, जो पेनी (Penny) डालने पर थोड़ी देर तक अपने आप चलती रहती हैं।

भवन के आगे बड़ा अच्छा बाग़ और मैदान है। बाग़ के बीच में हौज फव्वारे आये हुए हैं जो यहां की शोभा को बढ़ा रहे हैं।

इस भवन में एक छोटा परन्तु बढ़िया मकान हिन्दु-स्थानी शाही जमाने का दिखलाया गया है, जिसमें बढ़िया चित्रकारी किये हुए काँच लगे हुए हैं। इसी प्रकार का एक इजिप्ट (Egypt) की कारीगरी का नमूना भी दिखलाया गया है।

महा समर के समय में यह भवन जहाज़ी बेड़े के रहने का स्थान बना दिया गया था, परन्तु सन १९२० में पबलिक (Public) के देखने के लिये पीछा खोल दिया गया।

यहाँ पर खाने पीने के लिये होटल हैं और यहाँ आने के लिये रेलवे स्टेशन है।

इंडिया ऑफिस (India Office)

इंडिया आफिस का भवन व्हाइट हाल (White Hall) सड़क की डाउनिंग स्ट्रीट (Downing Street) और चार्लस स्ट्रीट (Charles Street) के बीच के हिस्से में हैं। ऑफिस

(Home Office) और फॉरिन ऑफिस (Foreign Office) के पास में बना हुआ है। इस के बाहर की तरफ सेन्ट जेम्स पार्क (St James Park) आगया है। यह भवन बाहर से तो अधिक बडा मालूम नही होता परन्तु भीतर से बहुत बड़ा है। भीतर बड़े बड़े हर एक मद के अलग अलग ऑफिस हैं। जिन के अंदर बड़े बड़े सुन्दर चित्र लगे हुए है। भवन के बाहिर भूतपूर्व भारत मंत्रियों की बडी बड़ी पत्थर की मूर्तियॉ बनी हुई है। इस समय भारत में मंत्री (Secretary of State for India) लार्ड बर्किन हेड (Lord Birkenhead) है। और उनके सेक्रेट्री कर्नल बेनरमेन (Colonel Bannerman) है, जो जोधपुर लांसर (Jodhpur Lancers) में रह चुके हैं और भूतपूर्व जोधपुर नरेश श्रीमान् महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री श्री सरदार सिंहजी साहब बहादुर जी. सी. एस. आई. जबकि योरोप यात्रा को पधारे थे तो यह भी उनके साथ मे गये थे।

प्राइम मिनिस्टर का निवास स्थान

(Official residence of the Prime Minister)

यह इंडिया आफिस के पीछे की ओर डाउनिंग स्ट्रीट के १० नम्बर का मकान है। यह मकान, जो व्यक्ति कि प्राइम मिनिस्टर के पद पर रहते है, उनको रहने के लिये

जब प्रिन्स की हैसियत मे थे तब इसी भवन में निवास करते थे । इस समय इस भवन में हमारे सम्राट की मातेश्वरी अलेग्जेन्डरा (Queen Alexendria) रहा करती है।

लेम्बेथ पैलेस (Lambeth Palace)

यह भवन शुरू में सन् ११९७ ई० मे सुप्रसिद्ध आरकीविशप ऑफ केन्टरबरी (Archbishop of Cantarbury) के रहने का स्थान था। इस भवन के भीतरी भाग के देखने की भी आम इजाजत नहीं है, परन्तु हाँ यहाँ के पादरी से इजाजत लेकर, देखा जासकता है । इस भवन में ५४००० पुस्तकों का, बड़ा सुन्दर संग्रह है, जिनमें कोई २४००० पुस्तकें हस्तलिखित हैं । यह भवन वेस्टमिनिस्टर ब्रिज (Westminster Bridge) के पास में बना हुआ है ।

फलहम पैलेस(Fulham Palace)

यह भवन पटनी ब्रिज (Putney Bridge) के पास है । इस भवन के देखने की भी, और भवनों के समान ही, पबलिक को इजाजत नही है । यह भवन सन १३०० ई० में बना था और बिशप ऑफ लण्डन (Bishop of London) के रहने का मुख्य स्थान था ।

रॉयल एलबर्ट हॉल Royal Albert Hall.

यह हॉल एग्जीबीशन रोड (Exhibition Road) पर रोयल जोगरोफिकल सोसाइटी (Royal Geographical Society) के पास में है। इसकी गणना दुनिया भर के सब से बड़े हॉलों में की जाती है। यह प्रिन्स कन्सर्ट (Prince Consort) का स्मारक भवन है जो सन १८७१ ई० में बन कर तैयार हुआ था। इसके बनाने में दो लाख पाउण्ड अर्थात तीस लाख रुपये खर्च हुए थे।

वैसे तो यह हॉल बड़ी २ सभाओं के काम में आया करता है परन्तु अधिकतर यहाँ पर संगीत विद्या की सभाएं हुआ करती है, इसलिये यह हॉल बहुत प्रसिद्ध है। इस में कुल ९००० मनुष्य बैठ सकते हैं। इस में एक बड़ा ओरगन है (Organ) जिसके ९००० पाइप (Pipe) अर्थात स्वर हैं।

सोमरसेट हाउस (Somerset House)

यह भवन नदी के किनारे पर बना हुआ है। इसको प्रोटेक्टर सोमरसेट (Pro[illegible] Som[illegible]) ने बनवाया था। चार्ल्स प्रथम (Charles I) के राज्य में इस भवन की गणना भी सरकारी भवनों में होने लगी। और [illegible]

देखने की पब्लिक को इजाजत है। भवन के पूर्व के हिस्से मे कुछ सरकारी दफ्तर हैं, जिनमें ऑडिट, इंगलैण्ड रेवेन्यू, रजिस्ट्री आदि प्रसिद्ध हैं। भवन के बीच के हॉल में चौदहवीं शताब्दी के पश्चात के प्रसिद्ध पुरुषों के हस्तलिखित वसीयतनामों का सुन्दर संग्रह है, जिनमें शेक्सपियर (Shakespeare) सर आइजिक न्युटन (Sir Issac Newton) डा० जोन्सन (Dr Johnson) इत्यादि सुप्रसिद्ध हैं।

यहाँ पर फ्रान्स के प्रसिद्ध सम्राट वीर शिरोमणि नेपोलियन बोनापार्ट (Nepoleon Bonapaite) का भी हस्तलिखित वसीयतनामा था, परन्तु सन् १९५३ ई० की सन्धि के अनुसार वह वसियतनामा फ्रांस सरकार को लौटा दिया गया।

मोनुमेन्ट (Monument)

लण्डन ब्रिज (London Bridge) के पास में एक मोनुमेन्ट नाम का स्मारक भवन बना हुआ है। सन् १६६६ ई० में इस मुहल्ले मे एक भीषण अग्नि-प्रकोप हो गया था, जिसमें दस करोड़ की जायदाद जल कर भस्मीभूत हो गई थी। उसी अग्नि-प्रकोप के यादगार में सन् १६७१ ई० में, इस मोनुमेन्ट की स्थापना हुई थी।

इस मोनुमेन्ट के मीनार की ऊँचाई २०२ फीट है और मीनार के ऊपर चढ़ने के लिये ३४५ सीढ़ियाँ हैं। मीनार के अन्दर हवा आने के लिये जगह जगह पर तावदान बने हुए हैं और प्रकाश के लिये गेस लाइट (Gas light) का प्रबन्ध है। मीनार के ऊपर चढ़ने के लिये तीन पेन्स का टिकिट लगता है।

यद्यपि लण्डन नगर हमने घूम फिर कर अच्छी तरह से देख लिया था, परन्तु इस मीनार पर चढ़ कर देखने से ऐसा मालूम होता है कि मानो लण्डन का वह दृश्य-सौन्दर्य चित्रवत् सामने आगया है। लण्डन के दृश्य-सौन्दर्य का इस प्रकार सिंहावलोकन करने में असीम आनन्द प्राप्त होता है। जब हाथ में दुरबीन उठाकर देखते हैं, तो आस पास की तो बात ही क्या, दूर दूर तक के सुन्दर [illegible] भी ज्यों के त्यों ही दिखाई देते हैं। पास ही में बहता [illegible] सुन्दर टेम्स नदी और उसमें चलती हुई हजारों नाव [illegible] ही [illegible] मालूम होते हैं।

इस मोनुमेन्ट [illegible] देखकर [illegible] दिल्ली के कुतुबमीनार का स्मरण [illegible] देखने [illegible] है तो [illegible] होता है। [illegible] समाप्त [illegible] भी [illegible]

समय का संसार प्रसिद्ध दिल्ली शहर है। यहाँ पर अभी कला कौशल का राज्य है तो वहाँ पर भी कभी भूत कालीन कारीगरी का साम्राज्य था। यहाँ पर वर्तमान समय के सम्राट वास करते हैं तो वहाँ पर पूर्व कालके सम्राट वास करते थे। लण्डन, इंगलैण्ड की राजधानी है तो दिल्ली भारत की राजधानी थी और है। इन सब बातो में साम्यता के रहते हुए भी एक बहुत बड़ा अन्तर दिखाई देता है और वह यह कि लण्डन ने अभी युवावस्था में प्रवेश किया है और दिल्ली की जवानी ढल चुकी है। किसी कवि ने कितना अच्छा कहा है:—

रहती है कब बहारे, जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥

लण्डन टॉवर (The Tower of London)

लण्डन ब्रिज (London Budge) को पार करके लण्डन टॉवर में प्रवेश कीया जाता है। टॉवर बहुत विशाल और सुदृढ बना हुवा है। इसकी प्राचीर बहुत ऊँची न होने पर भी बहुत मजबूत बनी हुई है। इस के चारों ओर बहुत चौड़ी खाई खुदी हुई है। किले का मुख्य प्रवेश द्वार और आगे की पोलें हमारे देश के किलों की तरह ही संकीर्ण

टोवर ऑफ लण्डन। Tower of London

Lakshmi Art, Bombay, 8

(Royal Mint) कहते हैं। इसको देखने की किसी को इजाजत नहीं है, परन्तु मिन्ट मास्टर (Mint Master) को लिखने से इजाजत मिल सकती है। योंतो यहाँ की मिन्ट (Mint) में बम्बई की मिन्ट से कुछ विशेषता नहीं है, परन्तु काम की अधिकता से मशीनें बहुत हैं और कार्य कर्त्ताओं के चातुर्य से काम भी शीघ्रता से होता है।

पहले चांदी गलकर पत्रे बनते हैं और फिर पत्रे सिक्के के समान पतले होने के लिये कई दफा मशीन में से गुजरते हैं, तब पत्रों से टिकले कटते हैं। ततपश्चात् टिकलों पर किनारा उठाया जाता है, और फिर उनपर छाप लगा कर सिक्का निकाला जाता है। फिर यह मालूम करने के लिये कि सिक्के वजन में न्यूनाधिक तो नहीं है, वे एक यन्त्र द्वारा तोले जाते हैं। तोलने का यन्त्र बड़ाही आश्चर्य कारक है। प्रथम सब सिक्के एक नली में भरदिये जाते हैं, जहाँ से वे एक एक करके अपने आप तोलने के यन्त्र पर चढ़ते जाते हैं। यन्त्र के आगे तीन वर्तन पड़े रहते हैं। एक ठीक बीच में और दो उनके दायें बायें, दोनों ओर को। जो सिक्के यन्त्र पर चढते जाते हैं, वे यन्त्र द्वारा इन्ही वर्तनों में पडते रहते हैं। यदि सिक्का ठीक वजन का होता है तो वह बीचके वर्तन में गिरता है, परन्तु वह भारी होता है तो एक

ओर के बर्तन में और हलका होने पर दूसरी ओर के बर्तन में गिरता है। जहाँ पर कि सिक्कों पर छाप लगाई जाती है, वहाँ पर एक ऐसा यन्त्र भी है कि जो छपने वाले सिक्कों की गणना करता है। इस यन्त्र की चाबी मिन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास रहती है। सिक्के तैयार हो जाने पर परखे जाते हैं। परखने की विधि को देखकर हैरान होना पड़ता है। सिक्के एकसाथ ऐसे गिरते हैं जैसे जोर से ओलों की वृष्टि हो रही हो। परन्तु धन्य है परखने वालों की पटुता को कि वे ऐसी परिस्थिति में भी यदि कोई सिक्का कम तोलता होता या ज़्यादा तोलता हो अथवा किनारा उखड़ा हुआ हो तो वे उसे फौरन निकाल लेते हैं। तत्काल सिक्के थैलियों में भरे जाकर खजानों को भेजे जाते हैं। जब सिक्के मिन्ट से बाहिर निकलते [illegible] [illegible] जाती है और इनकी पूरी [illegible] की जाती है।

यहीं टकसाल में [illegible] [illegible] जो [illegible] के [illegible] थे। [illegible] [illegible] गया था।

[illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] है।

(Royal Mint) कहते हैं। इसको देखने की किसी को इजाजत नहीं है, परन्तु मिन्ट मास्टर (Mint Master) को लिखने से इजाजत मिल सकती है। योंतो यहाँ की मिन्ट (Mint) में बम्बई की मिन्ट से कुछ विशेषता नहीं है, परन्तु काम की अधिकता से मशीनें बहुत है और कार्य कर्त्ताओं के चातुर्य से काम भी शीघ्रता से होता है।

पहले चांदी गलकर पत्रे बनते हैं और फिर पत्रे सिक्के के समान पतले होने के लिये कई दफा मशीन में से गुजरते हैं, तब पत्रनो से टिकले कटते है। ततपश्चात् टिकलों पर किनारा उठाया जाता है, और फिर उनपर छाप लगा कर सिक्का निकाला जाता है। फिर यह मालूम करने के लिये कि सिक्के वजन में न्यूनाधिक तो नहीं हैं, वे एक यन्त्र द्वारा तोले जाते है। तोलने का यन्त्र बड़ाही आश्चर्य कारक है। प्रथम सब सिक्के एक नली में भरदिये जाते है, जहाँ से वे एक एक करके आने आप तोलने के यन्त्र पर चढ़ते जाते हैं। यन्त्र के आगे तीन वर्तन पड़े रहते है। एक ठीक बीच में और दो उनके दांयें बांयें, दोनों ओर को। जो सिक्के यन्त्र पर चढते जाते हैं, वे यन्त्र द्वारा इन्ही वर्तनो में पड़ते रहते हैं। यदि सिक्का ठीक वजन का होता है तो वह बीचके वर्तन में गिरता है, परन्तु वह भारी होता है तो एक

ओर के बर्तन में और हलका होने पर दूसरी ओर के बर्तन में गिरता है। जहाँ पर कि सिक्कों पर छाप लगाई जाती है, वहाँ पर एक ऐसा यन्त्र भी है कि जो छपने वाले सिक्कों की गणना करता है। इस यन्त्र की चाबी मिन्ट सुपरिंटेन्डेंट के पास रहती है। सिक्के तैयार हो जाने पर परखे जाते हैं। परखने की विधि को देखकर हैरान होना पडता है। सिक्के एकसाथ ऐसे गिरते हैं जैसे जोर से ओलो की वृष्टि हो रही हो। परन्तु धन्य है परखने वालो की पटुता को कि वे ऐसी परिस्थिति में भी यदि कोई सिक्का कम बोलता हो या बे सुरा बोलता हो अथवा चिपट उखडा हुआ हो तो वे उसे फौरन निकाल लेते हैं। तत्पश्चात् सिक्के थैलियो में भरे जाकर खजानों को भेजे जाते है। जब सिक्के मिन्ट से बाहिर निकलते है या बाहिर से मिन्ट मे आते है, तब विशेष सावधानी रक्खी जाती है और उनकी पूरी पूरी गणना की जाती है।

इसी टकसाल में अफ्रीका के सिक्के भी तैयार होते थे, जो पीतल के बनते थे। उनके बीचोबीच एक चौकोर छेद रहता था।

इसी मिन्ट विभाग में सब प्रकार के तमगे भी ढाले जाते हैं। यह ढलाई का काम गेस के चूल्हों पर बड़ी ही शीघ्रता से होता है।

भारी सामान को इधर उधर लेजाने के लिये लोहे की पटरियें पड़ी हुई है, जिनपर छोटे थैलो से काम लिया जाता है।

यहाँ पर भी मिन्ट के भीतर प्रवेश करनेके पहले, विज़िटिग बुक (Visiting Book) में अपना नाम व पता लिखना पड़ता है। मिन्ट के अन्दर प्रवेश करने पर मिन्ट का कर्मचारी साथ हो लेता है, जो आगत व्यक्ति को देखने लायक स्थानों का अवलोकन करा देता है।

गिरजाघर (Churches)

बॅटत यहाँ प्रभु प्रेम रस, आइ बॅटावहु बंट।
बार बार कहते यही, गिरजा घर के घंट॥
गुम्बज चढ़ आकाश को, करत यही उपदेश।
बिना भजन मिलिहै नहीं, सर्वोपरि सर्वेश॥

यों तो यहाँ पर हजारों की संख्या मे गिरजाघर हैं और मुहल्ले २में गिरजाघर मौजूद है, परन्तु बड़े गिरजाघरों की संख्या लग भग एक सौ के है, जिनमें से दो तीन नामी गिरजाघरो का कुछ विवरण आगे चल कर दिया जायगा। इन कुल गिरजाघरों में से बहुत से तो चर्च ऑफ इंगलैण्ड (Church of England) से सम्बन्ध रखते हैं और बाकी सब कोंग्री-

गेशनल (Congregational), मेथोडिस्ट (Methodist) प्रेस्बीटेरियन (Presbyterians) रोमन केथोलिक (Roman-Cotholics) और जिउज़ (Jews) आदि फिरकों के है। चाहे कोई किसी भी फिरके की गिरजा को मानता हो परन्तु सब की बाइबल पर अटल श्रद्धा है। यद्यपि आज कल के विकाशवाद के समय में लोगो की पहले की-सी श्रद्धा अपने धर्म पर नही रही है, तथापि छात्र और छात्राओं के लिये नियमित रूप मे गिरजाघर का जाना अनिवार्य होने से यह बाल्य काल के पड़े हुए संस्कार ऐसे दृढ़ हो जाते है कि अन्त तक गिरजाघरो पर श्रद्धा बनी ही रहती है। प्रत्येक मनुष्य एतवार को गिरजाघर जरूर जाता है, एक बाइबल की पुस्तक अपने पास में जरूर रखता है और रात को सोने से पहले और सुबह को निन्द्रा भंग होने पर थोड़ी बहुत बाइबल जरूर पढ़ता है।

वेस्ट मिनिस्टर एबे।

(Westminister Abbey)

पार्लीमेन्ट भवन के सामने ही यह एक संसार प्रसिद्ध विशाल, सुन्दर और ऐतिहासिक गिरजाघर है, जो लण्डन की दर्शनीय इमारतो में से एक है। संसार में, ऐसा कोई

स्थान ही नही है, जिसका सम्बन्ध इसके सदृश एक शक्तिशाली जाति के गौरवपूर्ण इतिहास ग्रन्थियों से इतना दृढ़ हो गया हो। सन् ६०५ ई० में पहले पहल इसी गिरजाघर की स्थापना हुई थी। उसके बाद कई दफा तो इसका जीर्णोद्धार हुआ है और भूतपूर्व सम्राटों तथा नगर के प्रतापशाली पुरुषों द्वारा दिन प्रति दिन इसको रमणीक बनाने का प्रयत्न भी होता रहा है। भूरे प्राचीन उच्च स्तूप और स्तम्भ, गुम्बज तथा मेहराब, सुन्दर खिड़कियाँ तथा विजयी महाराजाओं और रसिक कवियों की पाषाण मूर्तियाँ, दर्शक पर चिर स्थायी प्रभाव डालती हैं। इंगलैण्ड के इतिहास में जितने नामी पुरुष हुए हैं, प्रायः उन सब की कब्रें, इसी गिरजाघर में हैं। सम्राट का राज्याभिषेक भी इसी मङ्गलमय भूमि में होता है। स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया, उनके पुत्र सम्राट एडवर्ड सप्तम तथा पौत्र वर्तमान सम्राट जॉर्ज पॅचम का राज्यभिषेक भी इसी पवित्र स्थान पर हुआ था। इसमें प्रसिद्ध पुरुषों के यसो-स्मारक इतने अधिक बने हुए हैं कि जिनके मारे इस भवन में तिल रखने को भी खाली जगह दिखाई नही देती। एक हिस्से में सम्राटों की कब्रें और दूसरे हिस्से में मोम की मूर्तियाँ हैं, जिन के देखने में छः पेन्स का टिकिट लगता है। सब स्मारकों पर उनके जन्म मरण की तारीख

लिखी हुई हैं। इसमें, दिन में दो तीन दफा पुजारी और प्रजा, राजा, देश तथा विश्व के हित के लिये ईश्वर वन्दना करते हैं, और न्याय, धर्म, सत्य और दया के संस्थापन के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। इसके भीतर लकड़ी की खुदी हुई सोने के काम की बढ़िया छत है। इसकी लम्बाई ५१३ फीट, ऊँचाई १०२ फीट और मीनारों की ऊँचाई २७५ फीट है।

सेन्टपाल कैथेड्रल।

(St. Paul's Cathedral)

लडगेट सड़क (Ludgate Road) के चौक में यह गिरजाघर बना हुआ है। यह पाषाण गृह विशाल गुम्बज वाला, नगर निवासियों के अति आदर व सम्मान का स्थान है। नदी के तट से गुम्बज की अनुपम छटा अवलोकनीय है। गिरजाघर बहुत बड़ा बना हुआ है और इसका प्रवेश द्वार संसार के सब गिरजाघरों के प्रवेश द्वारों में बड़ा है। इस गिरजाघर की लम्बाई ५२० फीट, चौड़ाई २५० फीट और छत १०२ फीट है तथा मीनार की ऊँचाई ३५८ फीट है। यह बहुत पुराना गिरजाघर है। इसकी पहिली इमारत वर्तमान इमारत से

भी बड़ी थी, जिसके मीनार की ऊँचाई ५२० फीट थी परन्तु वह सन १५६१ ई० के प्रसिद्ध अग्नि-प्रकोप से और उससे भी पहले की इमारत सन् १०८७ ई० के अग्नि-प्रकोप मे, जल कर भस्मीभूत होगई, जिनके कि निर्माण मे लाखो पाउन्ड खर्च हुए थे। वर्तमान इमारत सन् १६७५ ई० में बनना आरम्भ हो कर सन् १६८७ ई० में पूरी हुई थी, जिसपर साढ़े सात लाख पाउन्ड यानी एक करोड़ साढ़े बारह लाख रुपये खर्च हुए थे। इसमें कई प्रसिद्ध सम्राटों और नेलसन (Nelson) तथा वेलिगटन (Wellington) ऐसे प्रसिद्ध पुरुषों की कब्रें हैं और एक ओरगन (Organ) नाम का बड़ा भारी बाजा है, जिसके ४८७२ स्वर (Pipes) हैं, जिनसे अनेकानेक राग रागनियाँ निकाली जाती है। इस गिरजाघर की इमारत किसी अंश में मन्डोर (जोधपुर) के बड़े देवल से मिलती जुलती सी मालूम होती है। राज्यभिषेक के उपरान्त स्वयम् सम्राट ईश्वर को धन्यवाद देने के लिये, इस गिरजाघर में पधारा करते है।

रोमन केथोलिक कैथेड्रल।

(Roman Catholic Cathedral)

यह भी एक प्रसिद्ध गिरजाघर है जो विक्टोरिया स्ट्रीट (Victoria Street) में बना हुआ है। इसकी
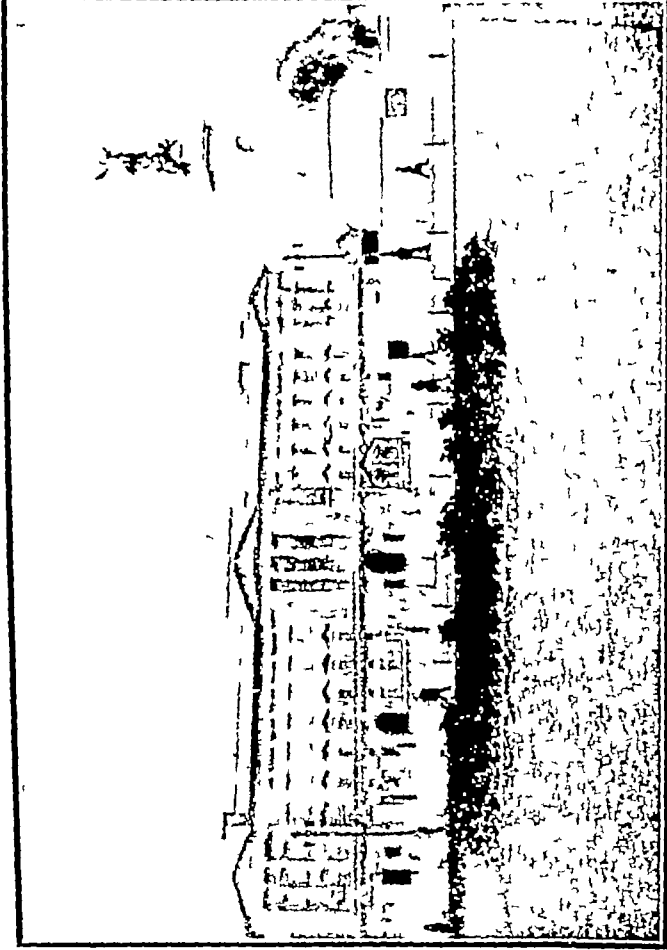
बाकिंघाम पैलेस। Bukingham Palace

इमारत सन् १८६५ ई० में बननी शुरू होकर सन् १९०३ में बन कर तैयार हुई थी। इसके बीच का कमरा और सब गिरजाघरों के कमरों से बड़ा है। इसके अन्दर सोने की चित्रकारी का काम बनरहा है। इसके ऊपर एक टॉवर है जिसकी ऊँचाई २८४ फीट है, जिस पर चढ़ने से छः पेन्स का टिकिट लगता है। इस टॉवर पर चढ़कर लण्डन शहर का सुन्दर दृश्य हम लोगों ने भी देखा था। इस गिरजाघर के पास ही लण्डन का प्रसिद्ध विक्टोरिया स्टेशन (Victoria Station) है।

पार्क (Parks)

शोभा इन उपवनन की, को कहि पावहि अन्त।
जिन में बसत हुलास युत, बारहु मास बसन्त॥

यों तो इस नगर में प्रत्येक भवन के आगे थोड़ा बहुत बगीचा लगा हुआ है और नगर के बीच २ में भी विशाल चौक खुले छोड़ दिये गये हैं, जहाँ पर हरी २ दूब और पेडों के रहने से, वे अत्यन्त सुन्दर और रमणीक मालूम होते है, जो सिर्फ नगर की शोभा वृद्धि ही नहीं करते, बल्कि नगर निवासियों को स्वच्छ वायु प्रदान भी करते है, और जहाँ पर हजारों स्त्री, पुरुष, बालक, खेल

क्रीड़ा तथा आमोद प्रमोद करते हुए अत्यन्त आनन्द के साथ अपना समय व्यतीत किया करते हैं, परन्तु इन चौकों के अतिरिक्त सैकडो बाग़ ऐसे हैं कि जिनकी सुन्दरता का कुछ वर्णन ही नही हो सकता। यदि साहस करके कुछ कहा भी जावे तो इसके लिये एक स्वतन्त्र पुस्तक लिखी जानी चाहिये. अतः यहाँ पर कुछ विशेष प्रसिद्ध पार्कोका आभास मात्र ही दिया जायगा। परन्तु मनुष्य लंडन के चाहे जिस बाग में चला जाए और चाहे जिस ओर को नजर उठा कर देखले, उसको अद्भुत सौन्दर्य शोभा और अपूर्व छवि छटा ही देखने को मिलेगी। चारो ओर को सुन्दर दृश्यों के रहने से मनुष्य किसी एक ही ओर को स्थिर दृष्टि होकर नही रह सकता। प्रत्येक दिशा मनुष्य को अपनी २ ओर खीचती रहती है। दिशाओं की इस खीचातानी (Tug-of-war) में, क्षण भर के लिये भी किसी एक ही ओर को देखते रहना साहस का काम है, नही तो मनुष्य की दृष्टि किसी एक ओर के सुन्दर दृश्यों को देखने जाकर वहाँ तक पहुँचने अथवा पहुँच कर ठीक तरह से टिकने भी नही पाती है कि उसके पीछे लगे हुए दूसरी ओर के सुन्दर दृश्य, उसको पकड़ कर और बलात्कार खीच कर अपनी ओर को ले आते हैं। जब हम लोग एक बाग़ से बाहर निकलने को थे तो

अपने हाथों के फूलों को सूँघते हुए और एक सुन्दर लतापुंज को देखते हुए जारहे थे। ऐसी परिस्थिती में हम कुछ कदम ही आगे बढ़े होंगे कि दूसरी ओर से एक बुल बुल का मधुर कल रव सुनाई दिया, जिस पर हमारी दृष्टि उस ओर को गई तो एक बहुत सुन्दर दृश्य दिखाई दिया कि जिसे देखने के लिये हमें कोई पन्द्रह मिनिट तक उस बाग़ में और रुकना पडा। मानो बुल बुल ने किसी उर्दू कवि के शब्दों में कहा थाः—

यों जल्द न रुखसत हो, जो गुल बाग़ में चुनलो।
इन्साफ यह कहता है, बुल २ की भी सुनलो।

विम्बलडन कामन Wimbledon Common

यह पार्क हमारी कोठी के सामने १२४२ एकड़ भूमि में आया हुआ है। इसके भीतर बड़े २ वृक्षों के झुण्ड, कुदरती उगी हुई हरी २ घास, छोटी २ पानी की झीलें, सुन्दर सड़कें तथा गोफ ग्राउन्ड (Golf Ground), क्रिकेट ग्राउण्ड (Cricket Ground), फुटबोल ग्राउण्ड (Football Ground), पवन चक्की और चायपानी के होटल आदि हैं। सुबह शाम मोटरों और साइकिलों की खूब धूम रहती है। एतवार और शनिश्चर वार को तो यहाँ मेलासा रहता है और लाखों नर नारी और

विद्यार्थीगण मनो विनोदार्थ विचरन करते रहते हैं तथा फुटबोल, क्रिकेट आदि खेल खेला करते है। ऐसे मौकों पर यहॉ पर बहुतसी दुकानें लग जाती हैं। कभी २ यहाँ पर रसाले तथा तोपखाने की परेट भी हुआ करती है।

जेम्स पार्क (James Park)

यह पार्क, ट्रेफलगर स्क्वायर (Trafalgar Square) के सामने के त्रिपोलिया से जो सड़क बकिंघाम पैलेस (Bukingham Palace) के सामने के चौराहे को जाती है उसके दरमियान में बायीं ओर को आया हुआ है। इसके बीच में एक सुन्दर झील बनी हुई है। यहॉ पर हरी २ दूब जमी हुई है जिस पर हजारों कुर्सियाँ बिछी हुई हैं। शाम के समय यहॉ पर हजारों स्त्री पुरुष इकट्ठे होते है। चार्ल्स दूसरे (Charles II) ने इस पार्क को बहुत तरक्की दी थी।

ग्रीन पार्क (Green Park)

यह त्रिकोण पार्क जेम्स पार्क मे सटा हुआ है, जो पहिले जेम्स पार्क के शामिल था। यह भी एक सुन्दर बाग़ है और इसी के अन्दर लण्डन म्यूजियम (London Museum) नाम का अजायबघर है। इसका विस्तार कोई ५२ एकड़ भूमि में है।

हाइड पार्क (Hyde Park)

हाइड पार्क, ग्रीन पार्क के सामने के चौराहे के उस ओर को है। यह पार्क और सब पार्कों से अधिक विख्यात और सुन्दर है और इस पार्क में अन्य सब पार्कों से अधिकतर मनुष्यो का गमनागमन रहता है। यदि इस पार्क को लण्डन का मुख्य क्रीड़ा स्थल कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। इसका विस्तार २६३ एकड़ भूमि मे है। इसमें सड़कें और रास्ते फेशनेबिल (Fashionable) बने हुए हैं। रिंग (Ring) नाम का गोल रास्ता बहुत ही सुहावना मालूम होता है। पार्क के बीच में सरपेन्टाइन (Serpentine) नाम की सुन्दर झील बनी हुई है जिससे पार्क की शोभा द्विगुणित होगई है। पार्क के पूर्वी किनारे पर डेल (Dell) नाम का बाग़ (Garden) है, जिस की आबहवा सम-शीतोष्ण (Semi-tropical) देशो ऐसी है और उत्तरी कोण पर मार्बलआर्च (Marble Arch) नामक संगमर्मर का त्रिपोलिया है। उत्तर पूर्व कोण सुरक्षित (Reserved) रहती है। जो नये कानून और कायदे (Rules and regulations) जारी होते हैं वे इसी स्थान पर पब्लिक मीटिंग में प्रकट किये जाते हैं जहाँ पर पब्लिक गाजे बाजे के साथ आती है। मार्बलआर्च के

पास का कोना स्पीकर कोर्नर (Speaker corner) के नाम से विख्यात है। यहाँ पर प्रायः हर एतवार को धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक सुधार सम्बन्धी हर प्रकार के विचार पब्लिक पर प्रकट किये जाते है।

लण्डन के उच्च कुल के धनिक व नामी सज्जन सूर्योदय के समय यहाँ वायु-सेवन करने आते हैं। स्वयं सम्राट भी एक वेग से गमन करने वाले अश्व पर रोटनरो (Rotten Row) रास्ते से आते है, जिससे पार्क की शोभा और भी बढ़जाती है।

ऐसा तो कोई दिन नहीं होता कि शाम के समय यहाँ पर हजारों स्त्री पुरुषों का मेलामेला न लगता हो परन्तु शनिश्चर और एतवार का तो हाल ही निराला है। बहुत से स्त्री पुरुष छोटी बड़ी किश्तियों में बैठ कर झील के जल पर जलवायु सेवन करते हैं तो बहुत से स्त्री पुरुष पार्क की सड़कों पर घूमते हुए नज़र आते है। बहुत से स्त्री पुरुष दूब ग्राउन्ड पर सपरिवार लेटे हुए आनन्दोल्लास कर रहे हैं तो बहुत सी युवतियाँ अपने मनोनीत पुरुषों के साथ सड़कों के किनारों पर बिछी हुई कुर्सियों पर बैठी हुई प्रेममय वार्त्तालाप कर रही हैं। शाम को बैंड बजा करता है जिसका अमृतमय मधुर गाना सुनने

के लिये बेण्ड के चारों ओर हजारों स्त्री पुरुष प्रसन्न चित्त से बैठे हुए नजर आते हैं। पार्क में बेंचें तथा दूब पर बैठने की तो कोई फीस नही लगती परन्तु कुर्सी पर बैठने के लिये दो शिलिंग का टिकिट लगता है। ज्यों ही कोई कुर्सी पर बैठता है त्यों ही टिकिट वाला उसके सामने आकर खडा हो जाता है। यहाँ पर हमेशे शाम के वक्त इतनी अधिक भीड़ रहती है कि जिसके आगे हमारे 'मंडोर' का नाग पंचमी का मेला भी तुच्छ प्रतीत होता है। यहाँ पर हिन्दुस्तानी महिलाओं को भी पारसी लिबास में घूमते हुए देखा था। पास ही में एलेग्जेन्ड्रा (Alexandra) और हाइड पार्क (Hyde Park) नाम के प्रसिद्ध होटल हैं, जहाँ पर इस पार्क के घूमने वाले अपने मनोवासनाओं की पूर्त्ति किया करते हैं।

किन्सिनटन गार्डन।

(Kensington Garden)

यह भी एक विशाल और सुन्दर गार्डन है जो हाइड पार्क की तरह ही आनन्द वर्द्धक है। इस गार्डन का विस्तार २७४ एकड़ भूमि में है। इस गार्डन का हाइड पार्क से जुड़े रहने से यहाँ का मैदान स्वास्थ्योपयोगी समझा

जाता है और इसी कारण से सैकड़ों प्रकार के खेल कूद प्रायः इसी जगह पर हुआ करते हैं। इस गार्डन के भीतर बहुत सी सुन्दर सड़कें है और घना बाग़ है तथा ऊँचे २ और बहुत विस्तार में फैले हुए सुन्दर दरख़्त हैं जो लण्डन के दूसरे सब बाग़ों से अधिक पुराने हैं। इसमें एलबर्ट मेमोरियल (Albert Memorial) नामक एक सुन्दर स्मारक भवन बना हुआ है, जिसमें नामी २ पुरुषों के चित्र अंकित हैं। गार्डन के पिछली ओर को किन्सिनटन, पैलेस (Kensington Palace) नामक एक सुन्दर भवन बना हुआ है, जिसमें बहुत सी सुन्दर चीज़ों का संग्रह है। इस के देखने में छः पेन्स का टिकिट लगता है। इस भवन के पास एक पानी का हौज़ है जिसके चारों ओर सुन्दर बगीचा और दूब लगी हुई है। यहाँ की शोभा बहुत रमणीय दिखाई देती है।

क्यू गार्डन (Kew Garden

यह एक २८८ एकड़ भूमि के विस्तार में बहुत सुन्दर बाग़ है। यह बाग़ गंधी की पेटी की तरह विविध प्रकार की सौरभों से परिपूर्ण और जौहरी की तिजोरी की तरह रंग बिरंगे पुष्प रूपी रत्नों से सुशोभित है। वैसे तो इस बाग़ का एक २ वृक्ष सुन्दरता का द्योतक है परन्तु

यहाँ का कटाई का दृश्य कुछ विशेष सौंदर्य का परिचय देता है। ऊँचे २ खजूर के दरख्त जो बाग़ की शोभा समझे जाते हैं यहाँ पर अधिक संख्या में हैं। यहाँ पर अनेक प्रकार के ऐसे पौधे हैं जिनको धूप छाया से बचा कर बड़ी हिफाजत के साथ मकानों में रक्खे जाते है। पौधों को हिफाजत से रखने के लिये बहुत से लकड़ी और कॉच के मकानात भी बने हुए हैं। बाग़ की सुन्दरता बढ़ाने के लिये बाग़ के बींचोबींच एक सुन्दर चौकोर झील बनी हुई है। झील के पास में क्यू (Kew) नामक सुन्दर भवन बना हुआ है जो जॉर्ज थर्ड (George III) का निवास स्थान था। झील पर एक जापानी पेगोडा (Pagoda) अर्थात् देवल बना हुआ है जिससे यहाँ की शोभा अधिक सुन्दर प्रतीत होती है। पेगोडा की ऊँचाई १६० फीट है और वह दस खंड ऊंचा है। यहाँ पर अजायबघर और गरम मकानात भी है। इस बाग़ में वायु सेवन के लिये जाने वालों को प्रवेश फी देनी पड़ती है। प्रवेश फी मंगल और शुक्र के दिन छः शिलिंग और शेष पॉच दिनों में तथा गुडफ्राइडे (Good Friday) को एक शिलिंग देनी पड़ती है। यहाँ पर बहुत से विद्यार्थी एगरिकलचर (Agriculture) का काम भी सीखा करते हैं। बाग के सामने टेम्स नदी बहती है और बाहर बहुत

से होटल है जहाँ पर जो लोग कि बाग़ देखने के लिये आते है और दिन भर ठहरा करते हैं वे भोजनादि किया करते हैं। यहाँ पर मोटर ट्राम बस ट्रेन आदि सब तरह की सवारियाँ आती हैं। इस बाग़ को हार्टिकलचर व बोटेनिकल गार्डन (Horticulture and Botanical Garden) भी कहते हैं।

बूशी पार्क (Bushy Park)

यह बाग़ ११०० एकड़ भूमि के विस्तार में है। इस बाग़ को विलियम तृतीय (William III) ने तरकी दी थी। इसकी सुन्दरता का क्या कहना? यह योरोप के सब से बढ़िया पार्कों में से एक है।

हेम्पस्टेड हीथ (Hampstead Heath)

यह पार्क ३२१ एकड़ भूमि में है। यह भी बहुत सुन्दर बाग़ है। यहाँ पर एक मेला लगता है जिस में पाँच लाख आदमी इकट्ठे होते हैं।

शॉडवेल पार्क (Shadwell Park)

यह पार्क स्वर्गीय सम्राट एडवर्डसप्तमकी यादगारमें वर्तमान सम्राट जॉर्ज पंचम ने ता॰ २४ जून १९२२ को खोला था।

इसके भीतर एक मेमोरियल है, जिसके अन्दर एडवर्ड सप्तम की काँसे की मूर्त्ति रक्खी हुई है।

एलेग्जेन्ड्रा पार्क (Alexandra Park)

यह पार्क १८० एकड़ भूमि के विस्तार में है जो सन् १८७२ ई० में खुला था। यहाँ पर स्केटिंग रिंक * (Skating Rink) है। एक नाच कूद का कमरा (Ball Room) है जो हर शनिश्चरवार को खुलता है और एक गाने का कमरा (Concert Hall) भी है जहाँ पर हर शनि और रविवार को संगीत-शिक्षा (Concert) दी जाती है। गरमी की मौसम में हर शनि और रविवार को प्रथम श्रेणी की संगीत शिक्षा (Concert) घने दरख्तो के नीचे दी जाती है। यहाँ पर नाटक, झील टेनिस कोर्टस (Tennis Courts) हैं और ट्रेनें ट्रामें बसें भी आती हैं।

ग्रीनिच पार्क

(Greenwich Park)

यह पार्क १८५ एकड भूमि के विस्तार में है और सन १६८५ ई० से पब्लिक पार्क है। यह पार्क एक

* इस्केटिंग एक खेल है जो बर्फीली जगह पर खेला जाता है।

विशेष देशांश पर अर्थात् Longitude 0° है। ब्रिटिश साम्राज्य के समग्र देशों का वक्त एक बजे दोपहर को यहाँ से मिलाया जाता है।

वास्तव में देखा जाय तो यह सब पार्क क्रीड़ास्थल हैं जहाँ पर खेल तमाशों के साथ २ आमोद प्रमोद करता है। ऐसे पार्कों में नायका भेद की परिभाषा के अनुसार स्वकीया, परकीया और गणिकाएँ अधिक संख्या में पाई जाती हैं जो अपने मनोनीत पुरुषों के साथ स्वच्छन्दता पूर्वक मदनोत्पादक प्रेमक्रियाओं में संलग्न रहती हैं। शाम के समय में अपने मनोनीत पुरुषों से प्रेमालिंगन करना तो इनके लिये एक साधारण बात है। इसी प्रकार मुँह से मुँह मिला कर प्यार करने का भी यहाँ पर एक आम रिवाज है जो प्रत्येक स्त्री पुरुष अपने स्नेही से मिलने या बिछुड़ने के समय ऐसा अवश्य करता है। यहाँ की प्रथा के अनुसार किसी की तरफ झांकना न तो अच्छा समझा जाता है और न बुरा! पुरुष चाहे जिस स्त्री के पास से होकर क्यों न निकल जावे न तो इसमें स्त्री को किसी प्रकार की शंका होगी और न वह पुरुष ही उस स्त्री की ओर को देखेगा।

चिड़ियाखाना (The Zoo)

यह चिड़ियाखाना, रीजेन्ट पार्क (Regent Park) के पास में बहुत विस्तार में आया हुआ है। इसमें प्रवेश करने के लिये तीन रास्ते है। और दिनों में चिडियाखाने में जाने के लिये तो सर्व साधारण को एक शिलिंग और बच्चो व फौजी सिपाहियों को छः पेन्स प्रवेश फी देनी पड़ती है, परन्तु सोमवार के दिन इस से आधी प्रवेश फी लगती है, और एतवार के दिन सिर्फ स्पेशल (Special) टिकिटवालों और मेम्बरों को ही जाने की इजाजत है। चिड़ियाखाने को ठीक तरह से देखने के लिये चिड़ियाखाना गाइड (Guide) जरूर खरीदना चाहिये, ताकि तमाम तरह के जानवर जो यहाँ पर देखने में आवें, उनका ठीक २ ज्ञान प्राप्त करने के लिये सहायता मिले। देखने वालो के सुभीते के लिये चिडियाखाना की सड़को पर दो तरह के मेप लगे रहते है। एक मे यह दर्ज है कि चिड़ियाखाने में कौनसा जानवर किस तरफ को है और दूसरे मे संक्षिप्त मे यह बतलाया गया है कि कौन २ से देशो के किस २ हिस्से मे कौन २ से जानवर होते हैं। इन मेपो पर भी देखने वालो की भीड़ लगी रहती है। हर एक जाति और देश के जानवरो के

लिये अलग अलग विभाग बने हुए हैं। जो जानवर स्वभाविकतया जैसी जगह पर रहा करता है उसके लिये वैसी ही जगह बनाकर रखने का प्रबन्ध किया गया है। जैसे पहाड़ी बकरे और रींछ, बनावटी पहाड़ बनाकर रक्खे गये हैं। दुनिया के प्रायः प्रत्येक भाग का जानवर यहाँ पर देखने को मिल सकता है और सम्पूर्ण प्राणियों का ज्ञान यहाँ पर हो सकता है। हमारे मारवाड़ में होने वाले ऊँठों में विशेष करके दो थुंबी के ऊँठ हम लोगों के यहीं पर देखने में आये। तोते और चिड़ियें तो इतनी किस्म और संख्या में हैं कि जिनका याद रखना भी कठिन है। अजगर और साँप भी सैकड़ों किस्म के हैं, जिनका यहाँ के सिवा दूसरी जगह पर देखना सम्भव नही है। चिड़ियाखाना इतना बड़ा है कि जिसको देखने में दिन भर पूरा हो जाता है। चिड़ियाखाने में एक बड़ा होटल भी है, जहाँ पर भोजन, चायपानी हर समय तैयार रहता है.। इसके अतिरिक्त चॉकलेट (Chocolate) और सिगरेट (Cigarettes) वालों की बहुतसी छोटी २ दूकाने हैं। भारतवर्ष में कलकत्ते का चिड़ियाखाना बहुत प्रसिद्ध हो रहा है, परन्तु इस चिड़ियाखाने के आगे उसका कोई मूल्य नहीं हो सकता।

अजायबघर (Museums)

विस्मयकारी वस्तुएँ, जहँ देखत सब देश।
मन रंजन के साथ ही, बाढत ज्ञान विशेष॥

यो तो इस नगर के मुहल्ले २ में, अजायबघर, लाइब्रेरियाँ, चित्रशालाएँ इत्यादि २ मौजूद है, परन्तु पच्चीस तीस, जो बड़े २ अजायबघर है, उन के अद्भुत पदार्थ, दुष्प्राप्य पुस्तकें और जादू का-सा असर रखने वाले चित्र इत्यादि देख कर तो मनुष्य आश्चर्य जनित अपार आनन्द को प्राप्त करता है। इन आमोद प्रमोद के साथ अपार ज्ञान की वृद्धि करने वाले अजायबघरो में से कुछ अजायबघरों का हाल, यहाँ पर दिया जाता है।

बृटिश म्यूजियम (British Museum)

इस शहर में ब्रिटिश म्यूजियम (British Museum) भी एक देखने योग्य स्थानों में से है। यहाँ पर चित्त को चकित कर देने वाले पदार्थ, भूतल के एक ओर से लेकर दूसरे छोर तक के, प्रजा के मनोविनोदार्थ, संग्रहीत है। यह अजायबघर ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट (Oxford Street) के पास ग्रेट रसल स्ट्रीट (Great Russell Street) में बना हुआ है। यह सन् १७५३ ई० से सन् १७५९ ई०

तक बन कर तैयार हुआ था। भूत पूर्व भारत सम्राट एडवर्ड सप्तम ने दो लाख रुपये खर्च करके इसका एक नया भाग निर्माण करवाया था।

इस अजायबघर के साथ एक लाइब्रेरी है जो इतनी बड़ी है कि जिसमें चालीस लाख दुष्प्राप्य पुस्तकों का संग्रह है। लण्डन भर में ही नहीं, संसार भर में भी इससे बड़ी लाइब्रेरी नही है। इंगलैण्ड में जितनी पुस्तकें प्रकाशित होती है, उन सब की एक २ प्रति इस लाइब्रेरी में नियमित रूप से पहुॅचती है। इस प्रकार से साल भर में पचास हजार पुस्तकें नई आती है। ऐसी लाइब्रेरी कदाचित् ही कोई दूसरी हो कि जिसमें इस प्रकार प्रति वर्ष पुस्तकों की बाढ़ आती हो। यदि यह बाढ़ सदा के लिये जारी रही तो पुस्तकों की संख्या करोड़ों अर्बों और इससे भी आगे तक पहुॅच जायगी। यदि इन चालीस लाख पुस्तकों को एक के बाद एक रख कर के लाइन बनाई जाय तो कोई पचास मील लम्बी लाइन बन जाय। इन पुस्तकों में प्रत्येक देश की बढ़िया२ पुस्तकों का संग्रह है। पुस्तकें भाषा भेद के अनुसार जुदी२ कॉच की अलमारियों में रक्खी हुई है। प्रत्येक अलमारी के सामने मेज और बिजली की लाइट का पूरा प्रबन्ध है। सब पुस्तकों की सूची तो बनी हुई हैं ही, परन्तु उसके अतिरिक्त विषयवार सूचियें अलग २ बनी हुई हैं ताकि

पुस्तक की खोज मे न तो किसी प्रकार की तकलीफ हो और न समय ही व्यर्थ नष्ट हो। हरएक मनुष्य को विना किसी भी प्रकार की रोक टोक के पुस्तक देखने को मिल सकती है।

दूसरी आश्चर्य जनक बात यह है कि यहाँ पर इजिप्ट (Egypt) के मर्मी अर्थात् मुर्दे रक्खे हुए हैं। ये मुर्दे ईस्वी सदी से ३६०० वर्ष पूर्व से इस्वी सन् ५०० तक के है। इनमें एक मुर्दा तो इस्वी सदी से ७००० वर्ष पूर्व का है जिसकी सिर्फ ठठरी ही दिखाई देती है। इजिप्ट एक ऐसा देश है, जहाँ पर पूर्व काल में मुर्दे सुरक्षित रक्खे जाने की रीति प्रचलित थी। वहाँ वालो ने खोज कर के एक ऐसा मसाला ढूँढ निकाला था जिसकी वजह से वहुत समय तक मुर्दे का कलेवर खराव नही होता था। आज वैसे ही हजारो वर्ष पूर्व के मुर्दे यहाँ पर रक्खे हुये है, जिनकी चमड़ी काली पड़ गई है और वस्त्र गला हुआ सा प्रतीत होता है। ये मुर्दे इजिप्ट की कब्रो को खोद कर उनमे से निकाल कर लाये हुये है और इस समय वे अपने समाकार पेटियो मे रक्खे हुये है। इन पेटियो मे कई पेटिये तो लकड़ी की वनी हुई है और कई पत्थर की। इसके अतिरिक्त इजिप्ट का वहुत सा दूसरा ऐतिहासिक सामान भी देखने योग्य है।

इसी प्रकार अन्यान्य देशों का आश्चर्यजनक ऐतिहासिक सामान भी सुन्दरता के साथ सजा कर रक्खा हुआ है ।

नेचरल हिस्ट्री म्यूजियम ।
(Natural History Museum)

यह भी ब्रृटिश म्यूजियम के समान ही प्रसिद्ध म्यूजियम है। इसका विशाल भवन क्रोम्वेल रोड (Crom-well Road) पर बना हुआ है। यह भवन सन् १८८० ई० में बन कर तैयार हुआ था। इसके बनवाने में चार लाख पाउन्ड अर्थात् साठ लाख रुपये खर्च हुए थे। इसमें रक्खे हुए मृगपशुपत्ती व वृत्त, पत्थर इत्यादि पहले ब्रृटिश म्यूजियम मे ही रक्खे हुए थे परन्तु प्राकृतिकज्ञान-विस्तार के लिये अर्थात् प्राकृतिक पदार्थों से सर्व साधारण के अधिक लाभ अर्जन करने के लिये इन पदार्थों को एक अलग विभाग में रखना उचित समझा जा कर यह भवन निर्माण कराया गया और जब भवन तैयार हो गया तो इस प्रकार के सब पदार्थ इस भवन में लाकर रक्खे गये । यो तो विद्यार्थीगण प्रत्येक म्यूजियम में प्राकृतिक ज्ञान प्राप्ति के लिये जाया करते हैं परन्तु इस म्यूजियम में तो उनकी स्पेशल क्लासे (Special Classes)

अर्थात् विशेष कक्षाएँ, हुआ करती हैं, जहाँ अध्यापक-गण (Professors) किसी जानवर की ठठरी या किसी वृक्ष के तने के पास बैठ कर उनके विषय में भाषण दिया करते हैं । यहाँ पर एक छिपकली (Lizard) के आकार की किसी बहुत बड़े जानवर की ठठरी है जिसकी लम्बाई ८० फीट से ऊपर है । यह जानवर अब इस दुनिया में नहीं पाया जाता । तीन ह्वेल मछलियों की ठठरियाँ हैं जो आकार में जहाज के समान लम्बी है । इस पशुपक्षी विभाग मे दुनिया के प्रत्येक भाग के पशु पक्षियों की ठठरियाँ विद्यमान है ।

वृक्ष विभाग में एक पेड रक्खा हुआ है जिसका घेरा ८० फीट का है । पत्थर और सोना, रूपा, पारा, मूँगा आदि सब पृथक् पृथक् सुन्दरता के साथ सजाए हुए हैं और कौन जाति का पत्थर, कहाँ से निकला करता है ? सो भी लिखा हुआ है । इस भवन में न्यूटन (Newton) और डार्विन (Darwin) की विशाल काय मूर्तियाँ रक्खी हुई हैं जो उनके प्राकृतिक ज्ञान व प्रतिभा का स्मरण दिलाती है ।

विक्टोरिया व एलबर्ट म्यूजियम ।
(Victoria & Albert Museum)

यह भी एक बड़ा म्यूजियम है जो नेचरल हिस्ट्री म्यूजियम के पास ही बना हुआ है । इसकी पुरानी इमारतें तो सन

१८६० ई० में बनीथी परन्तु म्यूजियम का ज्यादा हिस्सा जो नया बना हुआ है, उसकी नीव स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया ने सन् १८६६ ई० में डाली थी, परन्तु उक्त महारानी का स्वर्गवास होजाने से सन् १६०६ ई० में इस भाग का उद्घाटन सम्राट एडवर्ड सप्तम द्वारा हुआ था। इसका कुछ भाग तो क्रोम्वेलरोड (Cromwell Road) पर और कुछ एग्जिबीशन रोड (Exhibition Road) पर है। इस म्यूजियम में कुल मिलाकर १४५ कमरे हैं, जिनमें हुनर, कारीगरी और कला-कौशल के नमूने रूपमें, सुन्दर सामान का बहुत बड़ा संग्रह है। बढ़िया से बढ़िया हाथ की खुदाई का लकड़ी का काम और कॉच के काम का भी संग्रह है। इनके अतिरिक्त चित्रकारी, चमड़े का काम, पत्थर का काम, मीनेका काम और मिट्टी के बर्तन तथा बड़ी बड़ी मूर्तियों का अच्छा संग्रह है।

यहॉ पर बढ़िया से बढ़िया दो लाख चित्रों का भी संग्रह है और यहॉ की लाईब्रेरी में सवालाख पुस्तकों का संग्रह है। फरनीचर तथा दूसरी चीजों का तो शुमार ही नही है।

साइंस म्यूजियम (Science Museum)

यह म्यूजियम एग्जिबीशन रोड पर विक्टोरिया व एल्बर्ट म्यूजियम के पासमें जो साइंस कॉलेज बनाहुआ है,

ठीक उसके सामने बना हुआ है। इसमें कई प्रकार की मशीनें लगीहुई हैं, जिनमें वायुयान, जहाज और ट्रेन का ऐतिहासिक रूप क्रमशः बतलाया गया है। इससे यह भली प्रकार से मालूम होजाता है कि इनका पहले पहल क्या रूप था बाद में कैसे २ सुधार होते गये और किस प्रकार से यह वर्तमान रूप प्राप्त हुआ? बहुतसी मशीनें चावी लगादेने से अपने आप चलती रहती हैं। इस म्यूजियम के देखने से वायुयान, जहाज, मोटर, मोटर साइकिल आदि की मशीनों का अच्छा ज्ञान होजाता है और कारीगरों को तो और भी अधिक लाभ होता है।

वार म्यूजियम (War Museum)

साइन्स म्यूजियम के सामने वार म्युजियम बनाहुआ है जिसमें जर्मनी के साथ जो लड़ाई हुई थी, उसमें काम आने वाले सब प्रकार के शस्त्रों आदि का सुन्दर संग्रह है। छोटी बड़ी सब प्रकार की तोपें, मशीनें, बन्दूकें और सब प्रकार के साज सामान पृथक् २ सजाये हुए हैं। जिन जिन तोपों में, जैसे गोले या गोलियाँ चलाई गई थी सो बतलाया गया है और गोले गोलियों को खुली हुई अलमारियों में रख छोड़े हैं। इसके अतिरिक्त लड़ाई के दिनों में जो जो नुकसान शत्रुओं द्वारा हुए थे और ग्राम इत्यादि जलाये गए

थे उन सब के स्मारक चिन्ह चित्र रूप में कायम रक्खे हुए हैं। इस म्यूजियम के देखने से मानों लड़ाई का दृश्य नेत्रों के सामने आजाता है।

इम्पिरियल इन्सटीट्यूट म्यूजियम।

(Imperial Institute Museum)

यह म्यूजियम वार म्यूजियम के पासमें बना हुआ है। सन् १८९७ ई० में सम्राज्ञी विक्टोरिया के डायमंड जुबिली के सुअवसर पर इस म्यूजियम का उद्घाटन हुआथा। इसमें भारत, केनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका इत्यादि उपनिवेशों में उत्पन्न होनेवाले प्राकृतिक पदार्थों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त वर्तमान सम्राट ने सम्राट एडवर्ड के द्वितीय पुत्र की हैसियत से व युवराज की हैसियत से जो मानपत्र प्राप्त किये थे उनका भी संग्रह है।

इण्डिया म्यूजियम (India Museum)

यह म्यूजियम, उपरोक्त म्यूजियम के पासही है, जहाँ पर हिन्दुस्तान की कारीगरी के बढ़िया सामान का संग्रह है, जो देखने वालों को बहुत पुराने समय की याद दिलाता है।

वेलेस कलेकशन म्यूज़ियम।

(Wallace Collection Museum)

यह म्यूजियम मैनचेस्टर स्क्वायर (Manchester Square) में हर्डफोर्ड हॉल (Herd Ford Hall) में है। यह संग्रहालय फ्रान्स के सर रिचार्ड वेलेस (Sir Richard Wallace) को उसके चचा मार्कुइस आफ हर्डफोर्ड (Marquis of Herd Ford) के देहान्त पर मिला था। इसमें रक्खा हुआ सामान मानो फ्रान्स के सुन्दर संग्रह का साररूप है, जो उस समय फ्रान्स की स्थिति भयङ्कर हो जाने के कारण इस शहर में लाया गया था। यहाँ पर दस्तकारी व चित्रकारी का बढ़िया सामान व मीना, चीनी व लकड़ी के फरनीचर तथा शस्त्रों का बहुत बढ़िया संग्रह है। लेडी वेलेस ने अपने देहान्त के समय पर इन सब बहुमूल्य पदार्थों को अपने देश के हितार्थ दान कर दिया था। इसके देखने से फ्रान्स के सुन्दर कला-कौशल का खासा ज्ञान होजाता है। इस हर्डफोर्ड हाउस को सन् १८०० ई० में एक लाख पाउन्ड में खरीद कर पब्लिक के लिये म्यूजियम बना दिया गया। इसका भवन बाहिर से तो साधारणसा प्रतीत होता है, परन्तु भीतर का संग्रह देखकर संग्रहकर्त्ता के अपार लक्ष्मीवान् होने का

पता चलता है जिसने कि लाखों रुपये खर्च करके ऐसी अमूल्य सामग्री का संग्रह किया है।

रॉयल कॉलेज म्यूजियम।

(Royal College Museum)

यहाँ पर संगीत-विद्या सिखलाई जाती है। इसके नीचे के हिस्सों में दुनिया भर के बाजों का सुन्दर संग्रह है।

ऐसे ही और कई म्यूजियम हैं, जिनमें लण्डन म्यूजियम (London Museum), गिल्डहॉल म्यूजियम (Guildhall Museum), बेथनलग्रीन म्यूजियम (Bethnal Green Museum) आदि प्रसिद्ध हैं।

होटल और चायपानी की दूकानें।

(Hotels and Restaurants)

यहाँ पर होटल और चाय पानी की दूकानों की संख्या हजारों पर है। विशेषकर जर्मन वार के बाद इसकी संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। होटल क्या है मानो हर प्रकार के आराम के धाम हैं और मनोवासनाओं की पूर्ति के केन्द्र स्थान है। होटलों के ऐश आराम का हाल

तो देखते ही बनता है, कहने में नहीं आसकता। होटलों की इमारतें और उनके सजे हुए कमरों को देख कर तो विस्मित होना पड़ता है। बड़े से बड़े पैलेस की भी इनके सामने कोई हस्ती नहीं। यदि पास में पैसे हो तो पैलेसों से अधिक आराम और आनन्द प्राप्त हो सकता है। यहाँ का खाना, गाना, रोशनी, सजावट और लाखों की लागत के भवन व सामान तथा यहाँ की खातिरदारी और खिदमतगारी आदि सभी देखने की वस्तुएँ हैं।

यों तो हर एक जगह पर होटल मौजूद है परन्तु पिकेडिली में बहुतायत से आये हुए हैं। इन होटलों में मनमाना अंग्रेजी खाना मिल सकता है। परन्तु तीस पैंतीस होटल ऐसे भी हैं कि जहाँ पर मांस और शराब छुआ तक नहीं जाता। यहाँ सिर्फ साग सब्जी से ही खाना पीना होता है। ऐसे होटल भी अधिकतर पिकेडिली में ही है। पिकेडिली में दो होटल ऐसे भी हैं जहाँ पर अच्छा हिन्दुस्तानी खाना मिलता है। इनमें एक चाइना होटल है जहाँ बावर्ची वगैरः सब चाइनी हैं परन्तु खाना हिन्दुस्तानी बनाते हैं। दूसरा होटल हिन्दुस्तान के एक 'अब्दुल्ला' नामक मुसलमान का है। यहाँ बावर्ची वगैरः

सब हिन्दुस्तानी हैं परन्तु खिलाने वाले बटलरों में अंग्रेज़ भी नौकर है। इस होटल में मांग के मूजिब ही हिन्दुस्तानी खाना, तैयार कर देते हैं। इन होटलों में हिन्दुस्तानियों के अतिरिक्त अंग्रेज़ भी खाना खाने को आया करते हैं।

योंतो प्रत्येक प्रसिद्ध बाजार और पार्क के पास में एक ही नहीं कई २ होटल आये हुए हैं और उनमें बहुत अधिक भीड़ रहा करती है परन्तु जो होटल कि खास मौकों पर आगये हैं, उनमें कुछ विशेष चहल पहल रहा करती है। वहाँ पर घूमने वाले प्रायः वहाँ के होटलों में अपने मनोवासनाओं की तृप्ति किया करते है। यहाँ पर मुख्य २ होटलों की संख्या १२६ है जिनमें से ६२ होटल सरकार से लाइसेन्स यापता हैं। इनमें भी कुछ होटल जो विशेष प्रसिद्ध हैं और बहुत बड़े बड़े हैं, जिनमें सैकड़ों कमरे है और वे सुन्दर सजे हुए हैं तथा जिनकी इमारतें लाखों रुपयों के लागत की बनी हुई है और जिनमें हर समय बहुत हजूम रहा करता है, उनके नाम यहाँ पर दिये जाते हैः—

बर्कल्ले (Berkeley) पिकेडिली (Piccadilly)
प्रिन्सेस (Prince's)

रीजेन्ट पैलेस (Regent Palace) रिज (Ritz)
एलेग्जेन्ड्रा (Alexandra) डी वेरी (De vere)
हाइडपार्क (Hyde Park) सेसिल (Cecil)
बेड फोर्ड (Bed ford) अडेल्फी (Adelphi)
कवीन्ट गार्डन (Covent Garden) सेवोय (Savoy)
केनन स्ट्रीट (Cannon Street) चार्ल्टन (Carlton)
चेरिंग क्रोस (Charing Cross) ग्रोसवेनर (Grosvenor)
केलेरिज्स (Claridge's) मेट्रोपुल (Metropole)
इम्पीरियल (Imperial) रोयल पैलेस (Royal Palace)

इन होटलो में खाने और आराम करने के रेट्स इस प्रकार हैः—

रात का आराम और सुबह का खाना	८॥ से १०॥	शिलिंग
टिफन (Tiffen)	२॥ से ५	शिलिंग
टी (Tea)	१ से २॥	शिलिंग
डिनर (Dinner)	४ से ७॥	शिलिंग
२४ घंटे आराम करने और खाने के	१५ से २६	शिलिंग

जो हाल होटलों का है वही हाल चायपानी की दूकानों का है। चाहे जिस जगह पर देख लीजिये चाय पानी की दूकानें जरूर मिलेंगी। विशेषकर बाजार में तो और २ प्रकार की दूकानों से भी अधिक संख्या चाय पानी की दूकानों ही की मिलेगी। इसपर भी चायपानी की ऐसी कोई दूकान नहीं मिलेगी जो भरी हुई न हो। इन दूकानों में हर समय मेला सा लगा रहता है। इन दूकानों की एक वक्त केमामूली खानेकी रेट एक शिलिंग छः पेन्स है।

इन होटलों और चायपानी की दूकानों में प्रायः खाने, कोयले और गेस के चूल्हों पर तैयार होते हैं।

दूकानें।

लण्डन शहर में यह नियम तो प्रायः सभी दूकानों पर देखा गया है कि किसी भी सामान के खरीदने में मूल्य नहीं पूछना पड़ता। प्रत्येय वस्तु का मूल्य पहले से ही उस पर लिखा रहता है। वस्तुएँ काँच की अल-मारियों में सजी हुई रहती हैं, जिनको कोई भी मनुष्य रास्ते चलते हुये देख सकता है और अपनी आवश्यकता-नुसार पसन्द करके खरीद कर सकता है। इन दूकानों में महिलाओं की पोशाकें बनावटी महिलाओं को पहना कर इस खूबसूरती के साथ खड़ी करते हैं कि वे साक्षात्

महिलाएँ ही मालूम होती हैं। पुरुषो और स्त्रियों के वस्त्र अलग अलग विभागो में सजाये जाते है। पुरुषो के सूटों का मूल्य जो कपड़े पर लिखा रहता है उसमें सिलाई और लाइनिंग (Sewing and Lining) आदि भी शामिल होते है। यहाँ पर सिर्फ दो प्रसिद्ध दूकानो का कुछ हाल दिया जाता है।

सेल्फरिजेज़ (Selfridges)

ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट में अन्यान्य बड़ी दूकानों के साथ में "सेल्फरिजेज" नाम की भी एक बहुत बड़ी दूकान है। इसकी आकृति जोधपुर के गिरदीकोट के समान चौकोर है। यह बड़े २ खम्भो से घिरी हुई है। यह सात मंजिल ऊँची है और प्रत्येक मंजिल में कई विभाग आये हुए हैं। यहाँ पर प्रत्येक प्रकार के सामान के अलग अलग विभाग है। ऊपर की मंजिलो में जाने आने के लिये दूकान के मध्य भाग में दस बारह और चारो ओर को दो दो चार २ लिफ्ट (Lift) लगे हुए हैं जो रात दिन चलते रहते हैं। फिर भी ऊपर जाने आने वालो की भीड़ इतनी अधिक रहती है कि कभी कभी तो बहुत देर तक लिफ्ट के दरवाजे पर जगह मिलने की प्रतीक्षा में खड़ा रहना पड़ता है परन्तु धन्य है उनके नियम की पाबन्दी

को कि इतनी भीड़ रहने पर भी किसी को धक्का धूम करना तो दूर रहा, शरीर छूजाने पर भी खेद प्रकट करते हुए क्षमा प्रार्थना की जाती है।

इस दूकान में मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार हर तरह का बढ़िया से बढ़िया सामान मिल सकता है। चाहे सुबुह से शाम तक सामान खरीदते रहिए, पैसों का अन्त आजायगा परन्तु दूकान के विभागो और सामान का अंत नहीं आवेगा। एक दिन एक अपनी सुपरिचिता योरोपीय महिला के साथ हम लोगों को भी इस दूकान के भीतर से घूम कर देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। हमलोग दिन के ग्यारह बजे से शाम के पाँच बजे तक दूकान के विभागों को देखते रहे थे और आवश्यकतानुसार सामान भी खरीदा था।

दूकान के प्रत्येक विभाग में इतनी अधिक भीड़ रहती है कि जितनी हमारे जोधपुर के बड़ीतीज के मेले में भी नही रहती। यों तो इस शहर में खरीदी का काम भी प्रायः स्त्रियाँ ही किया करती हैं, परन्तु बिक्री का काम करने वाली तो फी सदी ९० स्त्रियाँ ही होती हैं। इस नियम के अनुसार इस दूकान के प्रत्येक विभाग में भी

बिक्री का काम प्रायः स्त्रियाँ ही करती हैं, जिनमें युव
और अविवाहिता ही अधिक संख्या में हैं।

दूकान के किसी भी विभाग में जाने से पहिले उर
विभाग की संचालिका सामने आकर बड़ी ही नम्रता से
आगत व्यक्ति की आवश्यकता को पूछेगी। तत्पश्चात् व
जैसी वस्तु चाहता हो उस विभाग में जाने का नम्र
निवेदन करेगी और रास्ता भी बतला देगी। खरीदा
चाहे जिस विभाग में जाकर बहुतसी चीजें देखने के
पश्चात् "नो थैंक यू" (No, Thank you) कह कर चल
जावे तो उसके लिये वे बुरा नहीं मानती। यदि खरी
दार जैसी चीज चाहता है वैसी उनके पास नहीं होती
तो बड़ी ही नम्रता के साथ 'सोरी' (Sorry) कहकर खे
प्रकट करती है।

एक तो नम्रता, वह भी स्त्री जाति की स्वाभावि
सुन्दरता, उसके हाव भाव, मुस्कुराहट और मधुर संभाषण
के साथ, बहुत ही प्यारी मालूम होती है।

प्रत्येक विभाग में माल खरीदने के बाद उसकी
कीमत चुकाने की एक अपूर्व विधि प्रचलित है। दो चा
विभागों के सामने एक खजाञ्ची का कमरा (Cashier

को कि इतनी भीड़ रहने पर भी किसी को धक्का धूम करना तो दूर रहा, शरीर छूजाने पर भी खेद प्रकट करते हुए क्षमा प्रार्थना की जाती है।

इस दूकान में मनुष्य की आवश्यकता के अनुसार हर तरह का बढ़िया से बढ़िया सामान मिल सकता है। चाहे सुबुह से शाम तक सामान खरीदते रहिए, पैसों का अन्त आजायगा परन्तु दूकान के विभागों और सामान का अंत नही आवेगा। एक दिन एक अपनी सुपरिचिता योरोपीय महिला के साथ हम लोगों को भी इस दूकान के भीतर से घूम कर देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। हमलोग दिन के ग्यारह बजे से शाम के पाँच बजे तक दूकान के विभागों को देखते रहे थे और आवश्यकतानुसार सामान भी खरीदा था।

दूकान के प्रत्येक विभाग में इतनी अधिक भीड़ रहती है कि जितनी हमारे जोधपुर के बड़ीतीज के मेले में भी नही रहती। यो तो इस शहर में खरीदी का काम भी प्रायः स्त्रियाँ ही किया करती हैं, परन्तु बिक्री का काम करने वाली तो फी सदी ९० स्त्रियाँ ही होती हैं। इस नियम के अनुसार इस दूकान के प्रत्येक विभाग में भी

बिक्री का काम प्रायः स्त्रियाँ ही करती है, जिनमें युवा और अविवाहिता ही अधिक संख्या में हैं।

दूकान के किसी भी विभाग में जाने से पहिले उस विभाग की संचालिका सामने आकर बड़ी ही नम्रता से आगत व्यक्ति की आवश्यकता को पूछेगी। तत्पश्चात् वह जैसी वस्तु चाहता हो उस विभाग में जाने का नम्र-निवेदन करेगी और रास्ता भी बतला देगी। खरीदार चाहे जिस विभाग में जाकर बहुतसी चीजें देखने के पश्चात् "नो थेंक यू" (No, Thank you) कह कर चला जावे तो इसके लिये वे बुरा नहीं मानती। यदि खरीदार जैसी चीज़ चाहता है वैसी उनके पास नही होती है तो बड़ी ही नम्रता के साथ 'सोरी' (Sorry) कहकर खेद प्रकट करती है।

एक तो नम्रता, वह भी स्त्री जाति की स्वाभाविक सुन्दरता, उसके हाव भाव, मुस्कुराहट और मधुर संभाषण के साथ, बहुत ही प्यारी मालूम होती है।

प्रत्येक विभाग में माल खरीदने के बाद उसकी कीमत चुकाने की एक अपूर्व विधि प्रचलित है। दो चार विभागों के सामने एक खजान्ची का कमरा (Cashier's

Room) होता है। खरीदे हुए सामान का बिल और पैसे विभाग की सञ्चालिका लेकर खजाञ्ची के पास जाती है और बिल पर खजाञ्ची के हस्ताक्षर करा कर लाती है। कही कहीं खुद खरीदार को खजाञ्ची के पास जाना पड़ता है और बहुतसी जगह मशीन द्वारा बिल और पैसे खजाञ्ची के पास भेज कर उसके हस्ताक्षर करके मँगाये जाते है। बिना खजाञ्ची के हस्ताक्षर हुए कोई भी माल के पैसे हासिल नहीं कर सकता।

खरीदा हुआ माल चाहे थोड़ा हो अथवा अधिक, यदि खरीदार साथ ले जाना चाहे तो खुशी से लेजा सकता है अन्यथा मकान पर पहुँचा देने का अपूर्व सुविधा है। पार्सल कैसा भी छोटा बड़ा क्यों न हो, सिर्फ पूरा पता दे जाइये, दूसरे दिन हिफाजत के साथ मकान पर पहुँच जायगा। पैसे पहले दे देने और माल दूसरे दिन आने में, किसी प्रकार के विचार की जरूरत न होगी। ऐसा सामान प्रायः मोटर लोरियो द्वारा पहुँचाया जाता है और डाक पार्सल से भी भेजा जाता है।

हर्डस कंपनी (Harrods Ltd.)

यह भी एक बहुत बड़ी दुकान है जो ब्रोम्पटन सडक पर आई हुई है। इसमें कीड़ी से लेकर हाथी तक और सुई से

लेकर वायुयान और जवाहिरात तक जो चाहो सो मिल सकते है। यहाँ पर भी सब प्रकार की वस्तुओं के अलग अलग विभाग बनेहुए है। खाने के विभाग में मांस, फल, आटा, रोटी, केक इत्यादि जिस प्रकार के चाहिये, मिल सकते है। पीने के विभाग में औषधियो से लेकर शराब, शर्बत, सोडा, बर्फ आदि सब यहाँ पर मिलते है। फरनिशिग (Furnishing) विभाग को देख कर तो ताज्जुब करना पड़ता है। कपड़े के विभाग में हर प्रकार के सिले हुए तथा बिना सिले कपड़े तथा डेरे, तम्बू, कनातें, छोलदारियें सब तैयार मिलती हैं। दूकान के अन्दर होटल, बारबरशॉप, तार घर, पोस्ट-ऑफिस और बैंक तक मोजूद है तथा जहाज और रेलवे के टिकिट भी मिल सकते हैं। दूकान में छः हजार कर्मचारी काम करते है। दूकान की भीड़ का तो हिसाब ही नही हो सकता। यहाँ पर सुबुह से शाम तक घूमते हुए खा पी कर आराम कर सकते है और खेल कूद नाच मे भी शरीक हो सकते हैं।

समर सेल (Summer Sale) के समय तो यहाँ पर हमेशे से भी अधिक भीड़ रहा करती है। समर सेल में साल उतार माल की दर कमती करदी जाती है इस लिये खरीदार अपना लाभ समझ कर के अधिक संख्या में

आते हैं। यह समर सेल ८ दिन के लिये होता है और प्रायः सभी दूकानों में आगे पीछे करके होता है। ऐसे अवसर पर हर प्रकार के सामान के ढेर लगे रहते हैं और एक पाउण्ड की चीज़ पन्द्रह शिलिङ्ग में दी जाती है।

इस कम्पनी का काम बहुत अच्छा चल रहा है। इसकी पूँजी का तो कोई पार ही नहीं पासकता। आय इतनी अधिक होती है कि छः हजार कर्मचारियों का खर्चा निकाल कर भी इस को बहुत लाभ रहता है। इसके मकानात हमारे जोधपुर की कचहरियों की तरह के बने हुए है।

बाल काटने की दूकानें।

(Hair Cutting Saloons)

यहॉ पर हेयर कटिंग सेलून्स अर्थात् बाल काटने की दूकानें बहुत है। दूकानो की सजावट देखने योग्य होती है। इन दूकानों में फेशन फेशन के बालों के सैकड़ों चित्र दिवारों पर लटकते रहते है जिनपर उस प्रकार के बाल कटवाने की फीस भी लिखी रहती है। बाल कटवाने वाले को आदर के साथ बढ़िया कुर्सी पर बिठलाकर और उसपर

एक बढ़िया खोला डालकर नाना प्रकार की कैंचियों द्वारा जिस प्रकार के बाल कि वह कटवाना चाहता हो, काटे जाते है और बड़ीहि सफाई के साथ कई उस्तरों के योग से हजामत बनाई जाती है तथा बाल धोये और जमाये जाते है। बाल धोकर बिजली की मशीन द्वारा सुखाये जाते है जो फौरन सूख जाते है। कुर्सी के चारों ओर ऊपर नीचे को बड़े २ कॉच लगे रहते है जिससे जिस ओर को मुंह रहे उसी ओर से वह कॉच में दिखाई देता रहै। दूकान वाला बाल कटवाने वाले के चारों ओर को फिरता हुआ बडी ही मुस्तैदी के साथ अपना काम करता है। कई टेबुलों पर औजार, साबुन, कूंचियें और खूटियों पर साफ धुले हुए टावल पड़े रहते है जो हजामत बनाने वाले को उसके कर्मचारी आवश्यकतानुसार देते लेते रहते हैं। यदि जरूरत हो तो ये नौकर लोग चाय, पानी, सोडा इत्यादि भी बाजार से लासकते है। नख साफ़ करने या काटने का काम एक स्त्री करती है। यहॉ पर नख साफ़ कराने का एक आम रिवाज है। लोग नाखूनों के ऊपर का चमड़ा कटवा कर बिलकुल ही गोल और सुडोल बनवा लेते हैं। इन दूकानो के साथ में टर्किश बाथ हम्माम (Turkish Bath Hamams) अर्थात स्नानागार भी रहता है, जहॉ पर स्नान कराकर थकावट

को दूर कर ताज़गी भरदी जाती है। बाल कटाई आदि की रेट्स् इस प्रकार है:—

बाल कटाई	१ शिलिङ्ग
सम्पू (बाल धुलाई)	१ शिलिंग
सिर्फ हेयर ड्रेस (बाल जमाई)	६ पेन्स
हजामत बनवाई	१ शिलिग से ६ शिलिग तक

टर्किशबाथ हम्माम।

(Turkish Bath Hamams)

इस शहर में बहुतसी हेयर कटिंग सेलुनों (बाल काटने की दूकानों) के साथ में टर्किशबाथ हम्माम अर्थात् स्नानागार भी बनेहुए है, जहाँपर बहुतसे मनुष्य अपनी थकावट दूर करने के लिये नहाने को जाया करते हैं। प्रत्येक स्नानागार में पानी का हौज बना हुआ है, जिसमें मौसम के अनुसार थोड़ा गरम अथवा बहुत गरम पानी हर समय भरा हरता है। इस पानी में विजली का करेंट (Current) भी रहता है जो स्नान करने वाले की थकावट को दूर कर उसके शरीर में ताजगी भरदेता है। पहले थोड़े गरम पानी से, फिर उससे कुछ अधिक गरम पानी से और उसके बाद उससे भी कुछ अधिक गरम पानी से स्नान करादेते

है तब हौजमें स्नान कराया जाता है। हौजके चारो ओर बैठने और लेटने के लिये बढ़िया आराम कुर्सियाँ और कोच बिछे रहते हैं जिनपर लिटा कर मालिश भी की जाती है। यहाँ पर आराम करने वाले घंटों टावल लपेटे पड़े रहते है और चाय, पानी, व्हिस्की, सोडा इत्यादि पदार्थों का सेवन करते रहते हैं। सफ़ेद फेन के समान टावल लपेटे और चुपचाप पड़े हुए मनुष्यों को देखकर हमें सतीपुर के मोगों की याद आगई। नहाने को बढ़ने के पहले सब वस्त्र त्याग दिये जाते है और उसी नग्नावस्था में हौज़ के बाहर निकलना पड़ता है। हौज़के बाहर निकलते ही दो मनुष्य जो टावल लिये हुए तैयार मिलते है, वे सारे शरीर को पोंछते है और दूसरे सूखे टावलो से लपेट कर आराम-कुर्सी या कोच पर लिटा देते है और इच्छा प्रकट करने पर मालिश करना भी शुरू करदेते है। ऐसे स्नान की रेट ५ शिलिंग से १० शिलिंग तक है।

शराब की दूकानें।

प्रत्येक मुहल्ले में एक दो शराब की दूकाने है. जिनके अन्दर और बाहर हर समय शराब खोरों का जमघट लगा रहता है, जिनमें अधिकतर मनुष्य मजदूर श्रेणी के ही होते है। बियर (Beer) शराब का पीना यहाँ पर बुरा नहीं समझा

जाता, इसलिये यहाँ के स्त्री पुरुष, प्रायः इस शराब का व्यवहार किया करते हैं।

सवारियें।

जिस शहर की प्रत्येक सड़क पर, सिर्फ एक मिनिट भर समय में ही, कई तरह की, किन्तु हजारों की संख्या में, चमाचम करती हुई सवारियाँ, लाखों मनुष्यों को गोद में लिये हुए, इधर से उधर गुजर जाती हैं, उस शहर की सवारियों के लिये क्या कहा जाय? फिर भी जब लिखने बैठे हैं, तो थोड़ा बहुत हाल लिखना ही चाहिये।

बस (Bus)

ओमनी बस, जिसे प्रायः बस ही कहा करते हैं, दो मंजली मोटर लोरीके आकार की बनी हुई होती है और उसके अन्दर बेचें लगी हुई होती हैं, जिन पर कोच के सदृश मखमल की पोशिश मढ़ी रहती है। इसके चारो तरफ की बारियो में काँच लगे रहते हैं और इस में ऊपर नीचे करके कुल पचास मनुष्य तक आसानी से बैठ सकते हैं। इसका किराया एक पेन्स से एक शिलिंग तक जगह के फासले के हिसाब से लगता है परन्तु हिसाब से एक पेन्स प्रति मील पड़ता है। प्रत्येक सड़क पर चलने वाली बसों

का अलग २ नम्बर रहता है। कौन-कौनसी सड़कों पर कौन २ से नम्बरों की बसें जाया करती हैं, इसका पता बग़ैर जाने पूछे लगना कठिन है। यहाँ पर बसें लाखों की संख्या में चलती हैं और आठ दस कम्पनियों की चलती हैं, परन्तु सब से अधिक बसें "लगडन जनरल बस कम्पनी" ही की दौड़ा करती हैं। इन बसों में लगडन की सड़को का नकशा मुफ्त मिलता है, जो प्रत्येक मनुष्य जब चाहे अलमारी में से निकाल कर ले सकता है। इस नकशे से यह मालूम हो सकता है कि कोनसी सड़क पर कौनसे नम्बर की बस जाती है और कोन २ सी सड़क पर जाने के लिये कहाँ कहाँ बसें बदलनी पड़ती हैं। बसें पेट्रोल नामक तेल के बल से चलती है और प्रत्येक मुहल्ले व गली में गुजरती रहती हैं। मुसाफिरो के सुभीते के लिये ऐसा प्रबंध है कि यदि वह बस, जिस में कि मुसाफिर बैठा है, उसके निश्चित-स्थान पर नही जाती है, तो वह, जहां पर कि उस स्थान की सड़क मुड़ती हो, वहाँ के स्टेशन पर, उस बस से उतर कर, वहां से उस स्थान की तरफ जाने वाली बस में, उसी टिकिट से बैठ सकता है, चाहे वह बस किसी दूसरी कम्पनी ही की क्यो न हो।

यों तो बस अपने प्रत्येक स्टेशन पर ही ठहरा करती है, परन्तु जरूरत के वक्त यदि रास्ते चलता हुआ मनुष्य भी हाथ उठा देवे तो फौरन ही रोक दी जाती है। लाखों बसों के होते हुए भी प्रत्येक बस ठसाठस भरी हुई ही मिलती है और सुबह ७ बजे से रात के १२ बजे तक बसें चला करती हैं। ये बसें थोड़े २ फासले से चला करती हैं और हर जगह पर मौजूद मिलती हैं। बसें क्या है मानो घर ही की सवारियें हैं, जो हर समय और हर एक स्थान पर हाजिर रहती हैं, जिन पर जब जरूरत हो चढ़ सकते और उतर सकते हैं। परन्तु बसों में आने जाने के लिये या तो जानकारी या कुछ अंग्रेजी बोध की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी कठिनाई से सामना करना पड़ता है। बगैर अंग्रेजी जाने यहाँ पर रहना तो पशुओं के समान है।

ट्राम (Tram)

बस के समान ही यहाँ की सस्ती सवारी ट्राम है, परन्तु यह शहरकी मुख्य सड़कों पर नहीं चलती। इसका कारण मुख्य सड़को पर अधिक भीड़ का रहना है। इसलिये प्रायः सभी मुख्य सड़कें, ट्राम से वंचित हैं। ट्रामें बिजली से चलती हैं।

मोटर (Motors)

मोटर टेकसियों के काफी तादाद में होने पर भी अधिकतर चलन यहां पर रोलसों और डेमलर मोटरो का ही है। कलकत्ते वम्बई में दौड़ने वाली मोटरो की संख्या तो यहाँ पर दौडने वाली मोटरों की संख्या के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। वहाँ पर रोलसी मोटरों की आसानी से गिनती की जा सकती है, परन्तु यहां पर उनकी गणना करना कुछ कठिन काम है। यहाँ पर कुल मोटरों की संख्या लाखों पर है।

मोटर लारियाँ भी यहाँ पर वहुत वड़ी २ हैं और वहुत अधिक संख्या में हैं। इनमें इतना अधिक भार लादा जाता है कि जिसे देखकर ताज्जुब करना पड़ता है। मोटर और मोटर लारियां पेट्रोल से चलती हैं।

साइकिल (Cycles)

मोटर साइकिलें और साइकलें भी यहाँ पर वहुत अधिक संख्या मे चलती हुई देखने मे आती है, परन्तु यह शहर के बीच के हिस्से में, जहा भीड़ अधिक रहा करती है, वहुत कम चलाई जाती है।

घोड़ागाड़ियाँ।

यहाँ पर घोड़ा गाड़ियाँ, प्रायः भार बरदारी के काम में लाई जाती हैं। टमटम, बग्गियें और इक्के, कुछ पुराने खयाल के आदमी अपने निजी व्यवहार में लाते हैं; किराये पर नहीं चलते।

रेलवे (Railways)

इस शहर में दो रेलवे हैं। एक अण्डर ग्राउण्ड रेलवे (Under ground Railway), जो बाहर तथा मकानों के नीचे होकर चलती है और दूसरी, भूगर्भ रेलवे (Tube Railway), जो जमीन के नीचे २ चला करती है। इन रेलवेज के सैकड़ों स्टेशन हैं और सैकड़ों मील लम्बी रेल की सड़कें बिछी हुई हैं। एक २ स्टेशन पर कई २ प्लेटफार्मस हैं और कई स्टेशनों पर दोनों रेलवेज का संगम (Cross) भी हुवा करता है, जहाँ उसी टिकिट से इधर से उधर आ जा सकते हैं। इन रेलवेज की ट्रेनों के इंजन नहीं लगते। ये बिजली से चला करती हैं और बिजली का तार लाइन से वे सालूपसा सटा हुआ रहता है। इन रेलवेज की ट्रेनें दो २ तीन २ मिनिट्स के फासले से चला करती हैं और किसी भी स्टेशन पर एक मिनिट से अधिक समय तक नहीं ठहरतीं।

यदि किसी ट्रेन में बैठने को जगह नहीं मिली तो अधिक समय तक इन्तजार करना नहीं पड़ेगा; दो मिनिट बाद ही दूसरी ट्रेन मिल जायगी। ट्रेनों की इतनी इफरात होने पर भी प्रत्येक ट्रेन मे इतनी भीड़ रहती है कि बैठने को क्या खड़े रहने को भी जगह कठिनतासे से मिलती है और ऐसा मालूम होता है, जैसे कालकोठरी में पड़ गये हो, परंतु ऐसी परिस्थिति अधिक समय तक नहीं रहती। दो मिनिट बाद ही दूसरे स्टेशन के आजाने से बहुत से लोग उतर पड़ते हैं और खड़े हुए मनुष्यो को बैठने को जगह मिल जाती है। जो मनुष्य खड़े रहते हैं, वे छत में लगी हुई चमड़े की हथियों को पकड़े हुए रहते हैं, ताकि ट्रेन के चलते या ठहरते समय गिरने न पावें। ट्रेन मे बहुत अधिक भीड़ के रहने पर भी, ट्रेन में बैठे हुए लोग ट्रेन में चढ़ते हुए मनुष्यो को हमारे भारतवर्ष की तरह ट्रेन मे आने से मना नहीं करते। यदि कोई स्त्री ट्रेन पर चढ़आती है और बैठने को जगह नहीं होती है तो ट्रेन मे बैठे हुए पुरुष उठ जायँगे, परंतु स्त्री को बैठने के लिये जगह अवश्य देंगे। इतनी भीड़ रहने पर भी किसी प्रकार का शोर गुल नहीं होता; लोग अपने काम की बातें आहिस्तगी से करते रहते हैं। सब लोगो के हाथ में अखबार या पुस्तक अवश्य रहती है, जिन्हे वे पढ़ते जाते है। इस पॉच सात मिनिट के सफर

के समय को भी यहां के लोग व्यर्थ न खोकर उपयोग में लाते हैं। यहॉ पर लोग प्रायः थर्ड क्लास में ही बैठा करते हैं। प्रत्येक ट्रेन में एक गाडी फर्स्ट क्लास की भी लगी रहती है, परंतु सेकिण्ड क्लास नहीं होती। यहॉ की थर्ड क्लास हमारी भारतवर्ष की फर्स्ट क्लास से भी अच्छी होती है। बिजली की करामात से स्टेशन के आते ही डिब्बों के फाटक अपने आप खुलते और इसी प्रकार ट्रेन की रवानगी पर बंद हो जाते हैं। ट्रेन से उतरने और चढ़ने में अत्यन्त फुर्ती से काम लेना पड़ता है। किसी जगह पर तो ट्रेन सीधी जाती है और किसी जगह पर जाने के लिये कई ट्रेनें चेंज करनी पड़ती हैं। रेलवे के प्रत्येक स्टेशन और प्रत्येक ट्रेन में रेलवे के नकशे मुफ्त मिलते हैं। डिब्बों में सफाई और रोशनी बहुत अच्छी रहती है। स्टेशनों पर आने जाने के प्लेट-फार्म अलग २ बने हुए हैं। प्रत्येक प्लेट फार्म पर, जिस तरफ से ट्रेन आने वाली हो, वह लिखा रहता है। रात के समय या भूगर्भ रेलवे के जिन स्टेशनों पर प्रकाश नहीं पहुँच सकता है, वहॉ पर दिन में भी इन आने वाली ट्रेनों के नाम बिजली की रोशनी के अक्षरों में लिखे रहते हैं। ऐसा होने से मुसाफिरों को यह पूछने की दिक्कत नहीं उठानी पड़ती कि ट्रेन किधर से आने वाली है। प्रत्येक स्टेशन पर अखबारों और चाकलेट वगैरः की दूकाने लगी

हुई मिलती हैं । रास्ते पर चलते हुए मनुष्य बिना नोटिस पढे यह मालूम ही नहीं कर सकते कि रेलवे स्टेशन पास ही में आया हुआ है । ऊपर से कुछ भी मालूम नहीं होता और अन्दर जाने पर गॉव सा बसा हुआ दिखाई देता है । ऐसी ही इन रेलवेज का कुछ विशेष हाल यहाँ पर दिया जाता है ।

अण्डर ग्राउण्ड रेलवे ।

(Under-ground Railways)

अण्डर ग्राउण्ड और दूसरी इलेक्ट्रिक रेलवे (Under-ground and other Electric Railways) की शाखायें इस प्रकार हैः—

(१) दी मेट्रोपोलिटन और डिस्ट्रिक्ट रेलवेज
(Metropolitan and District Railways)

(२) ग्रेटवेस्टर्न रेलवेज (Great Western Railways

(३) लण्डन एन्ड नार्थ ईस्ट रेलवेज
(London and North East Railways)

(४) लण्डन मिडलैण्ड और स्कॉटिश रेलवेज
(London Midland and Scottish Railways)

(५) सदर्न रेलवेज (Southern Railways)

जो ट्रेनें लण्डन से बहुत दूर के फासले पर जाती हैं, उन में इंजिन लगते हैं और किसी २ ट्रेन में सेकण्ड क्लास भी रहता है।

ट्यूब रेलवे (Tube Railways)

यदि इस शहर में कोई सब से अधिक आश्चर्यकारी चीज है तो यही भूगर्भ रेलवे ! जिसको यहाँ पर ट्यूब रेलवे (Tube Railways) कहते है। ट्यूब के माने नली के हैं। इस रेलवे की सड़क जो जमीन के नीचे नली के समान पोले रास्ते मे होकर गई है इसलिये ट्यूब रेलवे कहलाती है। बस्ती घनी होने के कारण रेल के आने जाने को काफी ठौर नहीं मिलने से घरों तथा सड़कों के नीचे धरती पोली करके इसके लिये मार्ग तैयार किये गये हैं और इस प्रकार के मार्ग टेम्स नदी के नीचे होकर भी निकाले गये हैं, जिनको टनल्स (Tunnels) कहते हैं। इस रेलवे की सड़क कितनी गहरी गई है, इसका पता इसी से चल सकता है कि यह टेम्स जैसी एक बहुत बड़ी नदी के नीचे होकर निकली है। पहले तो टेम्स नदी ही खूब गहरी है कि जिस पर बड़े बड़े स्टीमर तक आते जाते रहते हैं, फिर उसका बहुत

अधिक मतह छोड़ा गया होगा तब कहीं रेलवे लाइन बनी होगी। इस रेलवे के स्टेशन भी शहर की जमीन के नीचे आये हुए हैं। इन स्टेशनों पर से ऊपर को जाने आने के लिये प्रत्येक स्टेशन पर कई २ झूले (Lifts) लगे हुए हैं जो हर समय चढ़ते उतरते रहते हैं। यह इतने बड़े २ हैं कि एक साथ पचास २ मनुष्य इन से आ जा सकते है। ये भरे हुए जाते और भरे हुए ही वापिस आते हैं। बहुत से स्टेशनों पर कूओं पर चलने वाली घड़ियों की मालकी तरह बिजली की सीढ़ियाँ लगी रहती है। ज्यो ही कोई पहली सीढ़ी पर पैर रखता है वह आगे २ चलनी शुरू हो जाती है। मनुष्य उसी सीढ़ी पर खड़ा हुआ नीचे से ऊपर चला जाता है और इसी प्रकार ऊपर से नीचे चला आता है। सिर्फ उस पर से उतरने के लिये पैर उठाना पड़ता है। यदि ऐसी सीढ़ी पर चढ़े हुए मनुष्य को कुछ जल्दी है तो वह अगली सीढ़ियो पर पैर रखता हुआ और भी जल्दी उस माल को पास करलेगा।

इस रेलवे के डिब्बे, अण्डर ग्राउण्ड रेलवे से कुछ छोटे होते है। एक दो जगह ऐसी भी हैं, जहाँ से होकर झाड़ पोछ होने के लिये ट्रेनें ऊपर को चली जाती हैं और बाद झाड़ पोछ के वापिस चली आती है।

इस रेलवे के तह जमीन रहने पर भी इस के स्टेशनों व ट्रेनों इत्यादि में ऊपर के समान ही हवा व प्रकाश को देखकर ताज्जुब करना पड़ता है। यदि ऐसा प्रबन्ध न हो तो उस हजारों मनुष्यों की भीड़ में दम घुटने न लग जाय? यहाँ पर हजारों पंप लगे हुए हैं जिनके द्वारा ऊपर से ठूंस २ कर हवा पहुँचाई जाती है। और प्रकाश दिन में भी बिजली ही का रहता है। यहाँ के स्टेशनों पर टेलीफोन के यंत्र बहुतायत से लगे हुए हैं, जिनमें एक पेन्स डालकर चाहे जिस जगह से बातचीत की जा सकती है। इसी प्रकार बहुत से दूसरे यन्त्र लगे हुए हैं, जिनमें एक पेन्स डालकर चाकलेट, सिगरेट और दिया सलाई की पेटियाँ आदि निकाल सकते हैं। इसी तरह चार पेन्स तक के रेलवे टिकिट भी निकाल सकते हैं।

असल में ठीक २ परिज्ञान तो ये सब देखने से ही हो सकता है। परंतु उन बुद्धिमानों की सतत बलिहारी है कि जिन्होने ऐसी रेलवे के निकालने का यश प्राप्त किया।

इस रेलवे की मुख्य शाखायें इस प्रकार हैं:—

(१) सेन्ट्रल लण्डन ट्यूब (Central London Tube), (२) हम्पस्टेड एण्ड हाइगेट ट्यूब (Hampstead and

Highgate Tube),(३)पिकेडिली ट्यूब(Piccadilly Tube), (४) बाकरलू ट्यूब (Bakerloo Tube), (५) सिटी एगड साउथ लगडन ट्यूब (City and South London Tube) (६) वाटरलू एगड सिटी इलेक्ट्रिक ट्यूब (Waterloo and CityElectric Tube), (७) ग्रेट नोर्थन एगड सिटी ट्यूब ((Great Northern and City Tube).

अन्डर ग्राउगड और ट्यूब रेलवे के मुख्य २ स्टेशनों के नाम इस प्रकार हैं ।

(१) एल्डगेट (Aldgat) (२) मेरीलेबोन (Marylebone), (३) बेकरस्ट्रीट (Baker Street), (४) पैडिंगटन (Paddington), (५) चेरिंगक्रोस (Charing Cross), (६) सेंट पेंक्रेस (St Pancras), (७) युस्टन (Euston), (८) ट्रफलगर स्क्वायर (Trafalgar Square), (९) होलबोर्न (Holborn), (१०) विक्टोरिया (Victoria), (११) एल्ड विच (Aldwych), (१२) वेस्ट मिन्स्टर (West Minster), (१३) बेंक (Bank) (१४) लिवर पूल स्ट्रीट (Livpool Street) (१५) अर्ल्स कोर्ट (Earls Court) (१६) मेन्सन हाउस (Mansion House) (१७) हेमर स्मिथ (Hammer Smith) (१८) ऑक्स फर्ड सर्कस (Oxford Circus), (१९) किंगस

क्रास (King's cross), (२०) पिकेडिली (Piccadilly), (२१) लिसेस्टर स्क्वायर (Leicester Square). (२२) स्ट्राण्ड (Strand), (२३) लण्डन ब्रिज (London Bridge). (२४) वाटरलू (Waterloo)

यह सब बहुत बड़े २ स्टेशन हैं। इनके सामने कलकत्ते का हवड़ा स्टेशन और बंबई का बोरीबंदर स्टेशन जो भारतवर्ष में बहुत बड़े स्टेशन समझे जाते हैं, बहुत छोटे मालूम होते हैं।

प्रायः इन सब स्टेशनों पर अण्डर ग्राउण्ड और ट्यूब रेलवे का संगम होता है।

यहाँ की रेलवे लाइन भारतवर्ष की ब्रोडगेज (Broad Gauge) रेलवे लाइन के बराबर चौड़ी है। डिब्बे भी उतने ही चौड़े, ऊँचे होते हैं परन्तु लम्बाई में यहाँ पर सब डिब्बे एक से नहीं होते; छोटे बड़े होते हैं। डिब्बों का रंग अधिक भूरा होता है जो बहुत कम मैला होता है। डिब्बों में बैठकें अच्छी होती हैं और उन की पोशिश भी बढ़िया होती है। सरदी की मौसम में उन में बिजली से गरमी पहुँचा कर वे गरम रक्खे जाते हैं। लोकल ट्रेनें प्रति घंटा ४० मील की गति से चलती हैं और किराया तीसरे दर्जे का फी मील

एक पेनी तथा पहिले दर्जे का इस से छः गुणा अधिक लगता है।

बिजली और गैस।

इस शहर के घर-घर और गली-गली में बिजली का प्रकाश होता है। मुख्य-मुख्य सड़कों और बाजारों का विद्युत प्रकाश तो भारतवर्ष की दिवाली को भी मात कर गया है। विशेष कर पिकेडली (Piccadilly) का विद्युत्प्रकाश तो जगद्विख्यात है। सर्दी की मौसम में बड़े बड़े भवनों और ट्रेनों में बिजली से गरमी पहुँचाई जाकर इनके कमरे गरम रक्खे जाते हैं। नाटकों के सीन बिजली से बदला करते हैं और ट्राम और ट्रेनें भी बिजली से चलती हैं। बिजली के बल से झूले (Lift) और सीढ़ियें भी चढ़ती उतरती रहती हैं। विज्ञान आविष्कार, डॉक्टरी चिकित्सा आदि में भी बिजली का प्रयोग किया जाता है और सब प्रकार की मशीनें बिजली ही से चला करती हैं। बिजली के चूल्हों पर भोजन तैयार होता है और टर्किश बाथ हम्माम अर्थात स्नानागार के पानी में भी बिजली का करेन्ट (current) लगा रहता है जो स्नान करने वालों की थकावट दूर कर उनमें ताजगी भर देता है। व्यापारियों की कोठियों, शहर के मकानों तथा सरकारी दफ्तर के

स्टेशनों, टनलों आदि स्थानों पर, जहाँ कि सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता है, दिन में भी विद्युत प्रकाश से काम लिया जाता है। दिन में जब कभी धुन्ध छा जाती है और अँधेरा होजाता है तो ऐसे समय पर भी प्रकाश के प्रबन्धकर्त्ता बटन दबा कर सारे शहर में प्रकाश कर देते हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के काम बिजली से लिये जारहे हैं।

बिजली की तरह ही प्रत्येक घर में गेस की रोशनी भी की जाती है। बाजारों में तो विशेष कर गेस की रोशनी ही होती है। गेस के चूल्हे भी घर घर में हैं, जिनसे खाना पकाया जाता है। यहाँ पर हलके वार कई बिजली घर और गेस घर हैं, जो इन सब कामों को पूरा करते हैं। बिजली और गेस की सहायता से यहाँ पर सैकड़ों तरह के कारखाने मेशीनरी वर्क (Machinery work) इत्यादि चल रहे हैं। तात्पर्य्य यह कि बिजली और गेस से यहाँ वाले विस्मय जनक काम लेरहे हैं और पूरा २ लाभ उठा रहे हैं। बिजली के सब तार बिलकुल ही बे मालूम से जमीन के नीचे ही रहा करते है।

टेली फोन (Telephone)

लण्डन शहर मे टेलीफोन से बहुत काम लिया जाता है। यहाँ की मनुष्य-गणना पचहत्तर लाख, भवन गणना चौदह लाख और टेलीफोन इस्तेमाल के स्थान चार लाख हैं। इस हिसाब से टेलीफोन इस्तेमाल के स्थान की ओसत संख्या देखी जाय तो प्रति भवन ५$\frac{१}{३}$ और प्रति उन्नीस मनुष्य पर एक की आती है। टेली फोन के तार-विस्तार के लिये तो हम पहले ही कह चुके है कि कुल तार की लम्बाई जोडी जावे तो वह पृथ्वी-परिधि की अट्ठावन परिक्रमा कर सकती है यानी अट्ठावन बार पृथ्वी के चारो ओर फिर सकती है। इस टेलीफोन के द्वारा मनुष्य घर पर बैठा हुआ या प्रत्येक जगह से अपने दूरस्थ मित्र सम्बन्धियों से बातचीत कर सकता है क्योकि हर एक जगह पर टेलीफोन इस्तेमाल का स्थान जरूर होता है। टेलीफोन द्वारा दूर-दूर पर होने वाले गाने और व्याख्यानादि भी सुने जाते हैं। इतने पर भी टेलीफोन का तार एक भी बाहर नजर नही आता; सब तार जमीन के अन्दर ही रहते हैं। भूगर्भ रेल्वे के स्टेशनों पर तो इस प्रकार के टेलीफोन यन्त्र लगे रहते हैं कि जिनमें पेन्स डाल कर नगर की चाहे जिस जगह मे बातचीत की जा सकती है।

स्टेशनों, टनलों आदि स्थानों पर, जहाँ कि सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता है, दिन में भी विद्युत प्रकाश से काम लिया जाता है। दिन में जब कभी धुन्ध छा जाती है और अँधेरा होजाता है तो ऐसे समय पर भी प्रकाश के प्रबन्धकर्त्ता बटन दबा कर सारे शहर में प्रकाश कर देते हैं। इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के काम बिजली से लिये जारहे हैं।

बिजली की तरह ही प्रत्येक घर में गेस की रोशनी भी की जाती है। बाजारों में तो विशेष कर गेस की रोशनी ही होती है। गेस के चूल्हे भी घर घर में हैं, जिनसे खाना पकाया जाता है। यहाँ पर हलके वार कई बिजली घर और गेस घर हैं, जो इन सब कामों को पूरा करते हैं। बिजली और गेस की सहायता से यहाँ पर सैकड़ों तरह के कारखाने मेशीनरी वर्क (Machinery work) इत्यादि चल रहे हैं। तात्पर्य्य यह कि बिजली और गेस से यहाँ वाले विस्मय जनक काम लेरहे हैं और पूरा २ लाभ उठा रहे हैं। बिजली के सब तार बिलकुल ही बे मालूम से जमीन के नीचे ही रहा करते हैं।

टेली फोन (Telephone)

लण्डन शहर में टेलीफोन से बहुत काम लिया जाता है। यहाँ की मनुष्य-गणना पचहत्तर लाख, भवन गणना चौदह लाख और टेलीफोन इस्तेमाल के स्थान चार लाख है। इस हिसाब से टेलीफोन इस्तेमाल के स्थान की ओसत संख्या देखी जाय तो प्रति भवन $५\frac{१}{३}$ और प्रति उन्नीस मनुष्य पर एक की आती है। टेली फोन के तार-विस्तार के लिये तो हम पहले ही कह चुके हैं कि कुल तार की लम्बाई जोड़ी जावे तो वह पृथ्वी-परिधि की अट्ठावन परिक्रमा कर सकती है यानी अट्ठावन बार पृथ्वी के चारो ओर फिर सकती है। इस टेलीफोन के द्वारा मनुष्य घर पर बैठा हुआ या प्रत्येक जगह से अपने दूरस्थ मित्र सम्बन्धियों से बातचीत कर सकता है क्योंकि हर एक जगह पर टेलीफोन इस्तेमाल का स्थान जरूर होता है। टेलीफोन द्वारा दूर-दूर पर होने वाले गाने और व्याख्यानादि भी सुने जाते हैं। इतने पर भी टेलीफोन का तार एक भी बाहर नजर नहीं आता; सब तार जमीन के अन्दर ही रहते हैं। भूगर्भ रेलवे के स्टेशनों पर तो इस प्रकार के टेलीफोन यन्त्र लगे रहते हैं कि जिनमें पेन्स डाल कर नगर की चाहे जिस जगह से बातचीत की जा सकती है।

बेतार के तार (Wireless Telegraph)

बेतार के तार का इस लण्डन शहर में बहुत प्रचार है। कोईभी घर ऐसा नही मिलेगा जहाँ पर इसकी पहुँच न हो। लोग घर पर बैठे हुए ही बेतार के तार द्वारा सब तरह के समाचार मालूम कर रहे हैं और गाना व्याख्यान आदि भी सुन रहे हैं। जिन होटल आदिकों में नित्यप्रति गाना होता तथा बेण्ड बजता है, वहाँ पर बेतार के तार का यन्त्र लगा रहता है। इस यन्त्र द्वारा गायन-वादन-की ध्वनि, वायु में विचरण करती हुई, प्रत्येक घर में लगे हुए टेलीफोन के तार से टकराती है और तार का संसर्ग घरों में लगे हुए टेलीफोन यन्त्र से रहने से, इस टेलीफोन यन्त्र द्वारा वह-गायन-वादन ध्वनि, प्रत्येक घर में साफ साफ सुनाई देती है, जिससे मनुष्य अपने घर बैठे ही गाना सुन लिया करते हैं तथा बेंड की गत पर नाच लिया करते हैं अर्थात् बिना किसी प्रकार के खर्चे के इस तरह से नित्यप्रति आनन्द मनालिया करते हैं। इसी प्रकार जहाँ पर किसी प्रसिद्ध मनुष्य का व्याख्यान होता हो वहाँ पर भी बेतार के तार का यन्त्र लगादिया जाता है, जिसकी सहायता से लोग अपने घर पर बैठे हुए ही टेलीफोन यन्त्र द्वारा, व्याख्यान सुन लिया करते हैं।

बहुत से होटलों के बाहर व ऊपर फोनोग्राफ पड़े रहते हैं, जिनसे वैसे ही तार का संसर्ग रहने, से उनके द्वारा रास्ता चलते हुए मनुष्य भी गाना इत्यादि सुन सकते हैं। बड़े २ खेल तमाशों में भी जहाँ अधिक भीड़ रहने के कारण बहुधा यह मालूम नहीं होता कि अमुक ओर क्या हो रहा है अथवा क्या होने वाला है, वहाँ पर भी ग्राउन्ड के चारो ओर बेतार के यन्त्र लगा दिये जाते हैं कि जिनके द्वारा प्रायः सब को, सब हाल मालूम होता रहता है।

बेतार के तार द्वारा भी गाने इत्यादि, जैसे पास ही में हो रहे हो, वैसे ही सुनाई देते है।

बेतारके तार द्वारा समाचार जो हजारों कोसों पर भेजे जारहे हैं।

डाक और तार।

(Post & Telegraph)

यहाँ के डाक विभाग का प्रबन्ध भी विशेष प्रशंसनीय है। पचहत्तर लाख की आबादी और दो चार लाख विदेशियों का हर समय मौजूद रहना तथा दिन में कई

बार डाकों का आना जाना, डाकखाने के कार्य्यविक्रय के परिचायक हैं और यह इतना बड़ा कार्य्य जो उत्तम रीति से सम्पादन होता है, यह डाक विभाग के प्रबन्ध की प्रशंसा का द्योतक है। काम को आसानी से चलाने के लिये शहर ६ भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक भाग में बीसों हल्के बना दिये गए हैं, इसलिये लण्डन शहर में आनेवाली चिट्ठियों पर हल्के के वार्णिक सङ्केत तथा भवन-संख्या अवश्य रहनी चाहियें, नहीं तो चिट्ठी को ठीक जगह पर पहुँचाने के लिये पोस्ट ऑफिस उत्तरदाता नहीं होसकता। ६ भागों के नाम इस प्रकार हैं:—

(१) E. C. (२) S. E (३) S W. (४) W. (५) W C, (६) N W. (७) N. (८) N. E (९) E. इनमें से लण्डन का ज्यादा हिस्सा E. C डिस्ट्रिक्ट (District) में है, परन्तु शहर का प्रसिद्ध हिस्सा S W और W. का है। इन भागों के मुताबिक हमारा पता—S W. ५.९ था। एतवार को डाकखाना बिलकुल ही बन्द रहता है। यहाँ तक कि उस दिन एक बार भी डिलेवरी (Delivery) नहीं होती। पेरिस, बेलजियम और ब्रुसेल्स आदि नगरों की डाक, हवाई जहाजों द्वारा आया जाया करती है। सम्भव है कि कुछ अरसे बाद हिन्दुस्तान की

डाक भी इसी प्रकार से हवाई जहाज द्वारा ही आया जाया करे। नगर की सड़कों पर अधिक भीड़ रहने से डाक और पार्सल आदि पहुँचाने के लिये एक स्पेशल ट्रेन दौड़ा करती है, जिसका सम्बन्ध-सिर्फ पोस्ट ऑफिसों से रहता है। यह स्पेशल ट्रेन अण्डर ग्राउन्ड (Under ground) रेलवे लाइन पर वाइट चैपल स्टेशन (White Chapel Station) से पिडिन्टन (Paddingtion) स्टेशन तक चला करती है। डाक को शीघ्र तथा सुभीते और सावधानी के साथ पहुँचाने के लिये, इस उत्तम साधन का अवलम्बन किया जाता है।

पहले पहल सन् १८४१ ई० में डाक के टिकटों का उपयोग हुआ था, और टिकिट काले रङ्ग के छपे थे। इस समय आधी पेनी, एक पेनी और डेढ़ पेनी से एक पाउन्ड से भी अधिक मूल्य के टिकिट प्रचलित है।

पोस्ट ऑफिस की तरह ही, तार विभाग का कार्य्य भी सम्पादन होता है। प्रत्येक पोस्ट ऑफिस में तारघर है और कई स्वतन्त्र तारघर भी बने हुए है। कई तारघर ऐसे भी हैं जो कार्य्याधिकता के कारण एतवार और अन्य छुट्टियों के दिनों में भी खुले रहते हैं। पोस्ट ऑफिस को प्रथम सूचना करदीजाय तो टेलीफोन से

भी तार भेजे जा सकते है। बारह शब्दों के तार पर एक शिलिंग और हर इज़ाफा शब्द पर एक पेन्स लगता है। तार द्वारा चित्र भी भेजे जायाँ करते हैं।

अपने निश्चित पते पर न रहने वाले व्यक्ति, यदि चाहें तो अपने हल्के के पोस्टमास्टर के नाम पर भी अपनी डाक, तार आदि मंगा सकते हैं और नियमानुकूल उक्त पोस्ट मास्टर को इसकी सूचना दे कर, वहाँ पर नियत समय पर जाकर अपनी डाक, तार आदि ला सकते हैं।

समाचार पत्र और विज्ञापन।

Newspapers & Advertisements.

लण्डन में सामयिक पत्रों और पत्रिकाओं का बहुत प्रचार है प्रत्येक भोजन इत्यादि के समय, ऐसे पत्रों का आना नियमित सी बात है। ट्रेन में, बाजार में, पार्क में और खेलों के स्थान में, जहाँ कहीं देखिये, प्रति सैकड़ ९९ वें मनुष्यों के हाथ में पत्र-पत्रिकाएँ अवश्य मिलेंगी। मानो इस मानसिक खुराक से, उनको तृप्तिही नहीं होती। यही कारण है कि प्रत्येक दैनिक पत्र, एक दिन में कई बार निकला करता है और प्रत्येक बार के अंकमें खेलकूद,

मनोरंजन, बाजार भाव, कृषि, शिल्प, विज्ञान, शिक्षा, व्यापार, राजनीति और अन्यानय विषयों पर गवेषणा पूर्ण लेख व देश देशांतरो के ताजे २ समाचार रहा करते हैं। यदि कोई खेल साढ़े चार बजे समाप्त होता है, तो पाँच बजे निकलने वाले अंङ्कों में उसका सारा हाल अवश्य ही निकल जाता है। ऐसे खेल तमाशो के समाचार, जो प्रायः शाम को निकलने वाले अंङ्कों में प्रचुरता से रहा करते है, जल्दी से जल्दी देने में, यहाँ के पत्रो में होड-सी लगी रहती है। इसी प्रकार तत्काल घटित घटनाओं का उल्लेख, जोरदार टिप्पणियाँ और समयोचित चित्र आदि भी रहा करते हैं। इनके अतिरिक्त नये २ ढंग और युक्ति से लिखे गये सैकड़ो विज्ञापन रहा करते हैं। तात्पर्य यह कि पत्र सर्वांग सुन्दर और चित्ताकर्षक होते हैं। यही कारण है कि ऐसे पत्र, लाखो की संख्या में निकलते है, जिससे अखबारो को बहुत २ लाभ होरहा है और पत्र संपादकों के हाथ में वह शक्ति आगई है कि वे वहाँ के विचारो का रुख जिधर चाहें, मोड़ सकते है। यहाँ के कुछ दैनिक पत्रों की ग्राहक संख्या का व्योरा इस प्रकार है:—

टाइम्स (The Times)	७,९१,८६६
न्यूज ऑफ दी वर्ल्ड (The news of the world)	३०,००,०००

डेलीहेरल्ड (The Daily Herald)	२,००,०००
डेली क्रॉनिकल (The Daily Chronicle)	१०,०,०००
जॉन बुल (John Bull)	७,१६,७५५
ओटोक्रेट (The Autocrat)	४१,३५३
पंच (The Punch)	१,००,०००
पिक्चर शो (The Picture Show)	२,६८,३८०
बोयूज़ मेगज़ीन (The Boy's magazine)	२,०४,३५१
बोयूज़ ओन पेपर (The Boy's on Paper)	३६,०००
कलर (The Colour)	२, ६३५
गुड हाउस कीपिंग (The Good House coping)	१,४४,४७९
माइमेगज़ीन (My Magazine)	१,०९,१०१
लेवज मेगजीन (Lewes magazine)	१,६२,९०८
संडे एट होम (Sunday at Home)	२०,०००
इल्लस्ट्रेटेड ड्रेस मेकर (Illustrated dressmaker)	६,१३,६१२
लेडीज जर्नल (Ladie's Journal)	४,४२,६३१
स्पोर्ट टाइम्स (Sport Times)	५८,९६१
ब्रिटिश वीकली (British Weekly)	८०,०००
डेली मिरर (Daily mirror)	१०,०८,८८२

इसके अतिरिक्त डेली टेलीग्राफ (The Daily Telegraph) डेली ग्राफिक (The DailyGraphic) और डेली मेल (The Daily Mail) आदि कई दैनिक पत्र निकलते हैं, जिनकी ग्राहक संख्या लाखों पर है इसी तरह सैकड़ों साप्ताहिक पत्र और मासिक पत्रिकाएँ विविध विषय और अनेकानेक नैनाभिराम चित्रों से सज्जित होकर निकला करती हैं।

इन पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापनों की इतनी भरमार रहती है कि जिसकी कोई हद नहीं। सारे संसार के अखबार पत्रों में प्रति वर्ष पैंतीस करोड़ पाउन्ड के विज्ञापन निकला करते हैं, जिन में से अकेले इंगलैण्ड के पत्र-पत्रिकाओं में ५ करोड़ पाउन्ड के विज्ञापन निकला करते हैं। विज्ञापन के ढंग और लिखावट में नयापन और आकर्षण खूब रक्खा जाता है ताकि लोग उस ओर को खिंच सकें और जिस से विज्ञापन दाताओं को खूब लाभ हो। जैसे, मिट्टी के इत्र का विज्ञापन है तो उस में आकर्षण करने वाला कोई ऐसा भाव जरूर मिलेगा—

इत्र मिट्टी का लगाना चाहिये पोशाक में।
प्यार से रखना है मिलना है इक दिन खाक में॥

अर्थात् विज्ञापन का लिखना भी यहाँ पर एक कीमती कला समझी जाती है और अच्छे विज्ञापन लेखकों को इस पेशे में काफी आमदनी होती है।

शहर में भी हर एक जगह पर अनूठे भाव और रंग, रूप, ढंग से सुशोभित, छोटे बड़े हजारों विज्ञापन हर समय चिपके हुए मिलते हैं।

प्रायः मनुष्य मोटरों पर चढ़कर कागज के मुद्रित विज्ञापनों के स्थान पर बिजली द्वारा भी सूचनाएं फैलाया करते हैं।

बैंक और बीमा कम्पनियाँ।

(Banks, Insurance & Assurance Companies.)

इस शहर में बैङ्कों की संख्या बहुत अधिक है। इस का कारण यह है कि यहां पर धनकी बाहुल्यता है और फिर सब धन बैङ्को में रखने ही की परिपाटी है। प्रत्येक बैङ्क की इमारत एक से एक बढ़कर बनी हुई है, जिनको देखकर इस बातका निश्चयही नहीं कर सकते कि कौनसा बैङ्क बड़ा है और कौनसा छोटा। इन सब बैङ्कों में "बैङ्क ऑफ इङ्गलैण्ड" (Bank of England) का नाम अधिक प्रसिद्ध है। इस बैङ्क की छोटी बड़ी सैकड़ो शाखाएँ हैं और इस के पास ही रोयल एक्सचेन्ज (Royal Exchange) है। बैंको में दूसरा नम्बर वेस्ट मिन्स्टर

(Westminster Bank) बैंक का है ।' इस का मूल धन (Authorised Capital) ३ करोड़ ३० लाख पाउन्ड है और इस मे से वसूल शुदा रकम (Paid-up Capital) ६०,०३,७१८ पाउन्ड है जो सुरक्षित (Reserved) रक्खी हुई है और उस के सूद की रकम से इस बैंक का कुल कारोबार चलरहा है। इन बैंकों के सूद की रेट्स चढ़ती उतरती रहती है, परन्तु आम तौर पर प्रति सौ पाउण्ड पर ३ से ४॥ पाउण्डतक रहा करती है।

इन के अतिरिक्त बार्कलेज बैंक (Barclays Bank) लायोड्स बैंक (Lloyds Bank) और काउट्स एण्ड कम्पनी (Coutts & Co) इत्यादि भी प्रसिद्ध बैंक है।

बैंको के अतिरिक्त इन्शोरेन्स (Insurance) और एशोरेन्स (Assurance) कम्पनियाँ अर्थात बीमा करवाने की कम्पनियाँ भी सैकड़ो की संख्या मे है। इन का काम भी बैंकों की तरह ही चलता है। इन कम्पनियो में मनुष्य, मकान, गाड़ी, घोड़ा, मोटर इत्यादि सभी चीजो का बीमा कराया जासकता है। जो चीज बीमा करादी गई है, उस के आग मे जलजाने या पानी में डूबकर नष्ट होजाने पर, उस की पूरी क़ीमत बीमा कम्पनी देती है।

सिक्के (Coins)

यहाँ का कारोबार अधिकतर एक पाउन्ड के नोट से होता है, जो आकार में भारतवर्ष के एक रुपये के नोट जैसा होता है । नोट पाँच, दस और सौ पाउन्ड के भी चलते हैं, जिनका आकार भारत वर्ष के दस रुपये के नोट का-सा होता है । इनके अतिरिक्त दस शिलिंग का भी नोट चलता है, जो आकार में पाउन्ड के नोट से कुछ छोटा होता है ।

यहाँ पर कपड़ा इत्यादि प्रत्येक बड़ी चीज़ का मूल्य गिन्नी में लगाया जाता है और गिन्नी का मूल्य इक्कीस शिलिंग माना जाता है । पहले गिन्नी का चलन अवश्य था पर अब तो सिर्फ नाम शेष है । भारतवर्ष में चलने वाली गिन्नी को यहाँ पर पाउन्ड कहते हैं परन्तु अब उसका भी चलन यहाँ पर नहीं पाया जाता । नाम शेष अवश्य है और उसका भी मूल्य भारतवर्ष के गिन्नी के मूल्य की तरह घटता बढ़ता रहता है । पूछने से मालूम हुआ कि जर्मन वार के समय सब सोने के सिक्के लेलिये गए थे तब से कागज़ के नोट ही चलते हैं ।

इस कागज़ के सिक्कों के बाद दूसरा नम्बर चाँदी के सिक्कों का है, जिनमें शिलिंग* अधिक प्रसिद्ध है और प्रायः उसी से वस्तुओं की दर निश्चित होती है। सब से बड़ा चाँदी का सिक्का क्राउन (Crown) गिना जाता है जो पाँच शिलिंग के बराबर माना जाता है, परन्तु यह नहीं ढाला जाता। चाँदी के सिक्कों में दूसरा नम्बर हाफ क्राउन का है जो ढाई शिलिंग मूल्य का होता है और इसका खूब चलन है। इसका आकार भारतवर्ष के कलदार रुपये से कुछ बड़ा होता है।

तीसरा नम्बर फ्लोरिन (Florin) का है जो दो शिलिंग मूल्य में चलता है और आकार में भारतवर्ष के कलदार रुपये के समान ही होता है। इनके अतिरिक्त छः पेन्स† और तीन पेन्स के सिक्के भी चलते हैं जो आकार में भारतवर्ष की चौअन्नी और दुअन्नी के-से होते हैं। शिलिंग का आकार भारतवर्ष की अठन्नी का-सा होता है।

भारतवर्ष के चाँदी के सिक्के पलटाने में तो बाजार भाव से कुछ हर्ज पड़ता है परन्तु कागज़ के नोट ठीक भाव पर पलट देते हैं।

---

* एक शिलिंग लगभग १२ आने के बराबर होती है।
† एक पेन्स लगभग एक आने के बराबर होता है।

चांदी के सिक्कों के बाद तांबे के सिक्कों का नम्बर है, जिनमें पेनी और फारदिङ्ग (Penny and Farthing) होते हैं, परन्तु काम में अधिकतर पेनी ही आती है। पेनी का आकार भारतवर्ष के आध आने (दो पैसों वाला पैसा) के जितना होता है परन्तु मूल्य में भारतवर्ष के एक आने के समान है।

व्यापार (Trade)

लण्डन शहर पृथ्वी भर के व्यापार का केन्द्र स्थान है। इसीलिये इस शहर का सम्बन्ध सिर्फ इङ्गलैण्ड ही से नहीं किन्तु सारे विश्व से है। इसने पृथ्वी के प्रायः समस्त देशों को अपने वाणिज्य व्यवसाय द्वारा एक प्रेम-सूत्र में बांध लिया है। इसी कारण हजारों मीलों की यात्रा समाप्त कर अन्यान्य देशों के लोग यहां आया करते हैं। संसार के वाणिज्य-क्षेत्र में आज कोई भी राज्य-शक्ति इङ्गलैण्ड का मुकाबिला नहीं कर सकती। इस के बाद अमेरिका के संयुक्त राज्य का नम्बर है। सन् १९२४ में ५९,१७,०००,००० पौण्ड का कच्चा माल ब्रिटेन में आया और ३,५२०,०००,०००, पौण्ड का तैयारी माल बाहर

÷ एक फारदिंग लगभग एक पैसे के बराबर होता है।

गया था। इसी से यहाँ की व्यापारिक स्थिति मालूम हो सकती है।

इस देश के व्यापार की रक्षा और उन्नति के लिये भिन्न भिन्न देशों में, सैकड़ों की संख्या में, चेम्बर आफ कामर्स [Chamber of Commerce] नाम की सार्वजनिक संस्थाएँ स्थापित हैं और ऐसी प्रत्येक संस्था के हजारों की संख्या में सदस्य हैं। सामाजिक उन्नति और समाज के भिन्न भिन्न अंगों की वहवृद्धि करना तथा समाज की कठिनाइयों को दूर कर उसके लाभ और आराम के लिये उद्योग करना भी ऐसी संस्थाओं का कर्त्तव्य होता है।

इस व्यापारिक युग में, व्यापार ही, सब प्रकार की उन्नति का मुख्य स्वरूप समझा जाता है। व्यापार की रक्षा के लिये अनेकानेक उपायों का अवलम्बन किया जा रहा है तथा उसकी उन्नति के लिये सतत प्रयत्न किये जारहे हैं। इस व्यापारिक उन्नति की दौड़ में, सब से आगे रहने के लिये, प्रायः समस्त राज्य-शक्तियां प्राण पण से चेष्टा कर रही हैं, परन्तु इस दौड़ में भी वृटिश-सरकार ही सब से आगे है। अपने व्यापार की

रक्षा और उन्नति के लिये हैं, उसने अपने जहाजी बेड़े को, जो व्यापार का मुख्य सहायक है, बहुत सबल और उन्नत बना रक्खा है।

शिक्षा (Education)

यदि शिक्षा का अर्थ शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक सामाजिक, राजनीतिक इत्यादि रूपों का विकास करना है, तो यहाँ पर शिक्षा प्राप्ति के सच्चे सिद्धान्तों को सम्मुख रख कर बालक बालिकाओं को शिक्षा दी जाती है। यही कारण है कि आज यहाँ की सुशिक्षित सभ्य जातिने अपनी शिक्षा-शक्ति से सारे संसार में अपने नाम का सिक्का जमा रक्खा है! और प्रत्येक प्रकार की शिक्षा में अपना सानी नहीं रखती तथा अपनी शिक्षा सम्पन्न बुद्धि द्वारा अपने साम्राज्य को इतना विशद और उन्नत बना लिया है कि जिसे देखकर प्रायः सभी राज्य-शक्तियाँ आश्चर्य-चकित सी हो रही हैं।

यहाँ पर शिक्षा प्रचार में बहुत व्यय किया जाता है और शिक्षा प्रचार भी बहुत है जैसा कि नीचे के अंकों से प्रकट होता है:—

देश	पठित पुरुष प्रति शतक	शिक्षिता स्त्रियाँ प्रति शतक	प्राइमरी स्कूलों का सरकारी खर्च प्रति विद्यार्थी
इङ्गलैण्ड	९९	९९	७॥)
भारतवर्ष	१२	१	–)

यहाँ का शिक्षा क्रम, हमारे देश की अपेक्षा, अपना निराला ही रूप रखता है। हमारे यहाँ की शिक्षा प्रणाली, सिर्फ इसी बात पर निर्भर है कि हमारे देश के मनुष्य अंगरेजी भाषा द्वारा, हर प्रकार के काम करके, अपना गुजारा भर कर सकें, परन्तु यहाँ का उद्देश्य कुछ निराला ही है और वह यह कि शिक्षा द्वारा शिक्षार्थियों की सहज शक्तियों का विकास करके उन्हें विज्ञान, कला-कौशल, साहित्य, संगीत, वैद्यक, शिल्पकारी, सभ्यता, मनोविज्ञान, नीति, अध्यवसाय, व्यापार आदि विषयों के आचार्य बनाना तथा उनके द्वारा इन तथा ऐसे ही अनेक उपयोगी विषयों में दिनोदिन नये २ आविष्कार कराकर उनसे लाभ उठाना। यही कारण है कि यहाँ वाले अपनी शिक्षा पद्धति को दिनबदिन उन्नत बना रहे हैं।

जहाँ भारतवर्ष के विद्यार्थी कॉलिजों को छोड़ने तक, अपने स्वास्थ्य और आँखों की ज्योति खो बैठते हैं तथा

अपने निर्बोध बन्धुओं के प्रति घृणा के भाव प्रकट करते हुए, किसी भी काम के न रह जाते हैं, वहाँ, यहाँ के विद्यार्थी गण, अदम्य उत्साह के साथ और अपने को समाज-सेवक समझते हुए, किसी नये किन्तु विशाल कार्यक्षेत्र में प्रवेश करते हैं। जहाँ भारतवर्ष की शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थी को रट्टू बनाकर सिर्फ इम्तहान पास कराना है, वहाँ, यहाँ की शिक्षा प्रणाली का ध्येय आमोद-प्रमोद के साथ उसे वास्तविक शिक्षा का देना है। भारतवर्ष के विद्यार्थी, जिस ज्ञान का उपार्जन अपनी आयुभर में नहीं कर पाते, वही ज्ञान, यहाँ के विद्यार्थी सिर्फ एक एतवार की छुट्टी के दिन ही अजायब घर आदि की सैर करके मनोविनोद के साथ ही साथ सहज ही में प्राप्त कर लेते हैं। भारतवर्ष के विद्यार्थियों पर पढ़ाई के भार के साथ, स्त्री और बच्चों का भार भी आपड़ता है, परन्तु यहाँ के विद्यार्थियों पर स्त्री बच्चों का भार कैसा ? स्वयं पढ़ाई भी भार रूप नहीं है ! बाल विवाह की शिकार होजाने से भारतवर्ष के विद्यार्थी, विद्या प्राप्ति के प्राण स्वरूप ब्रह्मचर्य को खो बैठते हैं और यहां के विद्यार्थी पूर्णतया ब्रह्मचारी रहकर ही विद्या की प्राप्ति किया करते हैं। भारतवर्ष के विद्यार्थी, विद्या संस्कार-विधियों में होकर नहीं गुजरते और यहां

के वर्ग की शिक्षा-संस्कार-विधियें बचपन ही से शुरू हो जा करती हैं। तात्पर्य्य यह कि यहाँ वालों को शिक्षा प्राप्ति के हर प्रकार के साधन, सहज सुलभ हो रहे हैं।

यहाँ के बालक बालिकाओं की शिक्षा, हमारे देश के समान स्कूल भेजने पर नहीं आरम्भ होती, बल्कि जब से कि बच्चा कुछ समझने लगता है, तभी से उसकी शिक्षा का आरम्भ हो जाता है। समय पर खाना-पीना, सोना-उठना, शरीर व स्वास्थ्य की रक्षा करना, सफाई के नियमों का पालन करना, शुद्ध व समयोचित बातचीत करना, नियमानुकूल स्वतन्त्रता का लाभ उठाना आदि सद्गुण तो बच्चे में, स्कूल प्रवेश के पूर्व ही, घर की शिक्षा-संस्कार-विधियों द्वारा, आजाते हैं। यहाँ के छोटे २ बच्चे भी बातचीत में प्लीज (Please) और थैंक्यू (Thank you) का उपयोग यथा अवसर अवश्य करते हैं। इनके बालपने के ये शिक्षा संस्कार, उनके भावी जीवन में बड़े सहायक होते हैं। इस प्रकार जब बच्चे कुछ होशियार हो जाते हैं तो तुरन्त ही प्राथमिक शिक्षा (Primary Education) के लिये स्कूलों में भेज दिये जाते हैं। स्कूलों में पढ़ने लिखने की शिक्षा ही

नहीं, आचरण शिक्षा भी दी जाती है। ऐसे छोटे बच्चों को प्रायः अध्यापिकाएँ ही पढ़ाया करती हैं जो पढ़ाई कराने के पश्चात् अपनी कक्षा के विद्यार्थियों । अपने साथ वायु--सेवन को लेजाया करती हैं, तथा मूजियम आदि दिखलाकर उनको प्राकृतिक ज्ञान कराय करती हैं, जिससे कि उनकी सहज शक्तियों का विका हो। ये अध्यापिकाएँ माता के समान विद्यार्थियों क प्यार किया करती हैं और विद्यार्थी भी उनके प्रति बहु प्रेम-भाव रखते हैं। यहाँ पर सच्चे शिक्षक, शिष्य और शिक्षा का साक्षातकार होता है।

यही नहीं, स्वास्थ्य रक्षा के हितार्थ बच्चों को छोटी ही उम्र में सब प्रकार के खेलों में नियत समय पर और नियमितरूप से शरीक होना पड़ता है। इसके अतिरिक्त स्काउटिंग (Scouting) भी सिखाया जाता है, जो सच्ची जाति सेवा का मूलमंत्र है। छुट्टी के दिन छोटे २ बच्चे अपनी कक्षा के बालकों के साथ श्रेणीबद्ध हो, बाजा बजाते हुए पार्कों में खेलने जाते हैं और कवायद (Drill) भी किया करते हैं, जिससे उनको संग--शक्ति का ज्ञान हो जाता है।

छोटे २ विद्यार्थियों को अपने ऊपर की कक्षा के विद्यार्थियों का, हर एक काम करना पड़ता है, जिससे वे अपने ऊपर की श्रेणी के मनुष्यों की आज्ञा का आदर पूर्वक पालन करने के अभ्यस्त हो जाते हैं। इस प्रकार बच्चों में सेवा भाव की जागृति की जाती है और ये मुँह जोर और हठी नहीं होने पाते।

बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के साथ ही धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है और इनको नियमित रूप से गिरजाघर भी जाना पड़ता है, जिससे इनकी अपने धर्म और धर्म पुस्तक बाइबल पर, अटल विश्वास और श्रद्धा आजीवन बनी रहती है।

प्राथमिक शिक्षा समाप्त करके साधारण स्थिति के बहुत से लड़के तो आजीविका के लिये भिन्न २ कार्यों को सीखना शुरू कर देते हैं और बहुत से उच्च शिक्षा प्राप्ति के हेतु, हाई स्कूलों व कॉलेजों में चले जाते हैं। हाई स्कूलों के विद्यार्थियों में से, कोई तो थोड़ी पढ़ाई कर किसी काम का कोर्स ले लेते हैं और जिनको उच्चशिक्षा प्राप्त करनी होती है, वे क्रमशः एम.ए. (M.A.) आदि डिग्रियाँ प्राप्त कर डाक्टरी (Medicine and Surgery) इंजीनि-

रिंग (Engineering) सिविल सर्विस (Civil Service) आदि परीक्षाएँ पास करते हैं।

हमारे भारतवर्ष में यदि कोई विद्यार्थी किसी कक्षा की परीक्षा देते समय तीन विषयों में से दो विषयों के परचे ठीक करे, परन्तु किसी एक विषय का परचा भी ठीक नहीं करे तो, वह फेल कर दिया जाता है और आइन्दा उसको उन तीनों विषयों का अर्थात् जिन दो विषयो के परचे पहली दफा ठीक किये थे, उन विषयो का इम्तहान भी फिर से देना पड़ता है, परन्तु यहाँ पर ऐसा नहीं होता। यहाँ पर तो जिस विषय में फेल होजाते हैं सिर्फ उसी विषय का इम्तहान फिर से देना पड़ता है। जिन विषयों के परचे पहली दफा ठीक कर दिये जाते हैं, आइन्दा उन विषयों का इम्तहान फिर से नहीं देना पड़ता।

यहाँ पर हरएक विषय के प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, अलग २ विद्यालय हैं, जहाँ पर उस २ विषय की पूर्ण शिक्षा दी जाती है, जैसे साइन्स कॉलेज (Science College) ,सुई का काम सिखाने का कॉलेज (Needlework Institute), रॉयल कॉलेज (Royal College) इत्यादि। साइन्स कॉलेज के पास ही साइन्स म्यूजियम है, जिसके द्वारा न सिर्फ सिद्धान्त रूप से काल्प-

निक रीति से, बल्कि व्यावहारिक रीति से तत्सम्बन्धी शिक्षा दी जाती है। इसी प्रकार सुई के काम सिखाने की कॉलेज में व्यावहारिक रीति से शिक्षा दी जाती है। रॉयल कॉलेज के साथ भी म्यूजियम है, जहाँ पर संगीत विद्या सिखलाई जाती है और जहाँ दुनिया भर के बाजों का संग्रह है।

इसी प्रकार नेचरल हिस्ट्री म्यूजियम (Natural History Museum) और अनेकानेक म्यूजियमों तथा रोयल जोगरोफिकल सोसाइटी (Royal Geographical Society) द्वारा, हिस्ट्री, जोगरोफी इत्यादि विषयों का ज्ञान कराया जाता है और जिन से इन विषयों के विद्यार्थियों को पूर्णतया सहायता मिलती रहती है।

प्रत्येक कोर्स के विद्यार्थियों के लिये लाइब्रेरी, म्यूजियम और गार्डन अस्पताल को नियमित रूप से जाना भी अनिवार्य होता है, ताकि विद्यार्थियों को काल्पनिक और व्यावहारिक, दोनों प्रकार के ज्ञान साथ ही होते रहें। यहाँ की शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य, विद्यार्थी को डिग्रियें पास कराने तक ही नहीं, बल्कि उसको वास्तविक योग्यता सम्पादन कराने पर निर्भर है।

यहाँ के शिल्प शिक्षा विभाग का संचालन युनिवर्सिटी ऑफ लण्डन (University of London) द्वारा होता है। यद्यपि यह युनिवर्सिटी ऑक्स फोर्ड (Oxford University) और केम्ब्रिज (Cambridge University) के समान बाहर इतनी प्रसिद्ध नहीं है, तथापि इस युनिवर्सिटी से भी उन युनिवर्सिटियों की तरह ही डिग्रियाँ दी जाती हैं। इस युनिवर्सिटी के नीचे कई कॉलेज हैं, जिनमें ईस्ट लण्डन कॉलेज (East London College) और किंग्स् कॉलेज (King s College) आदि प्रसिद्ध हैं। इन कॉलेजों का प्रबन्ध तथा शिक्षा क्रम-निरूपण, इसी युनिवर्सिटी द्वारा होता है।

यहाँ के शिक्षा-विभाग का संचालन बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन (Board of Education) द्वारा होता है। खानगी स्कूलें और रात्रिस्कूलें भी यहाँ पर बहुत अधिक संख्या में हैं। अधिकतर यहाँ के विद्यार्थी छात्रालय में रहा करते हैं।

यहाँ पर न तो भारतवर्ष सा पढ़ाई का फालतू बोझ है, न पढ़ाई में उतना अधिक समय नष्ट होता है और न पुस्तकों इत्यादि में उतना अधिक व्यय ही होता है। यहाँ की पढ़ाई, सदैव राष्ट्रीय-शील-ही से आरम्भ होती है।

यहाँ के शिल्प शिक्षा विभाग का संचालन युनिवर्सिटी ऑफ लण्डन (University of London) द्वारा होता है। यद्यपि यह युनिवर्सिटी ऑक्स फोर्ड (Oxford University) और केम्ब्रिज (Cambridge University) के समान बाहर इतनी प्रसिद्ध नहीं है, तथापि इस युनिवर्सिटी से भी उन युनिवर्सिटियों की तरह ही डिग्रियाँ दी जाती हैं। इस युनिवर्सिटी के नीचे कई कॉलेज हैं, जिनमें ईस्ट लण्डन कॉलेज (East London College) और किंग्स कॉलेज (Kings College) आदि प्रसिद्ध हैं। इन कॉलेजों का प्रबन्ध तथा शिक्षा क्रम-निरूपण, इसी युनिवर्सिटी द्वारा होता है।

यहाँ के शिक्षा-विभाग का संचालन बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन (Board of Education) द्वारा होता है। खानगी स्कूलें और रात्रिस्कूलें भी यहाँ पर बहुत अधिक संख्या में हैं। अधिकतर यहाँ के विद्यार्थी छात्रालय में रहा करते हैं।

यहाँ पर न तो भारतवर्ष सा पढ़ाई का फालतू बोझ है, न पढ़ाई में उतना अधिक समय नष्ट होता है और न पुस्तकों इत्यादि में उतना अधिक व्यय ही होता है। यहाँ की पढ़ाई, मदैव राष्ट्रीय-नीति-ही से आरम्भ होती है।

इतना होने पर भी, बहुत से लड़के यहाँ की दूकानों पर चपरासीगीरी करते हैं और बहुत से गुल्लीडन्डा खेलते हुए फिरते हैं। हम नहीं समझ सके कि इन लड़कों के इस प्रकार बेरोक खेलते फिरने का क्या कारण है? हाँ, यहाँ के लड़कों में भी, स्वच्छन्दता, बहुत अधिक मात्रा में अवश्य है।

सभ्यता (Civilization)

सभ्यता की खान लण्डन शहर की सभ्यता का बखान कैसे किया जाय? यहाँ तो पद-पद पर और बात-बात में सभ्यता ही सभ्यता दिखाई देती है। प्रत्येक मनुष्य नम्र, मधुर शब्दों और संयत भाषा में बात चीत करके और मुस्कुराहट के साथ हाथ मिलाकर के, अपनी सभ्यता का परिचय देता है। थैंकयू (Thank you) और सॉरी (Sorry) यानी धन्यवाद और खेद का प्रयोग, जो सभ्यता सूचक समझा जाता है, बात-बात में किया जाता है।

शहर की सड़कों की पगडंडियों (Foot-Path) पर चलता हुआ मनुष्य यदि किसी चीज को देखने के लिये खड़ा रहजाता है तो क्या मजाल कि पिछला आदमी आगे बढ़जाय! जब तक वह मनुष्य आगे नहीं बढ़ेगा, पीछे के आदमी एक के पीछे

एक फर के खड़े होते ही जायँगे। यह भी यहाँ की सराहनीय सभ्यता है। बड़े २ मेलों में, जहाँ लाखों आदमी इकट्ठे होते हैं, वहाँ पर भी ऐसा ही व्यवहार होता है। चाहे रास्ते में घण्टों ही खराब क्यों न होना पड़े? परन्तु एक के बाद एक, इस तरह से नम्बर वार ही चलेंगे। ऐसा कदापि नहीं होसकता कि अगले आदमी को पीछे ढकेल कर कोई आगे बढ़ जाए। आगे बढ़ना कैसा? किसी के शरीर से छू-जाना भी असभ्यता पूर्ण समझा जाता है और ऐसे अवसर पर खेद (sorry) से अवश्य ही काम लिया जाता है।

ट्रेन में इतनी अधिक भीड़ के रहने पर भी न तो किसी मुसाफिर को ट्रेन में चढ़ने से मने करते हैं और न किसी प्रकार का शोर-गुल होता है। बाजारों में भी इतनी अधिक भीड़ रहा करती है परन्तु शोर-गुल नाममात्र को भी नहीं है, जिससे भी यहाँ की सभ्यता का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

यहाँ का प्रतिष्ठित शब्द जेण्टलमेन (Gentleman) के मानी भी सभ्य पुरुष से लिये जाते हैं और प्लीज अर्थात् मेहरबान शब्द का प्रयोग, अपने से छोटों से बात करते समय भी अवश्य किया जाता है और छोटे २ बच्चे भी प्लीज (Please) और थेंक यू (Thank you) का व्यवहार करते हैं।

सबसे बड़ी सभ्यता, जो यहाँ वालों में पाई जाती है, वह "स्त्रियों का मान करना" है । स्त्रियें, पुरुषों के नाम से पहिले सम्बोधित होती हैं और उन का नाम पुरुषों के नाम से पहिले लिखा जाता है । वे गाड़ी इत्यादि में, पुरुषों के पहले चढ़ती और उनके दाहिने हाथ को बैठा करती हैं । ट्रेन में जगह नहीं है और कोई स्त्री चढ़ आई है तो पुरुष उठ जायगा, परन्तु स्त्री को जगह अवश्य देगा । यहाँ स्त्रियां देवियाँ समझी जाती हैं और उन्हीं की इच्छा पर विवाह-सम्बंध होना, अथवा सम्बंध विच्छेद होना निर्भर है । बड़े से बड़ा आदमी भी, जब उसे, किसी स्त्री से मिलने का काम पड़ेगा, तो वह स्त्री के आगे अपना टोप उतार कर, उसका सम्मान अवश्य करेगा ।

सफ़ाई ।

लण्डन शहर सफ़ाई का घर है, जहाँ जगह-जगह पर सफाई ही सफ़ाई दिखाई देती है । सड़कों पर रेत का उड़ना कैसा ? वे तो डम्बर से जमाई जाती हैं, जो कांच के समान चमकती रहती हैं । मुख्य-मुख्य सड़कों पर लकड़ी की ईंटें जमाई जाती हैं, जिससे असंख्य सवारियों का आमद रफ्त रहने से सड़कें, जल्दी ही घिस कर खराब न होजायें । ऐसी सड़क तो एक भी नहीं मिलेगी कि जिसमें खड्ढे पड़े हुए हों । प्रत्येक सड़क, नियत अवधि के समाप्त होने पर तोड़ कर फ़िर से बनाई जाती है । किसी भी सड़क पर

कूड़ा कचरा तो क्या काग़ज़ के टुकड़े भी उड़ते हुए नहीं मिलेंगे। जब कोई काग़ज़ का टुकड़ा या चाकलेट का छिलका, सड़क पर गिर जाता है तो उसे सफ़ाई करने वाला, जो फिरता रहता है फ़ौरन् ही उठाकर, टोकरी में डाल देता है। हर एक जगह, कूड़ा कचरा डालने के लिये टोकरियाँ जरूर रहती हैं।

पाखाने और पेशाब घर जमीन के अन्दर, एक ही कतार में, बहुत से बने हुए हैं, जो बहुत साफ़ सुथरे रहते हैं। आराम से एक साथ पचास आदमी खड़े २ पेशाब कर सकते हैं। बहुत जगह, हाथ मुंह धोने का भी प्रबन्ध है। इसी प्रकार बाजार और स्टेशनों पर स्त्री पुरुषों के लिये अलग-अलग काफी संख्या में लवेटरियां (Lavetories) अर्थात् पेशाब घर बने हुए हैं, जिनके साफ़ करने में पानी के अतिरिक्त आदमी या और किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रहती और पानी, खींचने से अपने आप पड़ता रहता है। पेशाब करने की जगह पर थोड़ा २ पानी तो हर समय पड़ता रहता है।

रास्ते चलता हुआ कोई भी आदमी, खंखार थूकता या नाक साफ करता हुआ नहीं देखा गया, इसलिये ऐसी कोई जगह नहीं पाई गई, जो दुर्गन्ध युक्त हो।

शहर में एक भी जिबहखाना नहीं है। ये शहर से बहुत दूर-दूर पर हैं और वहीं पर, जानवर कट-कट कर उनका मांस, शहर के मीट मार्केट (Meat-market) में आया करता है और मीट मार्केट से शहर की छोटी बड़ी मांस की दूकानों में जाया करता है। दूकानों पर से खरीदार को मांस छून कर नहीं दिया जाता; उसकी मांग मूजिब वजन का एक ही टुकड़ा काट कर दे दिया जाया करता है।

इसी प्रकार डेरी फार्म (Dairy Farm) भी शहर के बाहर ही है और शहर में एक भी गाय, भैंस, बकरी दिखाई नहीं देती। हां, डेरी आफिस शहर में अवश्य हैं, जो बाहर के डेरी फार्मस से दूध, मक्खन इत्यादि मंगाकर बेचा करते हैं।

यहां पर सफाई की खूब पूजा होती है। नाटक में, होटल में, पार्क में, दूकान में, हजामत में, हम्माम में, खाने में, लिबासमें, जहां देखिये वहां सफाई ही सफाई के दर्शन होते हैं। यहां तक कि माँगने और चोरी करने में भी सफाई से काम लिया जाता है।

शफ़ाखाने (Hospitals)

लण्डन शहर के शिफ़ाखानों का प्रबन्ध, आदर्श रूप है। इतना बड़ा शहर होते हुए भी कोई मुहल्ला या सड़क ऐसी नहीं है कि जिस पर बड़े २ शिफाखानें न हों। इनके अतिरिक्त बड़े २ निजी (Private) शिफ़ाखानें भी बहुत अधिक खुले हुए हैं, जो बहुत अच्छी हालत में हैं। इन शिफाखानों का इलाज और सफ़ाई, प्रशंसनीय है। प्रत्येक बड़ी बीमारी के लिये, अलग-अलग शिफ़ाखाना है, जहाँ पर सिर्फ़ उसी एक बीमारी का इलाज़ होता है।

यहॉ पर गठिया बाय (वात-रोग) का बहुत अधिक जोर है। यहॉ के शिफाखानों में प्रति सैकड़ा ६० बच्चे इसी रोगसे ग्रसित होकर आते हैं और उनमें से एक तिहाई बच्चे इस रोग के शिकार होजाते हैं। यहॉ की आबादी की बढ़ती पर, इस रोग का बहुत भयानक असर पड़ रहा है। यद्यपि इस रोग के विस्तार का मूल कारण इस देश का शीत प्रधान होना है, तथापि यहॉ के निवासी इस प्रयत्न में हैं कि यह रोग यहॉ से समूल नष्ट प्रायः हो जाय।

इन शिफाखानों में औजार, दवाएँ और इलाज के तरीके, नित नए २ निकला करते हैं और बिजली द्वारा भी इलाज किये जाते हैं।

इन शिफाखानों में मरीज, नर्सों (Nurses) की हिफा-जत में रहा करते हैं। यह नर्से मरीजों की तबियत खुश करने के लिये नाना प्रकार के कार्य किया करती हैं। यह बाजा बजातीं, गाने और किस्से कहानी सुनातीं, पुस्तकें और अखबार पढ़तीं, अच्छे-अच्छे खान-पान खिलातीं-पिलातीं और उनको हवाखोरी के लिये घुमाने भी ले जाया करती हैं। तात्पर्य यह कि वे मरीजों की तबियत को बहलातीं और उन को सदा प्रसन्न चित्त रक्खा करती हैं, जिससे मरीज अपने रोग को भूल जाते हैं और शीघ्रता पूर्वक स्वास्थ्य लाभ करने लगते हैं।

शासन (Administration)

विशाल बृटिश राज्य की सब व्यवस्था, उसका राज-कीय प्रबन्ध आदि, सब काम एक कैबिनेट (Cab net) द्वारा होता है। कैबिनेट में एक महा मन्त्री और बीस मेम्बरर्स (Members) होते हैं। महा मन्त्री, इन मेम्बरों के कार्यों का ही नहीं, उनके शब्दों तक का जिम्मेवार होता है। महा मंत्री और मेम्बर लोग (Members) कामनसभा (House of Commons) के मेम्बर होते हैं। कैबिनेट की सभी बातें गुप्त रहती हैं और सम्राट, इसी कैबिनेट की सलाह से

काम करते हैं। गृह मन्त्री (Home Secretary), पर राष्ट्र सचिव (Foreign Secretary), भारत सचिव (Secretary of State), औपनिवेशिक मन्त्री (Colonial Secretary), व्यापार समिति के सभापति (President of the Board of Commerce), शिक्षा समिति के सभापति (President of Educational Board) पोस्ट मास्टर जनरल (Post Master General) आदि मुख्य २ पदाधिकारी, कैबिनेट के मेम्बरों में से ही होते हैं।

कैबिनेट के मेम्बरों का चुनाव, कामनसभा करती है, परन्तु केवल वे ही व्यक्ति चुने जासकते हैं जो, कामनसभा के मेम्बर होते हैं। कामनसभा में चार दल के मनुष्य होते हैं (१) उदारदल (Liberal), (२) संरक्षकदल (Conservative), (३) मजदूरदल (Labourer) और (४) राष्ट्रवादी (Nationalist) परन्तु जिस दल का अधिक जोर होता है, उसी दल के अत्यन्त योग्य और विद्वान मेम्बर, कैबिनेट में चुने जाते हैं और तब राजकीय कर्यों की प्रायः सारी सत्ता, उसी दलके हाथ में रहती है। उसी दल का नेता, सम्राट द्वारा, महामन्त्री चुना जाता है।

महा मंत्री अपने पक्ष के मुख्य २ मनुष्यों में से जो जिस काम का अनुभवी तथा योग्य होता है, उसे उसी विभाग का मंत्री बनाता है। यदि वह चाहे तो लॉर्डसभा के मेम्बरों में से भी किसीको किसी विभाग का मंत्री बनासकता है।

कैबिनेट में बहुमत से काम नहीं होता। प्रत्येक मंत्री अपने २ विभाग का कार्य करता है। सिर्फ अत्यावश्यक व विवादास्पद विषय ही प्रधान मंत्री समग्र मंडल के सामने निर्धारणार्थ उपस्थित करता है। जो मंत्री दूसरों से सहमत नहीं होता है उसे अपना पद त्याग करना पड़ता है। मंत्रियों के सहायतार्थ उपमंत्री भी होते हैं, जो पार्लीमेन्ट के मेम्बर नहीं होते। इसलिये पार्लीमेन्ट के बदल जानेपर भी उन्हें अपना पद त्याग नहीं करना पड़ता। इसलिये कार्य वाही में कोई क्षति नहीं होती।

कामन्स-सभा और लॉर्डस-सभा मे एक-एक सभापति होता है। कामन्स-सभा के सभापति को स्पीकर (Speaker) और लॉर्डससभा के सभापति को लॉर्ड चान्सलर (Lord Chancelor) कहते हैं। स्पीकर का चुनाव पार्लीमेन्ट करती है। यह आवश्यक है कि स्पीकर किसी पक्ष विशेष का अनुगामी न हो। इनका कर्तव्य सभा के काम को निर्धारित नियमों पर चलाना है। सभा का काम बहुमत पर होता है।

२२

यदि वोटोंकी संख्या गिन्ने में स्पीकर के निर्णय में संशय हो तो प्रत्येक पक्ष के लोग एक-एक कमरे में चले जाते हैं और वहींपर उनकी गिनती होजाती है। स्पीकर के आधीन एक अधिकारी रहता है, जिसे सार्जेण्ट एट् आर्मस (Sergeant-at-arms) कहते हैं। यदि कोई सभासद उद्दण्ड होकर अनुचित व्यवहार करे तो स्पीकर उसे इस अधिकारी की सहायता से पार्लीमेन्ट के बाहर निकाल देता है।

पार्लीमेन्ट के निर्वाचित होनेके बाद सम्राट और सम्राज्ञी कुछ शिष्ट महिलाओं के साथ सभा-भवन मे आविराजते हैं। फिर लॉर्ड सभा की ओरसे श्यामदंड-धारी (Keeper-of The black-rod) नामक एक अधिकारी सम्राट का सन्देश ले कामन्स-सभा के सदस्यों को बुलाने जाता है। सभी सभा-सद स्पीकर के पीछे २ आकर सम्राट के सम्मुख नम्र-भाव से खड़े होजाते हैं। सम्राट उन्हें राज्य-कार्य का सन्देश सुनाते हैं। उसका उत्तर देनेके लिये विचार करनेको ये सभा-सद फिर सभा-भवन में लौट आते हैं। प्रत्येक पक्ष, उत्तर में अपने २ अभिप्राय प्रकट करता है। यहींसे पार्लीमेन्ट की कार्यवाही आरम्भ होती है।

प्रायः सारी प्रधान शासन-शक्ति, कामन्स-सभा (सर्व साधारण दल) के हाथ में रहती है। इस सभा मे एक विरोधी

दल भी रहता है। जिस दल के मनुष्य अधिक संख्या में होते हैं, वह प्रधान दल कहलाता है और जिस दल के मनुष्य उससे कम संख्या में होते हैं, वह विरोधी दल कहलाता है। प्रधान दल की राय के अनुसार सब काम होता है सही, परन्तु विरोधी दल हरएक बातमें प्रधान दल और उसके मेम्बरों द्वारा संचालित कैबिनेट का विरोध करता रहता है। इसका भाव यह है कि प्रधान दल द्वारा किये गये कामों में किसी भी प्रकार की त्रुटि रहजाय तो वह सुधारी जा सके।

कामन्स-सभा और कैबिनेट का प्रत्येक मेम्बर तीन साल के लिये चुना जाता है। प्रत्येक मेम्बर को अपने चुनने-वालों का रुख रखना पड़ता है और वह किस दल का है, यह उसे पहले ही प्रकट करदेना पड़ता है तथा अन्त तक उसी दल का पक्ष लेना पडता है। यदि बीचमें मेम्बर के मत में परिवर्तन होजाय और वह अपने दल का पक्ष समर्थन न कर सके तो ऐसी सूरत मे उसे इस्तैफा देदेना पड़ता है और उसका जैसा मत हो, उस दल की ओरसे चुने जानेपर ही वह फिरसे कामन्स-सभा में आ सकता है।

कामन्स-सभा के चारों दलों के डेढ़सौ मेम्बरों की एक समिति भारत सम्बन्धी विषयों पर विशेष ध्यान देती है।

नये कानून, कामन्स-सभा और लॉर्डस-सभा के सामने तीन २ बार पेश होते हैं और इन दोनों सभाओं द्वारा स्वीकृत होजाते हैं, तब सम्राट द्वारा स्वीकृत होते हैं।

कामन्स-सभा में ६७० और लॉर्डस-सभा में ४७८ मेम्बर्स होते हैं। कामन्स-सभा के मेम्बर्स प्रजा द्वारा चुने जाते हैं। ऐसे चुनाव के लिये वोट देनेका अधिकार सिर्फ उसी व्यक्ति को रहता है, जिसकी आयु २१ वर्ष से अधिक हो, जो कुछ गैरमनकूला जायदाद रखता हो और जिसने सब कर (Rates) अदा कर दिये हो। लॉर्डस-सभा के मेम्बर, मुख्य पादरी (Archbishops), पादरी (Bishops) तथा बेरन (Baron) के पद से ऊपर के लॉर्डस (Lords) हुआ करते हैं और इनके अतिरिक्त स्काटलैंण्ड व आयर्लैण्ड की तरफ से अलग मेम्बर होते हैं। पादरी (Bishop) ईसाई मत के प्रसिद्ध पुरुष को कहते हैं। चर्च ऑफ इंग-लैंड में इन की संख्या लगभग ४० के है। इन बिशप्स में से २ मुख्य पादरी (Archbishop) होते हैं। एक केंटर-बरी (Archbishop of Canterbury) का और दूसरा योर्क (Archbishop of York) का। लण्डन का बिशप भी ऊंचे दर्जे का समझा जाता है। ये सब श्रीमान् सम्राट की ओर से स्थापित किये हुए होते है और इन सब को

लॉर्डस-सभा में पदानुसार स्थान मिलता है। इन सब को सरकार से वेतन भी मिला करता है। केन्टरबरी के आर्क बिशप को १५०००, यॉर्क के आर्क बिशप को ६००० और लण्डन के बिशप को १०००० पाउण्ड वार्षिक मिला करते हैं।

स्काटलैंड की तरफ से १६ पीयरस (Peers) होते हैं जो हर तीन वर्ष बाद जबकि राज्य शासन सम्बन्धी मेम्बरों का चुनाव होता है, चुने जाया करते हैं। आयर्लैंड की ओर से २८ मेम्बर्स होते हैं, जो वोट द्वारा चुने जाते हैं, परन्तु वहां पर हर तीन वर्ष बाद चुनाव नहीं होता; जो मेम्बर्स एक बार चुन लिये जाते हैं, वे ही आजीवन मेम्बर्स रहते हैं।

यहाँ के विचार विभाग में, सब से ऊँची अदालत लॉर्डस-सभा है, जिसका फैसला नातिक माना जाता है और उस के फैसले की ओर किसी जगह पर अपील नहीं होती। उसके नीचे कोर्ट ऑफ अपील (Court of Appeal) है और उसके भी नीचे हाई कोर्ट ऑफ जसटिस (High Court of Justice) है। हाई कोर्ट ऑफ जस्टिस के नीचे चेन्सरी डिविजन (Chancery Division) किंगज बेन्च डिविजन (King's Beach Division) और प्रोबेट-

डाइवोर्स एण्ड एडमिरल्टी डिविजन (Probate Divorce and Admiralty Division.) आदि अदालतें हैं, जिनमें से किंगज़ बेंच डिविज़न के जज दौरे पर जाया करते हैं। इनके अतिरिक्त काउन्टी कोर्ट (County Court) में दीवानी मुकद्दमात की, क्वार्टर सेशन्स (Quarter Sessions) में फौजदारी के संगीन मुकद्दमात की और पैटी सेशन्स (Petty Sessions) मे फौजदारी के खफीफ मुकद्दमात की समाअत हुआ करती है। इन अदालतों के अलावा एक कोरोनर्स कोर्ट (Coroners Court) भी है।

बृटिश-सेना।

आज सारे संसार में बृटिश-सेना सी सबल, सुदृढ़, विशाल और सुसज्जित सेना किसी भी राज्य-शक्ति के पास नहीं है। सेना सम्बन्धी साज सामान और रण-चातुर्य में भी बृटिश सेना अपनी जोड़ नहीं रखती। विजय-यश तो बृटिश सेना के साथ छाया की तरह लगा हुआ है। यही कारण है कि आज प्रायः सभी राज्य-शक्तियाँ, बृटिश राज्य की मुखापेक्षी हो रही हैं और बड़े, ही संशक और सतर्क भाव से उसका रुख देखा करती हैं। उसी बृटिश-सेना का कुछ हाल यहाँ पर दिया जाता है।

जलसेना—यहाँ का जहाजी बेड़ा जो रोयल नेवी (Royal Navy) के नाम से प्रसिद्ध है, दुनिया भर के सब जहाजी बेड़ो से बड़ा है। जहाजी बेड़े के बड़ा होने से ही वृटिश सरकार समुद्र पति (Master's of the sea) कहलाती है और उसका व्यापार भी खूब चल रहा है। जहाजी बेड़े के मुख्य स्थान पोर्टसमाउथ (Portsmouth), साउथाम्पटन् (Southampton) और प्लाईमाउथ (Plymouth) इत्यादि हैं। रोयलनेवी के अतिरिक्त एक और बेड़ा है, जो रोयलनेवल रिजर्व (Royal Naval reserve) कहलाता है। यह बेड़ा केवल युद्ध या आपत्ति के समय ही काम आता है। इसके सैनिक सर्व साधारण जन हैं, जो अपनी देश भक्ति की प्रेरणा से, देश के गौरव की रक्षा के लिये, बड़े ही प्रेम के साथ कुसमय में काम आते हैं।

स्थलसेना—जलसेना की तरह ही यहां की स्थल-सेना भी खूब प्रसिद्ध है। लण्डन शहर में रहने वाली स्थल-सेनाः—

१. हाउस होल्ड केवेलरी (Household Cavalry), यह हाइड पार्क (Hyde Park) और रीजेन्ट पार्क (Regent Park) मे रहती है।

२. तोपखाना (Artillery) और इसकी रेजिमेंट (Regiments), यह, वुलविच (Woolwich) में रहती हैं।

३. गारद के बटालियन (Battalion), यह सेंट जेम्स-पार्क के वेलिंगटन बेरक्स (Wellington barracks), चेलसी बेरेक्स (Chelsea barracks) और टॉवर (Tower of London) में रहते हैं।

४. नित्य प्रति सेना का एक दिल कम्प नजारा सेन्ट जेम्स पैलेस के पास से, माउंटिंग ऑफ दी गार्ड्स (Mounting of the guards) होता है, परन्तु यदि सम्राट और सम्राज्ञी बकिंघम पैलेस में वास करते हों तो यह वहाँ पर होता है। सम्राट के जन्मोत्सव के दिन तक सेना की परेड (Parade) होती है जिसे ट्रूपिंग द कलर (Trooping the Colour) कहते हैं।

हवाई सेना—इसकी विशेष उन्नति और हवाई जहाजों का अधिक प्रचार महा समर से होना आरम्भ हुआ है। ब्रिटिश सरकार ने इस हवाई सेना विभाग में जो २ आविष्कार और सुधार किये हैं, वे महान् आश्चर्यकारी हैं और सर्वथा सराहने योग्य हैं। लण्डन में इसके मैदान

एरोड्रोम्स (Aerodromes), क्रोयडन (Croydon), हेण्डन (Hendon) और ब्रुक लैण्डस् (Brooklands) में हैं। हेण्डन में वर्ष में एक दो बार हवाई जहाजों के खेल कूद (Aerial show) होते हैं, जहाँ पर जाकर हम ने भी बहुत आनंद प्राप्त किया था *। लण्डन से जहाँ २ को हवाई जहाज जाते हैं, वहाँ २ को साधारण मनुष्य भी पहले से अपनी जगह सुरक्षित (Reserve) करा कर जा सकता है।

गरमी की मौसम में ओलिम्पिया (Olympia) नामी स्थान में इन तीनों प्रकार की सेनाओं के खेल कूद हुआ करते है, जिनमें आदि से अन्त तक के आविष्कार, यंत्र, वर्दियां इत्यादि सैनिकों द्वारा बडी खूबी और तारीफ के साथ दिखलाई जाती हैं *।

इन सेनाओं में बहुत अधिक संख्या में सैनिक, शस्त्र, तोपें, जहाज, हवाई जहाज इत्यादि हैं और इन सेनाओं पर खर्च भी बहुत अधिक हो रहा है।

---

* इन खेलों का विवरण "खेल तमाशा" शीर्षक के 'मिल्टरी खेल" नामक उप शीर्षक मे दिया गया है।

पुलिस और सी० आई० डी०

(Police & C. I. D.)

संसार प्रसिद्ध लण्डन शहर की आदर्श रूप पुलीस की जितनी प्रशंसा की जाय सब थोड़ी ही है। यहाँ की पुलिस में न तो लालच, दुष्टता, पक्षपात है और न प्रजा पर शासक रूप से होने के भाव हैं, बल्कि वह सदैव अपने को प्रजा का सेवक ही समझती है और इस सच्चे और पवित्र सिद्धांत पर अटल रह कर ही वह यह अलौकिक यश राशि लूट रही है। उसका काम हर प्रकार से प्रजा की भलाई और सहायता करना है। पुलीस के कर्मचारी गण प्रत्येक आदमी से नम्रता पूर्वक बोलते हैं और उसको हर प्रकार की सहायता देने के लिये हर समय तैयार रहते हैं। जो बात पूछी जाय उसका शिष्टता पूर्वक उत्तर देना और भूले भटके को ठिकाने पर पहुँचा देना तो इनका नित्य का काम है। दुष्ट लोगों को गिरफ्तार करते समय भी ये अपने शिष्ट भाव से नहीं चूकते। बड़ी ही नम्रता पूर्वक कहते हैं— "हमें आपको कष्ट देने में क्लेश होता है परन्तु कानून की आज्ञानुसार ऐसा करना आवश्यक है"। यहाँ पर बदमाशों की भी कमी नहीं है, परन्तु उनको व्यर्थ कष्ट दिये बिना ही पुलिस उन पर पूरी निगरानी रखती

है । पुलिस के उत्तम प्रबन्ध के कारण ही यहाँ की प्रजा पुलिस को बहुत मान देती है ।

यहाँ की पुलिस का संचालन होम सेक्रेटरी (Home Secretary) द्वारा होता है । पुलिस में पुरुषों के समान स्त्रियाँ भी भरती हैं, जो पुरुषों की तरह ही अपना सब काम बहुत ही सावधानी और फुर्ती के साथ अदा करती है । इन स्त्रियों का शहर में बहुत नाम है ।

विशेष कर इस पुलिस का मेट्रो पुलिस (Metro-Police) बहुत प्रसिद्ध है । उसका बड़ा दफ्तर न्यू स्काटलैण्ड यार्ड (New Scotland yard) के नाम से जगद्विख्यात है, जो टेम्स नदी के ऊपर बहुत विशाल बना हुआ है ।

यों तो कोई भी सड़क पुलिस वालो से खाली नहीं मिलेगी परन्तु बड़ी २ सड़को पर तो यह बहुतायत से पाये जाते है और मोटर, घोडागाड़ी, बसें और पैदलों का गमना-गमन इन्ही की निगरानी में होता है । इस शहर के लिये कुल २३१,०० पुलिस कर्मचारी तैनात हैं ।

यहाँ की पुलिस को सैंकडो व्यायाम प्रणाली का अभ्यास कराया जाता है ।

यहाँ की सी० आई० डी० भी महान् शक्तिशाली है। इसी की वजह से आज इङ्गलैंड के आगे किसी भी राज्य-शक्ति की चाल नहीं चल सकती है। पहले जर्मन सी० आई० डी० का बहुत नाम था परन्तु समय ने प्रमाणित कर दिया कि वास्तव में ब्रिटिश सी० आई० डी० ही का स्थान सर्वोपरि है।

चोर लफंगे।

जिस प्रकार यहाँ की पुलिस प्रशंसनीय है उसी प्रकार यहाँ के चोर लफंगे भी प्रशंसनीय हैं जो पुलिस का ऐसा उत्तम प्रबंध रहते हुए भी दिन दहाड़े चोरियाँ करते है। बाजारों में हजारों स्त्री पुरुषों के चलते और दूकानों में सब कर्मचारियों के रहते हुए भी दुकानों के कांच तोड़ कर माल उड़ा लेते हैं और ऐसी सफ़ाई के साथ उड़ाते हैं कि जिसका पता चलना भी कठिन हो जाता है।

बाजार में बहुत से लफंगे सामान नीलाम करने की दूकानों पर खड़ रहते है जो माल का मूल्य बतला कर माल की तारीफ़ करते रहते हैं। ज्योंही किसी ने बोली दी कि माल खत्तम! इसमें अनजान आदमी फँस जाता है और उसको माल से कहीं अधिक मुल्य देना पड़ता है।

यह खयाल करना कि यहाँ पर पुलिस का उत्तम प्रबन्ध रहने से तथा सभ्यता का राज्य रहने से चोरिया नहीं होती होगी, नितान्त भूल है।

जेलखाने।

यहाँ पर चार प्रसिद्ध कारागार हैं। इन में तीन कारागार तो पुरुष अपराधियों के लिये हैं, और एक हालोवे (Holloway) नामक कारागार सिर्फ अपराधिनी स्त्रियों के लिये है। यहाँ का उत्तम प्रबन्ध और सफाई, सराहनीय है।

द्रव्य प्रेम।

लण्डन शहर में लक्ष्मी के लालों की भरमार है। करोड पति होना तो यहाँ वालो के लिये एक साधारणसी बात है। इस शहर में चाहे जिधर नजर उठाकर देखिये लक्ष्मी ही लक्ष्मी नजर आती है। भारतवर्ष मे जिस प्रकार रुपये का चलन है उसी प्रकार यहां पर पाउन्ड का चलन अर्थात् यहाँ के सब भाव आदि पाउन्ड पर ही तय होते हैं। डाक के टिकिट भी पाउन्ड से ऊपर तक के चलते हैं। यहा पर जो बैङ्कों की अधिक संख्या है जो करोड़ो रुपयों की लागत के भवन, गिरजाघर, पार्क, पुल इत्यादि बने

हुए हैं और जो यह शहर विश्व मोहिनी सुन्दरता को आभास हो रहा है यह सब, इस शहर के धनशाली होने के ही परिचायक हैं इस शहर के कुछ अधिक आमदनी वालों की संख्या इस प्रकार है:—

१५	लाख सालाना से ऊपर की आमदनी वाले					१३७
११॥	,,	,,	,,	,,	,,	१२७
७॥	,,	,,	,,	,,	,,	२७८
६	,,	,,	,,	,,	,,	२६१
३	,,	,,	,,	,,	,,	१०८१

यहाँ का दाम्पत्य प्रेम भी केवल धन-भोग पर ही अवलम्बित है और जहां यह बंधन ढीला पड़ा कि फौरन ही तलाक होगई। इसी वजह से यहां पर तलाक के मुकद्दमे बहुत अधिक हुआ करते हैं। और प्रति मनुष्य औसत आमदनी, जहां भारतवर्ष में तीन पैसे रोजाना है, वह यहा पर रु० १॥।=) रोजाना है। यहाँ वालों की इस धन-विपुलता का सिर्फ यही कारण है कि ये लोग द्रव्य प्रेमी हैं। यहा वालों का सब उद्योग और परिश्रम प्रायः धनोपार्जन के लिये ही होता है धन ही यहा के पूज्य देवता है और सब श्रम और क्लेश उन्हीं की सेवा के लिये किये जाते है।

धन ही के लिये यहाँ के लोग अपना देश, समाज, कुटुम्ब, माता पिता, स्त्री, पुत्र इत्यादि को छोड़ कर के खुशी के साथ हजारो कोसों और कई वर्षों का प्रवास सहा करते है।

परन्तु लगडन शहर की यह विपुल धन राशि और ऊँची २ अट्टालिकाए, स्वच्छ विद्युत्प्रकाश, पार्कों का आमोद प्रमोद और होटल, थियेटर, सीनेमो का आनन्द तथा राग रंग उमंग सिर्फ इसके पश्चिमीय खंड को ही प्राप्त हैं। पूर्वीय खंड का मजदूर दल तो दरिद्रता, और दरिद्रता जनित दुःखों का ही उपभोग कर रहा है! मानो पूर्व पूर्व-ने दरिद्रता का ठेका ले रक्खा है! यहाँ के मजदूरों की दरिद्रता का मुख्य कारण उनको कारखानों में काफी मजदूरी का न मिलना है और यह भी यहाँ के पूँजी-पतियों का द्रव्य-प्रेम ही है।

पूँजी पतियों और मजदूरों के यह परस्पर का भाव क्या है मानो पूर्ण प्रकाशयुक्त चारु चन्द्र की साख उतारने वाले कुछ कज्जल-बिन्दु मात्र हैं।

यहाँ प्रश्न यह उपस्थित होता है कि क्या यहाँ वालों को ही द्रव्य से प्रेम है; भारत वासियो को नहीं है? भारत वासियो को द्रव्य से प्रेम है सही, परन्तु इतनी अधिक मात्र

हीं है, इसीलिये वे द्रव्य प्राप्ति के लिये, उतना उद्योग नहीं कर रहे हैं, जितना कि यहाँ के निवासी कर रहे हैं। भारत वासियों की इस उदासीनता का कारण उनका सिद्धान्त भेद है। भारतवासियों का सिद्धान्त ऐहिक नहीं है, पारलौकिक है और वे द्रव्य को स्थिर रहने वाली और परलोक में साथ चलनेवाली चीज नहीं समझते बल्कि उसको सारे उत्पातों की जड़ समझते हैं। भारत वासियों का लक्ष्य निवृत्ति मार्ग की ओर है और उनके धर्म-ग्रन्थ सिर्फ इसी बात के पोषक हैं। उनका साहित्य भी इसी रङ्ग से रङ्गा हुआ है और उनके महात्माओं तथा सत्पुरुषों ने भी समय-समय पर ऐसा ही उपदेश किया है।

परन्तु यहाँ का सिद्धान्त बिलकुल ही इसके विरुद्ध है और यहाँ वाले पैसेको ही सब कुछ समझ रहे हैं।

मांगन हार।

लण्डन सरीखे सम्पत्ति-शाली शहरमें भी माँगनहारों की कमी नहीं है। बाजारों में बहुतसे अशक्त पुरुष, जिनकी छाती पर उनके अशक्तता का कारण लिखा हुआ रहता है, वे माँगे, हाथ पसारे खड़े रहते हैं। [illegible] अपनी दीनता दरसाते हैं तो बहुतसे हाथमें दो [illegible] दिया-

सलाई की पेटियाँ लिये हाथ पसारे खड़े रहते हैं। बहुतसे आदमियों की जमात दूकान २ गाती और बाजा बजाती हुई चली जाती है तो बहुतसे आदमी सामने हाथ पसार कर माँगा करते है। इन सब को बहुत से आदमी अपनी इच्छानुसार कुछ देदिया करते है। ऐसी सभ्य, धनी और विद्या बुद्धि कुशल जाति में भी धर्म के नाम पर पेट भरने वालों की संख्या बहुत अधिक है।

धार्मिक-कार्य।

यहाँ पर धार्मिक कार्य करने की रुचि विशेष रूप से पाई जाती है। बाजारो मे बहुतसी स्त्रियाँ फूल-पिन बना कर बेचा करती है, जिनकी कुल आमदनी धर्मार्थ लगाई जाती है। इन फूलों को प्रत्येक मनुष्य प्रेम पूर्वक खरीदा करता है। इसी प्रकार बड़े २ खेल तमाशे करके उनकी आमदनी भी धर्मार्थ लगाई जाती है। ऐसे बड़े २ कामो में श्रीमती सम्राज्ञी तक योग दिया करती है। यहाँ पर अनाथालय और विधवाश्रम भी बहुत है, जिनका काम भी बड़ी खूबी के साथ चल रहा है।

यहाँ पर एक बाइबिल सोसाइटी है, जिसने अब तक कोई ६७५ भाषाओं में बाइबिल का अनुवाद छपवाया है

और प्रतिवर्ष एक करोड़ प्रतियाँ मुफ्त वितरण किया करती है।

रहन-सहन।

यहाँ वालों का रहन सहन क्या है, मानो आनन्द का जीवन है। एक क्षण भर भी व्यर्थ खोना तो ये लोग जानते ही नहीं। शिक्षा मे इनको इतना प्रेम है कि मरते दम तक भी कुछ न कुछ पढ़ते ही रहते हैं। अध्यवसायी ऐसे हैं कि हर समय कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। व्यायाम करना तो यहाँ वालो की दिनचर्य्या का पहला नियम है। यह व्यायाम ही का प्रताप है कि वृद्धावस्था की प्राप्ति पर भी इनके शरीर शिथिल नहीं पड़ते। बचपन की शादी तो यहाँ पर बिलकुल ही नहीं होती। सभ्य ऐसे है कि अपने से नीचे दरजे के आदमी से बात करते समय भी प्लीज् (Please) अर्थात् महरबान का व्यवहार जरूर करते हैं। जिन स्त्रियों को भारतवासी पैर की जूती, बच्चा पैदा करने की मशीन और बिना दाम की गुलाम समझते हैं, ये उन्हीं स्त्रियों को देवी की तरह मानते है। इन लोगों को, जितना शौक काम करने का है, उतना ही शौक, खेलकूद, आमोद प्रमोद, सैर-पर्यटन, आदि का भी है। खेल-कूद, आमोद-प्रमोद में विशेष भाग लेने से ही

उनके दिमाग ज्यादा ताजे रहते है और यही कारण है कि वे बहुत अधिक काम करते है और ऐसे २ दिमागी काम कर गुजरते है कि जिनकी हम कभी कल्पना भी नही कर सकते। परन्तु प्रत्येक काम नियत समय पर ही करते हैं। समय की पाबन्दी पर अधिक ध्यान रक्खा जाता है। खाना पीना, काम काज, खेलकूद, आमोद-प्रमोद इत्यादि सब अपने २ समय पर ही होते है। हजामत रोज करते है और समयोपयुक्त कपड़े पहना करते हैं। एक ही दिन में कई बार और कई प्रकार के कपड़े पहिनते और बदलते रहते हैं। स्त्रियो को इतनी अधिक आजादी दी हुई है कि वे पुरुषो से भी आगे निकल गई है। वैसे, पुरुषों को भी बहुत आजादी है। मानो आजादी तो इनकी नस २ में भरी हुई है। ये लोग सफाई पसन्द हैं और सफाई रखना भी खूब जानते है। गरीब आदमी जो छोटे २ मकानों में रहते है और मामूली कीमत के कपड़े पहनते है, उन्हें भी खूब साफ सुन्दर रक्खा करते हैं। साधारण गृहस्थ के घर में भी पॉच कमरे अर्थात स्थानागार, भोजनालय, शयनागार, आमोद प्रमोद भवन और रसोईघर जरूर होता है। गरीब और मध्यम श्रेणी के मनुष्य भी अपने मकान व कमरो की सफाई तथा अपने और सब काम अपने ही हाथो से विना किसी प्रकार के संकोच के

चल सकता । इस लिये यहाँ का बच्चा २ इस काम को सीखता है । यदि खोज की जाय तो यहाँ पर ऐसी एक भी स्त्री या पुरुष नहीं मिल सकता, जो नाच न जानता हो । नाच की तालीम भी सब को बचपन ही में दी जाती है ।

इसी प्रकार खेल-कूद, हवा खोरी इत्यादि में भी ज़रूर शरीक होते हैं । यहाँ तक कि एक मजदूर भी अपनी मजदूरी करलेने के बाद, घूमने जरूर जाया करता है । साधारण मनुष्य भी रोटी दूकान पर पकी हुई खाता है क्योंकि बाजार की रोटी जो मशीन द्वारा बनाई जाती है, घर की रोटी की अपेक्षा सस्ती पड़ती है । मामूली खाना घर पर पकाकर भी खाया जा सकता है, परन्तु किसी को निमन्त्रित करने पर, उनको खाना होटलों में ही खिलाया जाता है । बियर (Beer) शराब पीने का तो यहाँ पर आम रिवाज है और प्रत्येक स्त्री पुरुष पीते हैं । सुबुह शाम चाय भी सभी लोग पिया करते हैं । इनकी भगवद्भक्ति व देश-भक्ति सराहनीय है । यहाँ पर भगवद्भक्तों व देशभक्तो का बहुत मान होता है । यहाँ वालो पर भगवद्भक्ति व देश भक्ति का पक्का रंग बाल्य काल ही में चढ़ा दिया जाता है जो मृत्यु पर्यन्त नहीं छूटता ।

प्रत्येक सभा, जलसा, नाच, गाना, नाटक, सिनेमा आदि की समाप्ति के पूर्व यहाँ का राष्ट्रीयगीत (Notional Anthem) गाया जाता है और हर एतवार को यहाँ के सब बाजार इत्यादि प्रायः बन्द से रहते हैं।

तात्पर्य यह कि चाहें जिस बात में लेलीजिये, इनकी नीति, बुद्धिमानी, उत्साह और अध्यवसाय, इनका शिर ऊँचा किये हुए है और हम भरतवासी तो इनकी रहन-सहन से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

खेलतमाशे।

सुन्दरता का क्रीड़ाक्षेत्र, लण्डन शहर, खेल तमाशों का भी क्रीड़ा क्षेत्र हो रहा है। इस खेल प्रिय शहर में, हजारों की संख्या में खेलों के मैदान और क्लबघर, नाटकालय इत्यादि है, जहाँ पर प्रायः खेल-तमाशे, हुआ ही करते हैं और ऐसे खेल तमाशों में बहुत अधिक भीड़-भाड़ रहा करती है। जिस प्रकार पार्कों, होटलों में, उसी प्रकार खेल-तमाशों में भी यहाँ वालों का खूब जी लगता है। प्रत्येक खेल में, लाखों स्त्री पुरुषों के जमा होने से और नाटकालयों की बैठकें महीनों पहले सुरक्षित हो जाने से, यहाँ के निवासियों के आनन्दमय जीवन का

अन्दाजा लगाया जा सकता है! खेल-तमाशे क्या है, मानों हर्षोंद्गार के साधन है! प्रफुल्लता के यन्त्र है! आनन्द के प्रपात है! यदि इस शहर से, ये खेल-तमाशे अलग कर दिये जायँ, तो यहाँ का सब आनन्द ही किर-किरा हो जाय! ऐसे ही खेल तमाशों का कुछ हाल यहाँ पर दिया जाता हैः–

क्लबों द्वारा खेल।

यों तो इस शहर में हज़ारों क्लबें है, परन्तु छः सौ तो प्रसिद्ध क्लबे है और इनमें डेढ़ सौ तो महा प्रभावशाली क्लबें हैं। इनमें तीस क्लबें तो ऐसी हैं जहाँ सिर्फ स्त्रियें ही मेम्बर हो सकती हैं और वे ही कुल प्रबन्ध करती हैं। हर्ष के साथ कहना पड़ता है कि इन महिलाक्लबो का काम सुन्दर रूप से सञ्चालित हो रहा है।

इन सब क्लबों के मेम्बर बड़े २ प्रभावशाली पुरुष है, परन्तु कई प्रकार की रुचि के मेम्बरों के होने से क्लबों द्वारा कई प्रकार के काम हो रहे है। बड़े २ पुस्तकालय खुले हुए है, खाने पीने आराम करने का प्रबन्ध है, नाच गाना सिखलाया जाता है, विचारों द्वारा समाज को सहायता पहुँचाई जाती है और खेल आदि भी हुआ करते है।

इन क्लबों के अपने बड़े २ पोलोग्राउन्ड, टेनिस ग्राउन्ड, क्रिकेट ग्राउन्ड, हौकी ग्राउन्ड आदि हैं, जहाँ पर क्लबों की तरफ से मैच होते और बड़े २ कप (Cup) रक्खे जाते हैं।

यहाँ के एम० सी० क्रिकेट क्लब और विम्बल्डन टेनिस क्लब बहुत प्रसिद्ध हैं, जहाँ पर दुनिया भर के प्रसिद्ध खिलाड़ी मैच खेलने आया करते है। कई क्लबों द्वारा गोफ (Golf) और स्केटिंग (Skating) आदि खेल भी खेले जाते हैं और इन खेलो की शिक्षा भी दीजाती है।

क्लबो द्वारा होने वाले प्रसिद्ध खेल, पोलो और रेस का कुछ आभास यहाँ पर दिया जाता है:—

पोलो इस वर्ष इस शहर में, पोलो की खूब धूम है। कई जगह की पोलो टीमस् यहाँ पर आई हुई हैं। हमारे श्रीमान् के साथ में भी जोधपुर पोलोटीम आई है। क्लबो की तरफ से जो पोलो के मैच हुए, उनमें जोधपुर टीम ने, जो हर्लिंगम क्लब (Hurlingham Club) मे ठहरी हुई थी, बहुत अधिक सफलता प्राप्त की और बहुत से बड़े २ मैच जीते थे। प्राइज़ हैट का वेस्ट सोमरसेट कप,

हार्नघाम चेम्पियन कप, रोही एम्पटन फाइनल और रगबी फाइनल के प्रसिद्ध मैच जीतकर के जोधपुर टीम ने बहुत नाम प्राप्त किया था। विशेष कर अमेरिका की प्रसिद्ध आरमी पोलोटाम (Army Polo Team) जो यहाँ पर दो साल से बराबर जीत रही थी, उससे एक बार ही नहीं, दोनों बार जीत कर के, जोधपुर टीम ने विशेष यश प्राप्त किया था। प्रत्येक लण्डन वासी के हृदय मे, जोधपुर टीम के लिये बहुत अधिक मान देखने में आता था। ऐसे खेलों में लाखों मनुष्यों की उपस्थिति होती है, हज़ारों सवारिएँ इकट्ठी होती हैं और सैकड़ों होटल व चाय पानी की दूकानें लगती हैं।

रेस Race — यहाँ पर बहुत से रेस कोर्स (Race Course) हैं। ऐसा कोई सप्ताह न गुज़रता था कि जिसमें रेस-मिटिंग न होती हो। यहाँ पर हम एक दो, प्रसिद्ध रेसों का कुछ हाल लिखते हैं।

डारबी रेस — डारबी नामक जगत्प्रसिद्ध रेस, इपसम ग्राम में, मई मास के अन्तिम बुधवार को हुआ करती है। इस रेस में दौड़ने के लिये देश देशान्तरो के नामी २ घोड़े आया करते हैं। जो घोड़ा इस रेस में जीत जाता है, वह जगत्प्रसिद्ध हो जाता है और उसका मूल्य भी बढ़

जाता है। यह रेस दिन के डेढ़ बजे आरम्भ होती है, परन्तु फिर जगह हाथ न आने के डर से लोग सूर्य्योदय के पहले ही से जाकर जम जाते हैं। हम लोग भी दिन के ९ बजे तक पहुँच गये थे, परन्तु तब तक तो लाखों मनुष्यों की भीड़ लग चुकी थी। रेस आरम्भ होने के समय तक तो इतनी जनसंख्या इकट्ठी हो गई थी और इतनी सवारियाँ जमा हो गई थीं कि जिनका कुछ हिसाब ही नहीं हो सकता था। ऊपर से पानी बरसता था, परन्तु जन संख्या में किसी प्रकार की कमी होते नहीं देखी गई। रेस की समाप्ति पर उस अपार भीड़ के साथ वापस आने में भी बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती है। यहाँ पर आने वाली सवारियें सिलसिले वार खड़ी की जाती हैं। इस रेस के समक्ष, हमारे देश में पूना, बम्बई, कलकत्ता आदि नगरों में होने वाली रेसों का कोई मूल्य नहीं हो सकता।

असकट रेस यह रेस निश्चित भी, डारबी के समान ही होती है। डारबी के बाद दूसरा नम्बर इसी असकट रेस का है। इस रेस को देखने के लिये स्वयम् सम्राट और उनके खानदान के सभी बड़े २ व्यक्ति पधारा करते हैं।

इन क्लबों के ग्राउन्ड के अतिरिक्त, सैकड़ों पब्लिक ग्राउन्ड भी हैं, जहाँ पर स्वतन्त्रता-पूर्वक यह खेल खेले जाया करते हैं।

उपर्युक्त खेलों में से और सब खेलों का तो जुलाई तक अन्त हो जाता है, परन्तु स्केटिंग, जो बर्फ पर खेला जाया करता है, सरदी में बर्फ जमने पर खूब कसरत से खेला जाता है।

अधिक तर खेल सीज़न (Season) अर्थात् अप्रैल से जुलाई तक गरमी की मौसिम में ही हुआ करते हैं। सीज़न में, एतवार को छोड़ कर, कोई दिन बिना खेल के नहीं गुज़रता; रोज कोई न कोई खेल लगाही रहता है।

मिलिट्री खेल।

रॉयल-मिलिट्री टूर्नामेन्ट

ओलम्पिया, लण्डन की एक प्रसिद्ध जगह है। यहाँ पर बड़े २ खेल तमाशों के लिये अच्छा स्टेज़ बना हुआ है, जिसमें एक लक्ष मनुष्यों के बैठने की गुंजाइश है। स्टेज के बीच में एक मुख्य जगह रक्खी गई है, जहाँ पर सम्राट आदि विराजा करते हैं। स्टेज़ के चारों ओर को, सर्व साधारण के लिये ढाल उतार गैलेरियें लगी हुई हैं और बीच में खेल का ग्राउन्ड है। इसी

ग्राउन्ड में "रोयलमिलिट्री टूर्नामेन्ट" है, जिसे देखने के लिये आज हम यहाँ पर आये हुए हैं। सब से पहले सन १०१६ ई० से वर्त्तमान काल तक इस्तेमाल में आने वाले यन्त्र, शस्त्र, जिरह बख्तर, लिबास, सवारियें और लड़ने के तरीके आदि साक्षात रूप से दिखलाये जाकर यह बतलाया गया है कि इनमें क्रमशः उन्नति करते हुए किस प्रकार से वर्त्तमान समुन्नतरूप प्राप्त किया गया। इसके बाद हिन्दुस्तान में अंग्रेजो के आने के बाद का हाल अर्थात् अफगान युद्ध इत्यादि और सन १८५७ ई०की गदर का हाल दिखलाया गया। इसके पश्चात् युद्ध के समय में तोपें खोल कर चलना और मौका आ पड़ने पर फिर उन्हें जल्दी से जोड़ना तथा पेड़ व दीवार के सामने आजाने पर सावधानी से गुजरना आदि बहुत ही खूबी के साथ दिखलाया गया। इनके अतिरिक्त घोड़ों की कुदाई, परेड आदि भी दिखलाये गये। इन खेलों से फौज के अतीत इतिहास और क्रमशः विकाश का हाल अच्छी तरह से मालूम हो जाता है।

सैन्य की वृद्धि — आज कल संसार की प्रायः सारी राज-शक्तियों में सिपाहियों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। इनकी संख्या बढ़ाने के लिये प्रत्येक स्वतन्त्र देश

अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग करता है। इङ्गलैण्ड देश ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है और वह इस कला व शक्ति में भी किसी भी शक्ति से पीछे नहीं हैं, फिर भी त्रुटियों का संशोधन करने और इस कला को विशेष उन्नत करने के लिये यहाँ पर समय २ पर हवाई जहाजों का मैच कराया जाता है। इस मैच की खबर पाकर हम लोग भी मैच देखने के लिये निश्चित समय पर ही पहुँच गये थे। यह खेल हैन्डन (Hendon) ग्राम के एरोड्रोम (Aerodrome) नामी मैदान में होता है, जो लण्डन से बारह मील दूर है। इस मैदान में बैठने के लिये टिकिट लगता है। टिकिट दर्जेवार एक शिलिंग से एक पाउन्ड तक के होते हैं।

हम लोग जिस जगह पर देखने के लिये खड़े हुए थे, उसके पास ही हवाई तार का यन्त्र लगा हुआ था, जो इस खेल सम्बन्धी सब प्रकार की सूचनाएँ प्रकाशित करता था। मैदान के सामने कागज़ का बना विशालकाय नकली जहाजी बेड़ा खड़ा किया गया था और मैदान में हजारों प्रकार की हवाई जहाजें, लाइनवार पड़ी हुई थीं। सबसे पहले दो हवाई जहाजों ने उड़ कर अपना काम बतलाया। यह उलटी, सीधी चलती और ऊपर नीचे

चढ़ती, उतरती रहती थीं इसके बाद बहुत सी एक साथ उड़ीं और परेट तथा हवाई तार द्वारा परस्पर बात चीत करती हुई उड़ती रही थीं व हवाई तार द्वारा नीचे भी खबर भेजा करती थीं। इसके बाद एक का दूसरी पर धावा करना और दूसरी का वार बचाते हुए चलना दिखलाया गया था। इसके बाद बहुतसी एक साथ उडीं और चीलों की तरह इधर से उधर फिरने लगीं, परन्तु किसीका आपस में टकराजाना कैसा? फिर कभी तो मशीन बंद कर एकदम नीचे उतर आती थीं और कभी एकदम ही पीछी ऊँची चढ़ जाया करती थीं। इन सब विस्मयकारी खेलों के अतिरिक्त एक खेल इनसे भी अधिक विस्मयकारी दिखलाया था; जब चार वायु यान बहुत ऊँचे चढ़ गये थे तो इनमें से एक २ मनुष्य कूद पड़ा और फिर ये चारों मनुष्य छत्री के सहारे आहिस्ता-आहिस्ता उतरते हुए नीचे उतर आये! इसके बाद वायुयानों का नकली जहाजी बेड़ेपर बम बरसाना व जहाजों पर से वायुयानों पर तोपें चलाने का दृश्य दिखलाया गया। इसके बाद जहाजों के जलाने का दृश्य दिखला कर खेल समाप्त किया गया।

हमतो इस खेल को देख कर आश्चर्य चकित से होगये! उस दिन जैसी भीड़ तो न कभी देखी और न

कभी देखने ही में आवेगी ! सिर्फ आधा मील चलने ही में पूरे दो घंटे व्यतीत होगये थे ! परन्तु तारीफ यह कि बिना किसी प्रकार के धक्का घूम के, एक के पीछे एक करके, सिल-सिले से चले जाते थे। आखिर एक मोटर की सहायता से समय पर स्थान पर पहुंच गये, नहीं तो वह रात शायद रास्ते ही में व्यतीत करनी पड़ती !

नाटक और सिनेमा।

लण्डन के देखने लायक स्थानों में, नाटक घर सब से अधिक मनोहर है। यों तो छोटे बड़े सभी मुहल्लों में नाटक घर बने हुए हैं, परन्तु बड़े २ और प्रभावपूर्ण नाटकों की संख्या चालीस है। इनमें से किसी एक को दूसरों से अच्छा कहना, उन दूसरों का उपहास करना है। ये नाटक घर बादशाही महलों से भी अधिक सजे हुए रहते हैं। नाटक घर में प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत होता है कि किसी राज महल में आगये हैं। नाटक घर में, प्रत्येक रास्ते के फर्श पर बढ़िया कालीन बिछा रहता है और प्रत्येक कुर्सी की पोशिश बढ़िया मखमल से मढ़ी होती है। स्टेज के सामने चार पाँच दर्जे एक दूसरे के ऊपर को सीढ़ीनुमा ढाल उतार बने हुए हैं और प्रत्येक दर्जे में ढाल उतार कुर्सियाँ लगाई

हुई है ताकि स्टेज मे होने वाला दृश्य सब को एक ही समान दिखाई दे । जो बढ़िया बोक्स (Box) अलग बने हुए है, उनकी शोभा ही निराली है । इन नाटक घरों मे नाटक देखने जाने वालों को सीट पहिले खरीदना पड़ता है; नहीं तो समय पर जाने वालो को निराश होकर ही लौटना पड़ता है। कई नाटक घर तो ऐसे है कि जिनके टिकिट महीनो पहले खरीद कर सीट सुरक्षित (Reserved) करा लेनी पड़ती है, जैसे कि हमको भी करानी पड़ी थी ।

हमलोग मई मास के पहले सप्ताह मे पैलेस थियेटर (Palace Theatre) मे नो नो नेनिट (No No Nannatte) खेल की सीट लेना चाहते थे, परन्तु उत्तर यह मिला कि जुलाई के अन्त तक कोई सीट खाली नहीं है ! फिर यहाँ रोजाना खेल नहीं बदले जाते और कोई खेल तो ऐसा जमता है कि साल छः महीने तक बराबर वही एक खेल होता-रहता है, परन्तु देखने वालो की संख्या मे कभी भी कमी नहीं होने पाती; सिर्फ इसीसे यहां के नाटक घरों की विशेषता जानी-जा सकती है। यहाँ के नाटक घरों मे से दो नाटक घरों के दो अभिनय, एक तो ड्रूरीलेन (Drury Lane) नाटक

कभी देखने ही में आवेगी ! सिर्फ आधा मील चलने ही में पूरे दो घंटे व्यतीत होगये थे ! परन्तु तारीफ यह कि विना किसी प्रकार के धक्का धूम के, एक के पीछे एक करके, सिल-सिले से चले जाते थे। आखिर एक मोटर की सहायता से समय पर स्थान पर पहुंच गये, नहीं तो वह रात शायद रास्ते ही में व्यतीत करनी पड़ती !

नाटक और सिनेमा।

लण्डन के देखने लायक स्थानों में, नाटक घर सब से अधिक मनोहर है। यों तो छोटे बड़े सभी मुहल्लों में नाटक घर बने हुए हैं, परन्तु बड़े २ और प्रभावपूर्ण नाटकों की संख्या चालीस है। इनमें से किसी एक को दूसरों से अच्छा कहना, उन दूसरों का उपहास करना है। ये नाटक घर बादशाही महलों से भी अधिक सजे हुए रहते हैं। नाटक घर में प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत होता है कि किसी राज महल में आगये हैं। नाटक घर में, प्रत्येक रास्ते के फर्श पर बढ़िया कालीन बिछा रहता है और प्रत्येक कुर्सी की पोशिश बढ़िया मखमल से मढ़ी होती है। स्टेज के सामने चार पांच दर्जे एक दूसरे के ऊपर को सीढीनुमा ढाल उतार बने हुए हैं और प्रत्येक दर्जे में ढाल उतार कुर्सियाँ लगाई

हुई है ताकि स्टेज मे होने वाला दृश्य सब को एक ही समान दिखाई दे। जो बढ़िया बोक्स (Box) अलग बने हुए है, उनकी शोभा ही निराली है। इन नाटक घरो में नाटक देखने जाने वालों को सीट पहिले खरीदना पड़ता है; नही तो समय पर जाने वालों को निराश होकर ही लौटना पड़ता है। कई नाटक घर तो ऐसे हैं कि जिनके टिकिट महीनो पहले खरीद कर सीट सुरक्षित (Reserved) करा लेनी पड़ती है, जैसे कि हमको भी करानी पड़ी थी।

हमलोग मई मास के पहले सप्ताह में पैलेस थियेटर (Palace Theatre) में नोनो नेनिट (No No Nannatte) खेल की सीट लेना चाहते थे, परन्तु उत्तर यह मिला कि जुलाई के अन्त तक कोई सीट खाली नही है! फिर यहाँ रोजाना खेल नही बदले जाते और कोई खेलतो ऐसा जमता है कि साल छः महीने तक बराबर वही एक खेल होता-रहता है, परन्तु देखने वालों की संख्या मे कभी भी कमी नही होने पाती; सिर्फ इसीसे यहाँ के नाटक घरों की विशेषता जानी-जासकती है। यहाँ के नाटक घरों मे से दो नाटक घरों के, दो प्रसिद्ध खेल एक तो डुरीलेन (Durylane) नाटक घर का "रोजमरी" (Rosemary) और दूसरा पैलस थियेटर का "नोनो नेनिट" के देखने का सौभाग्य हम लोगो को भी

प्राप्त हुआ था। नाटक इतने बढ़िया हुए थे कि उनका कुछ वर्णन ही नहीं होसकता। स्टेज की सफाई और सजावट तथा पात्रों की अभिनय-कुशलता, अपूर्व और अद्भुत थी। स्टेज पर एकही साथ में अस्सी २ पात्रों की उपस्थिति होती थी और वह भी इतनी शीघ्रता से बदलती जाती थी कि जिसे देखकर ताज्जुब करना पड़ता था। यहाँ पर हमारे देश की तरह न तो परदे उठते हैं और न गिरते हैं। कुल दृश्य, क्रम से, पहले से ही सजाकर के रक्खे जाते हैं, जो आवश्यकता पर बिजली की सहायता से घुमा दिये जाते हैं। ज्यों ही कोई दृश्य समाप्त होता है, उसे घुमा कर उसके आगेका दृश्य ला उपस्थित किया जाता है। फिर तारीफ यह कि इस प्रकार दृश्य के बदलने में एक क्षण भर समय भी नहीं लगता और दृश्य ठीक उसी प्रकार का सजा हुआ होता है जैसा कि चाहिये और वह उन पात्रों सहित आता है जिनका कि उससे सम्बन्ध रहता है और पात्र अपने २ काम करते हुए नजर आते हैं।

पात्रों का नाच, गाना, एक्टिंग, पोशाक आदि सभी अद्भुत होते हैं। इन में इतना अधिक आकर्षण होता है कि देखते २ दर्शक का जी ही नहीं भरता।

हमने जो खेल देखे थे वे सात आठ महीनों से चलते आ रहे थे। इन नाटकों की टिकिट दर ७ शिलिग से दर्जे व दर्जे पाउण्डों तक चली गई है । ज्यों ही कि ड्रापसीन पड़ता है, नाटक हाउस के भीतर ही खाने पीने की सब सामग्री सामने आजाती है, जो आवश्यकतानुसार खरीदी जा सकती है ।

ठीक यही हाल सिनेमों का भी है । लाखों रुपयों की लागत के हाउस होते हैं, लाखो रुपेय फिलमस् (Films) के बनवाने में खर्च करते है और लाखों ही रुपेय पैदा भी करते है । हाउस की बनावट, सजावट, सफाई इत्यादि सब नाटक घरो की-सी ही हुआ करती है । अभूत पूर्व दृश्य और उनके दिखाने की सफाई देखते ही बनती है ।

जलसे ।

सौभाग्य वश, यहाँ पर, दो हर्षोत्सव मनाने के सुअवसर भी, प्राप्त हुए थे । विदेश में रहने के कारण, यह हर्षोत्सव विशेष समारोह के साथ मनाये गये थे । पहला बहुत बड़ा उत्सव श्रीमान् मरुधराधीशको के. सी. एस- आई. का तमगा मिलने की खुशी में सोमवार ता० २७ जुलाई १९२५ के तीसरे पहर हुआथा और नज़र न्योछावर

भी हुई थी। यह तमगा स्वयम् श्रीमान सम्राट महोदय ने अपने कर-कमलों से सरे दरबार अता फरमाया था। यहाँ पर साल भर में दो तीन बार श्रीमान् सम्राट महोदय के दरबार हुआ करते हैं जिनको यहाँ के निवासी "कोर्ट" कहते हैं। इस कोर्ट के सु अवसर पर बड़े २ अमीर उमराव और राज्य के उच्च पदाधिकारीगण श्रीमान् सम्राट की सेवा में उपस्थित हुआ करते हैं। ऐसा ही एक दरबार वृहस्पतिवार ता० २५ जून १९२५ की रात के ८ बजे हुआ था। उस अवसर पर हमारे श्रीमान् मरुधराधीश भी निमन्त्रित कर बुलाये गये थे और के. सी. एस. आई. के तमगे से विभूषित किये गये थे।

दूसरा महोत्सव इससे भी अधिक समारोह के साथ मनाया गया था। इस महोत्सव के दिन की तो बहुत दिनों पहले से ही प्रतीक्षा की जा रही थी। सौभाग्यवश रविवार आषाढ कृष्णा अमावस्या सं० १९८१ (पञ्चांग के हिसाब से सं० १९८२) तदनुसार ता० २१ जून सन् १९२५ की रात के दो बजे १० मिनिट पर, वह सुअवसर, आ उपस्थित हुआ, यानी उसी शुभ समय में हमारे द्वितीय महाराज कुमार श्री १०५ श्री हिम्मतसिंहजी साहब का शुभ जन्म लण्डन के विम्बलडन पार्क साइड के वेल मोन्ट हाउस में हुआ था। इस सुअवसर

पर जो हर्षोत्सव मंगलवार ता० २८ जुलाई की रात को मनाया गया और चाय पार्टी दी गई थी, उस में नगर के सभी प्रतिष्ठित पुरुष और भारतवर्ष व राजपूताने में रहे हुए प्रायः सभी पदाधिकारीगण, निमन्त्रित किये गये थे। उस जलसे में बढ़िया नाच और जादू का खेल भी हुआ था।

भारत वासी और उनके प्रति व्यवहार।

यो तो हमने बहुत सी भारतीय महिलाओ को पारसी लिबास मे हाइडपार्क में घूमते हुए देखा थॉ, परन्तु लण्डन शहर में जो हजारो भारतवासी रहते है वे सब इंग्लिश ड्रेस (English Dress) में ही रहते है जिनकी तरफ कोई ऑख उठा कर भी नही देखता। जो लण्डन निवासी हमारे देश की जल वायु सेवन कर चुके है वे तो और भी विरक्त रहते है। परन्तु हम लोग जो देशी पोशाक में रहते थे और सर पर रंग बिरंगे साफे रक्खा करते थे, इसलिये हमारी ओर को हजारों लण्डन निवासी स्त्री पुरुष, टकटकी लगाये देखा करते थे।

वैसे यहॉ के साधारण नागरिकों का बर्ताव भारत वासियो के साथ अच्छा है। यहॉ पर अधिक समय तक रहने से यहॉ के बहुत से अधिवासियो मे हमारा खासा

परिचय हो गया था। बहुत दफा खान पान और नाच इत्यादि में यहाँ के परिचित सज्जनों के निवास स्थानों पर जाने का अवसर मिला तो उनकी तरफ से हमारे साथ भी वैसा ही वर्ताव हुआ करता था जैसा कि वे अपने स्वजाति मित्रों के साथ किया करते थे।

कई दफा वे जान पहिचान वालों के यहाँ भी चले गये थे तो उन का वर्ताव भी सभ्यता पूर्ण पाया।

प्रायः ऐसे अवसर उपस्थित होते थे जब भारतवर्ष में रहे हुए योरोपीयन स्त्री पुरुष हिन्दी भाषा द्वारा अपना परिचय देते थे। बहुत से यहाँ आने पर अभ्यास न रहने से हिन्दी भाषा के भूल जाने का ही कहते थे, परन्तु दो चार शब्द हिन्दी भाषा के अवश्य ही बोला करते थे। कभी २ इनकी इस अस्पष्ट भाषा का समझना कठिन हो जाता था, इसलिये हम लोग, प्रायः अंगरेजी में ही बात चीत किया करते थे।

जो भारत वासी अंगरेजी नहीं जानते है उनका लण्डन में गुजर नहीं हो सकता, क्यों कि यहाँ पर पूर्ण-तया अंगरेजी भाषा का ही व्यवहार है। थेंक यू 'Thank You' (धन्यवाद) और सोरी Sorry (खेद) का

व्यवहार तो पद पद पर होता है। हमारे वे साथी जो अंगरेजी नहीं जानते थे, उन्हें भी यथा अवसर ऐसे कई शब्दो के प्रयोग करने का अच्छा अभ्यास हो गया था।

यहाँ पर साधारण भोजन करने वाले भारतवासी के भी दो सौ रुपये माहवार भोजन मे व्यय हो जाते है।

ऐशियाई देशों के विद्यार्थी।

यहाँ पर चाइनी और जापानी विद्यार्थी भी अधिक संख्या में है। इन में से बहुत से विद्यार्थी स्त्रियो को साथ में लिये हुए घूमते फिरते है। चाइनी स्त्रियाँ और पुरुष, सब इंगलिश ड्रेस (English Dress) में ही रहते है, परन्तु हम लोगो के लिये इनका पहिचान लेना कुछ कठिन नही था।

ब्राइटन (Brighton) का मनोहर दृश्य।

वैसे तो ऐसे बहुत से प्रसिद्ध ग्राम हैं जो समुद्र के किनारे पर होने से अपनी आब-हवा और सुन्दर सीनेरी के लिये प्रख्यात हैं, जहाँपर के लोग छुट्टी के दिन, आनन्दोत्सव मनाने जाया करते है, परन्तु ऐसे ग्रामो में ब्राइटन का नाम कुछ अधिक प्रसिद्ध है, इसलिये हम लोग भी लगडन से

ट्रेन द्वारा ब्राइटन देखने चले गए थे । लण्डन से ट्रेन द्वारा ब्राइटन पहुँचने में दो घंटे लगते हैं । इतने लम्बे रास्ते में भी एक इंच भर भी जमीन हरियाली से खाली नहीं देखी गई । जहाँ तहाँ हरियाली और रंग बिरंगे फूल फल ही दृष्टिगत होते थे । रास्ते के दोनों ओर बड़े २ तख्तों पर लगे हुए विज्ञापन मानों श्रेणी बद्ध होकर ट्रेनके साथ २ चल रहे थे ।

लण्डन के बाजारों से भी इस रास्ते में बड़े विज्ञापनों की अधिकता पाई गई । ट्रेन, सीधा और पहाड़ीला रास्ता पार करती हुई ब्राइटन पहुँची । ब्राइटन समुद्र के किनारे पर बसा हुआ है । ब्राइटन का स्टेशन बहुत बड़ा है और वहाँ पर दिन में कई ट्रेनें लण्डन से आया जाया करती हैं तथा स्टेशन पर उतरने पर ट्रामें, बसें, और मोटरें बहुतायत से तैयार मिलती हैं । समुद्र के किनारे सड़क पर सैकड़ों होटल बने हुए हैं । समुद्र में आधे मील तक पुल बाँधकर उसके आगे एक बहुत बड़ा भवन पानी पर बनाया गया है, जिसमें सीनेमा और होटल है और उस मकान के इर्द गिर्द भी बहुतसी दूकानें खाने पीने की लगी हुई हैं । पुलपर दोनों ओर को हजारों कुर्सियाँ बिछी हुई हैं, जिनपर आराम से बैठ कर लोग समुद्र की हवा खाया करते हैं ।

यहाँ पर असंख्य स्त्री पुरुषों की भीड़ रहती है । भवन के भीतर जाने के लिये छः पेन्स का टिकिट लगता है। समुद्र के किनारे २ मील भरमें छोटी २ छोलदारियें लगी हुई हैं, जहाँ पर हजारों स्त्री पुरुष कपड़े उतार कर समुद्र-स्नान किया करते हैं। बहुतसे स्त्री पुरुष, अपने बाल बच्चों के साथ किनारे की जमीन पर लेटे हुए, समुद्रीय वायु सेवन करते हैं तो बहुत से छोटी २ किश्तियों में बैठकर समुद्रीय हवा खारहे हैं । यहाँ का किनारा कंकरीला है और बहुत ही सुहावना मालूम होता है । बहुत से लोग लण्डन से बड़े बस और मोटरें, दिनभर के लिये किराये करके ले आते हैं और दिनभर यहाँ पर आमोद प्रमोद में व्यतीत कर शामको अपने स्थान पर चले जाते हैं। बहुतसे लोग जो दो चार दिन तक यहाँ पर रहा करते हैं, वे प्रायः होटलों में ही ठहरा करते हैं, इसीलिये यहाँ पर होटलों की संख्या अधिक है । समुद्र के किनारे २ चाय पानी की छोटी २ दूकानें भी बहुत दूर तक चली गई हैं, जहाँपर दिन भर बहुत अधिक भीड़ रहा करती है।

वृटिश एम्पायर एग्जिबीशन।

British Empire Exhibition, Wembley.

यह प्रदर्शिनी वेम्बले पार्क में होने से, वेम्बले एग्जिबीशन के नामसे विख्यात है। इस प्रदर्शनी को यदि तमाम म्यूजियमों की अधीश्वरी कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी। यों तो प्रदर्शनी प्रायः सभी देशों में हुआ करती है और हमारे भारतवर्ष में भी कई बार हुई हैं परन्तु जो यश इस प्रदर्शनी ने प्राप्त किया है वह अबसे पहले किसी प्रदर्शनी को प्राप्त नहीं हुआ। इसका कारण यह है कि इसमें कई प्रकार की विशेषताएँ रक्खी गई हैं। यहाँ पर आजतक होने वाले आविष्कारों के चित्र क्रमसे और सुन्दरता से सजाये हुए हैं। हर प्रकार के अद्भुत कला-कौशल के नमूने देशदेशान्तरों से मँगा-मँगा कर यहाँ पर सजाये गये हैं। यह प्रदर्शनी प्रजा के हितार्थ खोली गई है, जिसमें लाखों रुपये खर्च हुए हैं और यहाँ की लोकल गवर्नमेन्टों ने पूरी-पूरी सहायता दी है। यहाँ पर एक स्टेशन भी बनाया गया है और ट्रेनों, ट्रामों, बसों के आने का खास बन्दोबस्त किया गया है। शुरु मे यह प्रदर्शनी मई सन् १६२४ ई० में खुलकर अक्टोबर सन् १६२४ ई० में पीछी बन्द होगई

थी, परन्तु सन् १९२५ ई० में फिर प्रदर्शनी खोलने का निश्चय हो चुका था, इसलिये सब सामान ज्यों का त्यो वहीं पर रक्खा गया ।

इसके पश्चात् ता० ८ मई सन् १९२५ ई० को स्वयम् श्रीमान् सम्राट महोदय ने अपने करकमलो से इस प्रदर्शनी को खोला। हम लोग भाग्यशाली हैं कि इस प्रदर्शनी के खुलने के पूर्व ही लण्डन पहुँच चुके थे । इस प्रदर्शनी के खोलने का जलसा और दरबार जो प्रदर्शनी के स्टेडियमहॉल (The Stadium Hall) में हुआ था, उसमे प्रायः सभी प्रतिष्ठित पुरुष और अधिकारीगण निमन्त्रित हुए थे। इस अवसर पर हमारे अन्नदाताजी भी अपने कनिष्ठ भ्राता सहित निमंत्रित होकर पधारे थे, जिनकी उस समय की देशी दरबारी पोशाक और आभूषण विशेष शोभा दे रहे थे ।

यह स्टेडियम हॉल संसार भरके सब हॉलों से बड़ा है । इसके पहले रोमका कोलेजियम हॉल (Colleseum) प्रसिद्ध था परन्तु यह हॉल उससे भी बाजी ले गया । इसमें एक लाख मनुष्यो के बैठने का स्थान है । यह कुण्डलाकार बना हुआ है और इसके बीच में एक खुला हुआ खेलकूद का मैदान है । इसकी लम्बाई ९२०

फीट और चौड़ाई ३२० फीट है। इसकी परिधि आधे मील से अधिक है और इसमें बड़े बड़े खेल तमाशे हुआ करते है।

प्रदर्शनी का कुल विस्तार २१६ एकड़ भूमिमें है, जिसमें २१ लाख वर्ग फीट भूमि पर तो भवननिर्माण हुए हैं और शेष भूमिमें बाग लगा हुआ है। बागमें और सड़कोंके इर्दगिर्द चौड़ी-चौड़ी सुन्दर पटियाँ बनी हुई हैं। प्रत्येक चौराहे पर और अच्छी २ जगहों पर कुर्सियाँ बिछी हुई हैं, जिनपर बैंठते ही टिकिट लगता है। प्रदर्शनी में पैदल मनुष्य ही नहीं; सैकड़ों छोटी २ बसे, रिक्शा गाड़ियें और बाथचेयर्स (Bath Chans) भी चलती हैं, जो जहाँ चाहो वहाँ पहुँचा देती हैं। एक छोटी ट्रेन भी ऊपर-ऊपर को जाती है, जिसमें बैठकर हवाखोरी करते हुए प्रदर्शनी का प्रायः सभी भाग देखा जा सकता है।

खाने पीने का भी यहाँ पर बहुत बढ़िया बन्दोबस्त है। इसकी सड़कों पर आइस क्रीम (Ice Cream) और चाकलेट (Chocolate) की बहुतसी दूकाने हैं, जिनपर बैठी हुई स्त्रियाँ, सड़क पर चलने वाले मनुष्यों को, दूकान पर खींचने के अभिप्राय से, नोटिस के ढंगपर नम्रमधुर

किन्तु प्रभावोत्पादक शब्दों में पुकारा करती हैं। इनके अतिरिक्त पचासों बड़े २ होटल बने हुए हैं, जिनमें सैकड़ो मनुष्य एक साथ बैठकर चाय पानी व खाना पीना किया करते हैं। प्रत्येक देशके हॉल जो यहाँपर बने हुए हैं, ऐसे प्रत्येक हॉलके साथ होटल जुड़ा हुआ है। हरएक होटल में शामको बाजा बजता है और बहुतसे स्त्री पुरुष नाच किया करते हैं। एक अलग नाचघर है, जहाँ पर हरएक स्त्री पुरुष, अपने मनोनीत व्यक्ति के साथ नाचा करते हैं।

रोशनी यहाँ पर बहुत बढ़िया हुआ करती है। प्रत्येक सड़क के दोनों तरफ को और प्रत्येक इमारत के चारों ओर को, रंग बिरंगे गोले जलकर, प्रदर्शनीभवन को सुन्दरता से भर देते हैं।

प्रदर्शनीभवन के चारों ओर को डाकघर, तारघर, रेलवे स्टेशन आदि आये हुए हैं। टेलीफोनो की तो गिनती ही नहीं है; प्रत्येक व्यापारी की दूकान तक में टेलीफोन मौजूद है। एतवार को छोड़कर शेष सब दिनो में यहाँ पर मेला-सा लगा रहता है। किसी भी ओर दृष्टि उठाकर देखा जाय,देखने वालो की अपार भीड़ ही मिलती है।

पहरे चौकी का भी ऐसा अच्छा प्रबन्ध है कि प्रायः प्रत्येक व्यापारी रातके बारह बजे बाद अपनी दूकान को मामूली तौरसे बन्द करके अपने निवास स्थान पर चला जाता है, परन्तु किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता।

आस्ट्रेलिया हॉल (Australia Hall)

यों तो प्रदर्शनी भवन में प्रवेश करने के तीन रास्ते है, परन्तु मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही पहले एक बहुत बड़ा होटल आता है और होटल के पीछे की तरफ स्टेडियम हॉल है, जहॉ को जाते हुए, बायीं ओर को आस्ट्रेलिया की तरफ से बना हुआ 'आस्ट्रेलिया हॉल' (Australia Hall) है, जिसमें आस्ट्रेलिया में पैदा होने वाली सर्व प्रकार की वस्तुएँ तथा वहॉ के भौगोलिक चित्र इत्यादि रक्खे हुए हैं।

इस हॉल मे प्रवेश करते ही पहले एक खम्भा खड़ा किया हुआ मिलता है, जिसमें सीपें और उनमें से निकलने वाले मोती बतलाये गये है। इसके पास में दो मनुष्यों के चित्र है जो समुद्रीय पोशाक पहिने खड़े हुए है। इनके सारे शरीर ढँके हुए है और आँखों पर देखने के लिये काँच लगे हुए हैं। मुँह पर एक बहुत बड़ा पाइप (Pipe)

लगा हुआ है जो बाहर से हवा आने जाने के लिये लगाया जाता है। इनके पास कुछ शस्त्र भी है जो भय से बचने के लिये है। यह एक ऐसा यन्त्र भी साथ रखते है, जिसको प्राण भय उपस्थित होते ही हिला देते है ताकि बाहिर खीच लिये जायँ।

इस के पास ही आस्ट्रेलिया का बन्दरगाह बना हुआ है, जिसमें पानी भर कर बनावटी जहाज-जिनके नीचे बिजली का सम्बन्ध है—चलते हुए बतलाये गये है। इस बन्दरगाह को देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानो आस्ट्रेलिया का बन्दरगाह प्रत्यक्ष रूप से आँखों के सामने हो।

इस के पास ही फ़सल विभाग है। इस में मशीनो के प्रयोग से अनाज का निकालना और छिल्को का अलग करना, प्रत्यक्ष रूप से बतलाया गया है।

इस के पास ही यह बतलाया गया है कि वहाँ पर गायें कैसे रक्खी जाती हैं और मक्खन वगैरह कैसे निकाले जाते है। यहाँ पर एक बनावटी गाय और बछड़ा भी खड़े किये हुए हैं। गाय समय २ पर गर्दन हिलाती, पूँछ उठाती और बछड़े की तरफ मुँह कर के

रंभाया करती है। इसी प्रकार की सब क्रियाएँ बछड़ा भी करता है। यहाँ पर देखने वालों की अत्याधिक भीड़ रहा करती है।

पास ही एक और मकान है, जिस में मक्खन के बने हुए मनुष्य, क्रिकेट (Cricket) खेलते हुए बतलाये गये हैं। मक्खन को ठंडा रखने के लिये मशीन द्वारा सरदी पहुँचाई जाती है, जिससे मक्खन गलने न पाए। ये मक्खन की मूर्तियाँ दर्शकों को मोमकी-सी बनी हुई मालूम होती है। इस के आगे मशीनों द्वारा ऊन साफ करते और उसका कपड़ा बुनते हुए बतलाया गया है। इस के बाद फल फूल तैयार करने का क्रम बतलाया गया है। इन के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया के कुल जलप्रपात, वहाँ की ट्रेनों का गुजरना और वहाँ की खानों से निकला हुआ लोहा, तांबा आदि बतलाया गया है। आस्ट्रेलिया में पैदा होने वाले सब प्रकार के पदार्थो के यहाँ पर ढेर लगे हुए है, जिन मे से प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक मनुष्य, अपनी इच्छानुसार खरीद कर सकता है।

मलाया हॉल (Malaya Hall)

यह हॉल आस्ट्रेलिया हाल के सामने बना हुआ है। इसमें प्रवेश करते ही पहले एक बड़ा कमरा आता है, जिसमें मलाया में उत्पन्न होने वाले समस्त खनिज पदार्थ का संग्रह है और इसके आगे खानों से निकलने वाले तांबा, टीन आदि के चित्र हैं तथा छोटी छोटी मशीनें हैं, जो काम करती हुई बतलाई गई हैं। रेत को पीसकर बारीक बनाना और उसमें से धातु को अलग करना, इन मशीनों के मुख्य काम हैं। दूसरी तरफ को मलाया-निवासी लोग, अपने देशमें होने वाली सुन्दर चटाइयाँ व वस्त्र वगैरः बनाते और अपने यहां की सभी प्रसिद्ध चीजों की बिक्री करते हुए बतलाए गये हैं। इसके पास में एक रबड़ का वृक्ष खड़ा करके रबड़ का इतिहास बतलाया गया है और रबड़ से बनी हुई सभी चीजो की बिक्री होती है।

न्यूजीलैगड हॉल (Newzealand Hall)

यह हॉल मलाया हॉलसे कुछ आगे चलने पर आता है। इसमें न्यूजीलैगड की प्राय सभी वस्तुओं का संग्रह है। न्यूजीलैगड मे गायें अधिक होने से वहा मक्खन ज्यादा होता है और मक्खन की कई प्रकार की चीज बना करती

हैं, जिनका यहाँ ढेर लगा हुआ है । यहाँ पर गाय के दोहन करने की एक अपूर्व विधि का प्रयोग किया जाता है। गायके स्तन पर मशीन लगादी जाती है, जिससे अपने आप दूध निकल कर मशीन में पहुँच जाता है और दूध व मलाई अलग अलग होकर मलाई का मक्खन बन जाता है । यहाँ की गायें हमारे देशकी गायो से अधिक हृष्ट पुष्ट होती हैं। इस हॉल में न्यूजीलैण्ड के एक जलप्रपात (Water Fall) का अत्यन्त मनोहर दृश्य-चित्र भी है।

पैलेस ऑफ आर्ट (Palace of Arts)

यह पैलेस न्युजिलैण्ड हॉलसे दक्षिण की तरफ बना हुआ है। इसके देखने में छः पेन्स का टिकिट लगता है। इसमें बड़े बड़े चित्रों का संग्रह है और एक एक चित्र लाखों रुपये की कीमत का है। चित्र इतने सुन्दर हैं कि जिन्हें देखकर उनके चित्रकारों की असाधारण बुद्धिमत्ता और हस्त-कौशल की प्रशंसा किये बिना नहीं रहाजाता। बहुतसी सुन्दर मूर्त्तियाँ भी रक्खी हुई हैं, जो मानवी बुद्धि की पराकाष्ठा को बतला रही हैं।

पैलेस ऑफ इन्डस्ट्री (Palace of Industry)

यह शिल्प भवन, पैलेस ऑफ आर्ट से जुड़ता हुआ है। यह संसार भरकी कला कौशलका भंडार रूप है। इसमें अनेक प्रकार के मनिहारी मालकी दूकानें लगी हुई हैं, जिनसे सहस्रो मनुष्य इच्छानुसार माल खरीदा करते हैं। इसके अतिरिक्त यहांपर बड़ी बड़ी मशीनें काम करती हुई बतलाई गई है, जिनमे से कुछ मशीनों का हाल नीचे दिया जाता है:-

रोटी बनाने की मशीन।

इस मशीन पर आठ दस मनुष्य काम करते हैं और घण्टे में हजारो डबलरोटियां तैयार हो जाती हैं। सब से पहले मशीन के जरिये से आटा गूंदकर उसे एक मनुष्य अपने पास रखलेता है और उसमें से लोये तोड़-तोड़कर पास से गुजरनेवाली टीनो मे डालता रहता है। ऐसेबारह टीनो की एक माला होती है, जो कूएँकी घड़िया की माला की तरह मशीन पर फिरती रहती है। मशीन बिजली से गरमी पहुंचा कर तंदूर को गरम रखती है, जिसमें से होकर निकलती हुई माल के टीनमें की रोटी पकी हुई निकलती है। जहाँ तंदूर से रोटी बाहर निकलती है, वहाँ पर एक मनुष्य खड़ा रहता है, जो टीनो मे रोटियाँ निकालता रहता है।

निकली हुई रोटियाँ एक एक करके आगे बढ़ती और कागज में तह होती हुई अपने आप बाहर निकलती रहती हैं। यहाँ पर एक मनुष्य खड़ा रहता है जो इन्हें उठा-उठा कर सजाता रहता है।

इसी प्रकार बिस्कुट, अंगरेजी मिठाई और चाकलेट भी मशीनों पर बनाये जाते हैं। रोटियाँ और बिस्कुट की मशीनों पर तो पुरुष काम करते हैं परन्तु मिठाई और चाकलेटों की मशीनों पर स्त्रियाँ काम करती हैं। स्त्रियाँ बड़ी ही फुर्ती, सावधानी और सफाई के साथ काम किया करती हैं और जिन्हें देखने के लिये हर समय खूब भीड़ रहा करती है। तैयार की हुई मिठाई और चाकलेटों को बहुतसी स्त्रियाँ, दूकानों में खड़ी बेचा भी करती हैं।

बोतलों में दूध भरने की मशीन।

इस मशीन से बहुत सी बोतलें एक साथ दूध से भर जाती हैं और उन पर कोर्क्स भी लग जाते हैं तथा भरी हुई बोतलें मशीन द्वारा अपने आप स्टोर में पहुँचती जाती हैं।

मोमबत्ती बनाने की मशीन ।

इस में मोम, पानी के समान गलता और डोरों के साथ लिपटता रहता है, और सैकड़ो मोमबत्तियाँ एक साथ निकलती जाती है ।

बूट पोलिश बनाने की मशीन ।

इस मशीन पर बीस स्त्रियाँ काम करती है । सब से पहले एक मशीन मे टीन की चद्दरो से टिकले काटे जाते है । दूसरी मशीन में इन टिकलो को मोड़ कर डिब्बियाँ बनाई जाती है । तीसरी मशीन पर एक साथ मे पन्द्रह बीस डिब्बियाँ एक टीन के पात्र में भर कर चढ़ती है, जहाँ पर टूँटी खोलते ही डिब्बियाँ बूट पोलिश मे भर जाती हैं । विशेषता यह है कि एक बूँद भर पोलिश भी बाहर नही ढुलने पाता । इस मशीन पर से भरी हुई डिब्बियो के उतरते ही उन में भरा हुआ पोलिश जम जाता है । दूसरी तरफ एक स्त्री ढक्कन बना कर तैयार रखती है, जो इन डिब्बियो पर चढ़ा दिये जाते है । इस प्रकार थोड़ी ही देर में हज़ारो डिब्बियाँ तैयार हो जाती है ।

पैलेस ऑफ ट्रान्सपोर्ट।

(Palace of Housing & Transport)

यह पैलेस, पैलेस ऑफ इन्डस्ट्री से जुडता हुआ है। इस के विशाल हॉल में, इस समय चलने वाली सब प्रकार की सवारियों का संग्रह है। ट्रेनों के एंजिन डिब्बों सहित और मोटर तथा मोटर लोरियें, हर प्रकार की विद्यमान हैं। कई मोटरों के बिखरे हुए पुर्जो को, एक दम जोड़ कर मोटरें तैयार करके बतलाई जाती हैं। आज तक बने हुए सब प्रकार के वायुयान भी बतलाये गये हैं। इन वायु यानों में कई तो इतने बड़े हैं, जिन में सोलह आदमी तक बैठ सकते हैं। इनके अतिरिक्त लकड़ी के बने हुए मकानात तथा और भी कई प्रकार का काम बतलाया गया है।

इंडिया पवेलियन (Indian Pavillion)

यह, पैलेस ऑफ ट्रान्स पोर्ट से दाहिनी ओर घूमने पर आता है। यह ऊपर से आगरे के ताजबीबी के रोजे के समान सफ़ेद गुम्बजों से सुशोभित है। इसके भीतर पानी का हौज और फव्वारा है, जो देहली के चांदनी चौक की याद दिलाते हैं, क्यों कि ठीक उसी

प्रकार के बने हुए हैं। यहाँ पर भारत के प्रत्येक प्रान्त का बना सामान मौजूद है, परन्तु पंजाब के बने शाल, गालीचे व जरदोजी के काम के कपड़े तथा काशी के जरीन कपड़े, अधिकतर पाये जाते हैं। इन के अतिरिक्त पीतल पर चित्रकारी किये हुए बर्तन भी बहुत अधिक देखने में आते हैं। यहाँ पर हिन्दुस्थानी व्यापारी माल बेचते हैं और बहुत से योरोपीयन भी, जो हिन्दुस्थानियों की दूकानों पर काम किया करते हैं, माल बेचा करते हैं। हिन्दुस्थानी पोशाक में योरोपीय महिलाएँ भी माल बेचा करती हैं। इन स्त्रियों का विचित्र व्यवहार और वाक्‌पटुता देखने योग्य होती है।

केनाडा हॉल (Canada Hall)

यह हॉल, इण्डिया पवेलियन के सामने और आस्ट्रेलिया हॉल के पीछे की तरफ बना हुआ है। इस की सजावट और शोभा अपने ढंग की अनोखी है। इस में केनाडा के पर्वतों को काट कर निकाली हुई ट्रेनों का दृश्य, बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। केनाडा में उत्पन्न होने वाले फल फूल आदि सभी वस्तुओं का बड़ा ही सुन्दर संग्रह है।

अफ्रीका हॉल (Africa Hall)

यह हॉल केनाडा हॉल से आगे बढ़ने पर आता है। इस में उत्तर व दक्षिण अफ्रीका में उत्पन्न होने वाले सभी पदार्थों का संग्रह है और अफ्रीका-वासी ही इन सब पदार्थों को बेचा करते हैं। यहाँ पर अफ्रीका की खेती वाड़ी और खानों की कटाई इत्यादि का काम मशीनों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से करके बतलाया जाता है।

इस से आगे बढ़ने पर पेलेसटाइन (Palestine) हांग कांग (Hong Kong), सीलोन (Ceylon) आदि कई देशों के हॉल बने हुए हैं, जिनमें उन देशों की बढ़िया कारीगरी के नमूने और उन देशों में उत्पन्न होने वाली प्रायः सभी वस्तुओं का संग्रह है। पहले हमारा खयाल था कि बाजरा, हमारे देश में ही होता है, परन्तु इस प्रदर्शनी के देखने से हमारा यह गर्व उतर गया।

गवर्नमेन्ट पवेलियन हॉल।
(Government Pavillion Hall)

इस में लण्डन के सभी अजायब घरों के सामान का संग्रह है। इस में पानी पर, रोशनी से, पृथ्वी का नकशा बना कर, उस पर बनावटी जहाज चलता हुआ बतलाया

गया है। यहाँ पर बेतार का तार, टेली फोन और ट्रेनों का भी बढ़िया काम बतलाया गया है। इसके अतिरिक्त बनावटी जहाजों की लड़ाई दिखला कर, जर्मन पर विजय प्राप्ति का दृश्य दिखलाया गया है, जिसके देखने के लिये छः पेन्स का टिकिट लगता है।

झील।

इस प्रदर्शनी में एक सुन्दर झील भी बतलाई गई है, जिसके ऊपर दो पुल है और चारो ओर कुर्सियाँ बिछी हुई है। झील पर रोशनी का बडा ही अनोखा दृश्य देखने में आता है। मगर, कछुए और मेंढक बना कर उन में रोशनी जलाई जाती है जो बहुत भली मालूम होती है और उपरोक्त जल जन्तु साक्षात् अपनी ही सूरत में नजर आते हैं। बहुत से मनुष्य किश्तियों में बैठ कर झील की हवा खाते हैं। यहाँ पर बेतार के तार का यन्त्र लगा हुआ है, जिसके द्वारा लण्डन में होने वाला गाना और बजता हुआ बाजा, हर घडी सुनाई देता है। इस के चारो ओर असंख्य नर नारी घूमा करते हैं।

समुद्र तल।

बहुत सी ऐसी जगह भी बनाई हुई है, जहाँ पर अंधेरा और खाई-खाल बहुतायत से है, जिससे वहाँ पर गुजरने वालों को समुद्र तल का-सा भान होता है।

खेल तमाशे।

इस प्रदर्शनी में सैकड़ों प्रकार के खेल तमाशे होते हैं। बहुत से ऐसे खेल हैं जो सिर्फ यही पर देखने को मिल सकते हैं। प्रत्येक खेल में हँसी खुशी और दिल वहलाव की सामग्री वहुत अधिक मात्रा में रहा करती है। कई खेलों में मनुष्य गिरते पड़ते है परन्तु बदन पर चोट नही आती। कई खेलों में ऊपर नीचे होते समय जान मुट्ठी में आजाती है, परन्तु अन्त को खेलने वालों की सफलता पर बड़ा उल्लास होता है और उन की सफाई पर मुग्ध हो जाना पड़ता है। बहुत से हाथ की सफाई के तमाशे और जादू के खेल भी हुआ करते है, जिन मे दो तीन हिन्दुस्थानी खेल भी खेले जाते हैं। चूड़ियाँ फेंकना, निशाने लगाना, गेंदें फेंकना, जहाज को ऊपरसे पानी में छोड़ना आदि बहुत ही अच्छे खेल तमाशे हैं। इन में से प्रत्येक खेलके देखने के लिये छः पेन्स और एक शिलिङ्ग का टिकिट लगता है। स्टेडियम (Stadium) में बहुत बढ़िया सर्कस होता है। यदि दिन भरमें सौ पाउण्ड भी खेल तमाशों में खर्च कर दिये जायँ तो भी वहाँ पर होने वाले विविध प्रकार के खेलों के लिये काफ़ी नहीं हो सकते।

इस प्रदर्शनी में सब प्रकार के मनुष्यों के देखने योग्य सामग्री मिल जाती है और दिल बहलाव तथा खुशी तो होतीही है। इस प्रकार की प्रदर्शनी से व्यापारीयो शिल्पकारों, कारीगरों तथा जो अपने ज्ञान की बृद्धिकरना, चाहते है उनको बहुत लाभ होता है और जिससे देशका अभित उपकार साध्य होता है।

आव-हवा (Climate)

अक्सांश (Latitude) के हिसाब से देखा जाय तो इस देशकी आव-हवा बहुत शरद है। ऐसी शरद कि जहाँ पर मनुष्य रहही नही सकता। परन्तु वास्तव में देखा जाय तो ऐसा नही है। इसका कारण यह है कि मेक्सी-को की खाड़ी (Gulf of Mexico) से एक गरम जल धारा (Gulf Stream) चलती है जो इंगलैण्ड की तरफ आती है और अपनी गर्मी से उस देश की आव-हवा को गर्म करती है, जिससे यहां पर इतनी अधिक सर्दी मालूम नही होती है।

मौसम (Season)

हम लोग अप्रेल महीने में लण्डन पहुंचे थे। उस समय यहांपर बहुत सर्दी पड़ती थी। एक - दो - दिन

बाद थोड़ा बहुत पानी भी वर्ष जाता था । जब २ पानी वर्षता था, तो सर्दी भी अधिक बढ़ जाया करती थी। शामको तो रोज ही अंगीठी जलानी पड़ती थी । बाहिर जाते वक्त टाप कोट और हाथ के मोजे भी पहिनने पड़ते थे। जब पानी वर्षता रहता था, तो छत्री और वाटरप्रूफ (Water Proof) भी साथ रखना पड़ता था । दरख्तों की नई पत्तियाँ आगई थीं और हर तरफ हरा-हरा ही प्रतीत होता था। रास्तों और पार्कों में छोटी बड़ी सभी झीलें पानीसे लबालब भरी हुई दिखाई देती थीं।

परन्तु यह मौसम अधिक दिनों तक नहीं रहा । मई मास के लगने ही सरदी कुछ कम पड़गई थी और मई मासके अन्त तक तो दिन में अधिक गर्मी पड़ने लग गई थी। उस समय सब लोग ठंडे कपड़े पहना करते थे । हम लोग सुना करते थे कि यहाँ पर सरदी अधिक पड़ा करती है, इसलिये ठंडे कपड़े बहुत ही कम साथ में लिये थे, परन्तु यहाँ आनेपर अनुभव हुआ कि यहाँ पर गर्मी भी काफी पड़ा करती है। जब कभी बाहर जाते थे तो चारों ओर से, और प्रत्येक व्यक्ति की जुबानी, टू होट ! टू होट !! (Too Hot ! Too Hot !!) यानी बहुत गर्मी! बहुत गर्मी !! ही सुना करते थे। लोग कहते थे कि हमेशा

इतनी अधिक गर्मी नही पड़ती है; बहुत वर्षों के बाद इतनी अधिक गर्मी पड़ी है । यहाँ पर मामूली गर्मी में पारा पचास डिग्री से ऊपर और मामूली सर्दी में पचास डिग्री से नीचे रहता है, परन्तु उन दिनो में गर्मी ८६ डिग्री थी, जो यहाँ की मौसम के लिहाज से बहुत अधिक थी । इस गर्मी की वजह से बहुत आदमी बेहोश होजाते थे । हरी घास मूख गई थी और झीलो का पानी भी उतर गया था । उन दिनों में आइस क्रीम (Ice Cream) की खूब बिक्री होती थी । ता० ११ जून के किसी अखबार में देखा कि " इन दिनो मे रोजाना सोलह लाख पौण्ड से अधिक आइस क्रीम खर्च होती है " । हम लोगो का भी, कोई भी दिन ऐसा नही गुजरा था, जिसमें, बाजार में जाकर, आइस क्रीम न खरीदि हो ।

परन्तु जून के अन्तमें गर्मी का भी अंत हो गया था और जुलाई के आरम्भ से ही अच्छी मौसम मालूम होती थी । न तो न अधिक गर्मी थी और न अधिक सर्दी । हाँ, कभी २ बूंदा बांदी अवश्य हो जाया करती थी ।

जब हम लोग लगडनमें आये थे, तब तो दिन और रात प्रायः समान ही होते थे परन्तु तत्पश्चात इतना अन्तर पड़ा कि जिसे देखकर आश्चर्य होता था । सुबह के चार

बजे मामूली उजाला होकर साढ़े चार बजे तक तो पूरा उजाला हो जाता था और पाँच बजते २ सूर्य्य भगवान निकल आते थे। उन दिनों में सब लण्डन शहर की घड़ियों का टाइम एक घंटा पीछे हटा दिया जाता है, इसलिये सूर्य्य छिपने के पहले ही नव बज जाते थे और दस बजे तो खासा अंधेरा पड़ जाता था। अतः लोग आठ बजे ही शाम का खाना खाकर घूमने निकल जाते थे। इस मौसम में हम लोग नीद से नहीं अघाते थे, परन्तु यहाँ पर सुबुह के सात बजे उठने का एक आम रिवाज़-सा है, इसलिये हम लोग भी सात बजे तक सोते रहते थे।

अगस्त मास में पीछा दिन छोटा होना शुरू होगया था और सितम्बर में तो और भी अधिक छोटा होने लग गया था। अब लण्डन शहर की वह सुन्दर मौसम बीत चुकी थी और घड़ियों का टाइम जो पहले एक घंटा पीछे हटा दिया गया था, बराबर कर लिया गया था। इस मौसम में सात बजे सूर्य्य निकलता था और पाँच बजने के पूर्व ही छिप जाता था। दिन भर बादल रहते थे और बूँदा बाँदी भी प्रायः हो जाया करती थी। रात में धुन्ध आती थी, जो प्रायः दिन चढ़ने तक भी बनी ही रहती थी। यहाँ के निवासी कहा करते थे कि कभी २ तो इन दिनों में यहाँ

पर इतनी अधिक धुन्ध छा जाती है कि रास्ता भी नहीं देख पड़ता और लोग रास्ता भूल कर दूसरों के दरवाजों की सांकलें खटखटाकर रास्ता पूछा करते है। मोटरें और बसें बिलकुल ही आहिस्ता २ चला करती है और कभी २ तो रोक देनी पड़ती है तथा दिन में भी रोशनी रखनी पड़ती है, परन्तु हम लोगो को ऐसी धुन्ध देखने का मौका नही मिला।
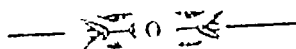
स्काटलैण्ड (Scotland)

हमारे श्री जी साहब बहादुर की सवारी रविवार ता० ९ अगस्त १९२५ को लण्डन से स्काटलैण्ड के लिये रवाना हुई थी। यह तारीख बहुत दिन पहले ही निश्चित हो चुकी थी और इस यात्रा के लिये तैयारियाँ भी होने लगी थी। लण्डन शहर का नियम है कि यहाँ पर रविवार को खाने पीने की दूकानों को छोड़ कर और सब दूकानें व बाजार बन्द रहते हैं। रेलवे स्टेशनों के प्लेट फार्म भी रविवार को ही कुछ खाली मिल सकते हैं, नहीं तो रोजाना इतनी अधिक भीड़ हर समय रहा करती है कि ढूंढने पर भी कहीं खाली जगह नहीं मिलती, इसीलिये इस यात्रा के लिये रविवार का दिन निश्चित किया गया था।

ता० ९ की शाम के छः बजे विम्बलडन के बेलमाउन्ट हाउस से रवाना होकर, पटनी ब्रिज पर होते हुए किंगस्क्रोस स्टेशन पर पहुँचे। ठीक साढ़े नव बजे हमारी ट्रेन किंगस्क्रोस से छूट गई जो ता० १० को सुबह छः बजे एडिनबरो स्टेशन पर पहुँच गई थी। एडिनबरो (Edinburgh) स्काटलैण्ड की राजधानी है और एक बहुत बड़ा

और प्रसिद्ध शहर है। यहॉ से पर्वत की चढ़ाई आरम्भ होती है, इसलिये ट्रेन में दो एंजिन जोड़े जाते हैं। ग्लासगो (Glasgow) भी स्काटलैंड का एक बहुत बड़ा शहर है। परन्तु वह हमारे रास्ते में नहीं आया; कुछ दूर रह गया था। एडिनबरो से आगे बढ़ने पर पर्वत ही पर्वत दिखाई देते थे, जो हरे २ चीड़ के दरख्तों से सुशोभित थे। रास्ते में बहुत से छोटे २ पर्वत-मार्ग आते थे और पानी की नदी, जहॉ तहॉ ट्रेन की सड़क के नीचे होकर बह रही थी। ठीक दिन के साढ़े ग्यारह बजे, हमारी ट्रेन फोर्ट विलियम (Fort William) स्टेशन पर पॅहुच गई, जो वहॉ से हमारे ठहरने की कोठी से निकट के छोटे स्टेशन बेनेवीपायर (Banavie Pier) पर लाई गई, जहॉ से एक सुन्दर झूलेदार पुल पार करके कोठी पर जाना पड़ा था। इस स्टेशन से कोठी सिर्फ डेढ़ मील के फासले पर है।

इस कोठी का नाम "इनवर्लोकी कासल" (Inverlochy Castle) है। यह एक प्रसिद्ध कोठी है। इस की आकृति, बनावट, सुन्दरता तथा भीतरी सजावट सभी नयनाभिराम है। यह ऊँची जगह पर आई हुई है और इसके चारों तरफ बाग लगा हुआ है। कोठी के सामने बड़े २ [illegible] लगे हुए हैं और ऊपर से देखकर बना

हुआ है। यहाँ से विलियम फोर्ट ग्राम साढ़े तीन मील पड़ता है और सामने ही "बेन नेविस" (Ben Nevis) नाम का ग्रेट बृटेन (Great Britain) का सब से ऊँचा पहाड़ आगया है। ऊँची जगह पर होने से यहाँ पर सरदी बहुत अधिक पड़ा करती है और सरदी की मौसिम में तो यहाँ पर बर्फ पड़ता है। कोठी के सामने ही एक बहुत बड़ी मशीन लकड़ी चीरने की लगी हुई है, जो बहुत बड़े लकड़ों को बात ही बात में बहर कर मकान बनाने के योग्य तैयार किया करती है।

विलियम फोर्ट एक छोटा-सा ग्राम है, जो स्काटलैण्ड के उत्तरी भागमें बसा हुआ है। यहाँ की आब-हवा बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ का मछली का शिकार बहुत प्रख्यात है और बड़े २ मनुष्य मछलियाँ पकड़ने के लिये प्रायः यहाँ पर आया करते हैं। मछली के अतिरिक्त, सांभर और सेन्ड ग्राउज की शिकार भी यहाँ पर हुआ करती है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा बड़ी ही मनोहर है। यहाँ की भाषा स्कोची है, जो अंग्रेजी, से थोड़ी भिन्न है। प्रायः लोग अंग्रेजी भी जानते हैं।

यहाँ की केनाल (नहर) देखने लायक है। पर्वतों से नदियें और नाले निकल २ कर केनाल में मिलते जाते हैं। यह केनाल स्काटलैण्ड के इस भाग से उस भाग तक चली गई है। इस केनाल के लिये कुछ तो पहले ही से कुदरती मार्ग बने हुए थे और कुछ बादमें, बहुत ही सावधानी से बनाये गये हैं। केनाल यद्यपि ऊँची नीची जमीन में होकर गई है, परन्तु तारीफ यह कि केनाल में पानी हरएक जगह पर बराबर रहता है । इस केनाल को " केलिडोनिया " कहते हैं। केनाल के रास्ते में. केनाल से मिली हुई, सैकड़ो बड़ी २ झीलें, आई हुई हैं और केनाल में बड़े २ स्टीमर चला करते हैं। केनाल के दोनो ओर को समुद्र आया हुआ है। यह केनाल कहीं तो टेढ़ी-मेढ़ी और कहीं सीधी निकली है।

यहाँ के निवासी भेड़ें बहुत अधिक संख्या में रक्खा करते हैं और भेड़ों के यहाँ पर सैकड़ों पहाड़ हैं। स्काटलैण्ड का हाथ से बना हुआ गरम कपड़ा बहुत प्रसिद्ध है। मोजे. फुलओवर. जरसियाँ. चमड़े की चीजें इत्यादि यहाँ पर बहुत बढ़िया होते हैं और यहाँ से दूर दूर देश को भेजे जाते हैं।

इन भेड़ों के एवड़ों की खबरदारी, कुत्ते किया करते हैं। एक कुत्ता सैकड़ों भेड़ों को अपने स्वामी की आज्ञानुसार चाहे जिधर मोड़ सकता है। वह भेड़ों के आगे जाकर खड़ा हो जाता है और एकदम सबको रोक देता है तथा आवश्यकता होने पर उन्हें पीछी भी लौटा देता है। कुत्ते मनुष्य से भी ज्यादा खबरदारी करते हैं और इसी प्रकार के अन्यान्य सैकड़ों ऐसे काम करते हैं कि जिन्हें देखकर आश्चर्य करना पड़ता है।

यहाँ के मनुष्य, पर्वतों में अलग २ मकान बनाकर रहते हैं और खेती बाड़ी का काम किया करते हैं। इनको कभी रास्ते चलते कोई बात पूछी जाती थी तो खड़े रह कर नम्रता पूर्वक उत्तर देते थे। यह लोग अपनी जरूरत के मुवाफिक सभी चीजें, खुदही पैदा कर लिया करते हैं। एक दिन हम लोग ऐसे ही लोगों की तरफ जा निकले थे तो उन्होंने हमारी चाय रोटी आदि की मनुहार की थी। यह लोग अपनी जरूरत के मुवाफिक गाय-बैल भी रक्खा करते है। यहाँ के गाय-बैल बड़े २ रोयेंदार होते हैं।

यहाँ की कोयलों की खानें बहुत मशहूर हैं। इनमें से एक "बेल हेमन" नाम की खान को देखने के लिये, कोई

६०० गज नीचे, हमारे श्री जी साहब बहादुर भी पधारे थे।

स्काटलैण्ड की व्हिसकी शराब भी बहुत प्रसिद्ध है। इस शराब का एक कारखाना देखने को हम लोग भी चले गए थे। सबसे पहले जौ मशीन में डाल कर, कूट लिये जाते हैं। फिर वे एक ऐसे यन्त्र में से निकाले जाते हैं, जहाँ सब प्रकार का कूड़ा फाँटा निकल कर खालिस जौओं का चूर्ण ही रह जाता है। फिर वह चूर्ण लकड़ी के बड़े ढोल में भिगो दिया जाता है और जब वह अच्छी तरह से भीग जाता है, तो उसका पानी टप-कने लगता है और इस तरह से सब पानी निकल जाता है। इस समय तक उस पानी में किसी तरह का नशा नहीं होता परन्तु बाद में इस टपके हुए पानी से खमीर उठाते हैं और इसको बहुत से यन्त्रों में निकाल कर तथा भट्ठी में भरकर यन्त्र द्वारा खींचते हैं। [illegible] शराब को जाँच करने का यन्त्र है। जब शराब ठीक २ नहीं बनता है तो दुबारा इसको खींचा जाता है। जब शराब तैयार हो जाता है तो पीपों में भरकर तीन साल तक गोदामों में [illegible]

हैं और बोतलों पर अपनी दूकान के नाम के लेबिल लगा कर बोतलें बेचा करते हैं।

एक दिन हम लोग "बेननेविस" पर्वत की चोटी पर भी चले गये थे। इस पर्वत की तलहटी हमारी कोठी से चार मील दूर थी। तलहटी से चोटी पर चढने में बराबर तीन घंटे लगे थे। रास्ता कंकरीला और बहुत ढालू था, जिससे चढ़ने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। हम, बीचमें चार जगह विश्राम लेते हुए, उस चढ़ाई को पारकर चोटी पर पहुँचे थे। चढ़ते समय की श्रम-जनित प्यास को, जहँ तहँ पड़े हुए बर्फ द्वारा निवारण करते जाते थे। चोटी पर तो पहुँच गये, परन्तु वर्षा और धुंध की अधिकता के कारण वहाँ से बहुत दूर २ तक दृष्टिका पहुँचना कहाँ? पास २ के पर्वत इत्यादि भी साफ २ दिखाई नहीं देते थे। सर्दी तो इतनी अधिक थी कि रोटी खाने के लिये हाथ और मुँह भी पूरा २ काम नहीं देते थे। इस चोटी पर पहले दो मकानात बने हुए थे, परन्तु अबतो खंडहर के सिवाय और कुछभी नहीं है। और कोई वस्तु यहाँ पर देखने योग्य न थी। कोई सात घंटों में यह यात्रा समाप्त करके वापस कोठी पर पहुँचे थे।

यहाँ पर एक दिन में तीन २ शिकार करलेने में बड़ी नामवरी समझी जाती है । पहले सेन्डग्राउज, बादमें सांभर और उसके बाद मछली पकड़ी जाती है । हमारे श्री जी साहब बहादुर ने भी इसी प्रकार एकही दिन में तीन २ शिकारें की थीं। सबसे बड़ी मछली जो श्री जी साहब बहादुर ने यहाँ पर पकड़ी थी, वह २८ पौंड तोल में थी । १५, २०, और २५, पौंड वजन की तो कई मछलियें पकड़ी थीं ।

यहाँ पर हम लोगों के देखने योग्य सामग्री के न होने से विशेष अवकाश रहा और उसी अवकाश काल में इस यात्रा का कच्चा चिट्ठा लिखा गया था, जो आज पुस्तक रूपमें आपके सन्मुख उपस्थित है ।

इतने में ता० १६ सितम्बर आ पहुँची और हमारे श्री जी साहब बहादुर यहां से लण्डन के लिये रवाना होगये ।

हैं और बोतलों पर अपनी दूकान के नाम के लेबिल लगा कर बोतलें बेचा करते हैं।

एक दिन हम लोग "बेननेविस" पर्वत की चोटी पर भी चले गये थे। इस पर्वत की तलहटी हमारी कोठी से चार मील दूर थी। तलहटी से चोटी पर चढने में बराबर तीन घंटे लगे थे। रास्ता कंकरीला और बहुत ढालू था, जिससे चढ़ने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। हम, बीचमें चार जगह विश्राम लेते हुए, उस चढ़ाई को पारकर चोटी पर पहुँचे थे। चढ़ते समय की श्रम-जनित प्यास को, जहॅं तहँ पड़े हुए बर्फ द्वारा निवारण करते जाते थे। चोटी पर तो पहुँच गये, परन्तु वर्षा और धुंध की अधिकता के कारण वहाँ से बहुत दूर २ तक दृष्टिका पहुॅंचना कहाँ? पास २ के पर्वत इत्यादि भी साफ २ दिखाई नहीं देते थे। सर्दी तो इतनी अधिक थी कि रोटी खाने के लिये हाथ और मुँह भी पूरा २ काम नहीं देते थे। इस चोटी पर पहले दो मकानात बने हुए थे, परन्तु अबतो खंडहर के सिवाय और कुछभी नहीं है। और कोई वस्तु यहाॅं पर देखने योग्य न थी। कोई सात घंटों में यह यात्रा समाप्त करके वापस कोठी पर पहुँचे थे।

यहाँ पर एक दिन में तीन २ शिकार करलेने में बड़ी नामवरी समझी जाती है । पहले सेन्डग्राउज, बादमें सांभर और उसके बाद मछली पकड़ी जाती है । हमारे श्री जी साहब बहादुर ने भी इसी प्रकार एकही दिन में तीन २ शिकारें की थीं । सबसे बड़ी मछली जो श्री जी साहब बहादुर ने यहाँ पर पकड़ी थी, वह २८ पौंड तोल में थी । १५, २०, और २५, पौंड वजन की तो कई मछलियें पकड़ी थीं ।

यहाँ पर हम लोगों के देखने योग्य सामग्री के न होने से विशेष अवकाश रहा और उसी अवकाश काल में इस यात्रा का कच्चा चिट्ठा लिखा गया था, जो आज पुस्तक रूपमें आपके सन्मुख उपस्थित है ।

इतने में ता० १९ सितम्बर आ पहुँची और हमारे श्री जी साहब बहादुर यहाँ से लण्डन के लिये रवाना होगये ।

वापसी।

ता० २० सितम्बर १९२५ को वापस लण्डन पहुँच-गये। कोई ४ मास तक लण्डन में रह कर गये थे, परन्तु फिर भी इच्छा यही थी कि अभी और यहाँ पर रह करके यहाँ की सुन्दरता को देखते रहें। एकतो सुन्दरता का स्व-भाव ही आकर्षित करना है और उसपर फिर लण्डन जैसी सर्वोपरि सुन्दरता, यदि मनुष्यपर मोहनी डालले तो इसमें आश्चर्य ही क्या? यद्यपि हमलोग इस शहरको अच्छी तरह से घूम फिर कर देख चुके थे, तथापि फिरसे घूम फिर कर के शहर की शोभा देखने लगे थे। इधर हमारे रवानगी की तारीख भी निश्चित हो चुकी थी; हमारे साथ के सब लोग खरीदारी पर उतर पड़े। यहाँ की महँगाई के कारण, यहाँ पर पाउण्ड को खर्च करने में रुपये को खर्च करने से भी कम समय लगता था। घूमने फिरने और खरीदारी आदिमें लण्डन वास के शेष दिन दौड़ते हुए चले जाते थे।

ता० २८-९-२५ को, बोट से जाने वाला सब भारी सामान, बोटसे रवाना कर दिया गया था और ता० ८

अक्टोबर १६२५ को दिनके १॥ बजे यहाँ से भारत वर्ष के लिये वापिस रवाना होना निश्चय हुआ था। देखते २ एक-एक करके दिन निकल गये और ता० ८ अक्टोबर आपहूँची। हम सब लोग नियत समय के पूर्वही विक्टोरिया (Victoria) स्टेशन पर जा पहुँचे। ट्रेन तैयार थी; सामान चढ़ाया गया। इधरतो लगडन की मनोहर मूर्ति रह २ कर आँखोंके सामने आ रही थी और इधर मित्रगण हाथ मिला कर गुडबाई (Good by) करने को तैयार खड़े थे। लगडन का देखा हुआ दृश्य खुलती हुई नींद के स्वप्न-सदृश्य प्रतीत होता था। मित्रो से शेकहेड (Shake hand) हो ही रहा था कि सहसा एन्जिन ने सीटी दी। घड़ी मे देखा तो ठीक १॥ बजा था। मित्रों से विदा ली और सब लोग ट्रेन पर चढ़गये। चढ़ने के साथ ही ट्रेन रवाना होगई और प्यारी ओल्ड लगडन का सहवास छूट गया, परन्तु जब तक लगडन दिखाई देता रहा, तब तक सब लोग, बराबर उधर ही देखते रहे थे। हम लोग तो लगडन की तरफ देख २ कर बार २ यही शेर गुनगुना रहे थे :—

सैरकी, फूल चुने, और बहुत शाद रहे;
बागबा ! जाते है हम, गुलशन तेरा आबाद रहे।

चलते २ ठीक दो घंटों में डोवर पहुँच गये । डोवर में बोट तैयार था, बोट में बैठे और बोट रवाना हो गया। इंगलिश चैनल के ठंडे झोके खाते हुए शाम पड़ते २ बोलोन (Boulogne) स्टेशन पर पहुँच गये । यहाँ पर वर्षा हो रही थी और स्पेशल ट्रेन तैयार खड़ी हुई थी। ज्यों ही कि सामान और सवारियें चढ़ीं, ट्रेन रवाना हो गई ।

हमारी ट्रेन ता० ६ को दिन के बारह बजे मार्सेल्स पहुँचने वाली थी परन्तु मार्सेल्स के प्लेट फॉर्म पर जगह न रहने से कुछ विलम्ब होगया था, परन्तु दो बजने के पूर्व ही ट्रेन से उतर कर रॉची (Ranchi) नामक जहाज पर जा बैठे थे । रॉची जहाज विशालता, शक्ति और आकृति में नारकुण्डा के समान ही था, परन्तु यह नया बना हुआ है और इसमें दूसरे जहाजों की तरह कोयले नहीं जलते; कोयलों की जगह तेल जलाया जाता है। जहाज की सजावट भी अपने ढंग की अच्छी थी।

शाम के समय हम लोग मार्सेल्स शहर की शोभा देखने चले गये । यह एक फ्रान्स का बड़ा और सुन्दर शहर है । यहां की स्त्रियॉ लण्डन की स्त्रियों से अधिक

रूपवती होती हैं। शहर की रोशनी और भीड़ देखकर पीछे छोड़े हुए लण्डन शहर का स्मरण हो आया। यहाँ के समुद्र किनारे की शोभा बम्बई की चौपाटी की शोभा से भी सुन्दर मालूम होती है। हम, शहर की शोभा देखते हुए आगे बढ़ रहे थे कि हमारी मोटर एक झूलेदार पुल पर जाकर रुकी। थोड़ी देर बाद ही वह झूला वहाँ से चलकर नदी के उस पार जा लगा। यहाँ का यह झूलेदार पुल बड़ा ही आश्चर्य कारक है। बाहर से यहाँ आनेवाले व्यक्ति, इस पुलको आश्चर्य देखा करते है। बहुत देर तक, शहर को घूम फिर कर देखने के बाद हम लोग वापस जहाज पर चले गये।

ता० १० को सुबह होते २ जहाज मार्सेल्स से रवाना होगया। रास्ते मे इटली के शहरो को तथा वहाँ की जगमग करती हुई रोशनी को देखते हुए ता० १४ बुधवार को सय्यदबन्दर पर पहुँच गये। यहाँ पर छः घंटा तक ठहर करके जहाज आगे के लिये रवाना होगया, जो स्वेज केनाल मे होता हुआ ता० १८ रविवार को एडन पहुँच गया। उसी दिन शाम के चार बजते २ जहाज एडन से रवाना होगया। अभी दिन भी नहीं छिपा था, परन्तु एडन का बन्दरगाह नजरों से गायब होगया था। इस प्रकार चार

दिन तक अथाह समुद्र में चलते रहे थे, परन्तु किनारा नजर नहीं आ रहा था। आखिर ता० २३ शुक्रवार को सुबह पांच बजे जहाज बम्बई बन्दर पर पहुँचा।

अभी सूर्य्य दर्शन कैसा ? पूरा प्रकाश भी नहीं होने पाया था कि जोधपुर से आये हुए प्रतिष्ठित पुरुष जहाज पर चढ़ आये थे। कुछ दिन चढ़ने तक तो जहाज में मुसाफिरों से भी अधिक संख्या जोधपुर वालों की हो गई थी। जोधपुर के सरदार मुत्सद्दियों ने श्रीमान् मरुधराधीश की नजर न्यौछावर की और श्रीमान् रीवॉ नरेश तथा श्रीमान् रतलाम नरेश ने बड़े ही हर्ष के साथ श्रीमान् जोधपुर नरेश का स्वागत किया। जहाज के ठहरे रहने से तथा जहाज के तंग रास्तों में अधिक भीड़ होजाने से बहुत ज्यादा गरमी हो रही थी। कुली लोग भी बहुत अधिक शोर-गुल कर रहे थे।

जहाज के पास ही बेलार्ड पायर (Ballard Pier) पर स्पेशल ट्रेन खड़ी हुई थी और उसके आस पास में हजारों बम्बई निवासी मारवाड़ी बन्धु, श्री जी साहब बहादुर के दर्शनार्थ उपस्थित थे। दिनके १० बजे बाद श्री जी साहब बहादुर बोट से उतरे। श्रीमान् के बोट से उतरते ही, हजारों कण्ठों

ने, एक साथ, जय ध्वनि करके आकाश को गुंजा दिया तथा उपस्थित सज्जनो ने श्रीमान् का विधिवत् स्वागत कर के भेंटें इत्यादि कीं।

बंबई की अत्यधिक गरमी से हम सब लोग हैरान हो गये थे। चित्त यही चाहता था कि कितनी जल्दी ट्रेन रवाना हो और इस गरमी से छुटकारा मिले। आखिर दिन के ढाई बजे ट्रेन रवाना होगई, जो रात को दो बजे अहमदाबाद पहुँची थी। अहमदाबाद में हम लोगो को ट्रेन बदलना पड़ा था और साथ में बहुत ज्यादा सामान के रहने मे ट्रेन के बदलने में कुछ अधिक समय लग गया था। ता० २४ शनिश्चरवार को सुबह पाँच बज ४५ मिनट पर हमारे श्रीमान् की स्पेशल ट्रेन, अहमदाबाद से रवाना हुई थी जो दिन के ग्यारह बजे आबूरोड पहुँची थी। आबूरोड से रवाना होने के बाद मोरीबेडा स्टेशन पर ठहरी थी, जहाँ पर श्रीमान् बेड़े ठाकुर साहब की तरफ से स्वागत सूचक दावत दी गई थी। वहाँ से रवाना होकर के लग भग ३ बजे मारवाड़ जंक्शन पर पहुँची थी। स्टेशन ध्वजा पताकाओ आदि से बहुत सुन्दर सजा हुआ था और जहाँ पर, हजारो मनुष्य, श्रीमान् मरुधराधीश के दर्शनार्थ खड़े हुए थे। ट्रेन के रुकते ही, तुलसीरामजी भागवरदार ने

इस पुस्तक के सम्पादक श्रीप्रतापचंद्रजी माथुर रचित और लाल स्याही मे मुद्रित, सुन्दर स्वागत कविता का वितरण करना आरम्भ कर दिया । हम उस स्वागत कविता की अविकल प्रति लिपि, यहाँ पर दिये देते हैं ।

पलक बिछावें पाँवड़े, हृदयासन दें डाल ।
भक्ति-अर्घ अर्पित करें, स्वागत हेतु नृपाल ॥१॥
रत्न जटित मुक्ता खचित, शुचि सुवर्ण के थाल ।
भक्त उतारत आरती, स्वागत हेतु नृपाल ॥२॥
हे मन मन्दिर मूरती ! प्रजा प्रान महिपाल !
प्रेम—पुष्प—पूजन करें, स्वागत हेतु नृपाल ॥३॥
बहु रंग रंजित इन्द्र धनु, बन सुन्दर शुभ माल ।
द्वार-द्वार पै झलमलत, स्वागत हेतु नृपाल ॥४॥
मणि माला-सी जगमगत, जहँ तहँ दीपक—माल ।
आनंद के बाजे बजत, स्वागत हेतु नृपाल ॥५॥
[illegible] मतवालिया, चालत चाल मराल ।
गावत मंगल गीत शुभ, स्वागत हेतु नृपाल ॥६॥
[illegible] अनुपम तन भावते, ले सुन्दर नव माल ।
[illegible] लिये [illegible], स्वागत हेतु नृपाल ॥७॥
[illegible] लाये रत्न रसाल ।
[illegible] पुष्पांजलि [illegible], स्वागत हेतु नृपाल ॥८॥

सहित महीपी अजित अरु, अति ललाम द्वै बाल ।
भल आये मन मुद भरन, स्वागत हेतु नृपाल ॥९॥

परयो देश दुष्काल जहँ, लख इक आज सुकाल ।
प्रजा पुकारत जयति जय, स्वागत हेतु नृपाल ॥१०॥

मारवाड़ जंकशन से पाली स्टेशन पर पहुँचे । यह स्टेशन भी खूब सजा हुआ था और यहाँ पर भी हजारों मनुष्य उपस्थित थे। इसी प्रकार रास्ते के सभी स्टेशन सजे हुए थे। जोधपुर स्टेशन भी बहुत अच्छा सजा हुआ था। कुछ मिनिट जोधपुर स्टेशन पर ठहर करके ट्रेन, राई-का बाग स्टेशन के लिये रवाना होगई। शाम होगई थी, परन्तु रास्ते में लाइन के दोनों ओर तथा पास की सड़कों के किनारों पर और कचहरियों के अहाते इत्यादि में अगणित मनुष्य, श्रीमान् मरुधराधीश के दर्शनार्थ खड़े हुए थे। हम लोग यह दृश्य देखते हुए जा रहे थे कि इतने में राई-का बाग स्टेशन आगया। ट्रेन रुकी और हम लोग ट्रेन से उतर पड़े।

राईकाबाग स्टेशन दूसरे सब स्टेशनों से अधिक सजा हुआ था और जहाँ पर सब सरदार मुत्सद्दी आदि कतार बांधे करीने में खड़े हुए थे। रसाला, पल्टन,

पुलिस और बैंड वाले, अपने २ फुलड्रेस में उपस्थित थे तथा दूसरा सब लवाजमा भी खड़ा हुआ था। स्टेशन पर बिजली की बहुत अच्छी रोशनी हो रही थी।

श्रीमान् मरुधराधीश के ट्रेन से उतरते ही बैंड बजने लगा और मेरानगढ़ (क़िला-जोधपुर) से सलामी की तोपें दगने लगी। प्रजा अपने स्वामी के दर्शन करके बहुत हर्षित हुई और उसके आनन्द का कोई पारावार नहीं रहा। उस दिन प्रजा ने अपने घरों में दीपमालिका करके भी अपने हर्ष का परिचय दिया था।

इस प्रकार यह 'हमारी विलायत यात्रा' निर्विघ्न समाप्त हुई। अब हम इसी सम्बन्धी कुछ आवश्यक बातें, लिखकर के इस पुस्तक को समाप्त करेंगे।

श्रीमती महारानीजी साहिबॉ और श्रीमती कॅवराणीजी साहिबॉ के साथ रहने से उनके लिये परदे का विशेष प्रबन्ध किया गया था। दो महाडोल पहले से इस प्रकार के बनवा लिये गये थे जो दो चार आदमी आसानी से उठा कर ट्रेन के पास से जहाज में और जहाज से ट्रेन के पास ला सकें। कुछ बनाती कनातें भी पहले से बनवाली गई थी और वे हर समय साथ रक्खी जाती थी, जो आवश्यकता पर मोटर या महाडोल के चारों ओर लगादी जाती थी।

साथ के सब मनुष्य, हर समय महाडोल उठाने के लिये तैयार रहते थे और जहाँ जहाज की अधिक चढ़ाई के कारण सीढ़ियों का चढ़ना कठिन हो जाता था, वहाँ सब सरदार मदद देकर हाथों हाथ महाडोल उठा लेते थे।

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक बन्दरगाह पर हमारे एजेन्ट थोम्स कुक कम्पनी (Thomas Cook and Sons Ltd) के सैकड़ों आदमी, मदद के लिये तैयार मिलते थे और जहाजी ऑफिसर, रेलवे ऑफिसर और हर एक जगह के पुलिस ऑफिसर भी इस काम में दिलचस्पी के साथ सहायता देते थे।

योरोप के लिये परदा सिस्टम बिलकुल ही अनोखी बात होने से जहाँ तहाँ हमारे पहुँचने पर बहुत से आदमी इकट्ठे होजाते थे. परन्तु हमारे श्रीमान के यात्रा की इत्तिला भारत गवर्नमेन्ट की तरफ से दूसरी गवर्नमेन्टों को दी जा चुकी थी, इस लिये हमारे पहुँचने के पूर्व ही हर एक जगह पर पुलिस के पहरे चौकी का इन्तजाम हो जाता था। पुलिस वाले मनुष्यों को जमा नहीं होने देते थे और बड़े ही अदब के साथ पेश आते थे।

हर एक स्टेशन पर मोटर, ट्रेन में सजाकर खड़ी की जाती थी और इसी प्रकार जहाज भी किनारे के पास लगा रहता

था। ट्रेनें और जहाज के कैबिन, महीनों पहले खास तौर पर रिजर्वेड करा लिये गये थे।

श्रीमान् के प्राइवेट सेक्रेट्री मिस्टर इवन्स और हाउस होल्ड कम्पट्रोलर राव राजा नरपतसिंहजी साहब को योरोप यात्रा का पहले से अनुभव होने से यात्रा का सब प्रबन्ध उत्तमता के साथ हुआ था।

लण्डन में श्रीमान् के साथ के सब सरदार प्रायः इॅगलिश ड्रेस में रहते थे, परन्तु हम लोग जो देशी लिबास में रहते थे और खेल-तमाशे, सैर-सपाटे आदि में अच्छे लिबास में जाते थे, इसलिये हम को जोधपुर के प्रतिष्ठित पुरुष समझ कर के यहाॅ के अखबारों के गुप्तचर बिना कुछ पूछे-ताछे और बिना किसी प्रकार की बात चीत किये, गुप्त रीति ही से, अक्सर हमारे फोटो लेलिया करते थे और समाचार-पत्रों में प्रकाशित कर दिया करते थे, जिन्हें देखकर के हमें ताज्जुब होता था। इसी प्रकार हमारे यहाँ की डावड़ियें (दासियें) जो हाउस मेड्स (House-maids) के साथ शहर देखने चली गई थीं, उनके भी फोटो ले लिये गये थे और उनमें से एक फोटो जोधपुर महारानी के नाम से प्रसिद्ध कर दिया गया, परन्तु यह बिल्कुल ही निर्मूल बात है और ठीक वैसी ही सफेद झूठ है जैसी कि

"जोधपुर नरेश के भ्राता का सिर्फ बाल बनवाई के ६०००) देदेना" क्योंकि, जहाँ परदेका इतना उत्तम प्रबन्ध था और ठीक वैसा ही जैसा कि जोधपुर में रहता है तथा हजारों रुपये मकानात, ट्रेनें और जहाजों में, परदागीरी के लिये ही इजाफा खर्च किये गये थे और ऐसा कडा प्रबन्ध किया गया था कि जहाँ मनुष्य तो दूर, परंदे तक का भी गुजर नहीं हो सकता था, वहाँ फोटो लेना कैसे सम्भव हो सकता था ? बात यह है कि ऐसी बे सिर पैर की बातें अक्सर यहाँ के समाचार-पत्रों में निकल जाया करती हैं, जिसका कारण यह है कि यहां पर न तो रास्ता चलते किसी का नाम पूछने का रिवाज है और न बिना पूछे परिचय देना ही वाजिब होता है. इसलिये ऐसी भूल का होजाना स्वभाविक है ।

लगडन यात्रा का प्रबन्ध करना, एक कुशल अनुभवी और बुद्धिमान पुरुष का काम है । क्योंकि महीनों पहले जहाज, ट्रेन, होटल, मकान, नौकर. इत्यादि का समय निश्चित कर के उनका प्रबन्ध करना पड़ता है, तब कहीं समय पर सब काम हो सकते हैं । इसी प्रकार खेल-तमाशे, नाटक, सिनेमा के लिये भी महीनों पहिले बैठकें सुरक्षित कराना पड़ती है । मिलने के लिये आने वालों को समय

देना यहाँ की सभ्यता के अनुकूल होने से उन्हें महीनों पहले समय देना पड़ता है और उनके लिये आवश्यक समझा जाय तो चाय पानी अथवा भोजनादि का प्रबन्ध भी करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, जिन बेकारों या धार्मिक संस्थाओं के प्रार्थना-पत्र, आर्थिक सहायतार्थ आते रहते हैं, उनका उत्तर देना भी आवश्यक होता है। इन सब कामों के लिये एक डायरी रखनी पड़ती है और उसके अनुसार नियत समय पर ही सब काम किये जाते हैं। उपरोक्त सब बातों का उत्तम प्रबन्ध हमारे श्रीमान् के प्राइवेट सेक्रेट्री मिस्टर इवन्स साहब ने बहुत खूबी के साथ और सुचारु रूपसे किया था, जिसमें कि किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं रही।

इस यात्रा में हमारे श्रीमान् के साथ पोलो और पर्सनल पार्टी के मिलाकर कुल १७५ मनुष्य थे और ४० योरोपियन नौकर लण्डन में काम करने के लिये रक्खे गये थे, जो वहाँ का सब कार्य करते थे। इति।

१२	७	मे	में
१९	५	दुगरे	दूगरे
१८	६	फारक	फर्क
१८	१५	वनी	बनी
२०	१४	प्रशंसनीय	प्रशंसनीय
२०	१६	गावुन	गाउन
२३	११	इजिन	इंजिन
२८	४	Pent	Paintings
३४	११	वीच	बीच
४०	१	वाहर	बाहर
४०	१०	व्यापारियों	व्यापारियों
४०	१४	वीच	बीच
४४	११	वेंचा	बेचा
४५	१७	ग्रोर	ग्रौर
४६	१	निवारण	निवारण
४८	१३	मा	माँ
५१	४	विल्लिया	बिल्लिया
५१	१६	डावाँ डोल	डाँवा डोल
५३	६	मिनिस्टर	मिन्स्टर
५३	६	Westminister	Westminster
५३	१०	मिनिस्टर	मिन्स्टर
५३	१०	Westminister	Westminster
५४	७	मिनिस्टर	मिन्स्टर
५४	८	Westminister	Westminster
५५	१०	ती	तो
५६	५	मिनिस्टर	मिन्स्टर
५७	४	मिलकर	मिलाकर
५८	११	Office of the Sergeant Arms	Office of the Sergeant At Arms

१४१	७	Paddingtion	Paddington
१४२	१४	वात	बात
१४५	१२	आक षा	आकर्षण
१४६	१९	Exchainge	Exchange
१५१	१६	शरकार	सरकार
१६८	९	कामन सभा	कामन्स सभा
१६९	८	निर्धाणार्थ	निर्धारणार्थ
१७०	१	गिन्ने	गिनने
१७४	६	Coroneris	Coroner's
१७९	१७	सैकडों	सैंडो
१८५	७	वहुत	बहुत
१८५	१०	मे	में
१८७	१७	स्थानागार	स्नानागार
१८८	२	ह	हैं
१९१	२	Notional	National
१९४	१	हार्नघाम	हर्लिघाम
१९४	४	पोलोटाम	पोलोटीम
२०२	१५	आर	और
२०३	६	आवश्यक्तानुमार	आवश्यकतानुमार
२०७	१३	व्राइटिन	व्राइटन
२१२	९	वैठते	बैठते
२१७	४	पदार्थ	पदार्थों
२२०	१६	हुंई	हुई
२२२	६	मोटरें	मोटर
२२४	२	हॉल	हॉल
२२६	५	वहलाव	वहलाव
२२७	६	अभित	अमित
२४१	९	स्वप्न–सदस्य	स्वप्न–सदृश
२४८	२	विजली	बिजली